सामाजिक विज्ञान

(सातवीं कक्षा के लिए)

W2R1R5

भूगोल भाग

लेखक

सुरजीत कौर गिल/संधु

शोधक

1. श्रीमती अरूणा डोगरा शर्मा
2. श्री रामिंदरजीत सिंह वासु

इतिहास भाग

संयोजक

सीमा चावला, विषय विशेषज्ञ, (इतिहास), पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

शोधक : परमिंदर कौर ; एस. एस. मिस्ट्रैस बलौंगी

अनुवादक

श्रीमती मीनू, दिल्ली पब्लिक स्कूल, सैक्टर-40, चण्डीगढ़

नागरिक शास्त्र भाग

लेखक

कंवलजीत कौर हुंदल

रिटा. विषय विशेषज्ञ (राजनीति शास्त्र), पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

अनुवादक (भूगोल तथा नागरिक शास्त्र)

विजय कुमार, लैक्चरार, सरकारी सीनियर सैकेण्डरी स्कूल नंगल टाऊनशिप

चित्रकार व मैप वर्क

गुरमेल सिंह

तजिंदर सिंह, लैक्चरार

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

पहला संस्करण : 2021.......................... 5100 प्रतियाँ

*All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by
the Punjab Government.*

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उदेश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों को जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं)

मूल्य : ₹ 156/-

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा **मैस. स्वैन प्रिटिंग प्रैस,** अड्डा टांडा, जालन्धर द्वारा मुद्रित की गई।

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड नई शिक्षा नीति के अधीन नये पाठ्यक्रम और उन पर आधारित नई पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। सामाजिक विज्ञान की यह पुस्तक भारत सरकार के मानवीय संसाधन विकास मंत्रालय की सिफ़ारिशों 2005 पर आधारित है और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम को सम्मुख रखकर तैयार की गई है। पंजाब का विद्यार्थी राष्ट्रीय पाठ्यक्रम से वंचित न रह जाये, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए पुस्तक का निर्माण किया गया है। इस पुस्तक की पाठय-समग्री को PCF-2013 के निर्देषों के आधार पर विचार उपरांत, इसको संक्षेप, संवेदनशील, विद्यार्थी केंद्रित और राज्य की जरूरतों के अनुरूप बनाया गया है। इसमें हमारा पर्यावरण, हमारा अतीत और सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन (लोकतंत्र तथा समानता) विषय को गम्भीरतापूर्वक विचार करके विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार ढालकर पाठ्य-पुस्तक का अंग बनाया गया है।

हस्तीय पुस्तक सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। भारत तथा विश्व इस पुस्तक के मुख्य केन्द्र हैं। इस उद्देश्य के अधीन इसको तीन भागों (1) हमारे पर्यावरण (2) हमारे अतीत और (3) लोकतंत्र तथा समानता, में बाँटा गया है। भाग-1 जो कि पर्यावरण से संबंधित है, में प्राकृति तथा मानवीय पर्यावरण दोनों का अध्ययन करते हुए इनके आपसी प्रभाव को भी प्रत्यक्ष रूप में दर्शाया गया है। जिसके कारण कुछ स्थानों का वृतांत शामिल है। भाग-2 में मानवीय जीवन के अतीत के बारे में ज्ञान तथा उसका महत्त्व समझने तथा भाग-3 में आधुनिक लोकतंत्र राज्य की संस्थाओं में समानता के महत्त्व और आर्थिक विकास के तथ्यों को समझने का ज्ञान सम्मिलित है।

इस पुस्तक को लिखने का कार्य पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की शैक्षणिक एवं योजना शाखा में कार्यरत विषय विशेषज्ञों/प्रौजैक्ट अधिकारियों और क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा किया गया है। इस पुस्तक के भूगोल व नागरिक शास्त्र भाग का अनुवाद श्री विजय कुमार, लेक्चरार (हिन्दी) द्वारा और इतिहास भाग का अनुवाद श्रीमती मीनू, दिल्ली पब्लिक स्कूल, चण्डीगढ़ द्वारा किया गया है। पुस्तक को रोचक बनाने के लिए इसके मानचित्र, चित्र और डिज़ाइन बोर्ड के आर्ट सैल द्वारा तैयार किये गये हैं। पुस्तक के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये हर सम्भव प्रयास किया गया है। क्षेत्र से आये उचित सुझाव सादर स्वीकृत किये जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय सूची

पाठ संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
	भाग-I (पृथ्वी- हमारा पर्यावरण)	
1.	पर्यावरण	3-8
2.	पृथ्वी का आन्तरिक तथा बाहरी स्वरूप	9-22
3.	वायुमण्डल तथा तापमान	23-32
4.	महासागर	33-47
5.	प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य जीव	48-56
6.	मानवीय पर्यावरण-बस्तियाँ, यातायात तथा संचार	57-62
	भाग-II (हमारे अतीत-2)	
7.	भारत तथा विश्व (कब, कहाँ तथा कैसे)	65-72
8.	नए राज्य एवं शासक	73-81
9.	दक्षिणी भारत में राजनीतिक विकास	82-89
10.	दिल्ली सल्तनत	90-104
11.	मुग़ल साम्राज्य	105-118
12.	स्मारक निर्माण कला	119-131
13.	नगर, व्यापारी तथा कारीगर	132-137
14.	कबीले, खानाबदोश तथा स्थिर भाईचारे	138-143
15.	धार्मिक विकास	144-159
16.	प्रादेशिक संस्कृति का विकास	160-168
17.	18वीं शताब्दी में भारत में नए राज्यनीतिक शक्तियों की स्थापना	169-180
	भाग-III (लोकतन्त्र तथा समानता)	
18.	लोकतन्त्र तथा समानता	183-191
19.	लोकतन्त्र-प्रतिनिधित्व संस्थाएँ	192-201
20.	राज्य-सरकार	202-216
21.	जनसंचार माध्यम तथा लोकतन्त्र	217-227

यूनिट-I भूगोल

हमारा पर्यावरण

हमारा पर्यावरण

पुस्तक के इस भाग में पर्यावरण के सामूहिक रूप में अध्ययन के साथ-साथ प्राकृतिक और मानवीय पर्यावरण का ज्ञान विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार दिया गया है। जिसमें पर्यावरण के चार प्रमुख परिमंडल यथा-थलमंडल, जल-मंडल, वायु-मंडल और जीव-मंडल सम्बन्धी जानकारी दी गई है।

'थल मंडल' के अध्ययन में पृथ्वी का आन्तरिक और बाहरी परतों की जानकारी सम्मिलित है। आन्तरिक जानकारी में पृथ्वी की आन्तरिक परतों, पृथ्वी की हिल-जुल, इसके प्रभाव आदि के बारे में बताया गया है। पृथ्वी की भीतरी शक्तियाँ, जिनके कारण भूकम्प और सुनामी आदि आपदाएँ आती हैं, के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गई है। पृथ्वी के परिवर्तित स्वरूप में सहायक बाहरी शक्तियों के बारे में भी बताया गया है जिनके फलस्वरूप पृथ्वी पर पर्वत, पठार, झीलें और मैदान आदि अस्तित्व में आते हैं।

'जल मंडल' में संसार के महासागर और उनसे उत्पन्न धाराओं और उनके प्रभाव के बारे में जानकारी दी गई है। इसी प्रकार वायुमंडल के अध्ययन में इसकी पर्तें और जलवायु के तत्वों का अध्यन किया गया है। जलवायु के प्रभाव स्वरूप विश्व के भिन्न-भिन्न, जलवायु क्षेत्र कैसे बनते हैं के बारे भी बताया गया है। वर्तमान प्रदूषण की समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है ताकि विद्यार्थी इसके प्रति सजग रहें।

तीनों मंडलों के सुमेल से बने चौथे मंडल 'जीव मंडल' की जानकारी में जलवायु और थल के आधार पर विश्व में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन के बारे में बताया गया है। इसकी सुरक्षा और संभाल की आवश्यकता के बारे में विद्यार्थियों को जागरूक किया गया है।

मानवीय पर्यावरण में मानवीय बस्तियों का विकास, विश्व और भारत के यातायात के साधनों का विकास के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गई है। प्राकृतिक और मानवीय पर्यावरण के परस्पर प्रभाव स्वरूप कुछ प्रमुख प्राकृतिक क्षेत्रों के बारे में अध्ययन भी शामिल किया गया है जिसमें उन क्षेत्रों के धरातल, जलवायु, आर्थिक और सभ्याचारक पक्ष के बारे में जानकारी दी गई है।

विषय विशेषज्ञ (भूगोल)

पाठ 1 पर्यावरण

पर्यावरण से भाव धरती के आस-पास अथवा इर्द-गिर्द से है तथा धरती की सतह के ऊपर की अनेक शक्तियों से है जिनके कारण प्रत्येक स्थान के आस-पास अथवा इर्द-गिर्द में अन्तर होता है। इसी कारण ही मनुष्य का अपने आस-पास से सम्बन्ध प्रत्येक स्थआन पर एक जैसा नहीं होता। पर्यावरण के तत्व जैसे कि धरातल, तापमान तथा वर्षा प्रत्येक स्थान पर एक जैसे न होने के कारण वनस्पति, जीव जन्तु तथा धरती की उपज अलग-अलग हो जाती है। इन तथ्यों में विभिन्नता के कारण मानवीय व्यवसाय भी बदल जाते हैं जैसे कि महाद्वीपों पर रहने वाले मनुष्य सामान्यत : कृषि, पशुपालन तथा जंगलों के साथ सम्बन्धित धंधे तथा समुद्र के किनारे अथवा टापुओं के निवासी मछलियाँ पकड़ने के कार्यों में व्यस्त रहते हैं। धरती, जल तथा जलवायु के आधार पर एक विशेष जीव-जगत तथा वृक्षों का पर्यावरण उत्पन्न होता है। मनुष्य की तरह पेड़-पौधे तथा जीव भी अपने पर्यावरण पर आधारित तथा निर्भर करते हैं। जिसे HABITAT या आवास कहते हैं।

पृथ्वी के भूमध्य क्षेत्रीय भागों को यद्यपि घने जंगल के कारण जाना जाता है फिर भी महाद्वीपों के मध्य शुष्क भागों में केवल घास की उत्पन्न होती है। धरती के ध्रुवीय भाग सदैव बर्फ से ढके रहने के कारण मनुष्यों तथा जंगलों से वंचित होते हैं। पृथ्वी, पानी, वायु तथा सूर्य की गर्मी धरती पर अनेक प्रकार के जीव जन्तुओं को जन्म देती है। जहाँ इन सभी तत्वों का परस्पर तालमेल होता है वहाँ ही यह संभव है। इस तालमेल खंड को (Biosphere) या जीव-मंडल कहते हैं।

> किसी स्थान के जीव मंडल तथा वहाँ के भौतिक इर्द-गिर्द को उसकी *(Ecology)* या परिस्थिति कहते हैं।

परिवर्तित पर्यारण

धरती की सतह पर पर्यावरण सदैव परिवर्तित होता रहता है क्योंकि इसके सभी तत्व परिवर्तित होते रहते हैं। ये परिवर्तन शीघ्र तथा धीरे-धीरे होने वाले दोनों तरह के होते हैं। धीरे

अथवा धीमी गति से होने वाले परिवर्तन द्वारा धरती की सतह पर अपरदन कारकों दरियां, ग्लेशियर, वायु, समुद्रों तथा कटाव द्वारा होती हैं। शीघ्र अथवा तेज़ गति से होने वाले परिवर्तन द्वारा धरती पर उतार-चढ़ाव होता है। धरती पहले हवाई स्थिति से परिवर्तित होकर पिघले हुए रूप में आई। फिर धीरे-धीरे ठोस रूप में आई। यह परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे हुआ। हवाई तथ्यों ने वायु मंडल, पानी के तथ्यों ने समुद्र तथा ठोस तथ्यों ने स्थल मंडल का स्वरूप धारण किया।

मनुष्य स्वयं भी कृषि करने के लिए जंगल काटकर तथा रहने के लिए शहर बना कर धरती की सतह पर व्यापक स्तर पर परिवर्तन लाया है। दरियाओं पर बाँध बना कर तथा उनके पानी को नहरों द्वारा शुष्क मरुस्थलों में सिंचाई के लिये प्रयोग करके हरियाली लाया है। जिस कारण वहाँ की परिस्थिति मूलतः परिवर्तित हो गई है। भारत में थार मरुस्थल के कई भाग बहुत सीमा तक अब शुष्क तथा बंजर नहीं रहे। ऐसा संसार के अन्य भागों जैसे सिन्धु घाटी, नील घाटी और ह्वाँग हू घाटी में भी हुआ है। खनिज तथा औद्योगिक क्षेत्रों का विकास करके भी मनुष्य ने धरती पर अधिकतर परिवर्तन लाया है। ये परिवर्तन भौतिक, प्राकृतिक व तथ्यों के मध्य क्रमवार तथा निरन्तर तालमेल का परिणाम है।

पर्यावरण के अंश (मंडल) : धरती के सम्पूर्ण वातावरण की रचना को अच्छी तरह समझने के लिए धरती के तीन मंडलों वायु मंडल, स्थल मंडल तथा जल मंडल का ज्ञान अर्जित करना आवश्यक है। इनके बारे में हम आगामी पृष्ठों में पढ़ेंगे। उपर्युक्त मंडलों के बारे में आपने छठी श्रेणी में भी पढ़ा है।

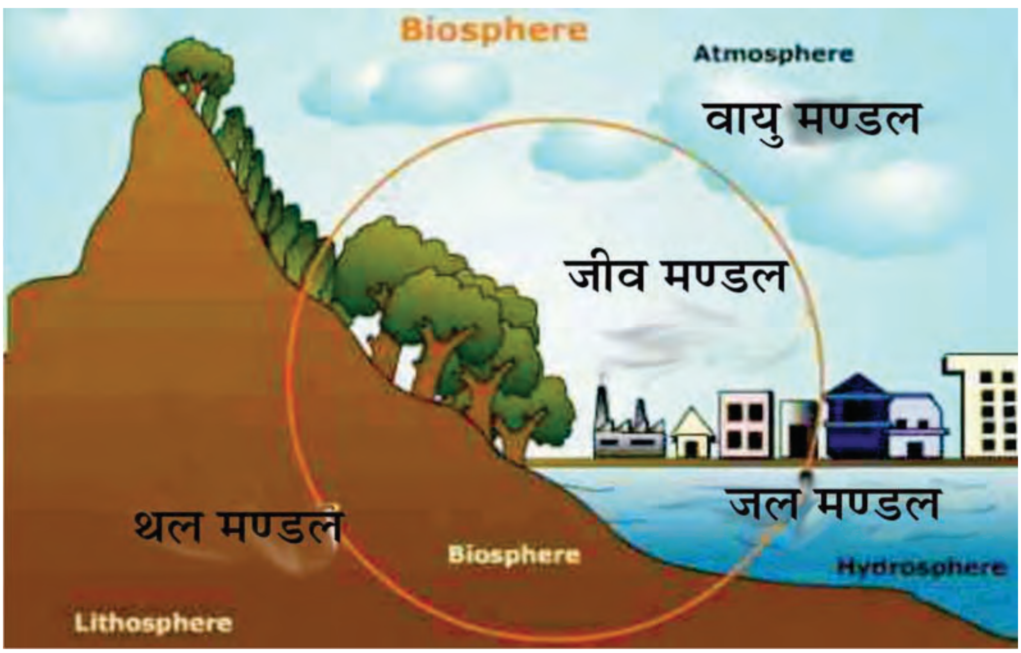

चित्र 1.1 पर्यावरण के प्रमुख मंडल

1. वायु मंडल (Atmosphere)

धरती वायु की पतली परत से घिरी हुई है। इस वायु की परत का नाम वायु मंडल है। सूर्य परिवार के और ग्रहों (केवल बुध ग्रह तथा उपग्रहों को छोड़कर) के इर्द-गिर्द भी वायुमंडल है। यद्यपि धरती के इर्द-गिर्द यह परत लगभग 1600 किलोमीटर तक है। परन्तु 99 प्रतिशत वायु 32 किलोमीटर तक के घेरे में ही है। धरती की सतह के ऊपर यह वायु की परत धरती तथा पानी से मिलकर जीव जगत तथा पेड़-पौधों की उत्पत्ति तथा पालन पोषण का कार्य करता है। वायुमंडल के अंश में तापमान, नमी, वायु दबाव इत्यादि धरती पर प्राकृतिक पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण के अंशों में से वायुमंडल में सबसे अधिक परिवर्तन होता है।

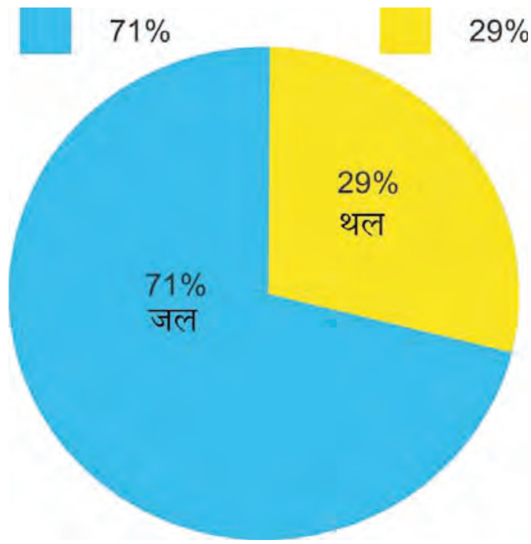

चित्र 1.2 धरती पर जल और स्थल की बांट

2. स्थल मंडल (Lithosphere)

धरती की सतह पानी तथा जमीन के बनी हुई है। जिसे 71 प्रतिशत भाग में जल तथा 29 प्रतिशत में जमीन है। धरती का 2/3 जमीनी भाग उत्तरी गोलार्द्ध में है। धरती की ठोस पर्त की मोटाई 80 से 100 किलोमीटर है। यह मोटाई प्रत्येक स्थान पर एक जैसी नहीं। यह मोटाई जमीनी भागों में अधिक समुद्री भाग में कम है। धरती की पर्त कई प्रकार की चट्टानों से बनी है। धरती की पर्त से पूर्ण आन्तरिक भागों तक धरती को तीन भागों में बाँटा जाता है। पूर्ण रूप में धरती के तीन खोल हैं : धरती का भू-तल, मध्य तथा केन्द्रीय भाग।

सबसे ऊपर की सतह को सयाल (SIAL) कहते हैं। जो कि ज्यादातर सिलीकान तथा अलमीनियम से बनी हुई है। SIAL = (SI + AL), SI = सिलीकान, AL = अलमीनियम। मध्य भाग को सीमा (SIMA) कहते हैं जिस में अधिकतर तत्व सिलीकान तथा मैगनिशियम हैं। जैसे (SI = सिलीकान) (Ma = मैगनिशियम) (Nife) सबसे अन्दर का भाग नाइफ जिसमें निक्कल तथा लोहे के तत्व हैं। जैसे (NiFe = Ni + Fe) Ni = निक्कल, Fe = लोहा हैं।

3. जल-मंडल (Hydrosphere)

धरती के जल से ढके भाग को जलमंडल कहते हैं जिसने बड़े तथा छोटे समुद्रों, खाड़ियों

इत्यादि के रूप में बहुत बड़ा क्षेत्र घेरा हुआ है। धरती को जल-ग्रह भी कहते हैं क्योंकि धरती का 71 प्रतिशत भाग पानी से घिरा हुआ है। धरती पर पाँच महासागर, अनेक समुद्र, दरिया, इत्यादि कई जल पिण्ड हैं। धरती के जल क्षेत्र अनेक शक्तियों द्वारा बनाए गए गहरे क्षेत्र हैं जैसे धरती का धरातल, समुद्र तल से ऊँचा होता जाता है। उसी तरह समुद्र अपने किनारों से अपने आन्तरिक भागों की ओर गहरे होते चले जाते हैं।

समुद्र का धरती पर सबसे अधिक प्रभाव जलवायु पर पड़ता है। ये जल का स्त्रोत हैं जो गर्म होने के पश्चात् बादलों का रूप धारण करता है जो हवाओं के साथ-साथ वर्षा करते हैं। यहाँ तक कि समुद्र से चलने वाली हवाएं जलवायु को संयमी बना देती हैं।

समुद्री धारा तथा ज्वार भाटा समीप के क्षेत्रों पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। इनका व्यापार पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इसलिए मनुष्य को समुद्रों की ओर बहुत ध्यान देना चाहिए।

4. जीव मंडल (Biosphere)

धरती की सतह पर एक ऐसा मंडल जहाँ प्राकृतिक तत्वों का प्रभाव प्रत्यक्ष दिखाई देता है उसे **जीव मंडल** (Biosphere) कहा जाता है। यह मंडल तीन मंडलों (जल मंडल, स्थल मंडल, तथा वायुमंडल) के सुमेल से बनता है। जीव मंडल में कई जीव जन्तु तथा पेड़ पौधे हैं जिसे **जीवन-जगत** कहते हैं।

जीव मण्डल : *वायु मण्डल, स्थल मण्डल तथा जल मण्डल के पूर्ण प्रभाव से बनता है।*

जीव जगत : *जीव मण्डल के आन्तरिक अनेक प्रकार के जीव जन्तुओं तथा पेड़-पौधों को जीव जगत कहते हैं।*

मानवीय पर्यावरण (Human Environment)

विश्व का वर्तमान पर्यावरण भू-दृश्य केवल प्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव के कारण ही नहीं बल्कि मानवीय सोच तथा तकनीकी विकास ने प्राकृतिक पर्यावरण में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन किया है। मानव विकास के रास्ते के चार पड़ावों में से निकला है। अर्थात् पहले मनुष्य केवल शिकार करता था, फिर पशु चराता रहा, फिर कृषि, खनिज निकालने में लगा, अब उद्योग तथा व्यापार में लगा हुआ है।

मनुष्य ने भू-मध्य रेखायी क्षेत्रों के जंगलों को साफ करके रबड़ जैसे नये वृक्ष लगाये, यातायात तथा भार ढोने में विकास होने के कारण आलू, मक्की, कपास, गन्ना, चाय काफी दूर के स्थानों पर भी बोए जाने लगे हैं। विश्व एक विश्व व्यापक मंडी के रूप में बन गया है। अर्थात्

अगर किसी देश में आलू की पैदावार अधिक है तो आवश्यकता अनुसार दूसरे स्थान पर आसानी से वही उपभोग मण्डी बन सकती है। दूसरे देशों के बढ़िया किस्म के बीज, पशुओं की नसलें लाकर सुधार किया है।

मनुष्य ने पर्वतों में सुरंगें बनाकर नहरों द्वारा जहाजरानी जैसे कि पनामा तथा स्वेज़ नदियों के बहाव को बदलकर उसे सिंचाई के लिए प्रयोग करके, खनिज पदार्थों का उत्पादन करके तथा औद्योगिक केन्द्र बनाकर प्राकृतिक शक्तियों पर नियंत्रण किया। मनुष्य के उद्देश्य के कारण विश्व एक गलोबल गाँव (Global Village) बन गया है जिससे प्रत्येक मानवीय व्यवसाय पर प्रभाव पड़ा है। अर्थात् मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार साधनों के प्रयोग करने की कला सीख ली है।

याद रखने योग्य तथ्य

1. पर्यावरण से भाव पृथ्वी के चौगिर्दे से है जिसमें धरती और जलवायु जैसे तत्व शामिल होते है।
2. पर्यावरण के अंशों में वायु मण्डल, स्थल मण्डल, जल मण्डल व जीव मण्डल शामिल हैं।
3. मनुष्य द्वारा विश्व भर के देशों की सरहदों को पार कर संचार साधनों से एक-दूसरे के करीब आने का प्रयोग किये जाने से विश्व 'गलोबल गाँव' जैसा नज़र आने लगा है।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 1-15 शब्दों में लिखें:

1. पर्यावरण से क्या अभिप्राय है?
2. पर्यावरण के मुख्य मण्डल कौन से हैं?
3. मनुष्य पर्यावरण को कैसे प्रभावित करता है?
4. पृथ्वी की पर्तों के नाम लिखें।

(ख) खाली स्थान भरो :

1. पर्यावरण को .... मण्डलों में बाँटा गया है।
2. धरती की स्याल पर्त उन चट्टानों की बनी है जिसमें .... तथा .... तत्व ज्यादा हैं।
3. धरती की नाइफ पर्त में .... तथा .... तत्व ज्याद मात्रा में होते हैं।
4. जीव मण्डल के अनेक प्रकार के जीव जन्तुओं को .... कहते हैं।
5. पृथ्वी की सतह का .... भाग जल है।

क्रिया-कलाप

पर्यावरण को प्रभावित करने वाले तत्वों की सूची बनायें।

पाठ 2

पृथ्वी का आन्तरिक तथा बाहरी स्वरूप

पिछली श्रेणी में हमने सूर्य परिवार में पृथ्वी का ग्रह के रूप में अध्ययन किया है, जिसमें हमने पृथ्वी के आकाश में से लिये गए चित्रों को देखा, उसकी गतियों के बारे में पढ़ा है। रात-दिन तथा गर्मी के मौसम से सर्दियों के मौसम तक होने वाले परिवर्तनों के बारे में पढ़ा है। इसमें हम पृथ्वी की सतह की बनावट तथा पृथ्वी के आन्तरिक भाग तथा इसमें छिपे खनिज पदार्थों के बारे में अध्ययन करेंगे।

सबसे पहले हम पृथ्वी के आन्तरिक भाग के बारे में पढ़ेंगे, जैसे कि हमने पिछले पाठ में पढ़ा है। पृथ्वी के पूर्ण रूप में तीन खोल-थल मण्डल, मैंटल तथा केन्द्रीय भाग हैं। जो सामान्यत : स्याल, सीमा तथा नाइफ पर्तें हैं।

थल मंडल में पृथ्वी का भू-तल आता है जिसे स्याल कहते हैं। इस भाग की मोटाई 100 किलोमीटक के लगभग है जिसमें सिलीकान तथा अलमिनियम के तत्व अधिक होते हैं। इसी

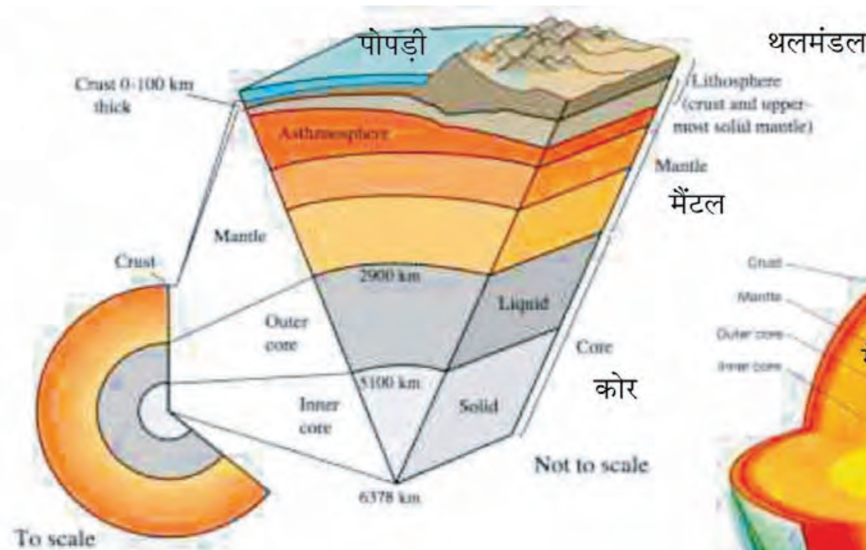

चित्र 2.1 पृथ्वी के आन्तरिक भाग का रेखाकाट

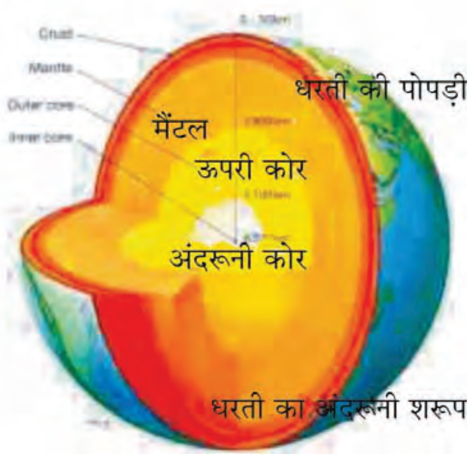

चित्र 2.2 पृथ्वी का आन्तरिक भाग

कारण इसे स्याल कहते हैं जिसका (SIAL) का शाब्दिक अर्थ Si = Silicon, Al = Aluminium होते हैं। इसकी ऊपर की पर्त जिसकी मोटाई समुद्र तल से 4-7 किलोमीटर, महाद्वीपी भाग से औसतन 35 किलोमीटर तथा पहाड़ों की पर्त 70 किलोमीटर मोटी है। यह सबसे ऊपर की पर्त चट्टानों की बनी हुई है।

मैंटल भाग — पृथ्वी की ऊपर की पर्त के नीचे मैंटल भाग है। इसकी औसतन मोटाई 2900 किलोमीटर है। अर्थात् यह धरती के पूर्ण अन्तर 2900 किलोमीटर की दूरी तक है। पृथ्वी की यह बाहरी पर्त भी सभी स्थानों पर एक जैसी मोटी नहीं है। इसे भी दो भागों में बाँटा गया है- बाहरी मैंटल भाग तथा निम्न मैंटल भाग। बाहरी मैंटल भाग पृथ्वी के अन्दर 100 किलोमीटर की दूरी तक है। इस मैंटल भाग को सीमा (SIMA) कहते हैं। जैसे कि इस सीमा के शब्दिक अर्थ हैं SI = Silicon, Mg = Magnesium.

केन्द्रीय भाग — पृथ्वी का सबसे आन्तरिक भाग केन्द्रीय भाग कहलाता है। इसकी त्रिज्या लगभग 3470 किलोमीटर तक है। इसके भी दो भाग हैं, बाहरी केंद्रीय भाग तथा आन्तरिक केंद्रीय भाग। इस केन्द्रीय भाग को नाइफ कहते हैं। इसमें निक्कल तथा लोह तत्व अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। जैसे कि नाइफ (NiFe) के शाब्दिक अर्थ हैं, नाई (Ni) = Nickel निकिल (Fe) = Ferrous लोहा = Ni + Fe = NiFe ये तत्व पिघले हुए और लेसदार पदार्थ के रूप में होते हैं।

चित्र 2.3 फ्यूजीयामा पर्वत

जब पृथ्वी को खोदा जाता है तो ऊपर की पर्तों की तुलना में नीचे की पर्तों में तापमान अधिक होता है। आपको आश्चर्य होगा कि पृथ्वी में इस गर्मी के कारण पृथ्वी पर पड़ी दरारों के कारण पृथ्वी के आन्तरिक भाग का पदार्थ लावे के रूप में बाहर आ जाता है। जब यह पदार्थ समुद्रों में से बाहर आता है तो समुद्रों में एक नई पर्त बन जाती है। परन्तु जब यह धरती भाग से

बाहर निकलता है तो पर्वत का रूप धारण कर लेता है, जैसे कि जापान का फ्यूजीयामा इसकी एक बढ़िया उदाहरण है।

पृथ्वी की पर्त कई चट्टानों (शैलों)तथा खनिज पदार्थों से बनी है। आओ अब हम इन चट्टानों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

चट्टानों का वर्गीकरण : चट्टानों (शैल) कई प्रकार की होती हैं। इनका वर्गीकरण भी कई आधारों पर किया जाता है।

निर्माण के आधार पर : सबसे महत्वपूर्ण तथा प्रचलित वर्गीकरण चट्टानों के निर्माण के आधार पर किया जाता है। इस आधार पर चट्टानें निम्नलिखित तीन प्रकार की होती हैं –

1. अग्नि चट्टानें (शैल) – Igneous Rocks
2. तलछटी चट्टानें (शैल) – Sedimentary Rocks
3. कायांतरित चट्टानें (शैल) – Metamorphic Rocks

अग्नि चट्टानें (Igneous Rocks) : अग्नि शब्द लातीनी भाषा के शब्द इग्नीस से लिया गया है। यहाँ अग्नि शब्द से भाव उच्च तापमान से है। इस तरह अग्नि चट्टानें, वे चट्टानें हैं जिनका निर्माण पृथ्वी के आन्तरिक भाग में उपस्थित अत्यन्त गर्म तथा पिघले हुए तरल के ठंडा होने के पश्चात् ठोस होने पर हुआ है। इस गर्म तरल को मैग्मा कहा जाता है। ये दो प्रकार की होती है।

1. अन्तर्भेदी (Intrusive Igneous Rocks)
2. बाहिर्भेदी (बाहरी भाग) (Extrusive Igneous Rocks)

अन्तर्भेदी (Intrustive Igneous Rocks) : जब यह गर्म तरल पदार्थ धरती की सतह के ऊपर आ जाता है तो इसे लावा कहा जाता है। मैग्मा के धरती के अन्दर ही धीरे-धीरे ठंडा होने पर बनने वाली चट्टानों का अन्तर्भेदी (अन्दर की)(Intrusive) अग्नि चट्टानें कहते हैं।

अन्तर्भेदी अग्नि चट्टानों दो प्रकार की होती हैं :-

(क) पाताली अग्नि चट्टानें (ख) मध्यवर्ती अग्नि चट्टानें

(क) पाताली अग्नि चट्टानें – जब पृथ्वी का गर्म मैग्मा पृथ्वी के अन्दर बहुत गहराई पर धीरे-धीरे ठंडा होकर सख्त रूप धारण कर लेता है तो पाताली अग्नि चट्टानों का निर्माण होता है। ग्रेनाइट तथा गैबरो इसकी प्रसिद्ध उदाहरण हैं। पृथ्वी की हलचल के कारण ही ये चट्टानें धरती की सतह पर दिखाई पड़ती हैं। भारत में राँची की पठार तथा सिंह भूमि की चट्टानें ग्रेनाइट की चट्टानों के बढ़िया उदाहरण हैं।

(ख) मध्यवर्ती अग्नि चट्टानें – कभी कभी पृथ्वी के अन्दर का मैग्मा भू–सतह पर न आकर बल्कि अन्दर ही धरती की दरारों में ठंडा होकर जम जाता है। इस तरह बनी चट्टानें मध्यवर्ती चट्टानें कहलाती हैं। जैसे डाइक, सिल, डोलेराइट।

बाहिर्भेदी अग्नि चट्टानें (Extrusive Igneous Rocks) - जब धरती के अन्दर का मैग्मा बहुत अधिक हो जाता है तो पृथ्वी की मोटी सतह के बाहर की ओर जोर से निकलता है। यह मैग्मा बाहर धरती की सतह पर ठंडा हो जाता है। इस तरह बनने वाली चट्टानों को बाहिर्भेदी अग्नि चट्टानें कहते हैं। बेसालट तथा रोआलाइट प्रसिद्ध ज्वालामुखी चट्टानें हैं। भारत में दक्षिणी पठार ज्वालामुखी चट्टानों से बना है।

सभी अग्नि चट्टानें **रवेदार पिंडों** में पाई जाती हैं। इसलिए इनमें सतह या पर्तें नहीं होती। अग्नि–चट्टानों को प्राथमिक चट्टानें कहा जाता है। क्योंकि पृथ्वी पर सबसे पहले इनका ही निर्माण हुआ था। इन चट्टानों में वनस्पति और जीव जन्तुओं के अवशेष भी नहीं पाये जाते। अग्नि चट्टानें पृथ्वी की बाहरली पर्त का लगभग 2/3 (दो तिहाई) भाग बनाती है।

2. पर्तदार अथवा तलछटी चट्टानें (Sedimentary Rocks) - ये चट्टानें अनाच्छादन (Denudation) के कारकों जैसे बहता पानी, वायु हिम नदी द्वारा लाई गई सामग्री के नीचे के स्थानों पर पर्तों के रूप में इकट्ठी होने से बनती हैं। यह जमाव सामान्यतः नीचे के स्थानों जैसे झीलों, नदियों, महाद्वीपों के साथ लगते समुद्रों इत्यादि की सतह के ऊपर होता है। जमाव की यह प्रक्रिया लाखों वर्ष चलती रहती है, जिससे यह चट्टानी मादा पर्त–दर–पर्त जमता जाता है तथा अत्यन्त दबाव के कारण कठोर होकर आन्तरिक अथवा रासायनिक क्रियाओं द्वारा पर्तदार (तहदार) चट्टानों को जन्म देता है। जैसे : भारत में गंगा सतलुज का मैदान।

कायांतरित चट्टानें : (Metamorphic Rocks)

मैटामारफिक शब्द ग्रीफ भाषा के दो शब्दों में मिलन से बना है :- मैटा अर्थात बदलाव तथा मारफ अर्थात रूप। इस तरह इस वर्ग में वे चट्टानें आती हैं जो अपने वास्तविक रूप से परिवर्तित हो चुकी हैं। धरती में पाए जाने वाले ताप तथा दबाव या दोनों के संयुक्त प्रभाव के अग्नि तथा तहदार चट्टानों के रंग रूप, संरचना, कठोरता इत्यादि में बदलाव आ जाते हैं। इन परिवर्तनों के कारण मूल स्वरूप से परिवर्तित हुई इन चट्टानों को परिवर्तित या रूपान्तरित चट्टानें कहते हैं। रूपान्तरण दो प्रकार का होता है–तापी तथा क्षेत्रीय तापी रूपान्तंरण।

तापी रूपान्तरण : जब मैग्मा दरारों तथा नालियों में बहता हुआ चट्टानों के सम्पर्क में आता है तो अपने ऊंचे तापमान के कारण उनको पका देता है। इसे तापी रूपान्तरण कहते हैं।

क्षेत्रीय रूपान्तरण : किसी बड़े क्षेत्र में ऊपर की चट्टानों के अत्यन्त दबाव के कारण चट्नों के मूल रूप में जो बदलाव आता है उसे क्षेत्रीय रूपान्तरण कहते हैं।

रूपान्तरित चट्टानों में मूल चट्टानों के कुछ गुण अवश्य बने रहते हैं जैसे पर्तदार मूल-चट्टान से बनी परिवर्तित चट्टान पर्तदार ही रहेगी। भारत में दक्षिणी पठार की चट्टानें अधिकतर परिवर्तित चट्टानें ही है। परिवर्तित चट्टानों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण निम्नलिखित हैं :-

मूल अग्नि चट्टान	रूपान्तरित चट्टान
1. अबरक	सिसट
2. ग्रेनाइट	नाइस
3. बिटूमीनस कोयला	एनथरेसाइट कोयला
4. गैबरो	सरपैनटाइन
मूल पर्तदार चट्टान	**रूपान्तरित चट्टान**
1. रेत पत्थर	कवारटजाइट
2. चूना पत्थर	संगमरमर
3. सैल	स्लेट
4. स्लेट	फाईलाइट
5. पीट	कोयला

इस प्रकार जो रूपान्तरित चट्टानें अग्नि चट्टानों से बनती हैं उनके गुण अग्नि चट्टान जैसे ही होती हैं। जो रूपान्तरित चट्टानें पर्तदार चट्टानों से से बनती हैं उनके गुण पर्तदार चट्टानों जैसे होते हैं।

मिट्टी (मृदा)

मिट्टी एक बहुत महत्वपूर्ण भूमि साधन है। मिट्टी की उपजाऊ शक्ति में ही इसका महत्व है। उर्वराहीन मिट्टी का अधिक लाभ नहीं। उर्वरा मिट्टी सदैव मनुष्य को आकर्षित करती रही है क्योंकि मनुष्य को खाद्य पदार्थ इसी से प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि मनुष्य प्रारम्भ से ही उपजाऊ धरती पर रहना ही पसन्द करता रहा है। पुरातन सभ्यताओं का जन्म तथा विकास संसार की उपजाऊ नदी घाटियों में ही हुआ। क्या तुम प्राचीन सभ्यताओं से सम्बन्धित नदी घाटियों के नाम बता सकते हो? सिन्ध, नील, दजला-फरात-यंगसी घाटियों की उपजाऊ मिट्टी के कारण ही इनमें सभ्यताओं का विकास हुआ। आज भी हम देखते हैं कि उर्वरा नदी घाटियों तथा मैदानों में ही आबादी का संकेन्द्रन अधिकतर है तथा विकास में ये आगे हैं। इस प्रकार उर्वरा मिट्टी देश की बड़ी सम्पत्ति है। जिन देशों के पास उपजाऊ मिट्टी का साधन है उनमें कृषि का विकास अधिक हुआ है तथा इसके आधार पर वे बहुत धनी बन गए हैं। भारत अपनी उपजाऊ मिट्टी के कारण ही इतनी बड़ी आबादी के लिए भोजन उत्पन्न करने में समर्थ हो सकता है।

मिट्टी का संरचना– परिभाषा के अनुसार मिट्टी धरातल के ऊपर का वह भाग है जो चट्टानों के टूटने फूटने से बनता है। इसके कण बहुत बारीक, मुलायम तथा अलग होने योग्य होते हैं ताकि पौधों की जड़ें इसमें आसानी से बढ़ सकें। मिट्टी लम्बे समय तक भौतिक, रासायनिक तथा जैविक क्रियाओं द्वारा बनती है। मिट्टी बनने की प्रक्रिया बड़ी धीमी है तथा ऊपर की कृषि योग्य पतली पर्त को बनने के लिए हज़ारों वर्ष लग जाते हैं। चट्टानी पदार्थ के इलावा मिट्टी में गली सड़ी वनस्पति, कीटाणु आदि भी शामिल होते हैं। पौधे के पत्ते तथा पशुओं का मल-मूत्र मिट्टी का उपजाऊपन बढ़ाते हैं। इस प्रकार मिट्टी में दो प्रकार के तत्व होते हैं। एक खनिज पदार्थ तथा दूसरे कार्बनिक पदार्थ मिट्टी में खनिज पदार्थ अधिक मात्रा में होते हैं जो मूल-चट्टान से प्राप्त होते हैं। वनस्पति तथा और जीव-जन्तुओं के गले-सड़े पदार्थ को कार्बनिक पदार्थ कहते हैं।

मिट्टी की किस्में

मिट्टी की किस्में अथवा प्रकार : संसार में अनेक प्रकार की मिट्टी मिलती है। इसका विभाजन उत्पत्ति, बनावट तथा जलवायु के आधार पर किया जाता है। वास्तव में यही कारक हैं जो मिट्टी के निर्माण में सहायक होते हैं तथा मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बनाते हैं। जिस मूल चट्टान से मिट्टी बनी है उसके गुण मिट्टी में आ जाते हैं। इसलिए मूल-चट्टान का बहुत महत्व है। मूल चट्टान के अंश मिट्टी की उपजाऊ शक्ति को निर्धारित करने में योगदान पाते हैं। इस तरह मूल चट्टान भी अपने आप में एक साधन है।

नदियाँ, हिम नदियां तथा वायु किसी स्थान की मिट्टी को बनाने में योगदान डालती है नदियाँ जहां पानी का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं, वहाँ यह मिट्टी के निर्माण में भी सहायता करती हैं। नदी घाटियों तथा डैल्टों में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी मिलती है जो किसी देश का बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। यह मिट्टी संसार की अधिकतर आबादी के लिए भोजन प्रदान करती है।

आप जानते हैं कि जलवायु से वनस्पति बदल जाती है तथा वनस्पति की किस्म आगे मिट्टी को प्रभावित करती है। भिन्न-भिन्न प्रकार की जलवायु में कार्बनिक पदार्थों के अलगाव के कारण मिट्टी की बनावट तथा उपजाऊ शक्ति में भिन्नता आ जाती है। इस आधार पर अधिकतर समय बर्फ से ढकी रहने के कारण टुंडरा की मिट्टी, ठँडे तथा नमी युक्त खंडों की पोडजोल मिट्टी, शीत ऊष्ण घास क्षेत्रों की काली मिट्टी या चरनोज़म मिट्टी, शीत ऊष्ण शुष्क भागों की अखरोट रंग की अथवा चैस्टनैट मिट्टी, शुष्क रेतीले, क्षेत्रों की मरुस्थली मिट्टी, पतझड़ जंगलों की भूरी मिट्टी, ऊष्ण खण्डी लाल मिट्टी, मुख्य प्रकार हैं। इनमें से काली मिट्टी अधिक उपजाऊ होती है। मरुस्थली मिट्टी को यदि आवश्यक मात्रा में पानी मिल जाए तो यह भी अच्छी उपजाऊ सिद्ध होती है। भारत के राजस्थान प्राप्त में गंगानगर क्षेत्र में नहरी पानी पहुंचने से रेतीला क्षेत्र अधिक उपजाऊ बन गया है।

यूरेशिया के स्टैप, उत्तरी अमरीका के प्रैयरीज़ तथा अर्जनटाइना के पंपाज क्षेत्रों की मिट्टी का एक साधन के तौर पर महत्व उस समय से हुआ है जब कृषि का मशीनीकरण बड़े स्तर पर प्रारम्भ हुआ है। यह विशाल क्षेत्र लम्बे समय तक केवल पशु चराने के लिए प्रयोग किये जाते रहे। आज यह अनाज के बहुत बड़े भण्डार बन गए हैं।

भारत में निम्नलिखित प्रकार की मिट्टी मिलती है

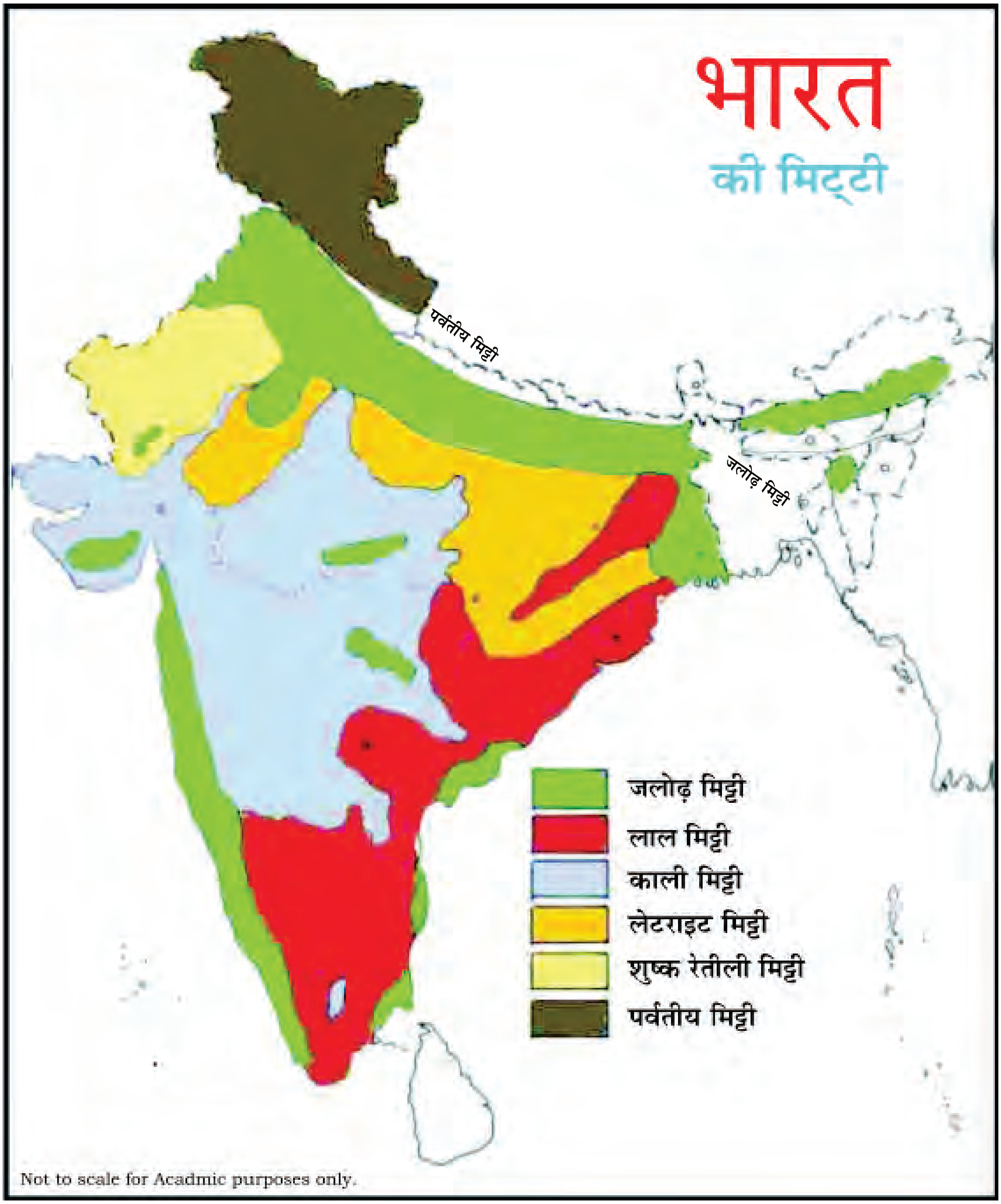

चित्र 2.4 भारत की मिट्टी की किस्में

1. जलोढ़ मिट्टी

जलोढ़ मिट्टी का निर्माण दरियाओं द्वारा लाई गई महीन गाद (बारीक मिट्टी) के निक्षेपण से होता है। यह संसार की सबसे उपजाऊ मिट्टी में से एक है। भारत के उत्तरी मैदान तथा प्रायद्वीपी भारत की नदियों के डेल्टा प्रदेशो के कारण इसे डेल्टाई मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है। भारत के लगभग 55 प्रतिशत भाग में फैली हुई इस मिट्टी का प्रत्येक वर्ष नवीनीकरण होता रहता है। गंगा-ब्रह्मपुत्र नदियों के डेल्टा प्रदेश या बाढ़ के मैदानों में तुलनात्मक तौर पर नई जलोढ़ द्वारा निर्मित मिट्टी को खादर जब कि नदियों की ऊपरी घाटियों घाटियों के भागों में तुलनात्मक तौर पर पुरानी तथा मोटी जलोढ़क मिट्टी को बाँगर कहते हैं।

2. काली मिट्टी

इसे **रेगड़** (Regur) भी कहते हैं। इसका निर्माण ज्वालामुखियों से हुआ है। यह गहरी तथा महीन कणों वाली काले रंग की होती है तथा नमी के लम्बे समय तक सुरक्षित रख लेती है। कपास की कृषि के लिए उपयुक्त होने के कारण इसे कपास वाली मिट्टी भी कहा जाता है। महाराष्ट्र मध्यप्रदेश, गुजरात तथा तमिलनाडु जैसे गर्म शुष्क क्षेत्रों में काली मिट्टी पाई जाती है।

3. लाल मिट्टी

अग्नि चट्टानों से बनी लाल मिट्टी भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी तथा पूर्वी भागों के ऊष्ण तथा सामान्यत : शुष्क भागों में पाई जाती है। लोह-आक्साइड की अधिकता के कारण यह मिट्टी लाल रंग की होती है। यह मिट्टी कम ऊपजाऊ होती है। लेकिन खादों की सहायता से इसमें अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

4. लैटराइट मिट्टी

यह मिट्टी गर्म तथा नमी से पूर्ण प्रदेशों में मिलती है जहाँ अधिकतर वर्षा होती है। अधिकतर वर्षा तथा उच्च तापमान के कारण मिट्टी के ऊपर की सतह के पौष्टिक तत्व घुलकर नीचे चले जाते हैं। इस प्रक्रिया को लीचिंग कहते हैं। लोह आक्साइड की अधिकतर मात्रा के कारण यह मिट्टी भी लाल रंग की होती है। लैटराइट मिट्टी कृषि के लिए अधिक उपयोगी नहीं होती लेकिन भवन निर्माण के लिए यह अधिक लाभदायक होती है। पश्चिमी घाट, छोटानागपुर का पठार तथा उत्तरी पूर्वी राज्यों के कुछ भागों में लेटराइट मिट्टी पायी जाती है।

5. शुष्क रेतीली मिट्टी

राजस्थान तथा गुजरात के मरुस्थल क्षेत्रों में मिलने वाली इस मिट्टी को रेगिस्तानी या बलूई

मिट्टी के नाम से जाना जाता है। ह्यूमस (गली सड़ी वनस्पति) के अंश की मात्रा कम होने के कारण यह मिटट्री कृषि के लिए उपजाऊ नहीं होती।)

6. पर्वतीय मिट्टी

लोह तत्वों में धनी यह मिट्टी मुख्य रूप में हिमालय प्रदेशों में पाई जाती है। यह कम गहरी तथा पतली सतह वाली होती है। आवश्यक वर्षा करने वाले भागों में इस मिट्टी पर चाय की कृषि भी की जाती है।

भूमि अपरदन (Soil Erosion) — भूमि अपरदन एक गंभीर समस्या है। यह न केवल भारतीयों की समस्या है बल्कि संसार के अन्य भागों के लिए भी समस्या बनी हुई है। अवैज्ञानिक ढंग से कृषि करना, वृक्षों का निरन्तर काटा जाना, अधिकतर मात्रा में पशु चराना कुछ प्रमुख कारण हैं जिनके कारण भूमि अपरदन हो रहा है। भारत में भूमि अपरदन दर बहुत अधिक है। इसलिए भूमि अपरदन संभाल अब भी बहुत आवश्यक है। इसके साथ भूमि साधन को और जर्जर होने से बचाया जा सकता है। नये वृक्ष लगाने, कृषि के अच्छे ढंग अपनाने तथा पशु चराना कम करने से भूमि कटाव से बचा जा सकता है।

खनिज पदार्थ : हमने चट्टानों की उत्पत्ति के साथ सम्बन्धित क्रियाओं तथा इनके प्रकारों के बारे में पढ़ा है। ये चट्टानें कौन से पदार्थ की बनी हैं। चट्टानें बनाने वाले पदार्थ को खनिज पदार्थ कहते हैं। ये खनिज पदार्थ किसी भी देश की आर्थिकता का मापदंड हैं। जो देश खनिज संपत्ति की दृष्टि से धनी हैं वे आर्थिक तौर पर सुदृढ़ हैं। मानवीय विकास के साथ-साथ खनिज उत्पत्ति तथा इनके प्रयोग में बहुत परिवर्तन आया है।

इन खनिजों को तीन वर्गों में बाँटा गया है।

1. धातु खनिज : जिनमें धातु अंश होते हैं जैसे लोहा, ताँबा, टिन, अलमिनियम, सोना चाँदी इत्यादि।
2. अधातु खनिज : जिनमें धातु अंश नहीं होते जैसे सल्फर, अबरक, जिपस्म, फास्फेट, पोटाश इत्यादि।
3. शक्ति खनिज : वे खनिज जिन से ईंधन शक्ति, ऊर्जा इत्यादि मिलते हैं। अर्थात् जिनके द्वारा बड़े थर्मल प्लाँट, फैक्ट्रियाँ, मोटर गाड़ियाँ चलती हैं जैसे कोयला, पैट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, बिजली इत्यादि।

लोहा (Iron) : लोहे का प्रयोग एक छोटे से कील से लेकर बड़े-बड़े सागरी बेड़ों तक होता है।

सारी औद्योगिक मशीनरी, मोटर कारों, रेलों, कृषि, मशीनरी का निर्माण इसी खनिज पर आधारित है। लोहे तथा इस्पात ने औद्योगिक क्षेत्र में क्रान्ति ला दी है।

लोहा संसार के लगभग सभी महाद्वीपों में पाया जाता है। भारत में उड़ीसा, झारखंड, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक तथा गोआ मुख्य उत्पादन राज्य हैं।

ताँबा (Copper) : मानवीय इतिहास में ताँबा सबसे पहले जाना जाने वाला खनिज है। औद्योगिक पक्ष से धातुओं में लोहे के पश्चात् ताँबे का नम्बर आता है। धातु युग का आरम्भ ताँबे के प्रयोग से ही हुआ। इससे कई प्रकार के बर्तन बनाए जाते हैं। आज के युग में इसका महत्व और भी बढ़ गया है। इसका प्रयोग बिजली की सामान बनाने के लिए किया जाता है। इसे बिजली का सुचालक कहा जाता है। इस लिए बिजली की तारें अधिकत्तर ताँबे की बनाई जाती हैं। टेलिफोन केबल तारों, रेलवे इंजन, हवाई जहाज़ों तथा घड़ियों को बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है।

चिल्ली (दक्षिणी अमरीका) संसार में सबसे अधिक ताँबा पैदा करता है। दूसरा स्थान संयुक्त राज्य अमरीका (यू.एस.ए) का आता है। अफ्रीका महाद्वीप में ताँबे के काफी क्षेत्र हैं।

भारत, जापान, आस्ट्रेलिया में भी ताँबे का उत्पादन होता है। भारत में झारखंड, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश प्रांतों में भी ताँबे के भंडार हैं।

बाक्साइट (Bauxite) — बाक्साइट से एल्युमिनियम प्राप्त किया जाता है। एल्युमीनियम एक हल्के भार वाली धातु है, जिसका अधिकतर प्रयोग हवाई जहाज बनाने में किया जाता है। इसके इलावा रेलगाड़ियाँ, मोटरों, बसों, कारों तथा बिजली की तारें बनाने में भी किया जाता है। इसकी बनी वस्तुओं को जंग नहीं लगता, जिस कारण इस वस्तुओं का ज्यादा समय तक प्रयोग किया जा सकता है। इसके बर्तन भी बनाए जाते हैं।

संसार में सबसे अधिक बाक्साइट आस्ट्रेलिया में निकाला जाता है। भारत में बाक्साइट महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा झारखंड में पाया जाता है।

मैंगनीज़ (Manganese) — मैंगनीज़ भी एक बहुत महत्वपूर्ण खनिज है। इसका अधिक प्रयोग कच्चे लोहे (जो कि धरती में से निकाला जाता है) से स्टील बनाने के लिए किया जाता है। यह ब्लीचिंग पाउडर, कीड़ेमार दवाइयाँ, रंग रोगन तथा शीशा बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

रूस, जार्जिया, यूकरेन, कजाकिस्तान में मैगनीज़ के भंडार हैं इनके इलावा दक्षिणी अफ्रीका, ब्राजील (दक्षिणी अमरीका) तथा भारत मैगनीज़ के मुख्य उत्पादक हैं। भारत में मध्य प्रदेश में सबसे अधिक मैंगनीज़ प्राप्त होता है। इसके इलावा आँध्र प्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा तथा झारखंड में भी मैंगनीज़ मिलता है।

अभ्रक (Mica) : उभ्रक एक अधातु खनिज है। इसके भी बहुत से लाभ हैं, जिस कारण यह महत्वपूर्ण खनिज बन गया है। इस खनिज का प्रयोग अधिकत्तर बिजली का सामान बनाने के लिए किया जाता है। इसके इलावा इस का प्रयोग लैम्प की चिमनियाँ, रंग रोगन, राडार, रबड़ कागज़ हवाई जहाज़, मोटरें, पारदर्शी चादरों में भी किया जाता है। अभ्रक की पतली शीटें बिजली की मोटरों तथा गर्म करने वाली वस्तुओं में ताप नष्ट होने का करंट लगने से रोकने के लिए डाली जाती हैं। भारत में अभ्रक के भंडार हैं। इस क्षेत्र में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है। भारत में मिलने वाला अभ्रक बढ़िया प्रकार का है। अभ्रक उत्पन्न करने वाले मुख्य प्रान्त झारखंड, बिहार, आँध्र प्रदेश तथा राजस्थान हैं। भारत बहुत सारा अभ्रक अन्य देशों को भेजता है तथा विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।

भारत में इलावा रूस, अमरीका (यू. एस. ए) ब्राजील, अर्जनटीना तथा कनेडा आदि देशों में भी अभ्रक होता है। परन्तु यह बढ़िया प्रकार का नहीं होता।

शक्ति खनिज : धरती के अन्दर शक्ति जैसे कोयला, खनिज तेल भी बहुत मात्रा में पाए जाते हैं। आज के औद्योगिक युग में शक्ति खनिजों का महत्व बहुत बढ़ा गया है। प्रत्येक उद्योग में शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। इसके इलावा घरों, होटलों, दुकानों तथा यातायात के साधनों में भी शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। जिन देशों के पास इन साधनों का अभाव है तथा कम प्रयोग होता है वे विकास की दौड़ में भी पीछे रह गए हैं।

कोयला : कोयला एक प्रमुख शक्ति खनिज है। अब कोयले का सीधी शक्ति के रूप में प्रयोग कम हो गया है। अर्थात् इससे बिजली पैदा करके शक्ति प्राप्त करने की प्रवृत्ति बढ़ गई है। एक स्थान पर कोयले से बिजली प्राप्त करके दूसरे स्थान पर आसानी से तारों द्वारा कारखानों में पहुँचानी आसान है। इस उद्देश्य के लिए प्रयोग किया जाने वाला कोयला पत्थरी कोयला है, जो प्राचीन समय में जंगलों की धरती की गहरी पर्तों में दबे रहने, धरती की गर्मी तथा ऊपर की सतहों के भार के कारण बना है। इस प्रक्रिया को करोड़ों वर्ष लग जाते हैं। इस बात तो याद रखना चाहिए कि कोयले का बहुत अधिक प्रयोग करने से जब किसी दिन इसके भंडार समाप्त हो जायेंगे, नए भंडार बनाने के लिए करोड़ों वर्ष लग जायेंगे। इसलिए इसे संकोच से प्रयोग करना चाहिए।

संसार में कोयले के अधिकत्तर भंडार 35 से 65 अक्षाँश पर दोनों अर्धगोलों में पाए जाते हैं। संसार का 9 प्रतिशत कोयले का भंडार चीन, यू. एस. ए., रूस तथा यूरोपीय देशों में है, इनके इलावा दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, उत्तरी अमरीका तथा एशिया महाद्वीप में भी कोयले के विशाल भंडाल हैं। जापान तथा थाईलैंड में भी कोयले के विशाल भंडार हैं। भारत में विश्व का 2/3 प्रतिशत कोयला उत्पादित होता है। भारत में दामोदर घाटी प्रमुख कोयला क्षेत्र है। इसके इलावा पश्चिमी बंगाल तथा मध्य प्रदेश प्राँतों में भी कोयला मिलता है।

खनिज तेल : पैट्रोलियम के नाम से जाना जाने वाला खनिज तेल कहलाता है। इसे चालक शक्ति भी कहा जाता है क्योंकि यह भी खनिजों की तरह धरती में से निकाला जात है। आजकल इसका प्रयोग इतना बढ़ा गया है कि इसको **तरल सोना** भी कहा जाता है। जैसे कि लातीनी भाषा में यह दो शब्दों पैट्रो तथा उलियम के जोड़ से बना है। पैट्रो का अर्थ है चट्टान तथा उलियम का अर्थ है तेल। इस तरह पैट्रोलियम का अर्थ है चट्टान से प्राप्त खनिज तेल। यह वनस्तपि, मृत जीव-जन्तुओं के पर्तदार चट्टानों में दब जाने के कारण बना है।

चालक शक्ति- वह शक्ति जिससे हमारे वाहन चलते हैं

जो पैट्रोल या जीड़ल हम पैट्रोल पम्पों से प्राप्त करते हैं वह हमें धरती के नीचे से इसी स्थिति में प्राप्त नहीं होता। यह अशुद्ध तथा नि:संशोधित होता है। इसे कच्चा तेल भी कहा जाता है। इस कच्चे तेल को तेल शोधक कारखानों में साफ करके इससे अनेक वस्तुएं प्राप्त की जाती हैं, जैसे पैट्रोल, डीज़ल, मिट्टी का तेल, गैस, चिकनाहट वाले तेल, ग्रीस, मोम, वैसलीन आदि।

संसार में सबसे अधिक तेल भंडार दक्षिणी पश्चिमी एशिया में हैं। इस क्षेत्र में सऊदी अरब, इरान, इराक, कुवैत, यू. ए. इ. (युनाइटिड अरब अमीरेटस) जिसमें आबूधाबी, दुबई, शारजाह, अजमान, फुजेरा, उमर-अल-कुवेन, रसल,-अलखेमा शमिल है।

याद रखने योग्य तथ्य

1. थल मण्डल के सबसे उपरीय भाग को स्याल कहते हैं जो अलमिनियम और सिलीकान से बना रहता है।
2. थल मण्डल की मैंटल पर्त सिलीकन व मैगनीशियम से तथा केन्द्रीय भाग निक्कल व लोहे से बना रहता है।
3. धरती का भूतल चट्टानों को निर्माण के आधार पर तीन प्रकार में बाँटा जाता है; अग्नि, तलछटी व रूपांतरित (कायांतरित)।
4. चटानों की टूट-फूट से जो तत्व प्राप्त होता है, मिट्टी कहलता है। मिट्टी के कई प्रकार होते हैं व उनके गुण भी अलग-अलग होते हैं।
5. खनिज पदार्थ के भंडार किसी भी देश की संपत्ति होते हैं जो देश के विकास का आधार बनते हैं।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 1-15 शब्दो में लिखें :-

1. धरती की कितनी पर्तें हैं, इनके नाम लिखो।
2. धरती पर कितनी प्रकार की चट्टानें पाई जाती हैं?
3. धरती में मैंटल भाग के बारे में लिखो।
4. धरती की स्याल पर्त को इस नाम से क्यों पुकारा जाता है?
5. धरती के आन्तरिक भाग को क्या कहते हैं? यह कौन-कौन से तत्वों की बनी हुई हैं?
6. धरती के भूमि कटाव से कैसे बचा जा सकता है।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दो।

1. अग्नि चट्टानें किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार की हैं? अन्तर्वेदी चट्टानों के बारे लिखो।
2. पर्तदार तलछटी चट्टानें किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार की हैं?
3. रूपान्तरित चट्टानों के बारे में लिखो, इन चट्टानों की प्रमुख उदाहरण दो।
4. धरती में मिलने वाले खनिज पदार्थों का वर्गीकरण करो।
5. अभ्रक किस प्रकार का खनिज है? यह कौन से काम आता है?
6. तरल सोना किसे कहते हैं? इसके बारे में संक्षेप जानकारी दें।
7. पृथ्वी पर मिट्टी का क्या महत्व है? इसके बारे में लिखो।
8. भारत में लोहा, कोयला, व पैट्रोलियम कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 125-130 शब्दों में दो।

1. धरती पर मिलने वाली चट्टानों के बारे में विस्तार से लिखें।
2. खनिज पदार्थ किसे कहते हैं? हमारी धरती पर कौन से खनिज पदार्थ मिलते हैं? इनका वर्गीकरण करो। धातु खनिजों के बारे में भी जानकारी दें।
3. शक्ति खनिज किसे कहते हैं? किसी एक शक्ति खनिज के विषय में जानकारी दें।
4. भारत में पाई जाने वाली मिट्टी की किस्मों के बारे में विस्तारपूर्वक लिखो।

क्रिया-कलाप

1. धरती का माडल बनाओ जो धरती की पर्तों को प्रदर्शित करता हो।
2. क्या भूमि अपरदन एक गंभीर समस्या है? इस विषय पर कक्षा में चर्चा की जाये।

पाठ 3
वायुमण्डल तथा तापमान

हमारी पृथ्वी पर मनुष्य तथा अन्य जीवों का रहना इसलिए संभव हो गया है क्योंकि पृथ्वी के इर्द-गिर्द वायु का आवरण है। वायु के इस आवरण को वायुमंडल कहते हैं। यह आवरण 1600 किलोमीटर तक है। परन्तु 99 प्रतिशत वायु 32 किलोमीटर तक के घेरे में ही है। धरती की सतह पर इस वायु का आवरण जमीन (थल मंडल) पानी (जल मंडल) से मिलकर जीव जगत तथा पेड़-पौधों की उत्पत्ति तथा पालन-पोषण का कार्य करता है। वायुमंडल के अंश जैसे तापमान, नमी, वायु दबाव, पवनें इत्यादि धरती पर प्राकृतिक भौतिक पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण के अंशों में वायुमंडल में सबसे अधिक परिवर्तन होता है।

प्राकृतिक पर्यावरण के अंश (मंडल) : *थल मंडल (जमीन), जलमंडल (पानी) तथा वायुमंडल (वायु) प्राकृतिक पर्यावरण के अंश हैं।*

वायुमंडल के अंश : *तापमान, नमी (वायु में जल की मात्रा वायु दबाव), हवा का भार इत्यादि वायुमंडल के अंश हैं।*

वायुमंडल की बनावट

वायुमंडल में वायु, जलवाष्प तथा धूल-कण होते हैं। धूल-कण तथा जलवाष्प भारी होने के कारण वायुमंडल की निम्न पर्तों में ही होती हैं। वायु मंडल में जैसे-जैसे ऊपर की ओर जाएं गैसों का घनत्व कम होता जाता है। गैसों की 99 प्रतिशत मात्रा नाइट्रोजन तथा आक्सीजन की होती है। बाकी सभी गैसें 1 प्रतिशत से भी कम होती हैं। जलवाष्पों तथा धूल के कणों की मात्रा ऊँचाई तथा तापमान के अनुसार अलग-अलग स्थानों पर परिवर्तित होती रहती है। वायुमंडल की केवल शुष्क वायु में गैसें निम्नलिखित अनुसार होती हैं :-

गैस	प्रतिशत मात्रा
नाइट्रोजन	*78.03%*
आक्सीजन	*20.99%*
आरगन	*0.94%*
कार्बनडॉइआक्साइड	*0.03%*
हाइड्रोजन	*0.01%*

नाइट्रोजन : अधिकतर वायुमंडल की निम्न पर्तों में होती है जो पेड़-पौधों, लताओं को जीवित रखती है।

आक्सीजन : दूसरी महत्वपूर्ण गैसे है जो जीव जन्तुओं की रक्षा करती है।

कार्बनडाइआक्साइड : तीसरी महत्वपूर्ण गैस है। यह लताओं, पौधों का उस तरह पोषण करती है जैसे आक्सीजन जीव जाति की। यह धरती के इर्द-गिर्द एक कम्बल का कार्य करती है तथा वायुमंडल से गर्मी को बाहर नहीं जाने देती।

जलकण (Water Vapour) : वायुमंडल में जलकणों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह जलवायु में परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

संवहित (Convection): *जब वायु गर्म हो जाती है तो वह फैलती है। यह हल्की होकर ऊपर उठना शुरू हो जाती है। ठँडी वायु भारी होकर नीचे बैठ जाती है जब कि गर्म वायु ऊपर उठती है तो ठंडी वायु उसका स्थान ले लेती है। इस तरह वायु चक्र शुरु हो जाता है। इसको संवहन कहते हैं।*

ये सभी गैसें धूलकण, कार्बन, नमक तथा फूलों के परागकण (पोलन दाने) को वायुमंडल की निम्न पर्तों में पकड़े रखती हैं।

वायु का प्रदूषण :-

प्रत्येक वर्ष हज़ारों टन स्थूलता वायुमंडल में जमा होती है जो प्राकृतिक नहीं होती। वायुमंडल में इस बाहर की स्थूलता को **वायु का प्रदूषण** कहते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं। ठोस तथा गैस अवस्था में। ज्वालामुखी वायु के प्रदूषण को धूल कणों के रूप में प्रदूषित करते हैं। विशेष रूप में शहरों में मानवीय गतिविधि बहुत सी ठोस गन्दगी वायु में छोड़ती है। ईंधन के जलने से कार्बन के कण धुएं के रूप में वायु में छोड़े जाते हैं। फैक्ट्रियाँ भिन्न-भिन्न कार्यों के पश्चात् वायु में धूल कण छोड़ती हैं। जिनमें एसबैस्टोल स्थूल प्रदूषण का भयंकर नमूना है।

मोटरगाड़ियों द्वारा छोड़ा गया धुंआ एक भयानक गैसीय प्रदूषण है। वाहन

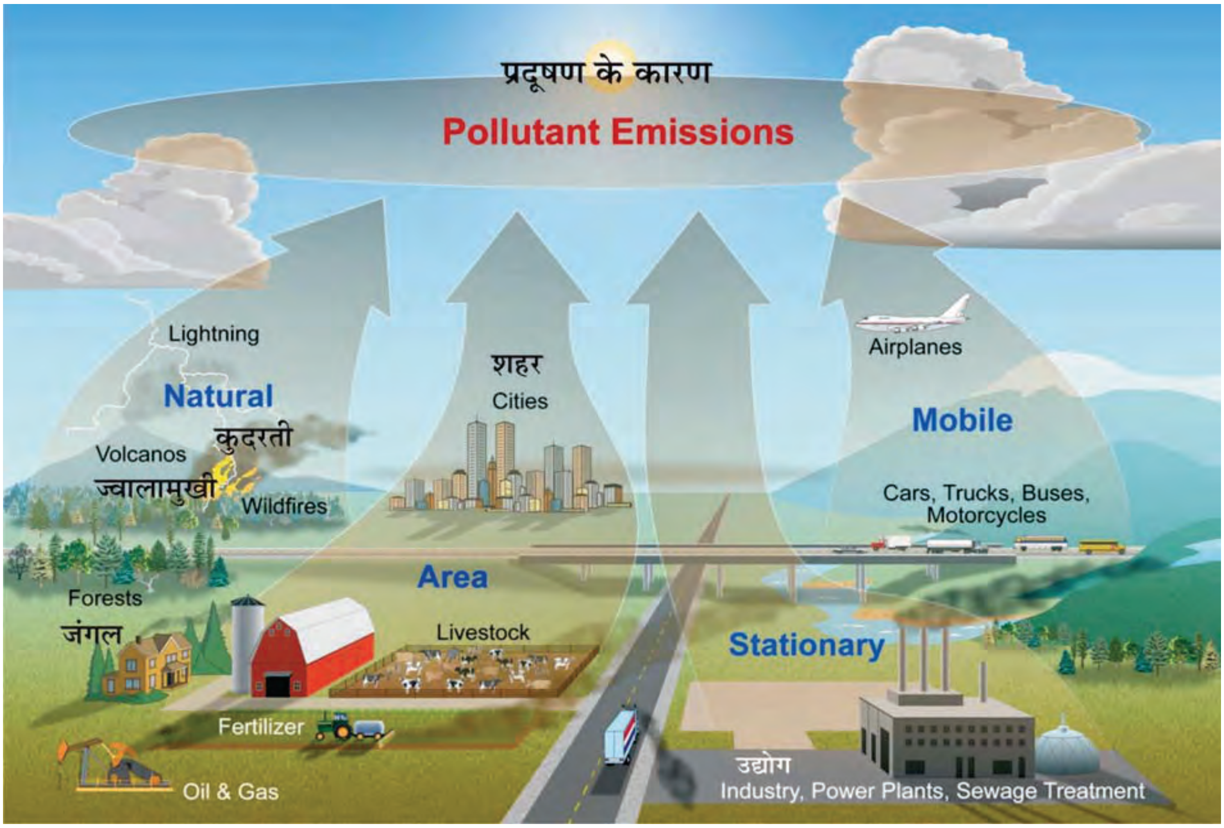

चित्र 3.1 वायु का प्रदूषण

कार्बनमोनोआक्साइड छोड़ते हैं, जो बहुत जहरीली होती है। आजकल जैसे कि धूँ-धूँ-धुँध या समोग (Smog) जिसमें धुंध तथा धुंआ मिला होता है जिसके विषय में आप समाचार पत्रों में बहुत पढ़ते हो। (Smog) समोग कुछ ऐसे स्थूलों का मिश्रण होता है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होता है। वायु के प्रदूषण का मुख्य कारण वायु में ओजोन की मात्रा का कम होना है, जो कि अधिक वाहनों का यातायात के कारण होता है। विशेष तौर पर वे स्थान जहाँ बहुत सी फैक्ट्रियाँ हैं तथा लोग वहाँ वाहनों द्वारा काम करने के लिए जाते हैं।

यद्यपि सरकार द्वारा गन्दी हवा वाले स्त्रोतों पर नियंत्रण रखने के लिए नियम बनाए जाते हैं फिर भी हमें इन्हें नियन्त्रित करने के लिए प्रयास करने चाहिएं।

वायुमंडल का ढाँचा

पिछले कुछ वर्षों में वायुमंडल सम्बन्धी बहुत जानकारी इकट्ठी हो गई है। यह जानकारी अन्तरिक्ष (Space) में भेजे जाने वाले उपग्रहों (Satellites) द्वारा इकट्ठी की गई है। उसके आधार पर वायुमंडल को निम्नलिखित पर्तों में बाँटा गया है :-

1. अशांति मंजल (Troposphere)
2. समताप मंडल (Stratosphere)
3. मध्य मंडल (Mesophere)
4. तापमंडल (Thermosphere)

1. अशान्ति मंडल (Troposphere)

वायुमंडल की सबसे नीचे की सतह को अशान्ति मंडल कहते हैं। धरती के इर्द–गिर्द इसका आकार अंडे जैसा होता है। इसकी औसतन ऊँचाई 12 किलोमीटर होती है। भूमध्य रेखा पर इसकी मोटाई 16–18 किलोमीटर तथा ध्रुवीय क्षेत्रों में 6–8 किलोमीटर भी होती है। मौमस सम्बन्धित क्रियाएँ जैसे वर्षा, अन्धेरी, बादल, तूफान इत्यादि इस सतह में आते हैं। जलकणों की अधिकतर मात्रा भी इसी सतह में होती है। इस सतह में ऊपर जाने से तापमान कम होती जाता है। यह तापमान $6^0 - 5^0$ सैलस्यिस प्रति किलोमीटर की दर से कम होता है। सारे वायुमंडल की 75 प्रतिशत वायु इस सतह में पाई जाती है।

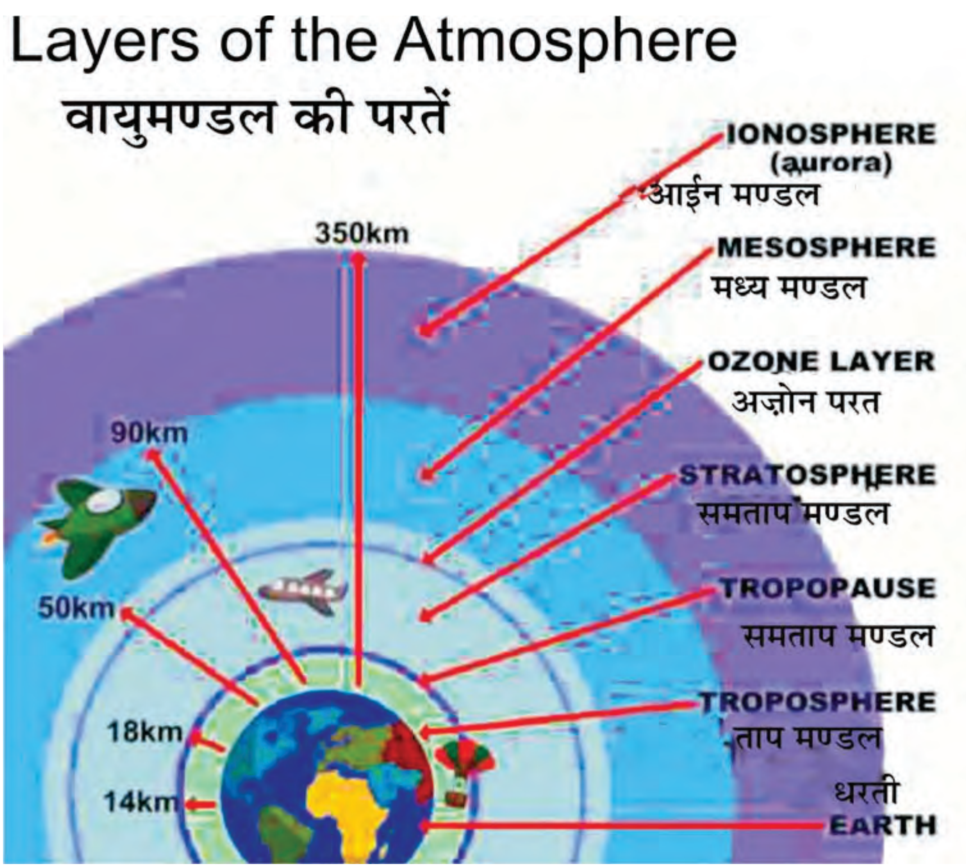

चित्र 3.2 वायुमंडल की पर्तें

2. समताप मंडल (Stratosphere)

अशान्ति मंडल से ऊपर की सतह को समताप मंडल कहते हैं। इस सतह की ऊँचाई मौसम तथा दूसरी अनुसार बदलती है। गर्मी की ऋतु में शरद् ऋतु की तुलना में अधिक ऊँचाई से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा पर इसकी ऊँचाई 15 किलोमीटर और 60^o अक्षांश पर 10 किलोमीटर से आरम्भ होती है।

इस भाग की मुख्य विशेषताएँ हैं – कम घनत्व वाली हवा, निम्न परन्तु बराबर बना रहने वाला तापमान तथा बादलों का अभाव अर्थात् आकाश साफ रहता है, जिस कारण वायु की घुमावदार लहरें नहीं होतीं। समताप मंडल सामान्यत : 50 से 55 किलोमीटर तक फैला हुआ होता है। इन विशेषताओं करके वायुमंडल का यह भाग हवाई जहाजों की उड़ान के अधिक योग्य नहीं होता। इस भाग में ही ओज़ोन (ozone) गैसे सूर्य से आने वाली परा-बैंगनी (ULTRAVIOLET) किरणें जो जीव-जगत के लिए हानिकारक होती हैं, को अपने में समा लेती है।

इस मंडल की ऊपर की सीमा को समताप सीमा (Tropapause) कहते हैं। यह सामान्यत : 50 किलोमीटर की दूरी पर होती है।

3. मध्य मंडल (Mesosphere)

समताप मंडल के ऊपरी वायुमंडल की सतह को मध्यवर्ती मंडल कहते हैं। यह सतह 50 से 80 किलोमीटर तक फैली हुई है। इस पर्त में ऊँचाई से तापमान कम होता जाता है तथा वायुमंडल के 80 किलोमीटर पर 90^o सैल्सियस हो जाता है।

मध्यवर्ती मंडल की ऊपर की सीमा को मध्यवर्ती सीमा कहा जाता है। इस सीमा से आगे तापमान ऊपर की ओर बढ़ना आरम्भ हो जाता है।

4. तापमंडल (Thermosphere)

मध्यवर्ती सीमा के ऊपर तापमान बढ़ना आरम्भ हो जाता है, इसलिए इसे तापमंडल कहते हैं। इसे आयन मंडल भी कहते हैं, जोकि वायुमंडल के 100 किलोमीटर से 300 किलोमीटर तक की ऊंचाई तक इस मंडल में बिजली के अणु बहुत पाए जाते हैं, जो रेडियो तरंगों (Radio Waves) को धरती पर वापिस आने में सहायता करते हैं। इनके आधार पर वायरलैस संचार (Wireless Communication) काम करता है।

वायुमंडल की बाहर की पर्त को बाहरी मंडल (Exosphere) कहते हैं। इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं है। फिर भी विश्वसनीय है कि इस सतह में बहुत कम घनत्व (संघनता) वाली गैसें हाइड्रोजन तथा हीलियम होती हैं।

5. मौसम तथा जलवायु

मौसम (Weather) तथा जलवायु (Climate) किसी विशेष समय पर आधारित शब्द हैं।

अर्थात् किसी स्थान के किसी विशेष समय की गर्मी, वायु में नमी होना, पवनें, बादलों का होना या वर्षा को मौसम कहते हैं। सुबह, दोपहर, रात्रि का मौसम भिन्न होता है। कई बार अचानक मौसम परिवर्तित हो जाता है। जैसे कि सामान्यत : कहा जाता है कि मौसम खराब हो गया, मौसम बहुत सुहावना है।

जलवायु (Climate) : किसी स्थान की किसी ऋतु में उपर्युक्त मौसमी हालातों के लम्बे समय तक (35 से 40 वर्ष तक) के रिकार्ड को जलवायु कहते हैं।

तापमान (Temperature)

हवा में मिली हुई गर्मी को उसका तापमान कहा जाता है। हवा के तापमान की तरह किसी वस्तु या जीव के अन्दर की गर्मी को भी तापमान कहते हैं। तापमान बढ़ता घटता रहता है। रात्रि और दिन के तापमान में भी अन्तर होता है। इसी प्रकार मौसम के अनुसार तापमान बदलता है।

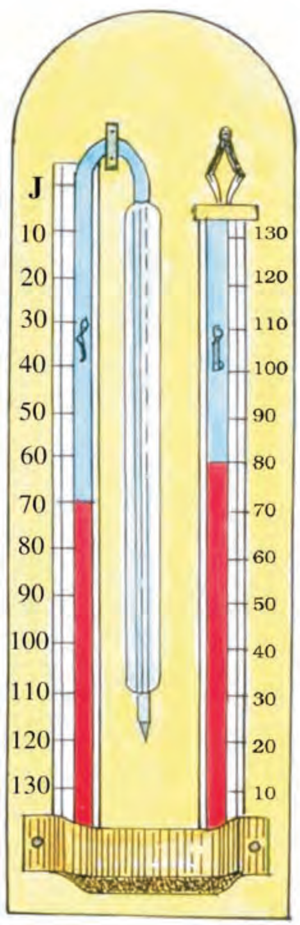

चित्र 3.3 उच्चतम तथा न्यूनतम थर्मामीटर

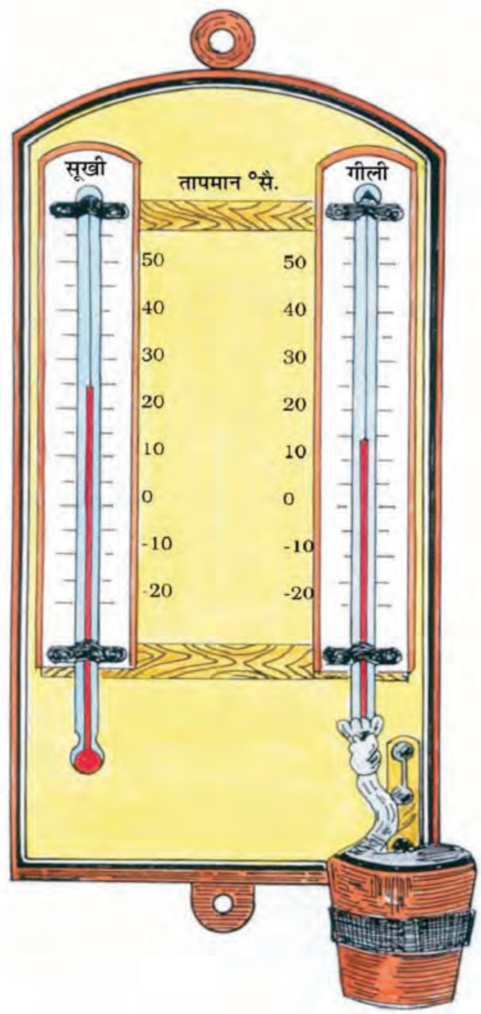

चित्र 3.4 गीली व सूखी गोली का थर्मामीटर

धरती के भिन्न-भिन्न भागों में भी एक ही समय पर अलग-अलग तापमान होता है। इसी कारण किसी स्थान का मौसम दूसरे स्थान के मौसम से भिन्न होता है। यद्यपि किसी स्थान के मौसम को कई तत्व प्रभावित करते हैं परन्तु वायु का तत्व मुख्य तत्व है।

धरती को तापमान देने वाले सिर्फ दो ही स्त्रोत हैं। सूर्य तथा धरती का अन्तरीव। इनमें से सूर्य का महत्व अधिक है। सूर्य के द्वारा मिलने वाली गर्मी पहले धरती को गर्म करती है। फिर वायुमंडल गर्म होता है। किसी जगह के तापमान पर बहुत से तत्व प्रभाव डालते हैं। इन तत्वों को जानने से पहले यह ज्ञात करना भी आवश्यक है कि तापमान कैसे कि तापमान कैसे मापा जाता है।

तापमान को उपर्युक्त थर्मामीटरों द्वारा मापा जाता है तथा डिग्रियों में बताया जाता है। तापमान मापने के लिए दो पैमाने प्रयोग किये जाते हैं, एक सैल्सियस तथा दूसरा फार्नहीट। सैल्सियस पैमाने के अनुसार पानी 0^o पर जम जाता है तथा फार्नहीट मैपाने पर 32^o पर जमता है। सैल्सियस के अनुसार पानी 100^o पर उबलता है तथा फार्नहीट पैमाने के अनुसार 212^o उबलता है।

तापमान को प्रभावित करने वाले तत्व : धरती पर तापमान प्रभावित करने वाले निम्नलिखित तत्व हैं।

(क) अक्षाँश (Latitude)- किसी स्थान का तापमान इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ कितना सूर्य ताप प्राप्त होता है। भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ने के कारण तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाते हैं तापमान कम होता जाता है क्योंकि सूर्य की किरणें ध्रुवों पर तिरछी पड़ती हैं। यह निम्नलिखित चित्र से स्पष्ट है :-

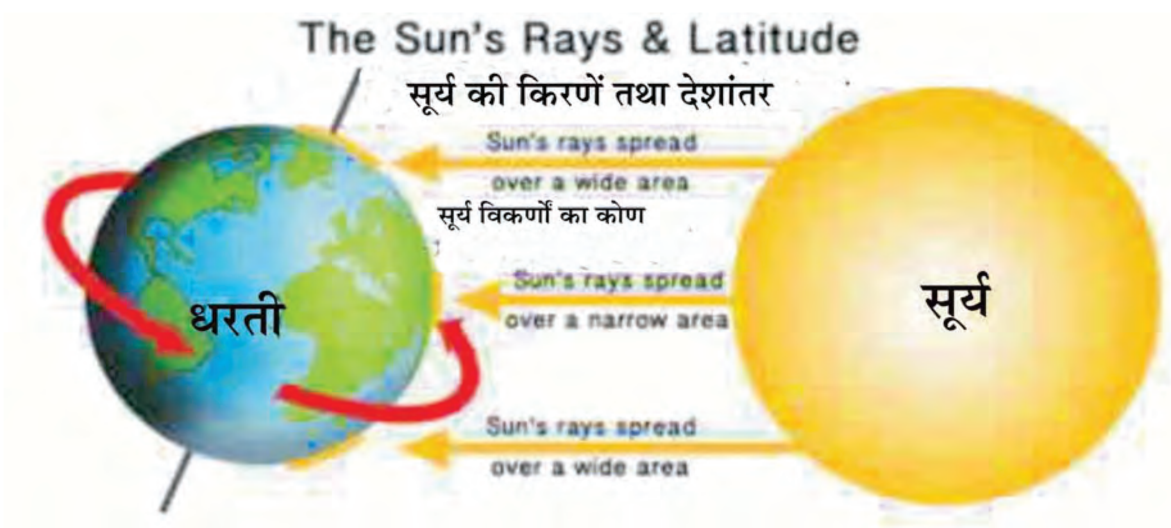

चित्र 3.5 सूरज की किरणों का कोण

(ख) समुद्र तल से ऊंचाई (Altitude) : जैसे–जैसे हम ऊपर की ओर जाते हैं तापमान कम होता जाता है। ऊंचाई के साथ तापमान कम होने के कारण सूर्य से प्राप्त होने वाली गर्मी जो कि पहले धरती को गर्म करती है फिर वायुमंडल गर्म होता है। इसलिए धरती की सतह के पास का वायुमंडल अधिक गर्म हो जाता है। ऊपर वाला कम। यही कारण है कि जब हम पहाड़ पर ऊपर की ओर जाते हैं तो तापमान कम होता जाता है।

(ग) समुद्र से दूरी (Distance from the sea) : समुद्र के साथ के स्थानों पर तापमान न ही अधिक होता है और न ही कम। परन्तु जैसे–जैसे ही हम समुद्र से दूर जाते हैं तापमान अन्तर बढ़ता जाता है। जैसे कि आपने पढ़ा होगा कि पानी देरी से गर्म व देरी से ठंडा होता है। इसलिये समुद्रों के पास तापमान सम रहता है।

(घ) धरती की सतह की प्रकार (Land Surface) : धरती पर किस प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। धरती की सतह पर बर्फ जमी हुई है या शुष्क मरुस्थल है इत्यादि तत्व तापमान की बांट को प्रभावित करते हैं। जहाँ बर्फ जमी होती है, सूर्य की ओर से जाने वाले गर्मी परावर्तित हो जाती है तथा धरती का तापमान कम ही रहता है। शुष्क मारुस्थलों में तापमान दिन के समय अधिक होता है क्योंकि रेत शीघ्र गर्म हो जाती है। जहाँ घने जंगल होते हैं वहाँ धरती का तापमान अधिक नहीं बढ़ता।

(ड़) ढलानों की दिशा (Slope and Aspect) : यदि ढलानों की दिशा सूर्य की ओर होगी तो वे अधिक गर्म होती हैं जो ढलानें सूर्य से विपरीत होती हैं वहाँ सूर्य की किरणें टेढ़ी पड़ती हैं। इसलिए वे कम गर्म होती हैं।

2. बादलों का होना तथा वर्षा : यदि आकाश में बादल छाये हुए हों तो सूर्य की गर्मी धरती पर पहुंचने से पहले बादलों में समा जाती है। परिणामस्वरूप धरती का तापमान निम्न रहता है। वर्षा होने के पश्चात् हवा में जलवाष्प बढ़ जाते हैं। ये जल वाष्प बहुत सी गर्मी को समा लेते हैं।

3. समुद्री धाराएँ : जिस क्षेत्र के पास से गर्म धाराएँ गुजरती हैं वे क्षेत्र गर्म हो जाते हैं तथा जहाँ से ठंडा धाराएँ गुजरती हैं वे क्षेत्र ठँडे हो जाते हैं। जिसके बारे में विस्तृत जानकारी पुस्तक में आगे दी जायेगी। समुद्रों के पाठ को पढ़ने के पश्चात् तुम जान जाओगे कि यह कैसे सम्भव है।

याद रखने योग्य तथ्य

1. प्राकृतिक पर्यावरण के तीन अंश (मंडल) होते हैं ; थल मंडल, जल मंडल व वायु मंडल। वायु मंडल के अंशों में वायु, तापमान व नमी शामिल होते हैं?
2. वायु मंडल की मुख्य गैस नाईट्रोजन है जिसकी मात्रा *78.03%* है। आक्सीजन *20.99%,* है शेष कार्बनडाइआक्साईड, आरगन तथा हाईड्रोजन होती है।

3. वायु मंडल के सब से निम्न भाग को अशान्ति मंडल कहते हैं। उसके उपर समताप मंडल मध्य मंडल तथा ताप मंडल होता है।

4. तापमान को नापने के लिये उच्चतम तथा न्यूनतम थर्मामीटर प्रयोग किया जाता है जबकि हवा में नमी का नाम करने के लिये गीली व सूखी गोली का थर्मामीटर प्रयोग किया जाता है।

5. किसी भी स्थान का तापमान वहाँ की समुद्र तल से ऊँचाई, समुद्र से दूरी, सतह की किसम, वर्षा व सागरी धाराओं पर आधारित होता है।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1-15 शब्दों में दो :

1. वायुमंडल किसे कहते हैं?
2. भूगोल में हमे वायुमंडल का अध्ययन क्यों करते हैं?
3. वायुमंडल की पर्तों (सतहों) के नाम लिखो।
4. बाहरी मंडल से क्या भाव है?
5. वायुमंडल में गैसों के अतिरिक्त और कौन-कौन से अंश पाए जाते हैं?
6. हवा का प्रदूषण किसे कहते हैं?
7. तापमान क्या होता है और इसको नापने के लिए कौन से पैमाने प्रयोग किये जाते हैं?
8. भू-मध्य रेखा पर तापमान अधिक क्यों होती है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दो।

1. हवा के प्रदूषण के मुख्य कारकों की संक्षेप में जानकारी दो।

2. हवा के बीच की मुख्य गैसों के मिश्रण के बारे में लिखो।

3. वायु मंडल के ओज़ोन गैस कहाँ पाई जाती हैं तथा इसका क्या महत्व है।

(ग) निम्नलिखित में रिक्त स्थान भरो :

1. जैसे-जैसे पर्वतों के ऊपर चढ़ते जाते हैं। तापमान .... जाता है।
2. धरती तथा तापमान के मुख्य स्त्रोत .... तथा .... हैं।
3. ओज़ोन गैस .... किरणों को अपने में समा लेती है।
4. बिजली के अणु .... मंडल में पाए जाते हैं।
5. वायरलैस संचार .... तरंगों के आधार पर कार्य करता है।
6. वायुमंडल में सबसे अधिक मात्रा .... गैस की होती है।

क्रिया-कलाप

1. हवा का प्रदूषण रोकने के लिए कौन से नियमों का पालन करना चाहिये, चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगायें।
2. वायुमंडल के भिन्न-भिन्न मंडलों को प्रदर्शित करता हुआ चित्र बनाओ।

पाठ 4
महासागर

पृथ्वी पर जल और स्थल का विभाजन एक समान नहीं है। पृथ्वी के तल का दो तिहाई से अधिक भाग खारे जल ने घेर रखा है अर्थात् पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत क्षेत्रफल पर जल है। स्थल भाग तो केवल 29 प्रतिशथ के लगभग ही है। जल के इन महान खण्डों को महासागर कहा जाता है। प्रत्येक महासागर फिर कई छोटे-छोटे खण्डों में बंटा हुआ होता है। इस छोटे खण्ड को सागर कहते हैं। यह उसी प्रकार ही है जैसे किसी गांव अथवा नगर में कई मोहल्ले होते हैं। महासागर एक महानगर है जिसके छोटे-छोटे खण्डों अथवा मोहल्लों को सागर कहा जाता है। हिंद महासागर में अरब सागर तथा खाड़ी बंगाल दो छोटे सागर हैं।

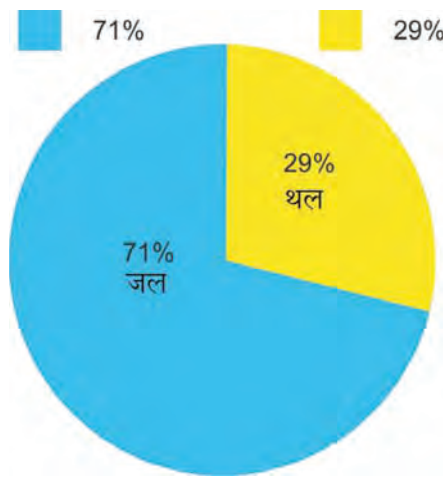

चित्र 4.1 पृथ्वी पर जल-थल का विभाजन

हमारी पृथ्वी पर पाँच महासागर हैं :

प्रशान्त महासागर, अंध (अटलांटिक) महासागर, हिंद महासागर, उत्तरी ध्रुव महासागर (आर्कटिक महासागर) तथा दक्षिणी ध्रुव महासागर (अंटा-र्कटिक महासागर)। ये सभी महासागर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनका जल एक दूसरे में आता जाता रहता है। नीचे महासागरों का क्षेत्रफल दिया गया है :-

महासागर	क्षेत्रफल (करोड़ वर्ग कि.मी.)
1. प्रशान्त महासागर	16.6
2. अंध महासागर	8.2
3. हिंद महासागर	7.3
4. आर्कटिक महासागर	1.3
5. अंटार्कटिक महासागर	–

इस सभी महासागरों में से **प्रशान्त महासागर** सबसे बड़ा ही नहीं अपितु गहरा भी है। यह इतना गहरा है कि संसार की सबसे ऊंची पर्वत चोटी माऊंट एवरेस्ट भी इसमें डूब सकती है। **अंध महासागर** आकार में इससे लगभग आधा है। **हिंद महासागर** का नाम हमारे देश के नाम पर रखा गया है क्योंकि भारत एक उपमाहद्वीप है और यह महासागर भारत के दक्षिण में स्थित है। सबसे छोटा महासागर **हिम महासागर** (आर्कटिक महासागर) है। उत्तर पूर्व में स्थित होने के कारण यह सागर बर्फ की तरह जमा रहता है। इसी कारण इसको हिम महासागर कहते हैं। सागरीय जल सदैव खारा होता है। इसमें अनेक खनिज लवण घुले होते हैं। महासागर का तल एक जैसा समतल नहीं होता। यह कहीं से ऊंचा है तो कहीं से नीचा।

ताज़ा और नमकीन पानी : पृथ्वी की सतह पर पानी नदियों, नहरों, झीलों, सागरों और महासागरों के रूप में पाया जाता है। इन पानी में कई प्रकार के लवण मिले होते हैं जो कि जीव जगत और पेड़ पौधों के बढ़ने के लिए बहुत आवश्यक हैं। इन स्त्रोतों में पानी कई साधनों से आता है जैसे वर्षा द्वारा, बर्फ से ढकी चोटियों के पिघलने से नदियों के द्वारा पानी मैदानों में पहुँचता है। यह बहता हुआ पानी ताजा होता है। इसी प्रकार कुछ पानी धरती के भीतर चला जाता है। उसके अतिरिक्त नमक धरती की परत के ऊपर रह जाते हैं। अर्थात् इस प्रकार पानी छन जाता है इस पानी को ट्यूब वैल और पंपों के द्वारा धरती के नीचे से ऊपर लाकर नलों के द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।

ताज़ा पानी : *वर्षा, पिछली हुई बर्फ, नदियों, नहरों, ट्यूबवैल से प्राप्त पानी ताजा होता है।*

सूर्य की गर्मी से धरती का जल वाष्पित होता है। पानी के स्थिर स्त्रोतों झीलों, सागरों, महासागरों का पानी लगातार वाष्पीकृत होता रहता है। इस कारण उसमें लवणों की मात्रा बढ़ जाती है। इस कारण कई समुद्र तटों पर खाने वाले नमक का व्यवसाय बहुत प्रचलित है। समुद्र में नमक की मात्रा बहुत अधिक होती है क्योंकि उसमें स्थित कार्बोनिट मछलियों और समुद्री जीवों का भोजन बन जाता है इसलिए यह पानी नमकीन होता है। आमतौर पर समुद्रों में नमक की मात्रा 35-00 प्रतिशत होती है। (एक लीटर पानी में 35 ग्राम नमक होता है)

नमकीन पानी : *झीलों, सागरों और समुद्रों का पानी नमकीन होता है। सबसे अधिक नमक की मात्रा मृतसागर में है। यह सागर चारों ओर से धरती से घिरा हुआ है।*

जिन सागरों में नमक की मात्रा बहुत अधिक होती है उनमें अकुशल तैराक भी तैर सकता है। यह हैरानी वाली बात है न!

सागर के किनारे पर कभी खड़े होकर देखिए। सागर का जल कभी भी शान्त नहीं होता। यह हर समय गतिमान रहता है। इसकी अस्थिरता में ही इसका जीवन है। इसमें हर समय लहरें, तरंगें और ज्वार भाटा उठता रहता है। इस उथल-पुथल द्वारा ही सभी सागरों का जल एक दूसरे में प्रविष्ट होता रहता है। महासागर के जल की तीन गतियां हैं :-

1. लहरें (तरंगें) 2. सागरीय धाराएं 3. ज्वारा भाटा

लहरें

सागर का पानी सदा ऊंचा-नीचा रहता है ऋतु की दशानुसार यह गति कभी तेज़ हो जाती है, कभी मंद। इससे लहरें या तरंगें पैदा होता हैं। लहरों का जन्म पवन की गति के कारण होता है। जल-कण ऊपर-नीचे दौड़ते हैं जिससे सागर में सिलवटें पड़ी हुई नज़र आती हैं।

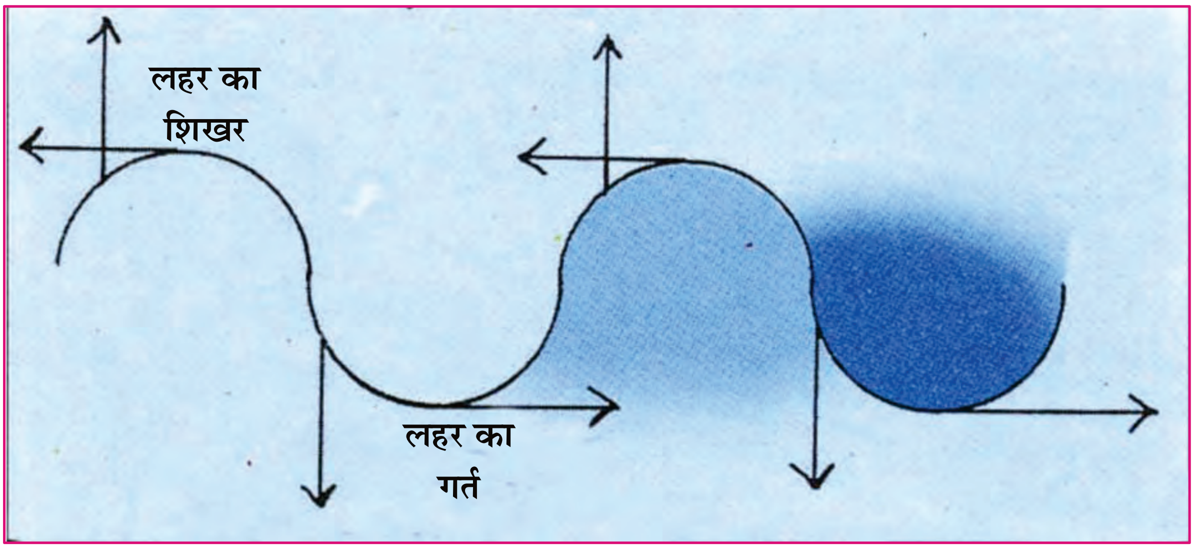

चित्र 4.2 लहरें

यदि सागर में तूफान आ जाए, तो ये लहरें भयानक तरंगों का रूप धारण कर लेती हैं। कई बार ये समुद्री जहाज़ों को भी नष्ट कर देती हैं। लहरें किनारे की चट्टानों को भी तोड़ कर सागर तल पहुंचा देती हैं।

सागरीय धाराएं

सब सागर का जल किसी निश्चित दिशा की ओर चल पड़ता है तो उसे महासागरीय धारा कहा जाता है। महासागर में बड़े नियमित ढंग से जल एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान की ओर चलता रता है। इन महान जलधाराओं के कारण ही समस्त महासागरों का जल एक दूसरे में

आता जाता रहता है। धारा की गति मंद भी हो सकती है और तेज़ भी। प्रायः इनकी गति 2 कि. मी. से 10 कि. मी. प्रति घंटा तक हो सकती है।

महासागरीय धाराएं दो प्रकार की होती हैं :-

1. उष्ण धाराएं 2. शीत धाराएं

यदि यह महासागरीय नदी भूमध्य रेखा की ओर से आर रही हो तो यह भूमध्य रेखा का गर्म प्रभाव अपने साथ ले जाएगी। यदि कोई धारा शीत क्षेत्रों की ओर से गर्म क्षेत्रों को जाती है तो वह ठंडे क्षेत्रों का प्रभाव अपने साथ ले जाएगी। इस प्रकार उष्ण तथा शीत जलधाराओं का निर्माण हो जाता है।

भूमध्य रेखा की ओर से आने वाली धाराएं गर्म होती हैं और भूमध्य रेखा की ओर जाने वाली धाराएं सदा ठंडी।

यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि उष्ण धारा का जल अधिक गर्म नहीं होता। इसी प्रकार शीत धारा का जल भी इतना शीत नहीं होता। यह केवल अपने निकटवर्ती जल से अधिक गर्म या ठंडा लगता है। उष्ण प्रायः ऊपर तथा ठंडी धारा नीचे प्रवाहित होती है।

ये धाराएं क्यों चलती हैं? सागर के जल को एक नदी का रूप कौन देता है? इन प्रश्नों का उत्तर उन पवनों के पास है जो निरंतर बारह महीने एक ही दिशा में चलती रहती हैं। व्यापारिक एवं पश्चिमी पवनें सागरों के ऊपर निरंतर एक दिशा में चलने के कारण सागरीय जल को भी अपने साथ ले चलती हैं। इस प्रकार इन प्रचलित पवनों की दिशा में ही सागरीय धाराएं चल पड़ती हैं।

समस्त ग्लोब पर सूर्य का ताप भी एक समान नहीं पड़ता। भूमध्य रेखा के ऊपर तापमान सदा अधिक रहता है। मगर ज्यों-ज्यों हम ध्रुवों की ओर जाएं तापमान घटता जाता है। तापमान की इस भिन्नता के फलस्वरूप ही महासागरीय धाराओं का जन्म हो जाता है। भूमध्य रेखा के क्षेत्र में सागरीय जल गर्म होने के कारण हल्का हो जाता है। हल्का पानी ऊपर उठता है। शीत क्षेत्र का जल भारी होकर नीचे इस रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिए उष्ण क्षेत्र की ओर दौड़ने लगता है।

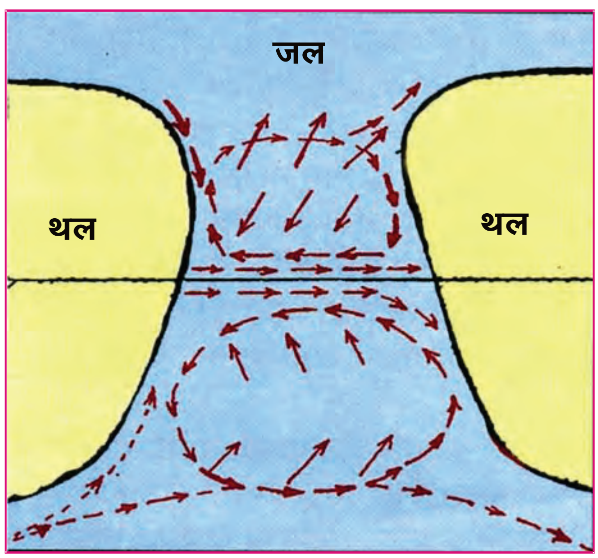

चित्र 4.3 धाराएँ कैसे उत्पन्न होती हैं?

स्याथी पवनों और तापमान की भिन्नता के अतिरिक्त महासागर का खारापन भी महासागरीय धाराओं को जन्म देता है। समस्त महासागरों में लवण की मात्रा समान नहीं होती। जिन सागरों में लवण अधिक है, उनका जल भारी हो जाता है। कम लवण वाले सागरों का जल हल्का रह जाता है। इस प्रकार हल्का और भारी जल बना जाता है। हल्का जल ऊपर उठता है, परन्तु भारी जल नीचे जाने का प्रयत्न करता है। इस गति से महासागरीय धाराएं (Ocean Currents) जन्म लेती हैं।

जब ये धाराएं महाद्वीपीय तटों के साथ-साथ चलती हैं तो महाद्वीपीय बनावट महासागरीय धाराओं को नई दिशा देती है। पृथ्वी की दैनिक गति भी इन धाराओं की गति को प्रभावित करती है।

संसार के मानचित्र को देखिए। समस्त महासागरों में जल-धाराएं बहती हैं। इन धाराओं का अध्ययन अब हम महासागरों के अनुसार ही करेंगे।

अन्ध महासागर की धाराएं

संसार के मानचित्र में अंध महासागरीय धाराओं के चक्र को देखिए। आप देखेंगे कि इनके दो निश्चित चक्र हैं : एक भूमध्य रेखा के ऊपर में और दूसरा दक्षिण में।

उत्तरी अंध महासागरीय चक्र – भूमध्य रेखा के खण्ड में व्यापारिक पवनें चलती हैं। ये पवनें सदैव पूर्व दिशा की ओर से आती हैं। इनके साथ-साथ ही भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्षिण की

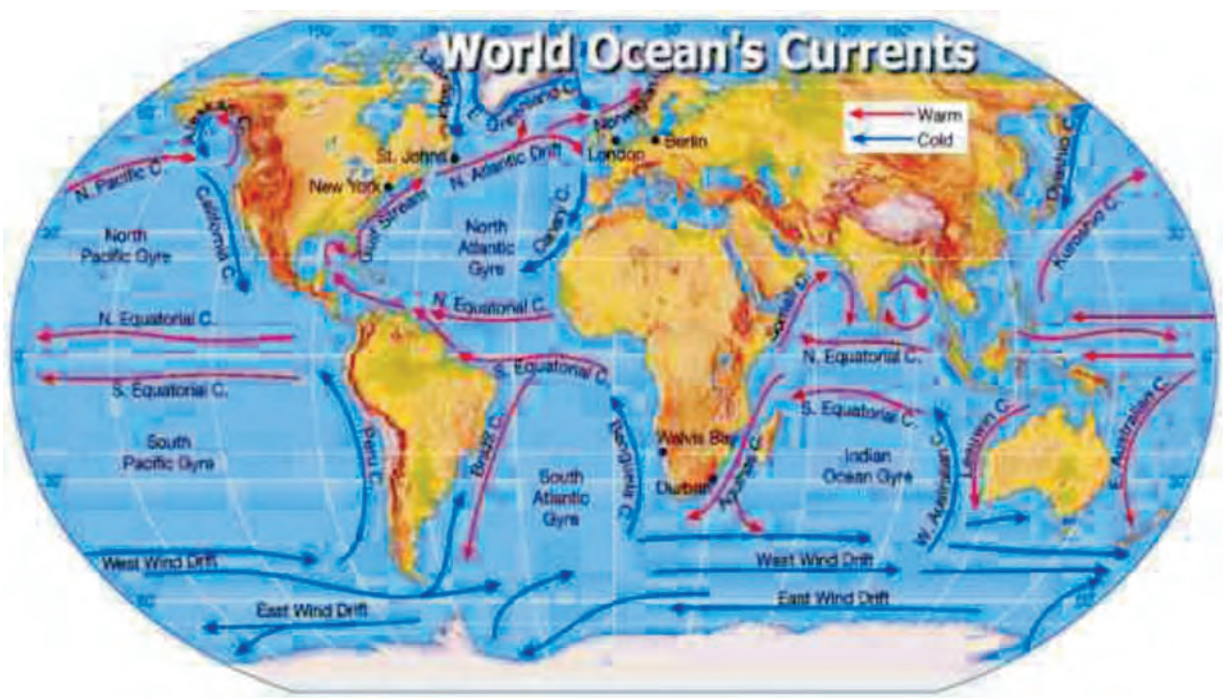

चित्र 4.4 संसार की प्रमुख महासागरी धाराएँ

ओर महासागरीय जल पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होने लगता है। उत्तरी भूमध्य रेखा की उष्ण धारा अफ्रीका की ओर से अमेरिका की ओर बहती है। उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट के साथ-साथ यह उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है। यहां इसका नाम खाड़ी की धारा है। अंग्रेज़ी में इसे गल्फ स्ट्रीम (Gulf Stream) कहा जाता है।

खाड़ी की धारा : यह धारा मैक्सिको की खाड़ी से प्रारम्भ होकर न्यूफाउण्डलैंड के टापुओं तक पहुंचती है। यह संसार की सबसे महत्वपूर्ण उष्ण जल-धारा है। इसकी चौड़ाई 400 कि.मी. तक है। इस का जल 5 कि.मी. प्रति घंटा की गति से चलता है। इसका प्रभाव संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी तट की जलवायु पर पड़ता है। न्यूफाउण्डलैंड के टापुओं के पास उत्तर की ओर से एक शीत धारा इसके साथ आ मिलती है। इसका नाम **लैब्रेडार** की धारा है। इन शीत और उष्ण धाराओं के मिलाप के फलस्वरूप यहां घनी धुंध पैदा हो जाती है। उत्तर ध्रुवों की ओर से आने वाले बर्फानी टीले यहां पहुंच जाते हैं। इसी प्रकार ये नीचे पहुंच कर सागरीय जहाज़ों के लिए खतरा नहीं बनते। पूर्वी ग्रीनलैंड की ओर से भी एक शीतधारा इसमें आ मिलती है।

अब यह धारा पश्चिमी पवनों के प्रभाववंश पूर्व दिशा की ओर हो लेती हैं। इसका नाम उत्तरी अंध महासागरीय धारा पड़ जाता है। यह उष्ण धारा बर्तानिया के उत्तर-पश्चिम की ओर से होती हुई सुदूर नार्वे-स्वीडन के ठंडे देशों तक पहुंचती है। इसके उष्ण प्रभाव के फलस्वरूप ही नार्वे के मछेरे दूर तक मछलियां पकड़ने चले जाते हैं। इसी उष्ण प्रभाव के कारण ही सर्दी की ऋतु में पश्चिमी योरुपीय देशों की पश्चिमी बन्दरगाहें खुली रहती हैं। यदि यह धारा यहां न होती तो जम जाने से ये बन्दरगाहें बंद हो जातीं।

योरुप के निकट से एक धारा दक्षिण की ओर चलती जाती है। इसका नाम कनेरी की धारा है। यह शीत जल की धारा है जो उत्तरी अफ्रीका के उत्तर पश्चिमी तट के पास से गुजरती है। भूमध्य रेखा की धारा के साथ मिलकर चक्र पूरा कर देती है। इस प्रकार यह धारा-चक्र घड़ीवत दिशा में ही चलता है। इस चक्र के बीच महासागरों का जो भाग आ जाता है उसको **सारागासो सागर** कहा जाता है।

दक्षिण अंध महासागरीय चक्र – इस ओर भी उत्तरी चक्र की तरह जल-धाराओं का एक निश्चित चक्र है। परंतु यह चक्र घड़ीवत विपरीत दिशा में चलता है। दक्षिणी भूमध्य रेखा की धारा जब पूर्व से पश्चिम की ओर अग्रसर होती है तो दक्षिणी अमेरिका के पसार से टकरा कर दो भागों में विभक्त हो जाती है। एक भाग तो उत्तरी चक्र से जा मिलता है। दूसरा भाग अमेरिका तट के साथ-साथ दक्षिण की ओर बढ़ता है। इसे **ब्राज़ील की धारा** कहा जाता है। दक्षिण की ओर से शीत जल की धारा इसमें आकर मिलती है। इसे **फाकलैण्ड** की धारा कहा जाता है। फिर यह धारा पश्चिमी पवनों के **प्रभावाधीन** पूर्व की ओर मुड़ती है। इसे **पश्चिमी पवनों का झाल** कहा जाता है। यह शीत जल महान धारा है जो समस्त ग्लोब के इर्द-गिर्द ही चक्कर काटती है।

इसका कारण यह है कि दक्षिणी महाद्वीपों के नीचे खुला महासागर है तथा कोई रुकावट नहीं। इस झाल में से ही एक शीत धारा दक्षिणी अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ-साथ उत्तर की ओर जाती है। इसका नाम **बैंगुएला की धारा** है। **उत्तरी भूमध्य रेखी धारा** तथा **दक्षिणी भूमध्य रेखी धारा** के बीच **विरोधी भूम्धय रेखी धारा** पश्चिम से पूर्व की ओर चलती है।

प्रशान्त महासागर की धाराएं

इन धाराओं के भी दो चक्र हैं :-

1. **उत्तरी चक्र** - भूमध्य रेखा के साथ-साथ व्यापारिक पवनों के अधीन पूर्व से पश्चिम की ओर उत्तरी भूमध्य रेखा की धारा बहती है। पूर्वी द्वीप-समूह के पास पहुँच कर यह उष्ण धारा उत्तर की ओर बढ़ती है। यहां इसका नाम कुरोशीवो की धारा है। इसको **जापान की धार** भी कहा जाता है। उत्तर की ओर से शीत **कामचटका की धारा,** (ओखोत्सक की धारा) दक्षिण की ओर आती है तथा करोशिवो की धारा से जा मिलती है। पश्चिमी पवनों के अधीन यह समूह प्रवाह पूर्व की ओर बढ़ता है। इसे **उत्तरी प्रशान्त महासागरीय** धारा कहा जाता है। उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट से टकरा कर यह दक्षिण की ओर मुड़ती है। इसका नाम **कैलीफोर्निया** की धारा है। ध्रुवों की ओर से जाने के कारण यह शीत जल की धारा है।

2. **दक्षिणी चक्र** - दक्षिणी भूमध्य रेखा की धारा व्यापारिक पवनों के अधीन दक्षिणी अमेरिका से आस्ट्रेलिया के पूर्व की ओर बढ़ती है। यह पूर्वी आस्ट्रेलिया की धारा जब न्यूज़ीलैंड के टापुओं के पास पहुँचती है तो पश्चिमी पवनों की झाल से जा मिलती है। दक्षिणी अमेरिका के पास इसकी एक शाखा उत्तर की ओर बढ़ती है। यहां इसका नाम **पेरु की धारा** है। इसको **हैम्बोलट** की धार भी कहा जाता है। यह शीत जल की धारा है जो भूमध्य रेखा की धारा के साथ मिलकर चक्र पूरा कर देती है। प्रशान्त महासागर में भी विरोधी भूमध्य रेखी धारा चलती है।

हिंद महासागर की धाराएं

हिंद महासागर की धाराएं इतनी निश्चित एवं नियमित नहीं है जितनी कि प्रशान्त महासागर की धाराएं हैं। इसका मुख्य कारण महासागर में चलने वाली मौसमी पवनें हैं। ये पवनें गर्मी में दक्षिणी-पश्चिमी दिशा से मगर सर्दी में उत्तर-पूर्वी दिशा से चलती हैं। इस परिवर्तन के कारण सागरीय धाराएं भी ऋतु के अनुसार अपनी दिशा बदल लेती हैं। दक्षिणी गोलार्द्ध में धाराओं का चक्र अधिकतर निश्चित है। भूमध्य रेखा की उष्ण धारा पूर्वी द्वीप के पास से अफ्रीका के पूर्वी तट की ओर बढ़ती है। इस तट के साथ-साथ यह धारा दक्षिण की ओर जाती है। यहां इसका नाम **मौंजमबीक की धारा** है। मैलगासी टापू के पूर्व से एक शाखा दक्षिण की ओर आती है। इसका नाम **अगुलहास धारा** है। ये दोनों धाराएं पश्चिमी पवनों की झाल के साथ मिलकर पूर्व की ओर

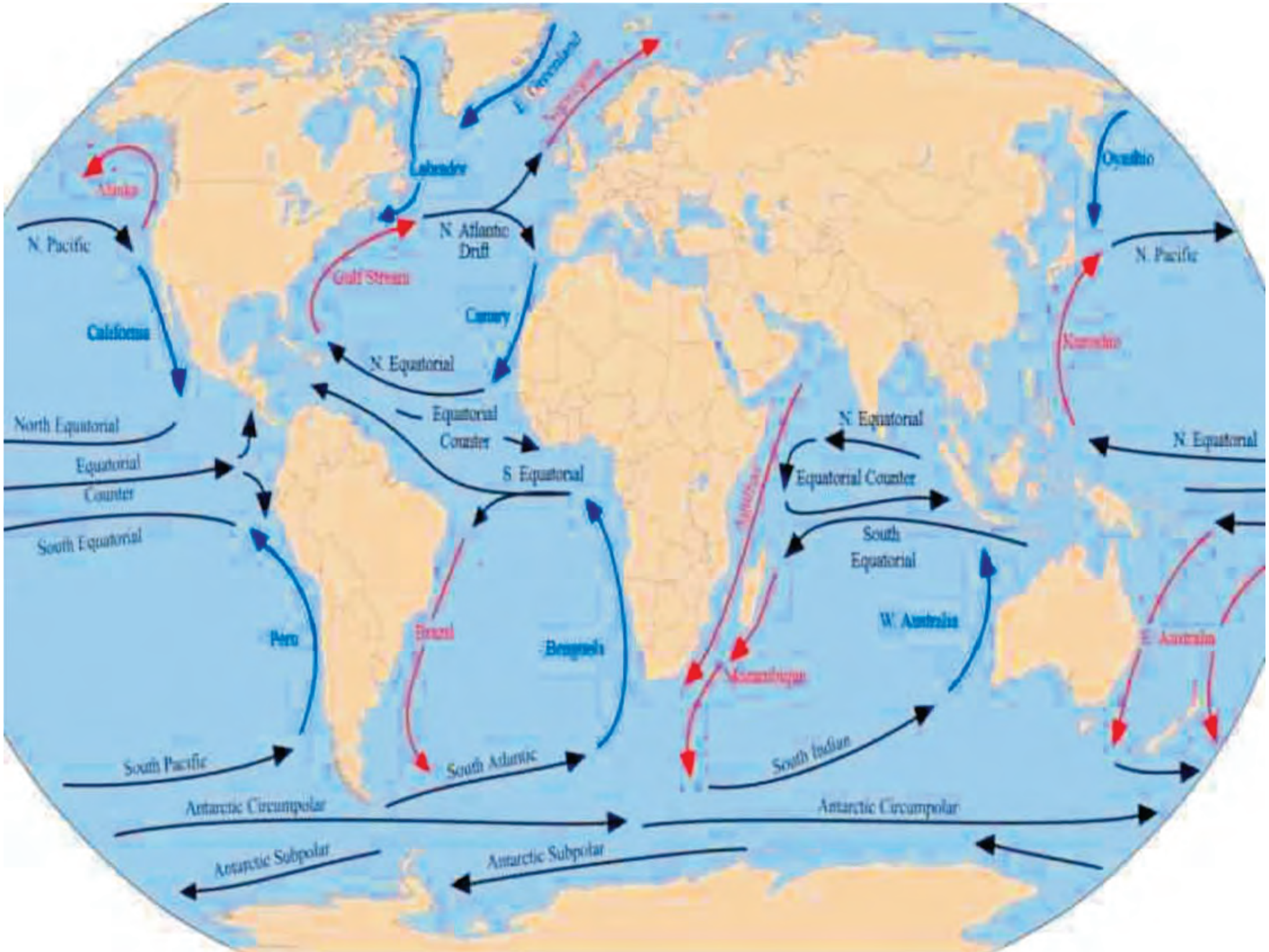

चित्र 4.5 प्रशांत महासागर की धाराएँ

बढ़ती हैं। आस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट के पास से पश्चिमी आस्ट्रेलिया की शीत धारा उत्तर की ओर भूमध्य रेखी धारा से जा मिलती है।

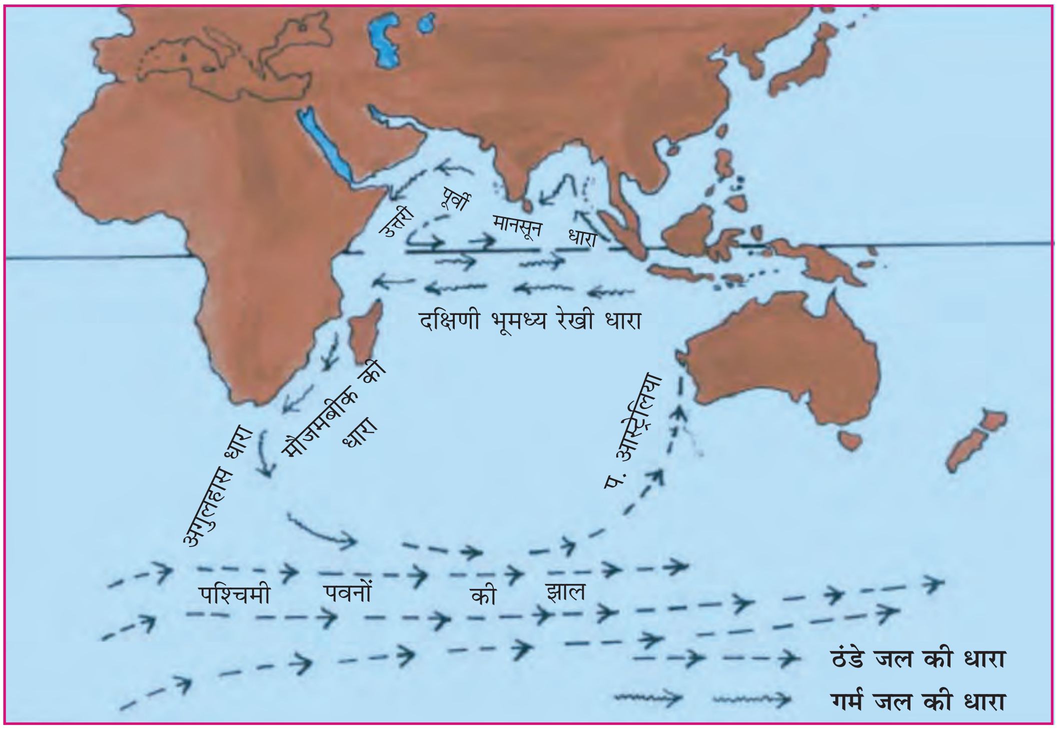

चित्र 4.6 हिन्द महासागर सर्दियों की धाराएँ

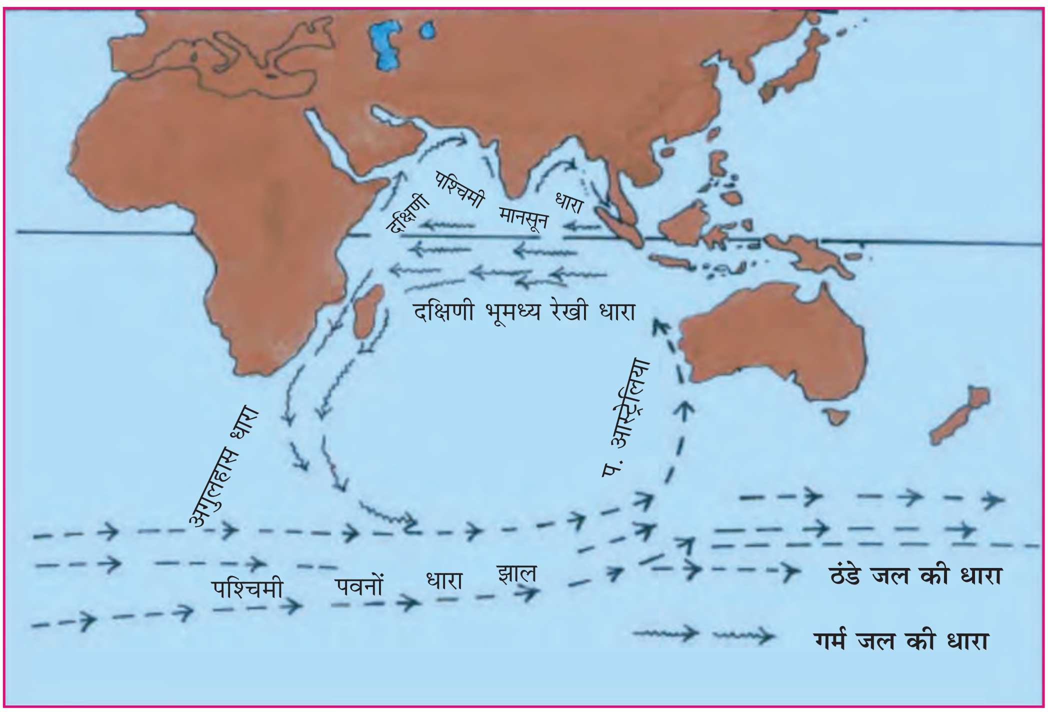

चित्र 4.7 हिन्द महासागर गर्मियों की धाराएँ

धाराओं का जलवायु पर प्रभाव

आपने पढ़ा है कि सागरीय धाराएं दो प्रकार की होती हैं - उष्ण और शीत। ये धाराएं महाद्वीप के तटवर्ती भागों के पास चलती हैं। इन धाराओं का प्रभाव पड़ोसी देशों की जलवायु पर पड़ता है। उष्ण धाराएं अपने निकटवर्ती क्षेत्रों के तापमान को बढ़ा देती हैं, परंतु शीत धाराएं अपने निकट के स्थानों को ठंडा बना देती हैं।

जब पवनें उष्ण धाराओं के ऊपर से गुजरती हैं तो ये नमी को खूब चूस लेती हैं और फिर जब ये तटवर्ती भागों में पहुंचती हैं तो काफी वर्षा करती हैं, परंतु जब कोई पवन शीत धारा के ऊपर से गुज़रती है तो ये ठंडी और शुष्क हो जाती है। संसार में जहां-जहां भी शीत धाराएं गुजरती हैं उनके पड़ोस में मरुस्थल बन गए हैं। इन मरुस्थलों के नाम ढूंढो।

जिस स्थान पर उष्ण एवं शीत धाराएं आपस में मिलती हैं वहां घनी धुंध पैदा हो जाती है। प्रमाण के रूप में उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट के पास न्यूफाउण्डलैंड के निकट लैब्रेडार की शीत धारा तथा खाड़ी के उष्ण धारा आपस में मिल कर घनी धुंध पैदा करती हैं। धाराओं के चित्र में से ऐसे ही अन्य स्थान ढूंढो जहां उष्ण एवं शीत धाराएं आपस में मिलती हैं।

जलवायु के इलावा महासागरीय धाराएं जहाजरानी पर भी प्रभाव डालती हैं। सागरीय बेड़े प्राय : धाराओं की दिशा में चलते हैं, जिससे उनकी गति बढ़ जाती है और ईंधन भी कम लगता है।

उष्ण धाराएं बड़े-बड़े हिम टीलों को भी पिघला देती हैं। इस प्रकार जहाजों के लिए ये टीले खतरा नहीं बनते।

ज्वार भाटा

सागरीय तट के समीप रहने वाले लोग जानते हैं और प्रतिदिन देखते हैं कि सागर का जल नियमित रूप से दिन में दो बार चढ़ता है और दो बार ही उतरता है। तटवर्ती भागों में कुछ घंटों तक पानी निरंतर चढ़ता जाता है। एक निश्चित ऊंचाई प्राप्त करने के पश्चात यह जल उतरने लगता है। यह उतार और चढ़ाव 24 घंटों में दो बार होता है। महासागर के इस उतार-चढ़ाव को ही **ज्वार-भाटा** कहा जाता है। जब सागर का जल चढ़ता है उसे **ज्वार** और जब यह जल उतरता है तो उसे **भाटा** कहा जाता है।

हमारी पृथ्वी पर विशाल सागर हैं। जब चन्द्रमा इन सागरों पर अपने गुरुत्वाकर्षण बल का प्रभाव डालता है तो पानी चन्द्रमा की ओर बढ़ने लगता है। वैज्ञानिकों के विचार है कि सागरों में ज्वार भाटे का कारण चन्द्रमा की **आकर्षण** शक्ति है। वैसे तो सूर्य भी जल को अपनी ओर

खींचता है, मगर दूरी के कारण यह महासागर में ज्वार भाटा पैदा नहीं कर सकता,.परंतु यदि सूर्य का आकर्षण चन्द्रमा के आकर्षण के साथ मिल जाए तो ज्वार बहुत ऊंचा हो जाता है।

ज्वार भाटे की ऊंचाई सदैव एक–सी नहीं रहती। यह कभी बहुत ऊँची हो जाती है और कभी बहुत नीची। जब ऊंचाई सबसे ज्यादा हो तो उसे **बड़ा ज्वार भाटा** कहा जाता है, परंतु जब साधारण से थोड़ी ऊँचाई हो तो उसे **लघु ज्वार भाटा** कहा जाता है।

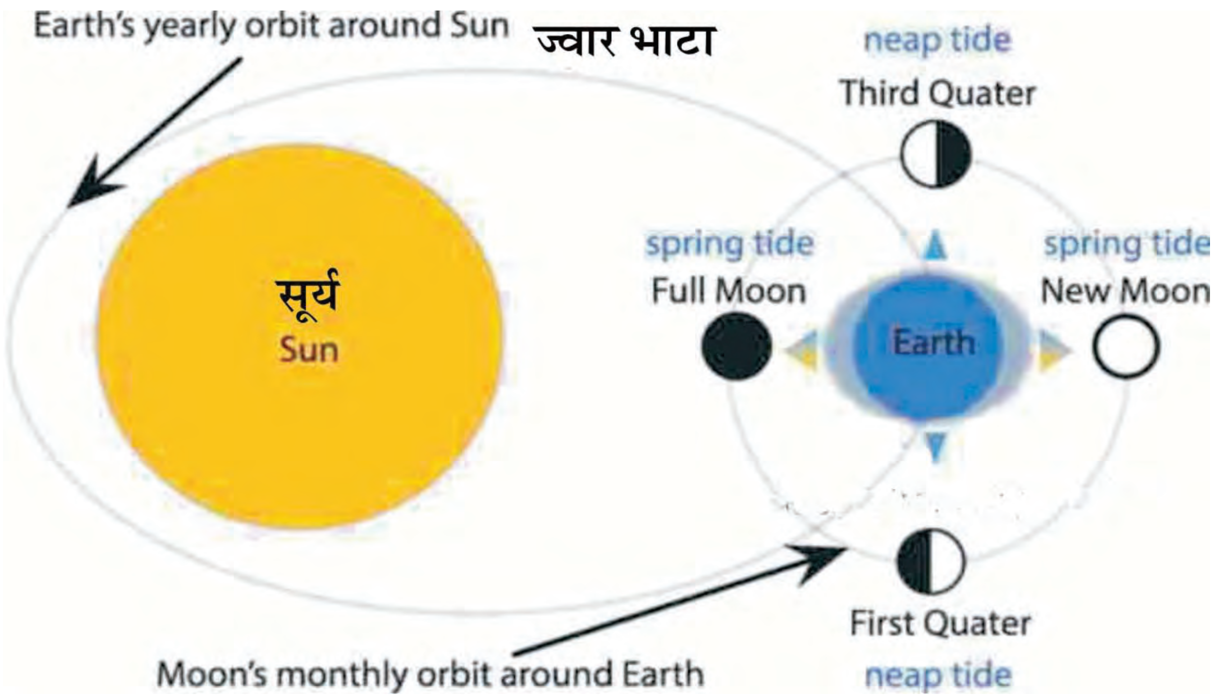

चित्र 4.8 छोटा ज्वारभाटा

बड़ा ज्वार भाटा

बड़े ज्वार भाटा के समय सागरीय पानी का चढ़ाव बहुत अधिक होता है। ऐसा सदैव पूर्णिमा अथवा अमावस के दिन ही होता है। इसका कारण यह है कि इन दोनों स्थितियों में सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी एक ही सीध में आ जाते हैं। इस स्थिति में सूर्य और चन्द्रमा दोनों मिलकर महासागरीय जल को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस प्रकार दोहरे आकर्षण के कारण जल में बहुत बड़ा उछाल आता है जिसे बड़ा ज्वार भाटा कहा जाता है।

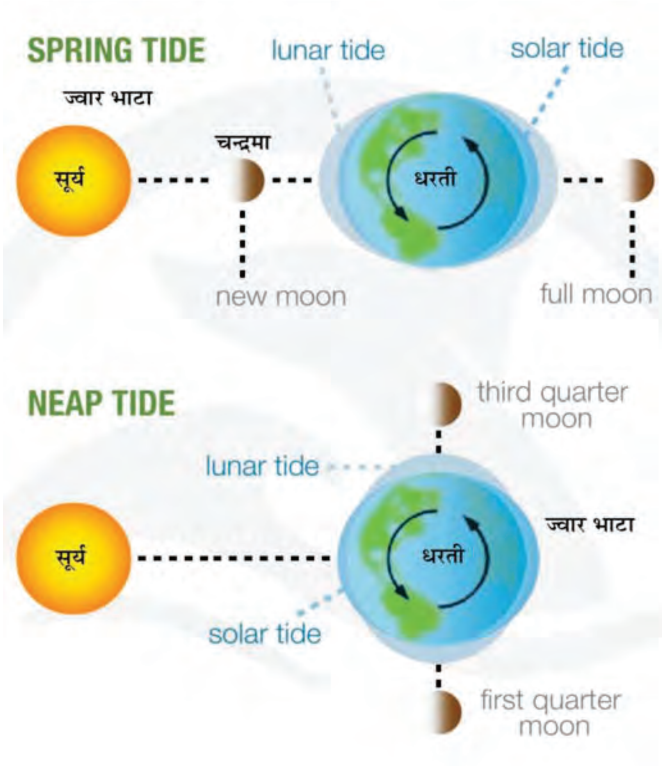

चित्र 4.9 बड़ा ज्वारभाटा

लघु ज्वार भाटा

छोटा ज्वार भाटा नीचा होता है। यह चन्द्रमा की सातवीं और इक्कीसवीं तिथि को आता है। इस स्थिति में चन्द्रमा, पृथ्वी और सूर्य एक दूसरे से 90^{0} का कोण बनाते हैं। सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से जल को अपनी ओर खींचता है तथा चन्द्रमा अपनी ओर खींचता है। चन्द्रमा जल के ज्यादा नजदीक होने के कारण जल चन्द्रमा की ओर ही उछलता है। मगर यह उछाल इतना ऊंचा नहीं होता क्योंकि सूर्य का आकर्षण दूसरी दिशा से होता है जैसा कि चित्र 6.8 में दर्शाया गया है।

मनुष्य और ज्वार भाटा

ज्वार भाटा हमारी कई प्रकार से सेवा भी करता है। इन उछालों के कारण नदियों के मुहानों में से मिट्टी और कीचड़ बहता रहता है। इस प्रकार इन तटों पर स्थित बन्दरगाहों में मिट्टी नहीं जमती। अतः जहाज दूर तक अन्दर आ सकते हैं।

बड़े एवं भारी जहाज दूर गहरे सागरों में खड़े इन ज्वार भाटों की इन्तजार करते रहते हैं। जब जल में चढ़ाव आता है तो जहाज उसके साथ ही बन्दरगाहों तक पहुँच जाते हैं। बन्दरगाहों पर माल को उतार कर वे फिर ज्वार भाटे की प्रतीक्षा करते हैं, ताकि सागर की ओर वापिस जाया जा सके।

कोलकाता की बन्दरगाह हुगली के किनारे सागर से काफी दूरी पर है। यदि सागरों में ज्वार भाटा न आता तो जहाज कभी भी कोलकाता तक न पहुँच पाते। इसी प्रकार लन्दन बन्दरगाह भी टेम्ज नदी के तट पर है। यहां भी जहाज तभी पहुंचते या वापिस आ जाते हैं, जब सागर में ज्वार भाटा आ जाता है।

अब मनुष्य ने इस ज्वार भाटों से शक्ति प्राप्त करने की योजना भी बना ली है। संसार में शक्ति की कमी की आपूर्ति के लिए हमें सागरों की ओर ही देखना होगा।

सुनामी : सुनामी (Tsunami) शब्द को अंग्रेज़ी में (Soo-nah-mee) बोला जाता है। यह जापानी शब्द है जो दो शब्दों, (Tsu) जिसका अर्थ है तट/किनारा और nami जिसका अर्थ है पानी का ऊँचा और लम्बा उछाल, की संधि से बना है। इस प्रकार सुनामी का अर्थ है–समुद्र के तट पर टकराने वाली लम्बी, ऊँची समुद्री लहरें। ये लहरें समुद्र की सतह पर आने वाले भूचाल के कारण उत्पन्न होती हैं। ये केवल एक ही समुद्री लहर नहीं होती, बल्कि सामूहिक समुद्री लहरों की एक के बाद दूसरी उठने वाली पानी की लहरें होती हैं। इनकी गति इतनी तीव्र होती है कि समुद्री सतह पर तट के निकट इनकी चाल 800 किलोमीटर प्रति घंटा होती है। कई स्थानों पर इनके चलने की गति इतनी तीव्र हो जाती है कि ये 100 फुट तक ऊँची हो जाती हैं, जिससे

चित्र 4.10 सुनामी द्वारा विनाश

समुद्री तट पर बसने वाले देशों के जान-माल की काफी हानि हो जाती है। अर्थात् समुद्री किनारों पर रहने वाले मनुष्य, पशु, इमारतों और सभी को अपने साथ बहाकर ले जाती हैं। जापान में आई सुनामी ने दुनिया भर में दहशत फैला दी है। इस सुनामी से जापान को जान-माल की काफी हानि हुई है।

26 दिसम्बर, 2004 में आई सुनामी लहरें

26 दिसम्बर, 2004 को हिन्द महासागर में जबरदस्त सुनामी लहरें आईं। ये समुद्री सतह 9.0 की रिक्टर स्केल पर भूचाल आने के कारण आईं जिनका मुख्य केन्द्र इण्डोनेशिया का पश्चिमी तट था। कुछ घँटों में ही इन लहरों ने हिन्दमहासागर के 11 देशों में तबाही का ताण्डव मचा दिया। कई लोग बह गये, कई घर डूब गये और समुद्र तट पर अफ्रीका से लेकर थाईलैंड तक कई देश प्रभावित हुए।

एक अनुमान के अनुसार भारत सरकार का लगभग 5322 करोड़ रुपये के जान-माल का नुकसान हुआ। भारत में सबसे अधिक तमिलनाडु और उसके बाद केरल, आँध्र प्रदेश और पुदुच्चेरी में भी बहुत नुकसान हुआ। इससे दो लाख से अधिक लोग पर मर गये और इससे भी अधिक लोग बेघर हो गये।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1-15 शब्दों में दो :

1. सागर का जल खारा क्यों होता है?
2. न्यूफाउण्डलैंड के पास हर समय घनी धुंध क्यों रहती है?
3. खाड़ी की धारा के मार्ग का वर्णन करो।
4. उत्तरी शांत महासागरीय चक्र की मुख्य धाराओं के नाम लिखो।
5. 'सुनामी' से क्या अभिप्राय है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दें :-

1. बड़े ज्वार भाटे तथा लघु ज्वार भाटे में क्या अन्तर है?
2. गर्म धारा तथा ठंडी धारा में क्या अन्तर है?
3. हिन्दमहासागर की धाराएं इतनी निश्चित तथा नियमित क्यों नहीं?
4. 'ज्वार भाटा जहाज़ों के लिए बड़ा लाभदायक सिद्ध होता है।' कैसे?
5. बड़ा ज्वारभाटा पूर्णिमा तथा अमावस को क्यों आता है?
6. खाड़ी की धारा यूरोप की जलवायु पर क्या प्रभाव डालती है?
7. सागरी लहरों तथा धाराओं में क्या अन्तर है?
8. सुनामी से सम्बन्धित किसी स्थान का वृत्तांत लिखो।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 125-130 शब्दों में दें :-

1. महासागरीय धाराएं क्यों चलती हैं? इनका किसी देश की जलवायु पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. अन्धमहासागरीय धाराओं का वर्णन विश्व के मानचित्र में दर्शाकर करें।
3. शांत महासागर की धाराओं का वर्णन विश्व के मानचित्र में दर्शाकर।
4. ज्वार भाटा कैसे उत्पन्न होता है? चित्र बनाकर स्पष्ट करें।
5. जलधारा क्या है? इनकी उत्पत्ति के क्या कारण हैं?

पाठ 5

प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य जीव

किसी स्थान की प्राकृतिक वनस्पति से भाव उन लताओं, पौधों, जड़ी बूटियों तथा वृक्षों से है जो अपने आप, मनुष्य के प्रयास के बिना उग जाते हैं। प्राकृतिक वनस्तपि (Natural Vegetation) किसी स्थान के धरातल (मिट्टी की किस्म) जलवायु के कुल मिलाकर प्रभाव को प्रदर्शित करता है। प्राकृतिक वनस्तपि मनुष्य के लिए बहुमूल्य साधन हैं। इनसे कई प्रकार की लकड़ी के इलावा बाँस, कागज़ बनाने वाले घास, गोंद, गंदा बरोजा, तारपीन, लाख, चमड़ा रंगने के लिए छिलका आदि प्राप्त होते हैं। जंगलों की लकड़ी पर अनेक उद्योग आधारित हैं। इमारती लकड़ी के इलावा यह फर्नीचर, खेलों का सामान, सागरी बेड़े, रेलों के डिब्बे तथा स्टीमर, कागज़, प्लाईवुड, सामान डालने वाली पेटियाँ बनाने के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं।

वन अप्रत्यक्ष तौर पर हमारी सहायता करते हैं। पर्यावरण में महत्वपूर्ण योगदान डालते हैं। वृक्ष कार्बनडाइऑक्साइड लेकर आक्सीजन छोड़ते हैं। वर्षा करवाने में सहायता करते हैं, तापमान को बढ़ने नहीं देते। बाढ़ तथा भूमि कटाव को रोकते हैं तथा भूमि के अन्दर पानी रिसने में सहायता करते हैं। वन मरुस्थलों के फैलाव पर रोक लगाते हैं तथा जंगली जानवरों और पक्षियों को आवास (Habitat) प्रदान करते हैं।

संसार में लगभग 30 प्रतिशत स्थल क्षेत्र वनों से घिरा हुआ है। परन्तु भिन्न-भिन्न देशों में इस प्रतिशत में भिन्नता है। कई देश इस साधन में बहुत अमीर हैं तथा वन उनकी आर्थिकता का महत्वपूर्ण भाग हैं। उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका तथा रूस में वन क्षेत्र अधिक है जब कि एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीप में कम है।

विश्व में बढ़ रही जनसंख्या का वनों पर बुरा प्रभाव पड़ा रहा है। मानव कृषि योग्य भूमि को प्राप्त करने के लिए पूर्व एतिहासिक काल से वनों को काटता रहा है जिसके कारण धरती से निरन्तर वन कम होते जा रहे हैं। यदि इसी गति से प्राकृतिक वनस्पति तथा वनों का नाश होता रहा तो एक दिन ऐसा भी आयेगा कि लकड़ी किसी भी मूल्य पर नहीं मिलेगी। संसार मरुस्थल का रूप धारण कर लेगा। इसलिए वनों की संभाल की जाये तथा वृक्ष काटने के साथ-साथ वृक्ष लगाए भी जाएं।

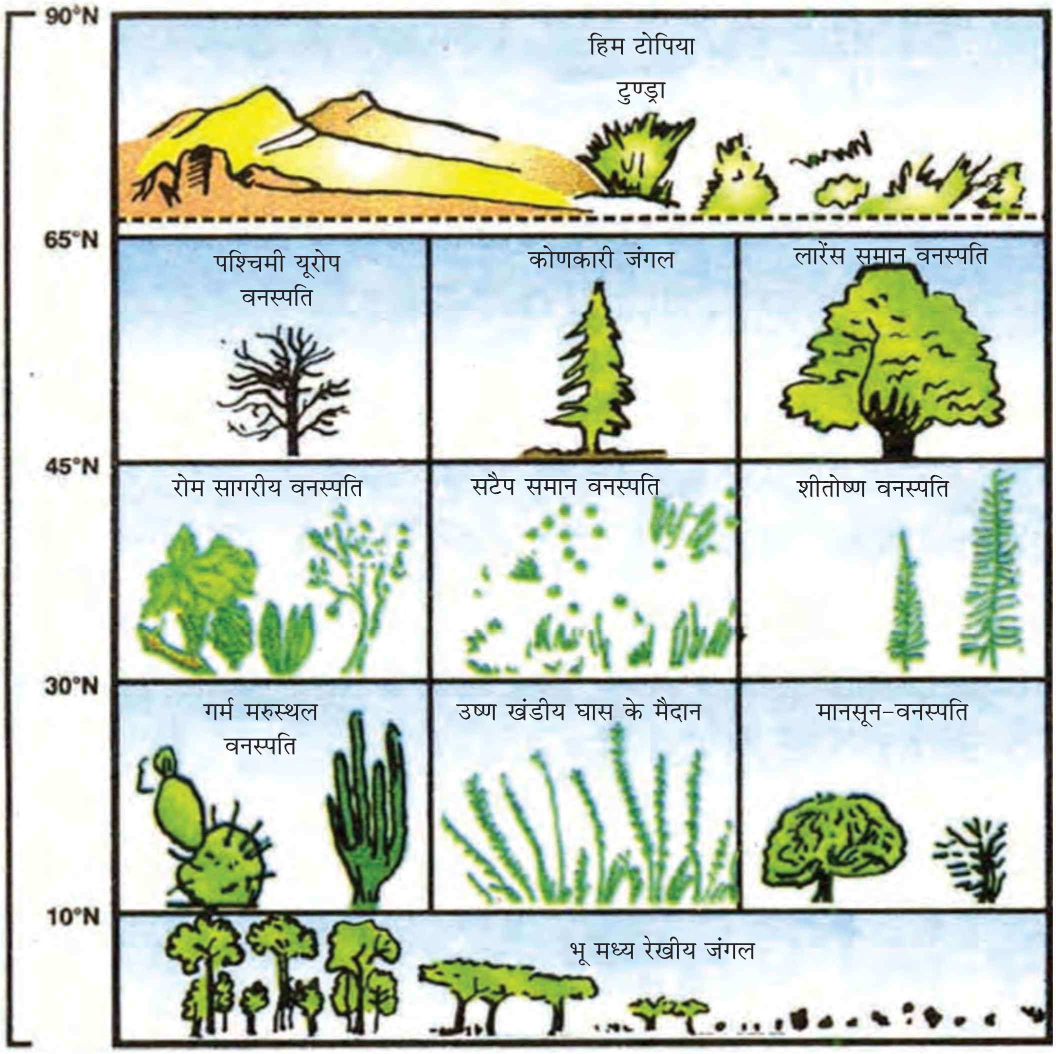

चित्र 5.1 भिन्न-भिन्न अक्षांशों में संसार की प्राकृतिक वनस्पति

उपर्युक्त चित्र से ज्ञात होता है कि वनस्पति की बाँट एक जैसी नहीं है। इस बाँट में भिन्नता है। जलवायु के अलगाव के साथ-साथ प्राकृतिक वनस्पति के प्रकार, वृक्षों के प्रकार जंगलों की सघनता तथा आकार में भी अलगाव आ जाता है। भिन्न-भिन्न अक्षाशों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की जलवायु होने के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पति मिलती है। पृथ्वी पर प्राकृतिक वनस्पति को मुख्य रूप में भिन्न-भिन्न वर्गों में बाँटा गया है :-

1. वन/जंगल
2. घास के मैदान
3. मरुस्थली झाड़ियाँ

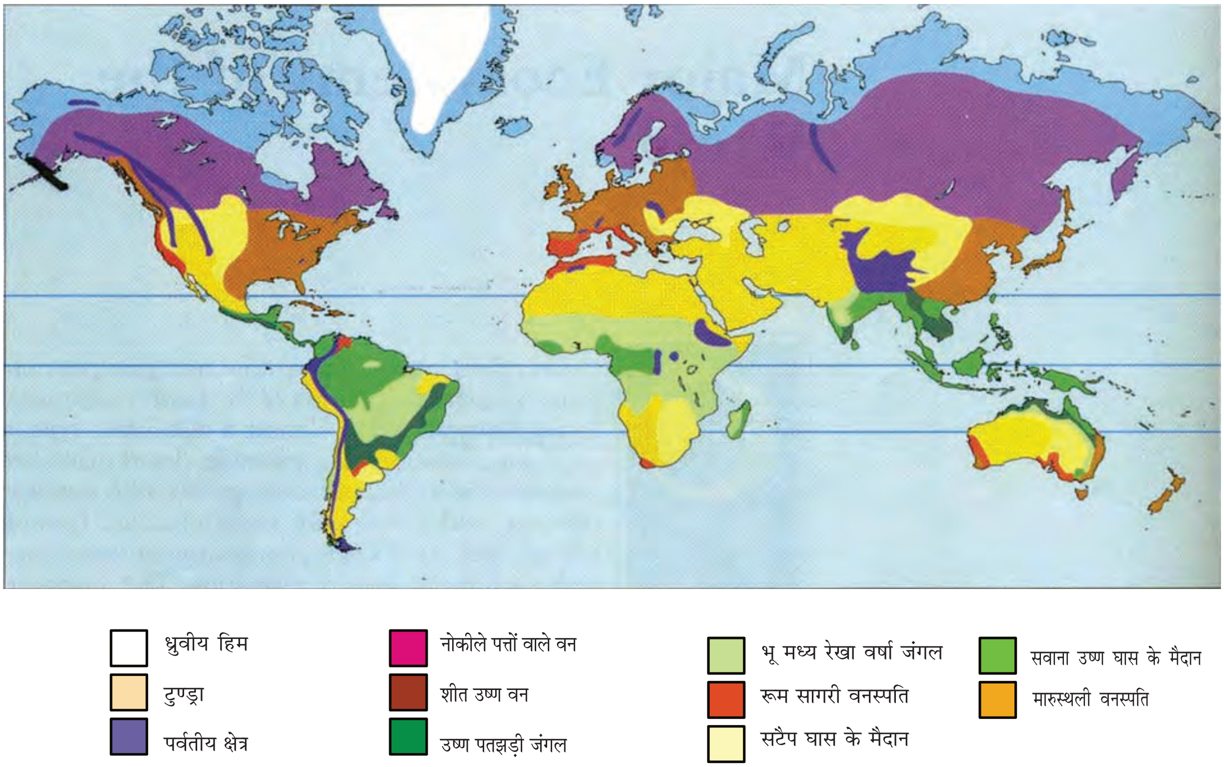

चित्र 5.1 संसार– प्राकृतिक वनस्पति

जंगल : वर्षा की वार्षिक मात्रा, मौसमी बाँट तथा तापमान जंगलों के प्रकारों को प्रभावित करते हैं इसके आधार पर जंगलों को तीन प्रकारों में बाँटा गया है।

1. भूमध्य रेखा 2. मानसूनी अथवा पतझड़ी जंगल 3. नोकीले पत्तों वाले जंगल

1. भूमध्य रेखी जंगल : भूमध्य रेखा के 10^0 उत्तर तथा– 10^0 दक्षिण तक का क्षेत्र इन जंगलों ने ढका हुआ है। इन जंगलों को सदाबहार घने जंगल कहा जाता है। भूमध्य रेखा पर वर्ष भर निरंतर वर्षा और अधिक तापमान रहता है, जिस कारण यहाँ घने जंगल पाये जाते हैं। इन जंगलों की ऊपर की शाखाएँ आपस में इस तरह लिपटी हुई होती हैं कि वे छतरी का रूप धारण कर लेती हैं तथा रोशनी भी धरती पर नहीं पड़ती। इन जंगलों में कई प्रकार के वृक्ष होते हैं फिर भी ये आर्थिक दृष्टि से लाभदायक नहीं होते। इसका मुख्य कारण यह है कि ये इतने घने होते हैं कि इनमें से गुजरना भी कठिन होता है जिसके कारण इनकी कटाई नहीं हो सकती।

दक्षिणी अफ्रीका के ब्राजील के अमेजन बेसिन में इस प्रकार के जंगलों को सैलवास (Selvas) कहते हैं। दक्षिणी अमरीका, मध्य अफ्रीका, दक्षिणी पूर्वीय एशिया, मैडगास्कर इन जंगलों के बड़े क्षेत्र हैं, आस्ट्रेलिया, मध्य अमरीका में थोड़ा क्षेत्र इन जंगलों ने रोका हुआ है।

इन जंगलों को आकाश को छूने वाली (Sky Scraper) इमारत की तरह जाना जाता है। जिसमें सबसे ऊपर की मंजिल 70 मीटर से बनती है। यहाँ धूप, हवा दोनों प्राप्त होने के कारण फल तथा फूल होते हैं। इससे नीचे की मंजिल छतरीनुमा होती है। वृक्षों की शाखाओं के आपस में फसने के कारण एक छतरीनुमा छत की तरह होती है। यहाँ सूर्य की रोशनी कम पहुंचती है जो फलों तथा फूलों के लिए अच्छी है। इससे नीचे की मंजिल परछाई वाली होती है, जहाँ लताएं वृक्षों पर चढ़ी होती हैं तथा आपस में लिपटी होती हैं। जो लताएं सूर्य की रोशनी के बिना नहीं रह सकतीं वह सूर्य की रोशनी प्राप्त करने ऊपर जाती हैं। सबसे नीचे की मंजिल में अंधेरा होता है। सूर्य की रोशनी बिल्कुल नहीं पहुंचती। इसके फर्श गले सड़े पत्तों, कीड़ों मकौड़ों से ढके होते हैं। इसी कारण ये जंगल मनुष्य की पहुंच से बाहर हैं। इसी कारण इन जंगलों का आर्थिक दृष्टि से अधिक महत्व नहीं है। परन्तु सरकारी प्रयासों से इन जंगलों को भी पहुंच योग्य बनाया जा रहा है। इनकी कटाई तथा यातायात मार्ग को विकसित करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

II. मानसूनी या पतझड़ी जंगल : ये वन उप ऊष्ण अक्षाँशों पर होते हैं। जहाँ वर्षा एक ऋतु में अधिक होती है। इनके पत्ते चौड़े होते हैं। ये जंगल उन क्षेत्रों में अधिक होते हैं जहाँ मानसून हवाओं के कारण अधिक वर्षा होती है। इसी कारण इन्हें मानसून जंगल कहा जाता है। जिस ऋतु में वर्षा नहीं होती उस ऋतु में इन जंगलों के पत्ते झड़ जाते हैं। इसलिए इन्हें पतझड़ी जंगल भी कहते हैं। इन जंगलों का आर्थिक महत्व अधिक है। इस प्रकार के जंगलों को काटकर भूमि को कृषि के नीचे लाया गया है। यह भूमध्य रेखी जंगलों की तुलना में कम घने हैं तथा पहुंच में हैं। इनसे इमारती तथा जलाने की लकड़ी प्राप्त होती है।

II. नोकीले पत्तों वाले जंगल : ये जंगल शीत ऊष्ण क्षेत्रों में पैदा होते हैं। नुकीले पत्तों वाले जंगलों को सदाबहार जंगल भी कहते हैं। यूरेशिया में इन जंगलों को टैगा का नाम दिया गया है। उपयोगिता की दृष्टि से ये जंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान हैं। इन जंगलों में चील, फर तथा सप्रूस वृक्षों की नर्म लकड़ी मिलती है, जिससे लकड़ी का गुद्दा तथा कागज़ बनाया जाता है।

2. घास के मैदान : मुख्य रूप में घास के मैदान दो प्रकार के होते हैं 1. उष्ण घास के मैदान 2. शीत ऊष्ण घास के मैदान

1. ऊष्ण घास के मैदान : ऊष्ण घास के मैदान 10^o–30^o अक्षाँशों पर उत्तरी तथा दक्षिणी अर्द्ध गोलों में पाए जाते हैं। इन घास के मैदानों को **सवाना घास** के मैदान भी कहा जाता है परन्तु भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में यह भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाते हैं।

जैसे : *अफ्रीका में इन को पार्कलैंड, वेनजूएला में लानेज़ और ब्राजील में कैंपोज़ कहा जाता है।*

यह घास 5 मीटर तक ऊँची हो जाती है तथा सूखकर कठोर हो जाती है। कहीं-कहीं छोटी ऊँचाई के वृक्ष भी उगते हैं। इन घास के मैदानों में घास खाने वाले तथा माँस खाने वाले पशु बहुत अधिक होते हैं।

II. शीत ऊष्ण घास के मैदान : यह घास के मैदान शीत ऊष्ण कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं। यह घास बहुत ऊँची नहीं होती। परन्तु नर्म तथा घनी होती है। इसलिए पशुओं के चारे के लिये बहुत उपयोगी होती है। इन घास के मैदानों को भी भिन्न-भिन्न महाद्वीपों में भिन्न-भिन्न नाम दिया गया है। जैसे -

यूरेशिया में - स्टैपीज़, उत्तरी अमरीका में- प्रोयरीज़, - दक्षिणी अमरीका में - पंपाज, दक्षिणी अमरीका में- वैल्ड, आस्ट्रेलिया में डाउन्ज़

3. मरुस्थलीय वनस्पति : संसार में दो प्रकार के मरुस्थल हैं : 1. गर्म मरुस्थल 2. ठंडे मरुस्थल

गर्म मरुस्थल : *अफ्रीका में सहारा तथा कालाहारी, अरब ईरान का मरुस्थल, भारत पाकिस्तान का थार मरुस्थल, दक्षिणी अमरीका में ऐटेकामा, उत्तरी अमरीका में दक्षिणी कैलेफोर्निया तथा उत्तरी मैक्सीको, आस्ट्रेलिया में पश्चिमी आस्ट्रेलिया का मरुस्थल*

अधिक गर्मी तथा कम वर्षा से वनस्पति बहुत कम उगती है। केवल कांटेदार झाड़ियां, छोटी-छोटी जड़ी बूटियाँ तथा घास आदि ही होता है। प्रकृति ने इस वनस्पति को इस तरह का बनाया है कि यह गर्मी तथा शुष्कता को सहन कर सके। इनकी जड़ें लम्बी, मोटी होती हैं ताकि पौधे गहराई से नमी प्राप्त कर सकें। पौधों का छिलका मोटा, पत्ते मोटे तथा चिकने होते हैं ताकि वाष्पीकरण द्वारा पानी कम बर्बाद हो।

ठण्डे मरुस्थल

कैनेडा तथा यूरेशिया (यूरोप महाद्वीप तथा एशिया महाद्वीप को इकट्ठे यूरेशिया कहते हैं) के सुदुर उत्तरी अक्षाँशों में स्थित हैं।

ये क्षेत्र अधिकतर समय तक बर्फ से ढके रहते हैं। जब थोड़े समय के लिए बर्फ पिघलती है तो रंग-बिरंगे फूलों वाले छोटे-छोटे पौधे उग जाते हैं। उत्तरी भागों में छोटी-छोटी घास जैसे कि काई तथा लिचन (लाइकिन) उगती है। मरुस्थलों की छोटी-मोटी वनस्पति किसी आर्थिक महत्व की नहीं हैं।

जंगलों (वनों) की संभाल : जंगलों का हमारे लिए बहुत महत्व है क्योंकि ये हमारी बहुत सी आवश्यकताओं को पूरी करते हैं। जंगलों की लकड़ी का अधिकत्तर प्रयोग जलाने के लिए किया जाता है। कुल प्रयोग की जाने वाली लकड़ी में 50 प्रतिशत जलाने के रूप में तथा 33 प्रतिशत मकान निर्माण में प्रयोग की जाती है। शेष अन्य कार्यों जैसे कागज़ बनाने, रेलों के डिब्बे और स्लीपर, रेयन (बनावटी कपड़ा बनाने के लिए) इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग की जाती है। जनसंख्या बढ़ने के कारण लकड़ी का उपभोग बढ़ रहा है। परन्तु जंगल क्षेत्र कम हो रहा है। इसलिए जंगलों की संभाल तथा नए वृक्ष लगाने की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

कई बार जंगलों को आग लगने से बहुत हानि होती है। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है तथा ऐसी किसी प्रकार की असावधानी या लापरवाही नहीं करनी चाहिए। वृक्षों की कटाई नियमबद्ध ढंग से करनी चाहिए तथा साथ ही नए वृक्ष भी लगाने चाहिएं। बीमारियों से वृक्ष नष्ट हो जाते हैं। नहरों, नदियों, सड़कों रेलवे की पटड़ियों के साथ-साथ खाली पड़ी भूमि पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। जलाने वाली लकड़ी का प्रयोग कम करना चाहिए तथा अन्य साधन-गैस, सूर्य शक्ति, चूल्हे, गोबर गैस इत्यादि का प्रयोग करना चाहिए। मकान निर्माण के लिए भी लकड़ी के स्थान पर अन्य वस्तुओं के प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।

वन्य जीव

जंगलों के विकास के साथ-साथ जीवों की संख्या काफी कम हो गई है। मनुष्य जंगल काटने के साथ-साथ जंगली जीवों का भी शिकार करता रहा है। माँस, पंखों तथा खाल की प्राप्ति के लिए मनुष्य अंधाधुंध शिकार करता रहा है। परिणाम स्वरूप जंगली जीवों की कई जातियाँ विलुप्त हो रही हैं तथा कई जीव जन्तुओं की संख्या इतनी कम हो गई है कि उनकी विलुप्त होने की संभावना हो गई है।

परिस्थिति संतुलन को कायम रखने के लिए इन जीवों का अस्तित्व बहुत आवश्यक है। मनुष्य ने जंगल साफ करके तथा शिकार करके परिस्थिति संतुलन को बिगाड़ दिया है। प्राकृति ने जीव मंडल की रचना इस प्रकार की है कि एक जीव दूसरे जीव पर निर्भर होकर छोटे जीव बड़े जीवों का भोजन हैं। **माँस खाने वाले जीव, घास खाने** वाले जीवों पर निर्भर हैं। इस तरह एक-जीव जाति के समाप्त होने से प्राकृतिक पर्यावरण में अनियमितता उत्पन्न हो जाती है। ज़रा सोचो कि यदि शेरों, चीतों इत्यादि जैसे माँसाहारी जीवों की संख्या अधिक हो जाए तथा घास खाने वाले जीव कम हो जाएं तो क्या परिणाम होगा। परिस्थिति संतुलन बिगड़ जायेगा तथा मासाँहारी जीव मनुष्य को खाना आरंभ कर देगें। यदि स्थिति इससे विपरीत हो। शेरों, चीतों की संख्या कम हो जाएगे तथा घास खाने वाले जीवों की संख्या बढ़ जाए तो घास **खाने वाले जीव**

चित्र 6.3 संसार-जीव जातियाँ जिनके विलुप्त होने का डक है

धरती के घास को खा जायेंगा। परिणामस्वरूप लहलहाते मैदान मरुस्थल में बदल जायेंगे। इसी कारण भूमि कटाव भी अधिक होगा। इस तरह भी संतुलन बिगड़ जायेगा। इसलिए परिस्थिति संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए।

जंगली जीव भी किसी देश की सम्पत्ति होते हैं। इसी कारण बहुत से देशों ने शिकार पर पाबन्दी लगा दी है। भारत में शिकार करना अपराध है। शिकार करने वाला व्यक्ति सजा का भागी बन सकता है। यह अनुभव किया गया है कि जंगल जीवों की सुरक्षा आवश्यक है। जैसे कि पहले अनेक जीव जातियाँ विलुप्त हो गई हैं शेष रहती जातियाँ विलुप्त हो जायेंगी।

हमारे देश में गैंडा, चीता, शेर आदि जानवरों की संख्या बहुत कम हो गई है। संयुक्त राज्य अमरीका, भारत तथा कई और देशों में राष्ट्रीय पार्क स्थापित किये गए हैं, जिनमें जंगली जीवों को सुरक्षित रखने के लिए प्राकृतिक पर्यावरण प्रदान किया गया है। भारत में देश के भिन्न-भिन्न भागों में लगभग 103 राष्ट्रीय पार्क हैं। जिम कोरबेट, शिवपुरी, कनेरी, राजदेवगा, गीर इत्यादि राष्ट्रीय पार्क हैं। इसके इलावा जीवों तथा पक्षियों को रखने के लिए अलग-अलग केन्द्र हैं। **पंजाब में छत्तबीड़** ऐसा ही एक केन्द्र है। क्या आपने यह स्थान देखा है? अफ्रीका का सवाना घास प्रदेश जंगली जीवों का विशाल घर है। संसार के दूर-दूर के देशों से यात्री इन जावनरों को देखने आते हैं। इस प्रदेश में जैबरा, जिराफ, बारहसिंहा, हिरण, शेर, बब्बर शेर, चीता, बाघ, हाथी, जंगली भैंसे, गैंडे तथा अनेक प्रकार के कीड़े मकौड़े होते हैं।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभाग 1-15 शब्दों में दो :

1. प्राकृतिक वनस्पति से क्या अभिप्राय है?
2. प्राकृतिक वनस्पति को प्रमुख कितने भागों में बाँटा गया है?
3. जंगलों से कौन सी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं?
4. जंगल अप्रत्यक्ष रूप में हमारी क्या सहायता हैं?
5. जंगलों के विकास का क्या प्रभाव पड़ेगा?
6. मानव परिस्थिति संतुलन को कैसे बिगाड़ रहा है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दो।

1. आर्थिक पक्ष से कौन से जंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं?
2. मानसूनी जंगलों को पतझड़ी जंगलों के नाम से क्यों पुकारा जाता है?
3. शीत ऊष्ण घास के मैदानों के बारे में लिखो। इनके भिन्न-भिन्न महाद्वीपों में कौन-कौन से नाम हैं?
4. गर्म मरुस्थली वनस्पति के बारे में लिखो।
5. जंगलों (वनों) की संभाल क्यों आवश्यक है?

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 125-130 शब्दों में लिखो।

1. प्राकृतिक वनस्पति के बारे विस्तृत रूप में लिखो।
2. संसार में जंगली जीवों की सुरक्षा तथा संभाल के बारे में लिखो। परिस्थिति संतुलन को बनाए रखने के लिए जंगली जीवों की भूमिका के बारे में लिखो।

(घ) संसार के नक्शे में निम्नलिखित क्षेत्र दिखायें।

1. सहारा मरुस्थल वनस्पति
2. लानोज़ घास क्षेत्र
3. पँपाज के घास क्षेत्र
4. सैलवास जंगल

क्रिया कलाप

अपने स्कूल (पाठशाला) में लगाये गये वृक्षों की सूची बनाओ तथा अध्यापक की मदद से कुछ पौधे भी लगायें।

पाठ 6

मानवीय पर्यावरण-बस्तियां, यातायात तथा संचार

मानवीय पर्यावरण, पूर्ण पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण भाग है। मनुष्य ही सारी धरती पर एक ऐसा प्राणी है जिसमें अपने आप को पर्यावरण अनुसार ढालने की विशेषता है। इस विशेषता के कारण ही मनुष्य, दुर्गम स्थानों पर भी पहुँच गया है। इस सारी यात्रा के दौरान मनुष्य को कई परिस्थितियों में से गुजरना पड़ा। पहले पहल मनुष्य का जीवन स्थायी नहीं था, बल्कि वह जंगल-जंगल अपने खाने के लिए फल ढूंढता रहता था। जिस कारण उसका कोई एक विशेष स्थान (ठिकाना) नहीं था। उस समय मनुष्य की स्थिति टपरीवासों जैसी थी। धीरे-धीरे कुछ मनुष्यों ने एक स्थान पर टिक कर कृषि करनी आरम्भ कर दी, जिस कारण उसमें एक स्थान पर बैठने की आवश्यकता उत्पन्न हुई। इस तरह धीरे-धीरे औद्योगिक क्राँति आई। मनुष्य ने एक स्थान पर रहना आरंभ कर दिया और उसे एक दूसरे की सहायता करने की आदत पड़ गई। इस तरह मनुष्य ने आग जलानी सीखी। वस्त्र डालने सीखे। अपने रहने के लिए आवास बनाया।

पहले पहल मनुष्य ने उन स्थानों पर अपने रहने के लिए निवास स्थान बनाया जहाँ उसकी दैनिक आवश्यकताएँ आसानी से पूर्ण हो सकें। जैसे कि सबसे पहले मनुष्य ने नदी घाटियों में रहना शुरू किया। इसके कई कारण थे, जैसे कि पीने के लिए पानी आसानी से मिल जाता था। दूसरा इन स्थानों की मिट्टी उपजाऊ होने के कारण कृषि करना आसान था। थोड़े परिश्रम से उपज काफी हो जाती थी। इस तरह समय व्यतीत होने से घास फूस की झोंपड़ियों से कच्ची मिट्टी की कुल्लियाँ, कच्ची मिट्टी की कुल्लियों से पक्की कुल्लियाँ, पक्की कुल्लियों से कच्चे घर, कच्चे घरों से पक्के घर, एक मंजली घर से बहु-मंजली घर और अब गगन चुंबी इमारतें बन गई हैं।

जनसंख्या बढ़ने से तथा काम काज, क्रियाओं के विकास के साथ मनुष्य ने नदी घाटियों से औद्योगिक सुविधाओं वाले स्थानों की ओर जाना आरंभ कर दिया। गाँवों से शहरों की ओर रहना आरंभ कर दिया है। निम्नलिखित कुछ कारण हैं जो लोगों की बस्तियाँ बनने को प्रभावित करते हैं।

1. **पानी की सुविधा :** लोग अधिकतर उन स्थानों पर रहना पसन्द करते हैं जहाँ पानी आसानी से उपलब्ध हो सके। इसी कारण अधिकत्तर सभ्यताओं ने नदी घाटियों में जन्म लिया। जैसे सिन्ध घाटी की सभ्यता। सिंध नदी की घाटी में अधिकतर लोग रहते थे। वहाँ उनके कच्चे पक्के घर होने के प्रमाण मिलते हैं।

2. **धरातल :** बस्तियाँ बनने के लिए धरातल का विशेष महत्व है। समतल धरातल लोगों के निवास के लिए सुविधाओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। असमतल धरातल में मानवीय बस्तियाँ कम होती हैं क्योंकि यातायात में कठिनाई आती है, कृषि करनी कठिन होती है। यहाँ तक कि घर बनाने में कठिनाई आती है। इस की तुलना में समतल धरातल पर यातायात के लिए सड़कें, रेलवे लाइनें बनाना आसान है, खेती की उपज को दूसरे स्थानों पर ले जाना आसान है। इसी कारण बहुत बड़े-बड़े शहर समतल धरातल पर विकसित हुए हैं। जैसे कि उत्तरी भारत के मैदान में बहुत प्रसिद्ध शहर विकसित हुए हैं।

3. **प्राकृतिक सुन्दरता :** कई शहर प्राकृतिक सुन्दरता के कारण विकसित हुए हैं। ये शहर सैर-सपाटे की दृष्टि से विकसित हुए हैं। क्योंकि सैर सपाटा वर्तमान युग में एक प्रमुख उद्योग बन गया है। इससे बहुत से लोगों को रोज़गार प्राप्त हुए है। संसार भर से लोग इन स्थानों की सुन्दरता का आनन्द लेने के लिए आते हैं। जैसे कश्मीर, गोआ कुछ प्रमुख प्राकृतिक सुन्दरता के कारण विकसित स्थानों की उदाहरणें हैं।

4. **यातायात तथा संचार के साधन :** यातायात तथा संचार के साधन भी किसी स्थान को विकसित करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यातायात की अच्छी सुविधाएँ होने के कारण लोगों तथा वस्तुओं को ढोना आसान हो जाता है, जिससे आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से उन्नति होती है। कई बार देखा गया है कि किसी स्थान पर पैदा की जाने वाली वस्तु का उसके बिल्कुल पास स्थान की अपेक्षा दूर स्थान पर अधिक महत्व होता है। यदि वहाँ यातायात के साधन अच्छे होंगे तो उस स्थान पर पैदा की जाने वाली या बनाई जाने वाली वस्तु दूर स्थान पर, जहाँ इसकी अधिक आवश्यकता है पहुंचाने से अधिक आर्थिक लाभ होगा। ऐसे स्थान शीघ्र ही सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संस्थानों का रूप धारण कर लेते हैं। इसके इलावा जो शहर मुख्य रेलवे मार्गों, सड़कों तथा बन्दरगाहों के किनारे स्थित होते हैं वे सांस्कृतिक तथा व्यापारिक स्थानों के रूप में प्रसिद्ध हो जाते हैं।

यातायात के साधनों का भी अत्याधिक नवीनीकरण हुआ है। पहले लोग यातायात तथा ढोने के लिए घर में रखे पालतू पशुओं का प्रयोग करते थे। तकनीकी विकास के कारण यातायात

तथा **लादने के साधनों** में तकनीकी तौर पर इतनी तेज़ी आ गई है कि पूरा संसार एक गाँव (Global Village) बन गया है।

यातायात के विभिन्न साधन विभिन्न प्रकार की भूमिका निभाते हैं। जैसे :-

सड़क यातायात : इससे एक घर से दूसरे घर तक पहुंच हो गई है। रेलवे मार्गों के मुकाबले में सड़कें बनानी आसान तथा सस्ती हैं। यहाँ तक कि पर्वती क्षेत्रों में भी सड़कों का अत्याधिक निर्माण हुआ जबकि वहां रेलवे मार्ग बनाने बहुत कठिन हैं।

रेलवे मार्ग : रेलवे मार्ग का महत्वपूर्ण पक्ष है कि इनके द्वारा अधिक मात्रा में सामान तथा बहुत संख्या में सवारियों को ढोया जा सकता है। सबसे पहले **कोयले** से चलने वाले रेलवे इंजन थे। अब बिजली तथा डीज़ल से चलने वाले इंजन बन गए हैं। इनका जाल अब न केवल भूमि की ऊपर की सतह पर ही नहीं बल्कि भूमिगत रेल मार्ग भी बनाए गए हैं। एक तो बढ़ती जनसंख्या के कारण धरती के ऊपर यातायात रुक जाती है। इससे मुक्ति पाने के लिए भूमिगत रेलमार्ग बिछाए गए हैं। इनको मैट्रो रेल सरवसिस कहते हैं। जैसे कि दिल्ली में यह काफी प्रचलित हो गई हैं।

संसार में योरुप तथा उत्तरी अमरीका में रेल मार्गों का जाल बिछा हुआ है। अब सभी महाद्वीपों के तटों के साथ रेल मार्ग बनाए जाते हैं। सोवियत यूनियन के रेल मार्ग को ट्राँस साइबेरियन रेलवे कहते हैं। यह संसार का सबसे बड़ा रेल मार्ग है। जापान रेलों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। जापानी रेलों में प्रतिदिन अधिक से अधिक यात्री यात्रा करते हैं। जापान तथा फ्राँस में बहुत तेज़ चलने वाली गाड़ियाँ बनाई गई हैं।

जापान की रेलगाड़ी 500 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से चलती है।

जल मार्ग : जैसे कि तुमने पढ़ा है कि सबसे पहले मनुष्य ने नदियों तथा पानी के किनारे निवास करना शुरू किया। वह मछलियाँ इत्यादि पकड़ता था। उसने लकड़ी की नावें बना कर एक किनारे से दसरे किनारे जाना शुरू कर दिया अर्थात् पानी द्वारा यातायात करना आरम्भ कर दिया। आज संसार में समुद्रों, सागरों, दरियाओं, नहरों झीलों इत्यादि को यातायात के लिए प्रयोग किए जा रहे है। इनमें समुद्री जल स्टीमर, किश्तियें इत्यादि चलाई जाती हैं तथा इनके द्वारा सामान ढोया जाता है। परिश्रमी तथा साहसी लोगों ने संसार की यात्राएं इन समुद्रों द्वारा ही की। अब इनके द्वारा व्यापक स्तर पर समुद्री जहाजों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होना आरम्भ हो गया है।

संसार के प्रमुख समुद्री मार्ग

1. **उत्तरी अन्ध महासागर मार्ग :** यह मार्ग सबसे अधिक प्रयोग में आता है। यह पश्चिमी

योरुप तथा संयुक्त राज्य अमरीका तथा कैनेडा को मिलाता है। इस मार्ग पर संसार का सबसे अधिक व्यापार होता है।

2. **शान्त महासागर मार्ग :** यह मार्ग उत्तर तथा दक्षिणी अमरीका को एशिया तथा आस्ट्रेलिया से मिलाता है।

3. **केप मार्ग :** इस मार्ग की खोज़ वास्कोडीगामा ने सन् 1498 ई. में की। यह मार्ग, पश्चिमी यूरोपीय देशों तथा अमरीका को दक्षिणी एशिया, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड से मिलता है। स्वेज नहर बनने से इसका महत्व कम हो गया।

4. **स्वेज (Suez) नहर मार्ग :** स्वेज नहर भूमध्य सागर (रूमसागर) तथा लाल सागर को मिलाती है। यह मार्ग योरुप के देशों को दक्षिणी एशिया, आस्ट्रेलिया तथा पूर्वी अफ्रीका के देशों से मिलाता है।

5. **पनामा नहर :** यह नहर पनामा गणराज में बनाई गई है। यह नहर अंधमहासागर तथा शाँत महासागर को मिलाती है। यह नहर पश्चिमी योरुप तथा पूर्वी संयुक्त राज्य अमरीका को पश्चिमी संयुक्त राज्य अमरीका तथा पूर्वी एशिया के साथ मिलाती है।

मुख्य बन्दरगाहें : सागरी यातायात में उत्तरी अंध महासागर सबसे अधिक निरन्तर कार्यशील रहता है। भारत का प्रमुख बन्दरगाहें कोलकाता, चेन्नई (मद्रास), कोचीन, गोया, काँडला तथा विशाखापटनम है। यह भारत को संसार से जोड़ती हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि महासागार महाद्वीपों को आपस से अलग नहीं करते बल्कि ये दो महाद्वीपों के मध्य पुल हैं जो एक दूसरे को जोड़ते हैं।

आन्तरिक जलमार्ग : बड़ी नदियाँ तथा झीलें भी जलमार्ग का काम करते हैं जैसे कि भारत में गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियाँ तथा केरल में स्थित झीलें जलमार्ग का काम करती हैं। संसार के अन्य देशों योरुप का डैनुब नदी, मध्य तथा दक्षिण योरुप को काला सागर से मिलाते हैं। चीन का जंगस्टी क्यिाँग नदी, दक्षिणी अमरीका की अमेजन नदी। उत्तरी अमरीका में पाँच ऐसी झीलें हैं जो यू.एस.ए. से जोड़ती हैं।

वायु मार्ग : हवाई जहाज भी यातायात के महत्वपूर्ण साधन हैं। सबसे पहले उड़न-मशीन अमरीका के राइट ब्रदरज ने बनाई। अन्त में तकनीकी विकास से हवाई जहाज बने।

वायु मार्ग सब से तेज़ गति वाला यातायात का साधन है। परन्तु महंगा भी बहुत है। आज लगभग सभी देश वायु मार्ग द्वारा आपस में जुड़े हुए हैं। इनके कारण हवाई जहाजों द्वारा सफर करने से बहुत समय बच जाता है। संसार एक विश्वीय गांव (Global Village) बन गया है। इस कारण हवाई जहाज बहुत लोकप्रिय हो गया है। संसार के कई देशों ने बड़े-बड़े हवाई अड्डे बनाए हैं जैसे- लंडन, पैरिस, मास्को, टोकियो, दुबई इत्यादि बहुत बड़े हवाई अड्डे हैं।

भारत में हवाई मार्ग का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, इंडियन एयर-लाइनज़ तथा वायुदूत द्वारा भारत के बहुत से शहर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। एयर इंडिया, इंडियन एयरलाइज़ अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानें भारतीय यात्रियों को संसार के लगभग सभी बड़े-बड़े शहरों में ले जाती हैं। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता तथा चेन्नई भारत के प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं।

पाइप लाइनज़, इलैक्ट्रिक ग्रिड के द्वारा तेल, गैस के द्वारा बिजली का संचार भी होता है।

संचार के साधन : यातायात के इलावा संचार के साधनों ने भी लोगों में आपसी मेल मिलाप पैदा करने के लिए एक विशेष भूमिका निभाई है। इनके द्वारा एक मनुष्य या बहुत से लोगों की आवाज़ देश तथा संसार के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचाई जा सकती है। जैसे कि इन्टरनैट द्वारा हम एक कोने में बैठे संसार भर से जुड़ सकते हैं। यह अब तक सबसे सस्ता संचार का साधन है। क्योंकि साइबर इन्टरनैट (Cyber Internet) से तुम संसार के किसी भी कोने की जानकारी प्राप्त कर सकते हो। इसके साथ ही डाक सेवा टैलिग्राम, टैलिफोन, मोबाइल, रेडियो, मैगज़ीन, समाचार पत्र भी संचार के बढ़िया साधन हैं।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1-15 शब्दों में दो :

1. कृषि मानवीय बस्तियों को कैसे प्रभावित करती है?
2. पहले पहल मनुष्य ने कहां रहना आरंभ किया?
3. किसी स्थान का धरातल मानव बस्तियों के विकास को कैसे प्रभावित करता है?
4. सड़क मार्गों का क्या महत्व है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दो।

1. संसार के रेलमार्गों के बारे जानकारी देते हुए इनका महत्व बताओ।
2. संसार के प्रमुख जलमार्गों के नाम बताओ।
3. संसार के आन्तरिक जलमार्गों के नाम बताओ।

4. वायुमार्गों द्वारा संसार एक विश्वीय गांव (Global Village) बन गया। इस तथ्य की उदाहरण देकर समझाओ।

5. संचार के साधन कौन-कौन से हैं। उनकी उन्नति से हमें क्या लाभ हैं?

6. स्वेज नहर के विषय में विस्तृत जानकारी दें।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 125-130 शब्दों में दो।

1. बस्तियों के विकास में कौन से कारक प्रभाव डालते हैं?
2. जलमार्गों के बारे में विस्तृत जानकारी दें।
3. मानवीय बस्तियों के विकास में यातायात के साधनों ने क्या योगदान डाला है?

क्रिया कलाप

एटलस की तथा अपने अध्यापक की सहायता से :

1. संसार का खाली नक्शा लेकर स्वेज तथा पनामा नहरें दिखाओ।
2. संसार ने नक्शे पर प्रमुख वायुमार्ग दिखाओ।

युनिट-II

इतिहास

हमारे अतीत-2

पाठ 7

भारत तथा विश्व (कब, कहाँ तथा कैसे)

हमने छठी श्रेणी में पढ़ा है कि मानव शिकारी से संग्राहक किस प्रकार बना। उसने भिन्न-भिन्न फसलें किस प्रकार उगानी शुरू की थीं। उसने छोटे-छोटे कबीलों से किस प्रकार महाजनपद स्थापित किए थे?

प्रारम्भ में मानव नदियों के किनारों पर रहते थे। परन्तु जनसंख्या (आबादी) बढ़ने से तथा पानी के दूसरे साधनों के उपलब्ध होने के कारण उन्होंने नदियों के किनारों से दूर रहना शुरू कर दिया। आप भारतीय उपमहाद्वीप के मानचित्र पर देख सकते हो कि यह उप-महाद्वीप एक ऐसी विशाल भूगोलिक इकाई है जो मुख्य महाद्वीप (एशिया) से भिन्न दिखाई देती है।

भारतीय उपमहाद्वीप का वर्णन करने के लिए दिए गए नाम :

भारतीय उपमहाद्वीप जिसमें वर्तमान छः देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, बांगला देश और भारत शामिल हैं, को पूर्वकाल में हिन्दुस्तान अथवा भारवर्ष के नाम से जाना जाता था।

नई तथा पुरानी शब्दावली :

इतिहास ने विभिन्न युगों में भारत को अलग-अलग नाम दिए। वैदिक युग में इसे 'आर्यवर्त' (जिसका अर्थ है आर्यों का देश) के नाम से जाना जाता था। महाभारत और पौराणिक युग के दौरान सम्राट भरत के नाम पर इसे 'भारतवर्ष' कहा जाने लगा।

ईरानी भारत के लिए "**हिन्दू**" शब्द का प्रयोग करते थे। ग्रीक भारत के लिए "**इण्डस**" शब्द का प्रयोग करते थे। बाईबल में इसके लिए "**होडू**" शब्द का प्रयोग किया गया है।

जब बौद्ध धर्म का चीन में प्रसार हुआ-चीनियों ने भारत को '**ताइन चूँ**' नाम दिया। ह्यून सांग की भारत यात्रा के बाद चीन में भारत को "इंटू" कहा जाने लगा।

भारतीय इतिहास के मध्यकालीन युग की समय योजना :

सामान्यतः कहा जाता है कि प्रत्येक देश के इतिहास को प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक युग तीन भागों में बाँटा गया है। प्राचीन और आधुनिक काल के बीच के इतिहास को '**मध्यकालीन युग**' कहा जाता है। भारत में आठवीं शताब्दी को 'परिवर्तन की शताब्दी' माना

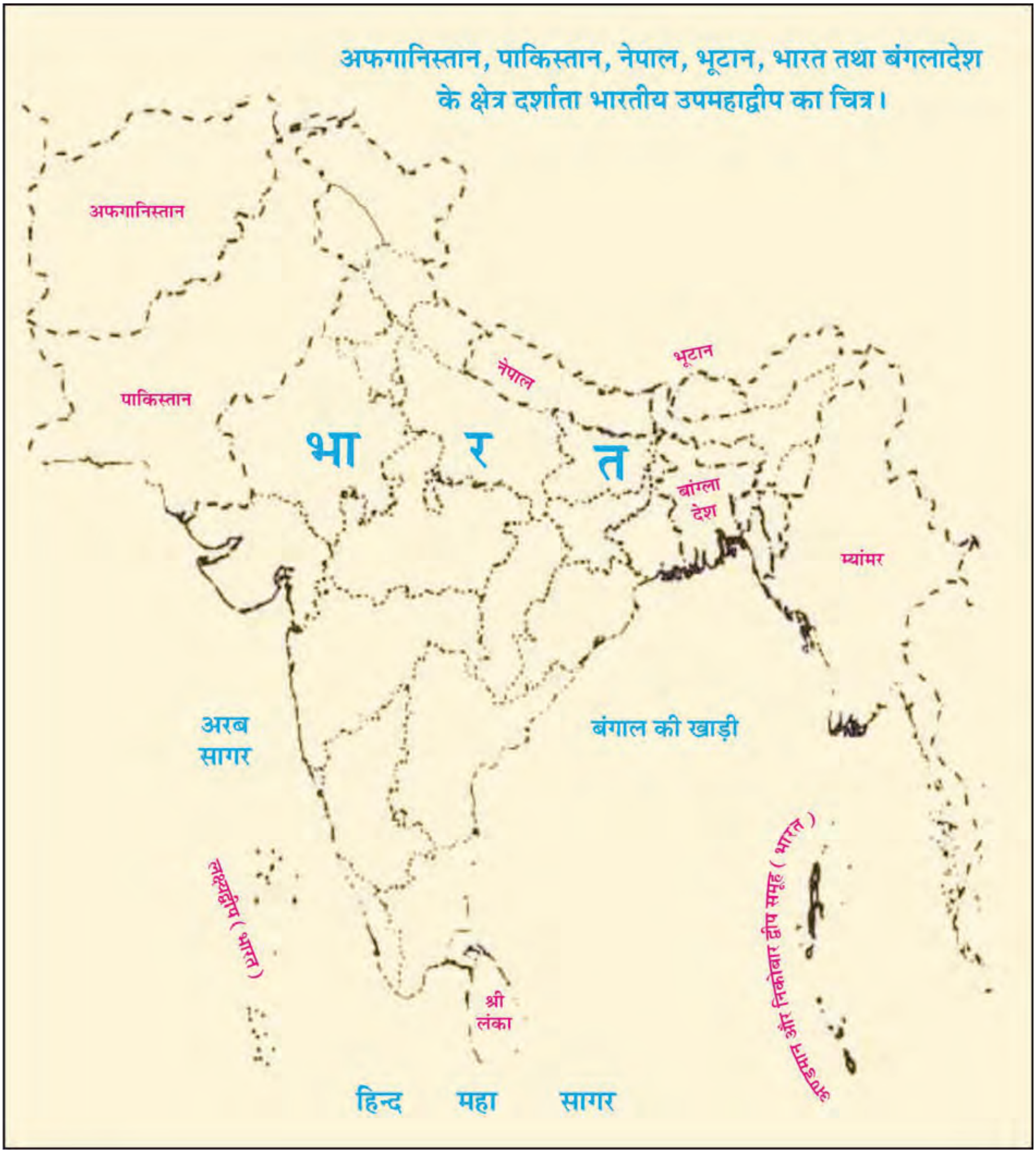

चित्र 7.1 अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, भारत तथा बंगलादेश के क्षेत्र दर्शाता भारतीय उपमहाद्वीप का चित्र।

जाता है क्योंकि उस समय समाज, राजनीति, अर्थ-व्यवस्था, संस्कृति और धर्म में बहुत परिवर्तन हो रहे थे। इसी तरह अठाहरवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन और अंग्रेज़ों के शक्ति के रूप में उत्थान को मध्यकालीन युग का अंत माना जाता है।

इस मध्यकालीन युग को आगे पूर्व मध्यकालीन युग और उत्तर मध्यकालीन युग, दो भागों में बाँटा गया है। आठवीं शताब्दी से लेकर तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय की **प्रारम्भिक मध्यकालीन युग,** जबकि तेरहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक के समय को **उत्तर मध्यकालीन युग** माना गया है।

प्रमुख ऐतिहासिक उपलब्धियाँ

मध्यकालीन युग के दौरान हमने विशेष ऐतिहासिक प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त की जो इस काल को प्राचीन काल से अलग करती हैं।

1. इस समय के दौरान मुसलमानों के आने से एक मिश्रित सभ्यता का विकास हुआ। इस समय हिन्दुओं और मुसलमानों में काफी परस्पर सम्बन्ध था।
2. इस समय दौरान बहुत-सी भाषाओं का विकास हुआ, विशेष रूप से हिन्दी और उर्दू जिनको हम आज भी बोलते हैं।
3. मध्यकालीन युग में हमारे बहुत-सी सामाजिक रीति-रिवाज़ों, परम्पराओं और धार्मिक विश्वासों का उद्‌भव हुआ।
4. इस समय दौरान भारत और संसार में अधिक आपसी सम्बन्ध स्थापित हुआ। व्यापार के कारण संसार के अलग-अलग भागों के लोगों के साथ आपसी सम्बन्ध स्थापित हुआ। भारत ने दूसरे देशों की परम्पराओं, रीति-रिवाज़ों से बहुत कुछ अपनाया है।
5. भक्ति और सूफी संतों ने हिन्दू धर्म एवं इस्लाम धर्म के मूल सिद्धांतों के बारे में अच्छी सोच एवं विचारधारा पैदा की।
6. इस समय दौरान व्यापार एवं वाणिज्य के प्रसार के लिए विशेष सुधार किए गए।

ऐतिहासिक स्त्रोत

भारतीय मध्यकालीन युग के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए इतिहासकार **पुरातत्व** एवं **साहित्यिक** ऐतिहासिक स्त्रोतों पर निर्भर करते हैं :-

(क) पुरातत्व स्त्रोत :

पुरातत्व स्त्रोतों में प्राचीन स्मारक, मन्दिर, शिला-लेख, सिक्के, बर्तन, औज़ार, हथियार, आभूषण एवं चित्र आदि शामिल हैं।

1. प्राचीन इमारतों में मन्दिर (जैसे खुजराहो, भुवनेश्वर, कोणार्क इत्यादि), मस्जिदें (जैसे जामा मस्जिद, मोती मस्जिद इत्यादि), किले (लाल किला, आगरे का किला इत्यादि) किले (जैसे जैसलमेर, जयपुर इत्यादि) शामिल हैं।

चित्र 7.2 खुजराहों का महादेव मन्दिर

2. शिला-लेखों से हमें पूर्व मध्यकालीन युग की महत्वपूर्ण घटनाओं, तिथियों, शासकों के व्यक्तिगत गुणों, कला के नमूने तथा प्रशासनिक गतिविधियों आदि के बारे जानकारी मिलती है।

क्या आप जानते हो कि प्राचीन युग में राजा तथा महाराजा अपने आदेश कांस्य के पत्रों, शिलालेखों पर तथा मन्दिरों की दिवारों पर क्यों उकरते थे?

3. सिक्के, अधिक मात्रा में प्राप्त हुए हैं। यह हमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं, तिथियों एवं प्रसिद्ध व्यक्तियों के बारे में जानकारी देते हैं। कुछ सिक्के हमें उस समय की आर्थिक व्यवस्था के बारे में जानकारी देते हैं।

चित्र 7.3 अकबर के शासन काल के समय सिक्के

साहित्यिक स्त्रोत :

भारतीय मध्यकालीन युग के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए इतिहासकार पुरातत्व स्त्रोतों के साथ-साथ साहित्यिक स्त्रोतों पर भी निर्भर करते थे। क्योंकि इस काल दौरान कागज़ की कीमतें बहुत कम हो गई थीं, इसलिए लोग धार्मिक ग्रन्थ, शासकों के वृतान्त तथा सरकारी दस्तावेज आदि की छपाई के लिए कागज का प्रयोग करते थे।

1. साहित्यिक स्त्रोतों में स्वयं जीवनियाँ, शासकों एवं राज्य वंशों के वृतान्त एवं दस्तावेज़ आदि शामिल हैं। वे हमें मध्यकाली युग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। बाबर एवं जहांगीर शासकों की आत्मकथाएँ अलग-अलग शासकों तथा जीवन, कार्य के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

क्या आप जानते हो कि मध्यकालीन युग में साहित्यिक स्त्रोतों का उद्‌गम क्यों हुआ?

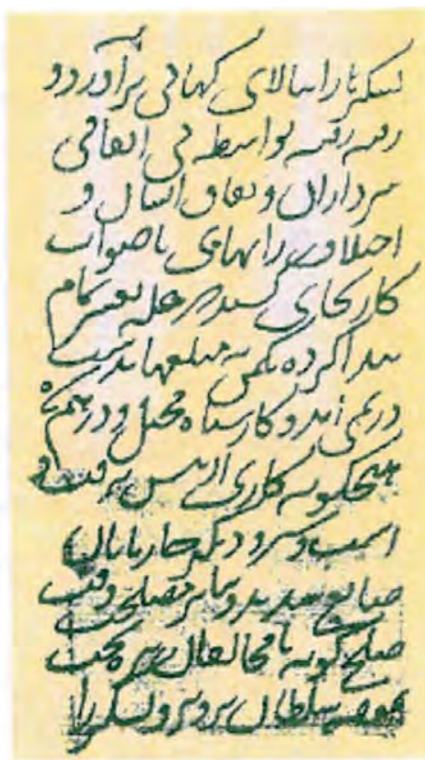

चित्र 7.4 एक साहित्यिक स्त्रोत

2. विदेशी यात्रियों के लेख :

मध्यकालीन युग में लिखे गए विदेशी यात्रियों के लेख भी अन्य महत्वपूर्ण साहित्यिक स्त्रोत हैं। इस समय दौरान मुस्लिम यात्रियों ने भारत की यात्रा के दौरान लेख लिखे थे।

चित्र 7.5 मुग़ल चित्रकारी

जैसे इब्नबतूता के **'किताब-उल-रिहला'** लेख से मुहम्मद-बिन-तुग़लक के राज्य काल की जानकारी मिलती है। **अलबरूनी** ने अपने भारत में ठहरने सम्बन्धी लेख लिखा था। **अब्दुल राजाक** ने विजयनगर राज्य की यात्रा की और उसने उस समय दौरान राज्य की स्थिति के बारे में अपना लेख लिखा। यूरोपियन यात्रियों द्वारा उनकी भारत यात्रा के दौरान लिखे गए लेख भी उस समय की भारतीय परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हैं।

3. **चित्रकारी** भी हमें सामान्य जानकारी देने के साथ-साथ कला के विकास के बारे में भी ज्ञान प्रदान करती है। विशेषत : मध्यकालीन युग के दौरान चित्रकारी की कला के बारे में जानकारी मिलती है।

चित्र 7.6 तानसेन

संगीत भी ऐतिहासिक ज्ञान के बारे में एक अच्छा स्त्रोत है। मुगल शासक संगीत प्रेमी थे, यह एक कारण था कि उनके शासन काल में संगीत का अधिक विकास हुआ। मुगल शासक अकबर ने कई संगीतकारों को संरक्षण दिया। उनमें से **तानसेन** एक प्रसिद्ध संगीतकार था। यह हिन्दू एवं मुस्लिम सभ्यताओं के आपस में मिलने का संकेत देता है। इस प्रकार संगीत भी ऐतिहासिक जानकारी देने का एक अच्छा स्त्रोत है।

याद रखने योग्य तथ्य

1. **भारतीय उपमहाद्वीप में सम्मिलित देश :** अफगनिस्तान, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, भारत तथा बांग्ला देश।
2. **मध्यकालीन युग :-** इतिहास के प्राचीन युग तथा आधुनिक युग के बीच के (मध्य) युग को '**मध्यकालीन युग**' कहा जाता है।
3. **मध्यकालीन युग :-** आरम्भिक मध्यकालीन युग 8वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक तथा उत्तर मध्यकालीन युग 13वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक के समय में बंटा हुआ है।
4. **ऐतिहासिक स्त्रोत :-**

    (1) **पुरातत्व स्त्रोत :** स्मारक, मंदिर, शिला-लेख, सिक्के, बरतन, आभूषण आदि।

    (2) **साहित्यिक स्त्रोत :** आत्मकथाएँ, जीवनियां, विदेशी यात्रियों के लेख, वृतांत, चित्रकारी, संगीत आदि।

5. **प्रमुख ऐतिहासिक प्रवृतियां :** मिश्रित सभ्याचार का विकास, भाषाओं का विकास, सामाजिक रीति-रिवाजों एवं धार्मिक विश्वासों (रूढ़ियों) का विकास, भारत के संसार के अन्य देशों के साथ सम्बन्ध होना, व्यापार एवं वाणिज्य का विकास आदि।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखें :-

1. इतिहास में भारतीय उप-महाद्वीप के कौन-कौन से नाम रखे गए?
2. इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को कितने युगों में बाँटा है?
3. भारतीय इतिहास के स्त्रोत कितनी प्रकार के हैं?
4. विदेशी यात्रियों के लेख किस प्रकार महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्त्रोत हैं?

(ख) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :-

1. भारत में .... को परिवर्तन की शताब्दी माना जाता है।
2. चीन निवासियों ने भारत को .... का नाम दिया।

3. स्मारक, शिलालेख तथा सिक्के आदि भारतीय इतिहास के .... स्त्रोत हैं। जब कि आत्म कथा तथा जीवन गाथा .... स्त्रोत हैं।

4. तानसेन एक प्रसिद्ध .... था।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक वाक्य के सामने ठीक (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाएं :-

1. मध्यकालीन युग प्रारम्भिक मध्यकालीन युग एवं उत्तर-मध्यकालीन युगों में बँटा हुआ था। ☐
2. मध्यकालीन युग दौरान बहुत-से सामाजिक रीति-रिवाज़ और धार्मिक विश्वास अस्तित्व में नहीं आए थे। ☐
3. मध्यकालीन युग में व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए विशेष सुधार किए गए। ☐
4. मध्याकालीन युग दौरान हिन्दुओं तथा मुसलमानों में आपसी सम्बन्ध स्थापित नहीं थे। ☐

क्रिया-कलाप

1. भारतीय उपमहाद्वीप के मानचित्र पर अफगानिस्तान, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, भारत तथा बांग्ला देश के स्थान दर्शाएं।
2. अपनी अभ्यास पुस्तिका में मध्यकालीन भारत के चार प्रमुख स्मारकों के चित्र चिपकाएं।

पाठ 8

नए राज्य एवं शासक

पूर्व मध्यकालीन युग दौरान भारत के उत्तरी एवं दक्षिणी भागों में कई राज्यों का उत्थान हुआ। उस समय उत्तरी भारत में प्रतिहार, पाल, राजपूत राज्य, गज़नवी तथा गौरी थे। राष्ट्रकूट दक्कन में शासन करते थे। यहाँ पर और भी बहुत छोटे-छोटे राज्य थे। दक्षिण में पल्लव, पाण्डेय तथा चोल राज्य स्थापित थे।

राजपूत

राजा हर्षवधर्न की मृत्यु के पश्चात् भारत देश कई बड़े तथा छोटे राज्यों में विभक्त हो गया था। इनमें से अधिकतर राज्यों पर राजपूतों का शासन था। वे आपस में एक दूसरे से लड़ते रहते थे। इस कारण बड़ी संख्या में राज्य स्थापित, विलीन हुए तथा फिर से स्थापित हुये। उत्तरी भारत में आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी के मध्य कई राजपूत राज्यों की स्थापना हुई। इसी लिये यह काल 'राजपूत काल' के नाम से जाना जाता है।

आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक के समय को 'राजपूत काल' क्यों कहा जाता है?

भारत के मानचित्र पर गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट, पाल, चोल तथा चौहान वंश के राज्य दर्शायें। क्या आप आजकल के राज्यों में इन वंशों के स्थानों को पहचान सकते हो जहां पर उनका अधिकार था?

कन्नौज के लिए संघर्ष

राजा हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज थी। इसकी स्थिति इस प्रकार की थी कि जो कोई भी कन्नौज पर अधिकार करता था वह पूरी गंगा घाटी पर अधिकार कर सकता था। परिणामस्वरूप पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट शक्तियों के मध्य संघर्ष हुआ। यह संघर्ष लगभग दो शताब्दियों तक चला। इसलिए इतिहासकारों ने इसे त्रिपंक्षीय संघर्ष कहा है। कन्नौज के लिए इस संघर्ष से तीनों वंशों की अर्थव्यवस्था कमज़ोर पड़ गई।

क्या आप कन्नौज तथा गंगा घाटी पर कब्जा करने का कारण जानते हो?

उत्तर भारत में नए राज्यों की स्थापना

(1) गुर्जर-प्रतिहार वंश : गुर्जर-प्रतिहार शासकों ने राजस्थान और गुजरात के भागों में शासन किया। प्रतिहार वंश की नींव 725 ई. में अवन्ती तथा दक्षिणी राजस्थान के भागों में नागभट्ट-

प्रथम द्वारा रखी गई। मिहिर भोज इस वंश का सबसे अधिक शक्तिशाली शासक था। उसने 836 ई. से 885 ई. तक शासन किया। उसके शासन काल में इस वंश की प्रतिष्ठा अपनी चरम सीमा पर थी। उसने कन्नौज को भी जीत लिया था। मिहिर भोज के पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रपाल उसका उत्तराधिकारी बना, जिसने 885 ई. से 910 ई. तक शासन किया। वह साहित्य तथा कला का प्रेमी था। राजशेखर उसके दरबार का बहुत प्रसिद्ध कवि था। प्रतिहार शासक **राजपाल** ने 1018-19 ई. में महमूद गजनवी की अधीनता स्वीकार की थी। इस कारण वह राजपूतों द्वारा मारा गया। इस प्रकार गुर्जर-प्रतिहार वंश का अन्त हो गया।

(2) पाल वंश : पाल वंश के शासकों ने बंगाल, बिहार तथा झारखंड के क्षेत्रों में शासन किया। गोपाल ने 750 ई. में बंगाल तथा बिहार में पाल वंश की नींव रखी। उसका पुत्र धर्मपाल इस वंश

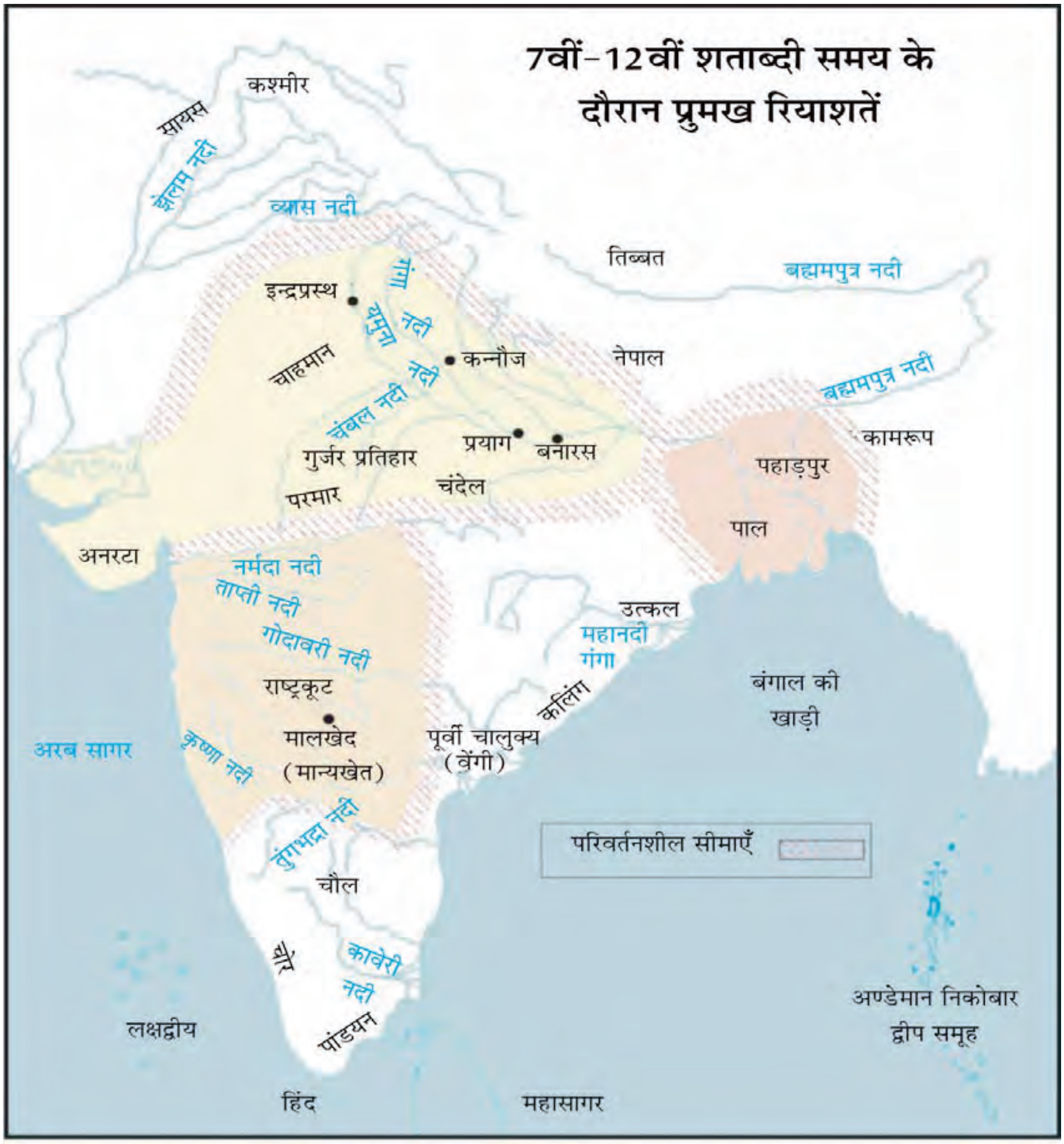

चित्र 8.1 : सातवीं-बारहवीं शताब्दियों के प्रमुख राज्य

का सबसे अधिक शक्तिशाली शासक था। उसने 770 ई. से 810 ई. तक शासन किया। उसने कई क्षेत्रों को जीता और अपने राज्य को साम्राज्य में परिवर्तित किया। वह एक बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने विक्रमशिला के बौद्ध मठ की नींव रखी जो बाद में एक महान विश्व विद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ। पाल शासकों के शासन के दौरान भवन निर्माण, चित्रकारी, शिक्षा तथा साहित्य ने बहुत उन्नति की। यद्यपि पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे तथापि वे दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णु थे। देवपाल शासक ने बौद्ध गया में एक प्रसिद्ध ''**महाबौद्धी**'' मन्दिर बनवाया। देवपाल के अधीन पाल वंश ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ व्यापार सम्बन्ध स्थापित किए। 12 वीं शताब्दी के अन्त तक इस वंश का पतन हो गया।

चित्र 8.2 महाबौद्धी मन्दिर बौद्ध-गया

(3) राष्ट्रकूट वंश : राष्ट्रकूट दक्कन (कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदियों के उत्तरी क्षेत्र को दक्कन नाम से जाना जाता है) से सम्बन्धित थे। दन्तीदुर्ग ने 742 ई. में आधुनिक महाराष्ट्र में राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की। दन्तीदुर्ग की मृत्यु के पश्चात् कृष्ण प्रथम, गोबिन्द द्वितीय, ध्रुव, गोविन्द तृतीय, अमोधवर्ष तथा कृष्ण तृतीय आदि। इस वंश के शासक थे। उन्होंने दक्षिण भारत में चालुक्य तथा पल्लवों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। कन्नौज पर अधिकार करने के लिए राष्ट्रकूट शासकों ने पाल तथा प्रतिहार शासकों के विरुद्ध भी संघर्ष किया।

राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने प्रतिहार शासक वत्सराज को भी पराजित किया। परन्तु ध्रुव लम्बे

समय तक कन्नौज को अपने अधिकार में नहीं रख सका, क्योंकि उसका ध्यान उत्तर भारत की ओर केन्द्रित था। शीघ्र ही कृष्ण तृतीय की मृत्यु के पश्चात् राष्ट्रकूट वंश का अन्त हो गया।

राष्ट्रकूट शासक कला तथा शिक्षा के संरक्षक थे। एलोरा का कैलाश मन्दिर कृष्ण तृतीय शासक द्वारा बनवाया गया था। अमोधवर्ष शासक एक अच्छा कवि था।

संरक्षक : कोई एक प्रभावशाली व्यक्ति, जो किसी कलाकार, शिल्पकार, विद्वान आदि की मदद करे। उसको संरक्षक कहा जाता है।

राष्ट्रकूट शासकों के साथ दूसरे देशों के व्यापारिक सम्बन्ध थे। पूर्व मध्यकालीन युग में हिन्दू धर्म बहुत प्रचलित था। राष्ट्रकूट शासक शैवमत तथा वैष्णव मत के अनुयायी थे। उन्होंने जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा इस्लाम धर्म का भी प्रचार किया।

इस अध्याय में आप ने उत्तरी भारत के भिन्न-भिन्न राजवंशों का अध्ययन किया है। आप के मत अनुसार उनमें से सबसे अधिक शक्तिशाली राजवंश कौन-सा था?

चित्र 8.3 कैलाश मन्दिर, एलोरा

उत्तरी भारत में समाज, धर्म तथा आर्थिक दशा

समाज : इस समय समाज में जाति प्रथा के नियम बहुत कठोर थे। समाज चार जातियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) में बंटा हुआ था। परन्तु आगे जाकर यह कई उपजातियों में बंट गया। समाज में धार्मिक कार्य सम्पन्न करवाने के कारण ब्राह्मणों का विशेष आदर किया जाता था। राजा तथा सैनिक क्षत्रिय होते थे तथा युद्ध में भाग लेते थे। वैश्य व्यापार करते थे। समाज में शुद्रों के साथ बुरा बर्ताव किया जाता था।

प्राम्भिक मध्यकालीन युग दौरान समाज में स्त्रियों का विशेष आदर किया जाता था। उन्हें उच्च शिक्षा दी जाती थी। वे सामाजिक तथा धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेती थीं। उन्हें अपना वर

चुनने का अधिकार था। अपने पति की मृत्यु पर वे सती हो जाती थी। वे जौहार भी निभाती थीं जो उनके शौर्य एवं शान का प्रतीक था।

धर्म : प्राम्भिक मध्यकालीन युग में जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा हिन्दू धर्म पनप रहे थे। परन्तु राजपूत हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। इसलिए उनके अधीन इस धर्म ने महान् प्रगति की। प्राम्भिक उत्तर भारत में शैव तथा वैष्णव मत प्रचलित थे। लोग शिव, विष्णु तथा शक्ति आदि की पूजा करते थे। वे विष्णु के दस अवतारों की पूजा भी करते थे। प्राम्भिक मध्यकालीन युग में भारत के उत्तर तथा दक्षिण दोनों भागों में भक्ति आन्दोलन प्रचलित था। श्री गुरु नानक देव जी, रामानुज तथा माधव आदि ने ईश्वर की भक्ति पर जोर दिया। उनका उपदेश था कि पवित्र हृदय से परमात्मा को प्यार करने से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। वे जाति तथा वर्ग भेद के भी विरुद्ध थे। जनसाधारण उनकी शिक्षाओं से प्रभावित था।

आर्थिक दशा : प्राम्भिक मध्यकालीन युग में आजकल की तरह लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। इस समय के दौरान व्यापार तथा वाणिज्य ने भी उन्नति की। भारत दूसरे देशों में कीमती रत्न, मसाले, चन्दन की लकड़ी, सब्ज़ियाँ, नारियल, रेशमी, ऊनी तथा सूती कपड़ों का निर्यात करता था। जबकि खजूर, शराब तथा घोड़ों इत्यादि का मध्य एशिया से आयात करता था।

(4) चौहान वंश : युद्ध करने वाले अन्य राजाओं में चाहमान वंश के राजा भी शामिल थे। ये राजा बाद में चौहान नाम से प्रसिद्ध हुए। चौहान वंश के राजा दिल्ली एवं अजमेर के निकट के क्षेत्रों पर शासन करते थे। उन्होंने पश्चिम तथा पूर्वी दिशा की ओर अपने राज्य को विस्तृत किया था। इसलिए उन्होंने गुजरात के चालुक्यों से युद्ध किया। चौहान, चाहमान नाम से भी जाने जाते थे। पृथ्वीराज चौहान इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। उसने 1179 से 1192 ई. तक शासक किया। 1191 ई. में तराई के प्रथम युद्ध में उसने मुहम्मद गौरी को पराजित किया। 1192 ई. में वह मुहम्मद गौरी द्वारा ताराईन की दूसरी लड़ाई में पराजित हुआ तथा मारा गया।

चित्र 8.4 पृथ्वीराज चौहान

महमूद गज़नवी

महमूद गज़नवी, गजनी राज्य का शासक था, जिसे आजकल अफगानिस्तान कहा जाता है। वह गजनी को उस क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली राज्य बनाना चाहता था। इसीलिये उसे एक विशाल सैन्य-विस्तार के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी। धन प्राप्त करने के लिए उसने भारत पर आक्रमण किया। उसने 1001 से 1025 ई. तक सत्रह बार भारत पर आक्रमण किए।

चित्र 8.4 *महमूद गज़नवी*

क्या आप महमूद गज़नवी द्वारा भारत पर आक्रमण करने का कारण जानते हो?

महमूद गज़नवी के मुख्य आक्रमण

(1) 1001 ई. में जयपाल पर आक्रमण : 1001 ई. में महमूद गज़वनी ने पंजाब में हिन्दूशाही वंश के शासक जयपाल पर आक्रमण किया।

(2) 1008 ई. में आनन्द पाल पर आक्रमण : शासक पाल आनन्द ने उज्जैन, ग्वालियर, कालिंजर, दिल्ली तथा अजमेर के हिन्दू शासकों का सहयोग प्राप्त किया। महमूद गज़नवी के पेशावर के नज़दीक उन पर आक्रमण किया।

(3) 1009 ई. में नगरकोट पर आक्रमण : 1009 ई. में महमूद गज़नवी ने विशाल सेना के साथ नगरकोट पर आक्रमण किया।

(4) 1014 ई. में थानेसर पर आक्रमण : महमूद गज़नवी ने 1014 ई. में थानेसर पर आक्रमण किया तथा मन्दिरों को लूटा।

(5) 1018-19 ई. में मथुरा तथा कन्नौज पर आक्रमण : 1018 ई. में महमूद गज़नवी ने मथुरा पर आक्रमण किया।

(6) 1021 ई. में कालिंजर पर आक्रमण : कालिंजर के शासक विद्याधर ने महमूद गज़नवी का सामना करने के लिए विशाल सेना इकट्ठी की, परन्तु वह युद्ध क्षेत्र से भाग गया तथा उसकी सेना पराजित हुई।

(7) 1025 ई. में सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण : 1025 ई. में महमूद गजनवी ने काठियावाड़ के सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण किया तथा सैंकड़ों मण सोना, चाँदी तथा आभूषण लूट कर ले गया।

मुहम्मद गौरी

मुहम्मद गौरी, अफगानिस्तान में गौर राज्य का शासक था। मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया। क्योंकि वह भारत में एक साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। इसलिए 1175 ई. में उसने मुलतान पर आक्रमण किया तथा उस पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् उसने 1178 ई. में गुजरात पर आक्रमण किया। गुजरात के शासक भीमदेव ने उसे करारी हार दी। इसके पश्चात् मुहम्मद गौरी ने 1179 ई. में पेशावर तथा 1182 ई. में सियालकोट तथा पंजाब पर विजय प्राप्त की।

चित्र 8.6 मुहम्मद गौरी

1191 ई. में मुहम्मद गौरी ने दिल्ली तथा अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण किया। तराईन के रणक्षेत्र में दोनों के मध्य एक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गौरी पराजित हुआ। 1192 ई. में मुहम्मद गौरी ने अपनी विशाल सेना के साथ फिर पृथ्वीराज चौहान पर चढ़ाई की तथा तराईन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।

1194 ई. में मुहम्मद गौरी ने चंदवाड़ा के युद्ध में कन्नौज के शासक जयचन्द को पराजित किया। इसके पश्चात् उसकी सेना ने गंगा-यमुना दोआब पर अधिकार कर लिया। शीघ्र ही उसने

भारत में विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया। वह भारत में तुर्क साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था।

क्या आप मुहम्मद गौरी द्वारा भारत पर आक्रमण करने का कारण जानते हो?

याद रखने योग्य तथ्य

1. प्रारम्भिक मध्यकालीन युग दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में गुर्जर-प्रतिहार वंश, पाल वंश एवं राष्ट्रकूट वंश आदि नए राज्य स्थापित हुए।
2. प्रारम्भिक मध्यकालीन युग दौरान भारत के उत्तरी भाग में जाति-प्रथा बहुत कठोर थी। समाज चार वर्गों-ब्रह्मण, शुद्र, वैश्य तथा क्षत्रिय में बँटा हुए था।
3. प्रारम्भिक मध्यकालीन युग दौरान भारत के उत्तरी भाग में जैन धर्म, बौद्ध धर्म, शैव तथा वैष्णव धर्म का विकास हुआ।
4. प्रारम्भिक मध्यकालीन युग दौरान भारतीय लोगों का मुख्य कार्य कृषि था।
5. कन्नौज पर विजय प्राप्त करने के लिए पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट वंश के शासकों के बीच संघर्ष हुआ।
6. पृथ्वी राज चौहान, चौहान अथवा चाहमान वंश का एक शक्तिशाली शासक था।
7. महमूद गज़नवी ने भारत पर सत्रह बार आक्रमण किया।
8. महमूद गज़नवी ने पृथ्वी राज चौहान को 1192 ई. में तराईन के दूसरे युद्ध में पराजित किया।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. मध्यकालीन युग दौरान जाति प्रथा किस प्रकार की थी?
2. किस काल को राजपूत काल कहा जाता है?
3. महमूद गज़नवी ने भारत पर आक्रमण क्यों किया था?
4. मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण क्यों किया था?

II. निम्नलिखित रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें :-

1. मिहिरभोज .... वंश का शक्तिशाली शासक था।
2. शासक देवपाल ने बौद्ध गया में .... मंदिर का निर्माण करवाया।
3. राष्ट्रकूट शासक .... के संरक्षक थे।

III. निम्नलिखित से सही जोड़े बनाएं :

(क)	(ख)
1. गुर्जर-प्रतिहार शासक	1. बंगाल, बिहार एवं झारखंड
2. पाल शासक	2. राजस्थान तथा गुजरात
3. राष्ट्रकूट शासक	3. दक्षिण

क्रिया-कलाप

इस अध्याय में दर्शाए गए मंदिरों से अपने आस-पास के मंदिरों की तुलना करें तथा इनमें पाई जाने वाली समानताओं अथा असमानताओं का वर्णन करें।

पाठ 9

दक्षिणी भारत में राजनीतिक विकास (700–1200 ई. तक)

दक्षिणी भारत में नये राज्यों की स्थापना

मध्यकालीन युग दौरान उत्तरी भारत की तरह दक्षिणी भारत में कई राजपूत राज्य स्थापित हुए। परन्तु इनमें से पल्लव, पाण्डेय तथा चोल तीन प्रमुख शक्तिशाली राज्य थे। उन्होंने अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने के लिए एक दूसरे से संघर्ष जारी रखा।

पल्लव शासक

पाँचवीं तथा छठी शताब्दी में सातवाहनों के पतन के पश्चात् पल्लव शासक शक्तिशाली बन गए। महेन्द्रवर्मन प्रथम तथा नरसिंह वर्मन प्रथम पल्लव वंश के दो प्रमुख शासक थे। उन्होंने अपने राज्य का बहुत विस्तार किया। उन्होंने चोल, चेर तथा पाण्डेय शासकों को पराजित करके कांची को अपनी राजधानी बनाया।

इसके अतिरिक्त पल्लव शासक कला तथा भवन निर्माण कला के प्रेमी थे। उन्होंने महाबलीपुरम् में शोर मन्दिर तथा रथ मन्दिर बनवाए। उन्होंने काँचीपुरम में कैलाशनाथ मन्दिर भी बनवाया। परन्तु नौवीं शताब्दी में चोलों ने पल्लवों को पराजित किया तथा पल्लव वंश का पतन हो गया।

चित्र 9.1 शोर मन्दिर, महाबलीपुरम

चित्र 9.2 दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी का भारत

चित्र 9.2 रथ मन्दिर, महाबलीपुरम

पाण्डेय शासक :

मध्यकालीन युग में पाण्डेय राज्य तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में स्थापित था। उसकी राजधानी को मदुरै या मदुरा नाम से जाना जाता था। यह शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। मार्को पोलो ने इस राज्य की यात्रा की तथा अपनी यात्रा के बारे में एक लेख लिखा है। चौदहवीं शताब्दी में पाण्डेय राज्य का पतन हो गया।

चोल शासकों का विशेष अध्ययन (846-1267 ई.)

मध्यकालीन युग में दक्षिणी भारत में चोल शासकों ने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। विजयालय चोल वंश का प्रथम शासक था। उसने पल्लवों से तंजौर को जीता तथा इसे अपनी राजधानी बनाया। परान्तक प्रथम चोल राज्य का एक शक्तिशाली शासक था। उस ने पाण्डेय शासक को पराजित किया तथा उसकी राजधानी मदुरै को जीत लिया। लेकिन वह भी 949 ई. में ताकोलम की लड़ाई में राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय से पराजित हुआ। चोल इस पराजय के बाद कमज़ोर पड़ गए। राजराज प्रथम तथा राजेन्द्र चोल शासकों ने इस राज्य को पुनर्जीवित किया तथा चोलों को दक्षिणी भारत में महान् शक्तिशाली बनाया।

राजराज प्रथम : (985-1014 ई. तक) – राजराज प्रथम जिसे राजराज चोल भी कहा जाता था, चोल राज्य का महान् तथा सबसे शक्तिशाली शासक था। उसने 985 से 1015 ई. तक शासक किया। उसने चेर, पाण्डेय तथा श्री लंका के राजाओं को पराजित कर उनके कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को अपने अधिकार में ले लिया। वह अपनी नौ सेना के आधुनिकीकरण में विशेष रुचि लेता था। उसने अपने प्रशासन प्रबन्ध में कई सुधार किए। उसने तंजौर में प्रसिद्ध राज-राजेश्वर मन्दिर बनवाया।

राजेन्द्र चोल : (1014-1044 ई० तक) राजेन्द्र चोल ने चोल राज्य का विस्तार किया। उसने पाण्डेय, चेर तथा श्रीलंका के शासकों को पराजित कर, उनके प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। उसने **गंगईकोण्डा चोलपुरम्** की उपाधि धारण की।

राजेन्द्र चोल ने अपने नाम पर गंगाइकोण्डा चोलपुरम नगर स्थापित किया तथा इसे चोल राज्य की राजधानी बनाया। उसकी दक्षिणी-पूर्वी एशिया में अण्डमान, निकोबार, मलाया, सुमात्रा तथा जावा की विजय सबसे महत्वपूर्ण थी। इससे चीन तथा भारत के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध शुरू हुए। इसे चोल राज्य की आय वृद्धि का स्त्रोत माना गया। राजेन्द्र प्रथम ने अपने शासन प्रबन्ध में भी कई सुधार किए।

राजेन्द्र चोल के उत्तराधिकारियों ने पड़ोसी राज्यों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। इस निरन्तर विवाद के कारण चोल शक्तिहीन पड़ गए, जिसके परिणामस्वरूप चोल साम्राज्य का पतन हो गया।

प्रशासन प्रबन्ध

चोल राजा बहुत शक्तिशाली होता था। वह केन्द्र सरकार का प्रमुख था। वह पूर्ण शक्तिशाली था परन्तु प्रशासनिक मामलों में वह अपनी मन्त्री परिषद की सलाह पर कार्य करता था। वह प्रशासन का निरीक्षण करता था, न्याय करता था तथा युद्ध में सेना दल को भेजता था।

चोल राज्य कई प्रान्तों में बंट गया था, जिन्हें मंडलम कहा जाता था। आगे ये मण्डलम्, वलनाडू (कोट्टम) में बँट गए। प्रत्येक वलनाडू (कोट्टम) में गाँवों की निश्चित् संख्या शामिल होती थी। गाँव या नाडू चोल प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।

चोल वंश के शासकों का शासन प्रबन्ध आजकल के शासन प्रबन्ध से कैसे भिन्न था?

प्रत्येक गांव में दो सभाएँ उर तथा सभा होती थीं। उर सामान्यत : जनसधारण की सभा थी। **सभा** व्यस्क पुरुषों का समूह होती थी। गाँव के सभी मामले जैसे विवादों का निपटारा करना, पानी का बँटवारा तथा एक इकट्ठा करना आदि कार्य छोटी कमेटियों द्वारा किए जाते थे।

चोल शासकों के पास एक शक्तिशाली सेना थी। सेना में हाथी, घुड़सवार तथा पैदल सैनिक शमिल थे। नौ सेना, सेना का एक प्रमुख शक्तिशाली दल था।

भूमि तथा व्यापार चोलों के लगान के प्रमुख स्त्रोत थे। इस समय दूसरे देशों के साथ व्यापार भी प्रफुल्लित हो रहा था।

क्या आजकल भी भारत सरकार द्वारा भूमि लगान तथा व्यापार कर लगाए जाते हैं?

समाज

समाज की कुलीन वर्ग के अतिरिक्त, ब्राह्मणों तथा व्यापारियों का भी आदर किया जाता था। समाज के विभिन्न वर्ग सामान्य लक्ष्यों के लिए एक दूसरे को सहयोग देते थे। स्त्री का भी समाज में विशेष सम्मान होता था। उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी। किसान तथा मज़दूर श्रमिक वर्ग से संबंध रखते थे। वे बहुत ग़रीब थे। वे कठिन जीवन व्यतीत करते थे।

धर्म

मध्यकालीन भारत में हिन्दू धर्म प्रसिद्ध था। हिन्दू धर्म देवता विष्णु तथा शिव आदि की पूजा की जाती थी। उस समय बौद्ध तथा जैन धर्म इत्यादि भी अस्तित्व में थे। इस समय दौरान कई धार्मिक लहरें शुरू हुई थी। बास्व ने **'लिंगायत'** मत की नींव रखी। शंकराचार्य ने **'अद्वैत'** मत का प्रचार किया। रामानुज तथा माधव भी **'भक्ति आन्दोलन'** के अन्य धार्मिक प्रचारक थे।

उन्होंने ईश्वर की भक्ति पर ज़ोर दिया। उनका उपदेश था कि सच्चे हृदय से परमात्मा को प्यार करना ही मोक्ष प्राप्त करने का केवल साधन है। वे जाति तथा वर्ग भेद के भी विरुद्ध थे। जन साधारण उनकी शिक्षाओं से बहुत प्रभावित हुए।

शिक्षा तथा साहित्य

मध्यकालीन भारत में चोल शासकों ने शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्रों में बहुत प्रगति की। उन्होंने व्याकरण, दर्शनशास्त्र, कला, विज्ञान तथा ज्योतिष जैसे विभिन्न विषयों के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया। निर्देश (उपदेश) संस्कृत तथा तमिल भाषाओं में किया जाता था। शिक्षा मन्दिरों के प्रांगण में दी जाती थी।

चोल शासन काल में संस्कृत तथा क्षेत्रीय भाषाओं जैसे तमिल, तेलगु तथा कन्नड़ का विकास हुआ। बहुत से साहित्य का संस्कृत से इन भाषाओं में अनुवाद किया गया। उदाहरण स्वरूप कंबन विद्वान ने रामायण का तमिल में अनुवाद किया। तेलगू विद्वान **ननियाह** तथा **तिकना** ने महाभारत का अनुवाद तेलगू में किया था। रामायण तथा महाभारत महाकाव्य हमें दक्षिणी भारत के पूर्वी तथा उत्तरी मध्यकालीन युग के दक्षिणी-भारतीय इतिहास की जानकारी उपलब्ध करवाते हैं।

तमिलनाडु में ज़मींदार प्रथा का विस्तार

तमिलनाडु में चोलों ने कृषि के विकास पर अधिक ध्यान दिया। इसके परिणाम स्वरूप वहां जमींदार प्रथा का अधिक विस्तार हुआ था। उन्होंने सिंचाई व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान दिया था। प्राय : सभी नदियों विशेषत : कावेरी को सिंचाई के लिए प्रयोग किया जाता था। उन्होंने ऐसे स्थानों पर कई तालाबों का सिंचाई के लिए निर्माण करवाया जहाँ पर नदियों का पानी नहीं ले जा सकते थे।

उन्होंने खेतों में पानी के बँटवारे के लिए एक तालाब समिति को भी संगठित किया। यदि अधिक वर्षा तथा अकाल के कारण फसल नष्ट हो जाती तो चोल शासक भूमि कर माफ कर देते थे। वे आपातकाल के समय में कृषकों को ऋण भी मुहैया करवाते थे। चोल शासकों ने भ्रमण करने वाले कबीलों की सहायता से जंगलों को साफ करवा कर उस भूमि को कृषि योग्य बनवाया।

चित्र 9.4 चोल शासन काल दौरान तामिलनाडू में एक तालाब

याद रखने योग्य तथ्य

1. मध्यकालीन युग दौरान दक्षिणी भारत में पल्लव, पाण्डेय तथा चोल राज्य अधिक शक्तिशाली थे।
2. महेन्द्र वर्मन प्रथम तथा नरसिंह वर्मन प्रथम पल्लव वंश के प्रसिद्ध शासक थे।
3. पल्लव शासकों ने महाबलीपुरम में सूर्य मंदिर, रथ मंदिर तथा काँचीपुरम में कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया।
4. पाण्डेय राज्य की राजधानी मदुरै थी।
5. राजराज चोल वंश का महान एवं शक्तिशाली शासक था।
6. राजेन्द्र चोल ने गंगईकौंडा चोलपुरम की उपाधि धारण की।

बीज शब्द :

मडंलम
नाडू
सभा
बलनाडू

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. चोल वंश के किन शासकों ने चोल राज्य की दोबारा स्थापना की?
2. राजराज प्रथम ने किन राजाओं (राज्यों) को पराजित करके उनके क्षेत्र पर कब्जा किया?
3. राजेंदर चोल की महत्वपूर्ण विजय के विषय में लिखो।
4. चोल शासनकाल दौरान किन भाषाओं का विकास हुआ?
5. चोल शासनकाल दौरान कौन-सा धर्म अधिक प्रसिद्ध था?

(ख) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :-

1. पल्लव शासकों ने .... को अपनी राजधानी बनाया।
2. मार्को पोलो ने .... राज्य की यात्रा की।

3. चोल शासनकाल दौरान स्त्रियों का भी .... किया जाता था।

4. ननियाह तथा तिकना तेलगू विद्वानों ने .... का तेलगू भाषा में अनुवाद किया।

(ग) निम्नलिखित के सही जोड़े बनाएं :-

	क	**ख**
1.	बासव	अद्वैत मत
2.	शंकराचार्य	लिंगायत
3.	रामानुज	भक्ति लहर

(घ) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के सामने ठीक (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाएं :-

1. कंबन विद्वान ने रामायण का तमिल भाषा में अनुवाद किया। ☐
2. मदुरै चोल शासकों की राजधानी थी। ☐
3. चोल शासकों के पास शक्तिशाली जल सेना थी। ☐
4. महेन्द्र वर्मन ने गंगइकोण्डा चोलपुरम नगर को स्थापित किया। ☐
5. चोल राज्य प्रांतों में बँटा हुआ था। ☐

क्रिया-कलाप

1. मांउट आबू, खजुराहों, महाबलीपुरम, कांची तथा तंजौर के चित्र अपनी नोट पुस्तिका में लगाएं।

पाठ 10

दिल्ली सल्तनत

भारतीय इतिहास में 1206 ई. से 1526 ई. तक के समय को दिल्ली सल्तनत काल से जाना जाता है। इस समय दौरान दास वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश तथा लोधी वंश ने दिल्ली पर शासन किया। इल्तुतमिश, बलबन, अलाउदीन खिलजी, मुहम्मद-बिन-तुगलक तथा फिरोज शाह तुगलक दिल्ली सल्तनत के महान सुल्तान थे।

> *सुल्तान : सुल्तान अरबी भाषा का शब्द है, जिसका भाव है शासक।*

ऐतिहासिक स्त्रोत

विभिन्न दरबारी वृतान्त, यात्रियों के लेख तथा ऐतिहासिक इमारतें दिल्ली सल्तनत की जानकारी प्राप्त करने के मुख्य स्त्रोत हैं। दिल्ली सल्तनत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के मुख्य स्त्रोत निम्नलिखित हैं :

1. **विदेशी यात्रियों के लेख :** मोरक्को का प्रसिद्ध यात्री इब्न बतूता तथा मार्को पोलो आदि जिन्होंने मध्यकालीन युग दौरान भारत की यात्रा की, ने भिन्न-भिन्न दिल्ली सुल्तानों के महानुभावों तथा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की जानकारी सम्बन्धी लेख लिखें।

2. **शाही लेख :** तुगलक नामा, तारीख-ए-इलाही, तारीख-ए-फिरोज शाही, फतुहात-ए-फिरोज शाही, तारीख-ए-मुबारक शाही तथा मखजरी-ए-अफगान हमें दिल्ली सल्तनत के महानुभावों तथा मुख्य घटनाओं की जानकारी प्रदान करते हैं।

3. **ऐतिहासिक इमरातें :** दिल्ली सल्तनत समय की ऐतिहासिक इमारतें जैसे कुव्वत-अल-इस्लाम मस्जिद, अलाई दरवाजा, लोधी मकबरा, हौज-खास, लोधी गुम्बद, फिरोज शाह कोटला आदि भी हमें दिल्ली सुल्तानों की शिल्प-कला में रुचि के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

दास वंश

1. कुतुबुद्दीन-ऐबल

मध्यकालीन युग दौरान कुतुबुद्दीन ऐबक भारत में तुर्क शासन का वास्तविक संस्थापक था। वह दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था। उसने गज़नी के शासक ताज-उद-दीन यल्दौज के पंजाब में आक्रमण को रोकने के लिए पंजाब पर अधिकार कर लिया। उसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। नसीरूदीन कबाचा, जिसने मुलतान तथा सिंध पर अधिकार किया था, उसने एबक की बहन से विवाह कर लिया। कुतुबुद्दीन ऐबक एक महान कला प्रेमी था। उसने दिल्ली तथा अजमेर में मस्जिदें बनवाई। उसने **कुतुब-मीनार** का निर्माण शुरू करवाया। परन्तु 1210 ई. में अचानक घोड़े से गिर जाने पर उसकी मृत्यु हो गई।

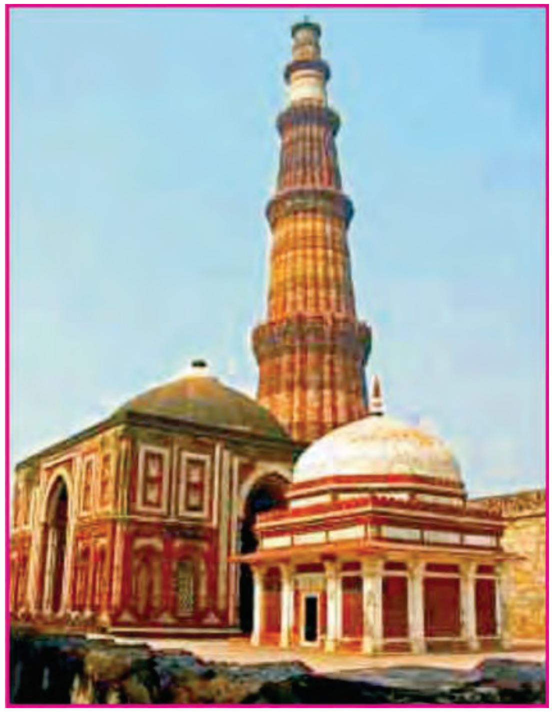

चित्र 10.1 कुतुब मीनार

2. इल्तुतमिश

इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दास था। उसकी योग्यता तथा इमानदारी से प्रभावित होकर कुतुबद्दीन-ऐबक ने इल्तुतमिश को ''अमीर-ए-शिकार'' के पद पर नियुक्त किया, बाद में उसको/अपना दामाद बना लिया। ऐबक की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अराम शाह शासक बना जो एक अयोग्य सुल्तान साबित हुआ। इसलिए इल्तुतमिश को दिल्ली का सुल्तान बनाया गया। उसने अराम् शाह को पराजित कर बन्दी बना लिया। बाद में इल्तुतमिश ने उस को मार दिया। इस लिए अपने असीम प्रयत्नों तथा योग्यता के कारण 1221 ई. में इल्तुतमिश दिल्ली का शासक बन गया।

चित्र 10.2 इल्तुतमिश

इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत के एकीकरण के लिए कई कदम उठाए। उसने अमीरों पर नियन्त्रण कर लिया, जो दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध थे। उसने गज़नी के ताज-उद्-द्दीन यलदौज तथा मुलतान के नसीरूदीन कबाचा को पराजित किया। उसने रणथम्भौर, ग्वालियर तथा उज्जैन आदि जैसे राजपूत किलों पर भी अधिकार कर लिया। उसने बंगाल के विद्रोह को कुचल दिया तथा बंगाल पर फिर से अधिकार कर लिया। उसने 1221 ई. में चंगेल खान के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण से भारत को बचाया। उसने दिल्ली सल्तनत के राज्य के प्रशासन को चलाने के लिए चालीस अमीरों की नियुक्ति की जिनको चालीसा कहा जाता है।

3. रज़िया सुल्ताना

रज़िया सुल्ताना इल्तुतमिश की पुत्री थी। वह इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली सल्तनत के सिंहासन पर बैठी थी। उसने 1236 ई. से 1240 ई. तक शासन किया। उसने प्रांतीय गवर्नरों के विद्रोह को दबाया। परन्तु अमीर तथा सेना अधिकारी उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते थे। क्योंकि वे एक स्त्री के अधीन रहना पसंद नहीं करते थे। इसलिए उन्होंने 1240 ई. में उसे मार दिया। रज़िया सुल्ताना के पश्चात् कई बहिराम शाह, अलाऊद्दीन, मामूद शाह तथा नसीरुद्दीन आदि अप्रसिद्ध शासक सत्ता में आए।

चित्र 10.3 रज़िया सुल्ताना

क्या आप रज़िया सुल्ताना की हत्या का कारण जानते हो?

4. गयास-उद-दीद्द बलबन (1266-1286 ई. तक)

1266 ई. में नसीरूद्दीन की मृत्यु के पश्चात् गयास-उद-दीन बलबन ने स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया। वह दिल्ली सल्तनत का महान् शासक था। उसने दिल्ली के समीप मेवातीयों द्वारा फैलाई हुई बेचैनी (अशान्ति) तथा दोआब के लुटेरों पर नियन्त्रण किया। उसने बंगाल में तुगरिल खान के विद्रोह को कुचल दिया तथा अपराधियों को कठोर दण्ड दिया। उसने सेना को पुनः संगठित किया। मंगोल आक्रमणों से रक्षा करने के लिए उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रान्तों में एक विशेष सेना स्थापित की। उसने मंगोलों के विरुद्ध कठोर नीति अपनाई जिसे लहू तथा लोहे की नीति कहा जाता है। उसने प्रशासन प्रबन्ध में भी सुधार किए। उसने अपनी प्रजा को न्याय दिया।

चित्र 10.4 गयास-उद्द-द्दीन बलबन

परन्तु 1286 ई. में गयासु-उद-दीन बलबन की 'मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारी कमजोर तथा आयोग्य थे। इसलिए जलालुद्दीन खिलजी ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया तथा दास वंश का पतन हो गया।

खिलजी वंश

जलालुद्दीन खिलजी, खिलजी वंश का संस्थापक था। उसने 1290-1296 ई. तक शासन किया। दरबार कूटनीति का स्थान बन गया था। 1296 ई. में जलालुद्दीन खिलजी के भतीजे तथा दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने उसे कत्ल कर दिया तथा आप शासक बन गया।

चित्र 10.5 *तेरहवीं शताब्दी की तुर्क सल्तनत*

अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई. तक)

अलाउद्दीन खिलजी, खिलजी वंश का प्रसिद्ध शासक था। उसने 1296 से 1316 ई. तक शासन किया। वह एक महत्वाकांक्षी राजा था। वह भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। इसलिए उसने 1299 ई. में गुजरात पर विजय प्राप्त की। तब 1301 ई. में उसने प्रसिद्ध किले रणथम्भौर पर अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने 1303 ई. में चितौड़ पर भी अधिकार कर लिया। तब उसने जनरल मलिक काफूर के नेतृत्व में एक विशाल सेना दक्षिणी भारत में भेजी। मलिक काफूर ने देवगिरी, वारंगल, द्वार समुद्र तथा मदुरा के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। परन्तु अलाउद्दीन ने उन क्षेत्रों को दिल्ली सल्तनत में नहीं शामिल किया था।

चित्र 10.6 अलाउद्दीन खिलजी

अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधार : अलाउद्दीन खिलजी ने सभी आवश्यक वस्तुओं के दाम कम कर दिए। उसने कीमतों की वृद्धि पर रोक लगाने के लिए मण्डी अफसरों की नियुक्ति की। जो भी दुकानदार नियम का उल्लंघन करता था उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। जैसे दुकानदारों को कोड़े लगाए जाते। कम तोलने वाले दुकानदारों के शरीर में से उतना ही मास का टुकड़ा काट लिया जाता था, जितनी वस्तु कम तोली जाती थी।

सैनिक सुधार : अलाउद्दीन खिलजी ने सैनिकों के हुलिए लिखने और घोड़ों को दागने की प्रथा आरम्भ की। उसने सैनिकों को नकद वेतन देने की प्रक्रिया भी शुरू की। उसने उन गुप्तचरों को भी रोजगार दिया जो साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों में तैनात थे।

1316 ई. में अलाउद्दीन खिलज़ी की मृत्यु के पश्चात् शहाबुउद्दीन, उमर, मुबारकशाह, नसिरूउद्दीन खुसरो शाह नामक सुल्तानों ने शासन किया। 1320 ई० में गाज़ी, तुग़लक खुसरो शाह की हत्या करके आप शासक बन गया।

तुगलक वंश (1320–1414)

तुगलत वंश दिल्ली सल्तनत का एक सबसे प्रसिद्ध वंश था। गयासु-उद-द्दीन तुग़लक इस वंश का प्रथम शासक था। उसने 1320–1325 ई. तक शासन किया। वह एक कुशल सेना अध्यक्ष था। उसने राज्य में विद्रोहों का दमन किया तथा राज्य में शान्ति स्थापित की। उसके पश्चात् मुहम्मद-बिन-तुग़लक उसका उत्तराधिकारी बना।

मुहम्मद-बिन-तुग़लक (1325-1351)

मुहम्मद-बिन-तुग़लक दिल्ली सल्तनत का एक शक्तिशाली शासक था। उसने 1325 से 1351 ई. तक शासन किया। वह भारतीय इतिहास में अपनी नई योजनाओं के कारण अधिक प्रसिद्ध है। वह अधिक शिक्षित था किन्तु उसकी सभी योजनाएँ अज्ञानता के कारण असफल हो गईं। उसकी योजनाओं के कारण लोगों को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। इस कारण लोग उसके विरुद्ध हो गए। इस लिए मुहम्मद-बिन-तुग़लक को **बुद्धिमान मूर्ख** भी कहा जाता था।

चित्र 10.7 मुहम्मद-बिन-तुगलक

> *क्या आप इसका कारण समझते हो कि मुहम्मद-बिन-तुगलक को बुद्धिमान मूर्ख कियों कहा जाता था?*

मुहम्मद-बिन-तुग़लक का प्रशासन प्रबन्ध

1. **राजधानी का बदलना :** मुहम्मद-बिन-तुग़लक के पास एक विस्तृत साम्राज्य था। इसलिए 1327 ई. में उसने साम्राज्य की राजधानी दिल्ली से बदलकर देवगिरी (दौलताबाद) करने का निर्णय लिया। इसके दो कारण थे।

   (क) साम्राज्य की मंगोल आक्रमणों से रक्षा करना।

   (ख) दिल्ली की अपेक्षा देवगिरी से साम्राज्य के प्रशासन को ठीक ढंग से चला सके।

मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने लोगों को दिल्ली दौलताबाद चलने के लिए कहा। उनमें से सैंकड़ों लोग रास्ते में मारे गए थे। राजधानी बदलने के बाद उत्तरी-भारत का प्रशासन प्रबन्ध बिगड़ना शुरू हो गया। इसलिए मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने वापिस दिल्ली जाने का निर्णय किया। इस प्रकार उसकी राजधानी बदलने की योजना असफल हुई।

क्या आप मुहम्मद-बिन-तुग़लक द्वारा राजधानी बदलने का कारण जानते हो?

2. **कांस्य के सिक्के प्रचलित करना :** 1330 ई. में मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने कांस्य के सिक्के प्रचलित किये क्योंकि इस समय दौरान संसार भर में चाँदी की कमी थी। इसलिए मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने चाँदी के टंके के स्थान पर कांस्य के सिक्के चलाए। उनकी कीमत चाँदी के सिक्कों के समान थी। लेकिन उसकी ये योजना भी असफल हुई क्योंकि लोगों ने अधिक मात्रा में नकली सिक्के बना लिए। इससे व्यापार में अधिक कमी हुई। इसलिए मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने कांस्य के सिक्कों को वापिस ले लिया तथा बदले में लोगों को चाँदी के सिक्के दिए। लोगों ने अधिक मात्रा में नकली सिक्के बना लिए तथा सरकार से बदले में चाँदी के सिक्के प्राप्त किये। इस प्रकार राज्य का शाही खजाना खाली हो गया।

क्या आप जानते हो कि मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने कांस्य के सिक्के क्यों जारी किये थे?

3. **दोआब में लगानबंदी :** इसलिए मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने दोआब में भूमि लगान बढ़ा दिया क्योंकि यह क्षेत्र अधिक उपजाऊ था। परन्तु उसने ऐसा गलत समय पर किया था क्योंकि वहां पर अकाल पड़ जाने के कारण उत्पादन में बहुत कमी हुई थी। इसलिए किसान भूमि लगान नहीं दे सके। इसलिए मुहम्मद-बिन-तुग़लक के अधिकारियों ने किसानों पर अत्याचार करने आरम्भ किये। इसलिए किसानों ने सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसके कारण सुल्तान को अपना आदेश वापिस लेना पड़ा।

4. **खुरासान विजय की योजना :** मुहम्मद-बिन-तुग़लक एक महान् ,सम्राट बनना चाहता था। इसलिए उसने खुरासान (ईरान) को जीतने का निर्णय किया। उसने एक बड़ी सेना का विस्तार किया। सेना के इन सैनिकों को एक वर्ष का वेतन दिया गया था। बहुत सा धन सैनिकों के प्रशिक्षण तथा हथियारों खर्च किया गया, परन्तु एक वर्ष के पश्चात् सुल्तान ने खुरासान को विजय करने का विचार त्याग दिया। सैनिकों को नौकरी से निकाल दिया गया। इसके परिणामस्वरूप राज्य में विद्रोह आरम्भ हो गये। क्रान्ति हुई तथा कई राज्यों ने अपने आप को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। इसलिए सुल्तान ने अपने साम्राज्य पर नियन्त्रण खो दिया। परन्तु 1351 ई. उसकी मृत्यु हो गई।

चित्र 10.8 तुग़लक साम्राज्य

फिरोजशाह तुग़लक

चित्र 10.9 फिरोजशाह तुग़लक

मुहम्मद-बिन-तुग़लक की मृत्यु के पश्चात् फिरोज शाह तुग़लक दिल्ली सल्तनत का सुलतान बना। उसने 1351 से 1388 ई. तक शासन किया। मुसलमान लोग फिरोज शाह को एक आदर्श शासक मानते थे। फिरोजशाह ने अपने शासन काल दौरान लोगों की भलाई के लिए कई योजनाएं शुरू की। उसने कई नहरें, तालाब, कुएँ, अस्पताल तथा सराय आदि बनवाईं। उसने कुछ नए नगरों जैसे फिरोजाबाद, फिरोजपुर, जौनपुर तथा हिसार आदि को स्थापित किया। उसने कई शैक्षणिक संस्थाएँ भी स्थापित की। 1388 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

तुग़लक साम्राज्य का पतन तथा तैमूर का आक्रमण

फिरोजशाह तुग़लक के उत्तराधिकारियों ने प्रशासन प्रबन्ध की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। इसके परिणामस्वरूप 1398 ई. में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया तथा दिल्ली को लूट लिया। मध्य एशिया में तैमूर की वापिसी के पश्चात् पंजाब, मालवा, मेवाड़, जौनपुर, खानदेश, गुजरात आदि प्रान्तों ने अपने-आप को स्वतन्त्र घोषित कर दिया।

दिल्ली छोड़ने से पहले तैमूर ने खिज्र खान को मुलतान, लाहौर तथा दिपालपुर का गवर्नर नियुक्त किया। परिणामस्वरूप 1414 ई. में खिजन खान ने दिल्ली पर विजय प्राप्त की तथा तुग़लक साम्राज्य का पतन कर दिया।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

तुग़लक साम्राज्य के पतन के बाद खिज़र खान ने सैय्यद वंश की नींव रखी। इस वंश के 1414-1451 ई. तक शासन किया। इस के शासक मुबारक शाग, मुहम्मद शाह, अलाउद्दीन आलम शाह थे। इसका अन्तिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह लाहौर के गवर्नर बहलोल लोधी से पराजित हुआ था।

लोधी वंश (1451-1526 ई.)

बहलोल लोधी, लोधी वंश का संस्थापक तथा प्रथम शासक था। उसने देश में कानून एवं शान्ति स्थापित की। परन्तु 1488 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। इसलिए उसके पश्चात् उसका पुत्र

सिकन्दर लोधी उसका उत्तराधिकारी बना।

चित्र : 13.10 बहलोल लोधी

सिकन्दर लोधी (1488-1517)

सिकन्दर लोधी, लोधी वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। वह एक अच्छा प्रशासक भी था। उसने जन-कल्याण के लिए अनेक कार्य किए। उदाहरणस्वरूप कृषि में सुधार किए गए तथा आवश्यक वस्तुओं के दाम कम किए। 1530 ई. में उसने आगरा शहर को स्थापित किया तथा इसे अपनी राजधानी बनाया। 1517 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। इसलिए 1517 ई० में उसका पुत्र इब्राहिम लोधी दिल्ली सल्तनत का सुलतान बना।

चित्र : 13.11 सिकन्दर लोधी

चित्र : 13.12 इब्राहिम लोधी

इब्राहिम लोधी (1517-1526 ई.)

इब्राहिम लोधी, सिकन्दर लोधी का पुत्र था। वह 1517 ई. में दिल्ली सल्तनत के सिंहासन पर बैठा। उसने अमीरों के बढ़ती हुई शक्ति को रोकने का प्रयत्न किया। परन्तु इसके परिणाम स्वरूप विद्रोहियों ने इब्राहिम लोधी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसलिए आलम शाह अफगानिस्तान में बाबर के पास गया तथा उसे भारत पर आक्रमण करने का आमन्त्रण दिया।

काबुल (अफगानिस्तान) के शासक बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। उसने 1526 ई. में पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोधी को पराजित किया। इब्राहिम लोधी इस युद्ध में मारा गया था। इसी के साथ ही दिल्ली सल्तनत के शासन का अन्त हो गया। बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी।

दिल्ली सल्तनत के दौरान राजनीतिक संस्थाओं का विकास

1. **केन्द्रीय सरकार :** दिल्ली सल्तनत के समय सुल्तान के पास राजनीतिक, कानूनी तथा सैनिक शक्तियाँ थी। सुल्तान ने महत्वपूर्ण विभागों में मन्त्री नियुक्त किए थे। परन्तु वे अपने-अपने विभाग का प्रशासन सुल्तान की आज्ञानुसार चलाते थे। सरकार के कई विभाग थे। प्रत्येक विभाग का निरीक्षण एक मन्त्री या अधिकारी द्वारा किया जाता था। वजीर वित एवं आय विभाग का मुखिया था।

1. उसकी सहायता के लिए कई अधिकारी नियुक्त किए गए थे। उनमें से मुशारिफ-ए-ममालिक तथा मुसतोफी-ए-ममालिक, आरिज-ए-ममालिक, दीवान-ए-इंशा, दीवान-ए-रिसालत, सदर-ए-सादूर महत्वपूर्ण थे।

प्रान्तीय प्रशासन : शासन प्रबन्ध की सुविधा के लिए साम्राज्य को कई प्रान्तों में बांटा हुआ था। प्रान्तीय प्रशासन को चलाने के लिए कई गर्वनरों की नियुक्ति की गई थी। उन्हें **सूबेदार, मुक्ति** अथवा **वली** भी कहा जाता था। प्रान्तों को आगे परगनों में बाँटा गया था। **आमिल** परगने का मुख्य अधिकारी होता था। कई गाँवों के समूह मिलकर एक परगना बनाते थे। गाँव के मुखिया को **मुक्क्दम** कहा जाता था।

सैन्य नियन्त्रण का ढंग : दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने अपनी सेना की सहायता से भारत के अधिकतर भागों पर अधिकार कर लिया था। उन्होंने सेना के सहयोग से विदेशी आक्रमणों को रोका। उन्होंने सेना के सहयोग से ही अपने राज्यों में कानून व्यवस्था स्थापित की। विद्रोहों का दमन करने के लिए सैन्य शक्ति होना आवश्यक था।

शाही दरबार, कुलीन वर्ग तथा भूमि सुधार

शाही दरबार : दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने अपने दरबार का निर्माण किया। दरबार में राजकुमारों को आगे का स्थान दिया जाता था। मन्त्रियों, विभागों के मुखियों, दूसरे अधिकारियों तथा विदेशी राजदूतों को निश्चित स्थान दिया गया। सुल्तान द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए विभागों के मुखिया हमेशा वहाँ उपस्थित रहते थे।

कुलीन वर्ग : दिल्ली सल्तनत के सुल्तान निरंकुश थे, जो कुलीन वर्ग की सहायता से शासन करते थे। उनमें से अधिकतर कुलीन तुर्क अथवा अफगान परिवारों में से थे। परन्तु अलाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल के पश्चात् मुस्लिम तथा हिन्दुओं को भी अधिकारी नियुक्त किया जाता था। उन्होंने कुलीन वर्ग का निर्माण किया। केन्द्रीय मन्त्री, प्रान्तीय गवर्नर तथा सैन्य मुखिया कुलीन वर्ग से सम्बन्धित थे।

भूमि सुधार : दिल्ली सुल्तानों की आय मुख्य स्त्रोत भूमि लगान था। उस समय भूमि-लगान निश्चित करने के लिए तीन विधियाँ प्रचलित थीं। यह तीन विधियाँ-बटाई, कन्कुत तथा भूमि का माप पर आधारित थी। भूमि लगान नकद या किसी अन्य रूप में इकट्ठा किया जाता था। अलाउद्दीन खिलजी ने भूमि-सुधार की तरफ विशेष ध्यान दिया। उसने कृषि योग्य भूमि का माप करवाया। उसने कृषि की देखभाल करने के लिए दीवान-ए-मस्त खराज नामक विभाग स्थापित किया। उस समय भूमि-लगान की दर बहुत अधिक थी। फिरोज शाह तुगलक ने कृषि को प्रोत्साहन दिया। उसने सिंचाई के लिए कई नहरें खुदवाईं। उसने भूमि-लगान की दर कम कर दी तथा किसानों को दिए गए ऋण को माफ कर दिया।

लगान के साधन : भूमि-लगान के अतिरिक्त खराज, खम्स, जकात तथा जजिया राज्य की आय के अन्य स्त्रोत थे। यह लगान कुल उपज का 10 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत तक होता था।

खम्स लूट के उस धन का 1/5 भाग था जिस पर सुल्तान का विशेष अधिकार होता था। लूट के माल का बचा हुआ 4/5 भाग सेना में बांट दिया जाता था। जकात एक धार्मिक कर था, जिसे मुसलमानों पर लगाया गया था। यह उनकी सम्पत्ति का 2.5 प्रतिशत होता था। जजिया कर ग़ैर-मुस्लमानों पर लगाया जाता था। ऐसा माना जाता है कि औरतों, बच्चों तथा गरीब लोगों को यह कर नहीं देना पड़ता था। इस कर की वसूली आय के आधार पर 10 से लेकर 40 टंका तक की जाती थी।

याद रखने योग्य तथ्य

1. कुतुबद्दीन ऐबक ने कुतुब मीनार का निर्माण करवाया था।
2. रज़िया सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री थी।
3. इल्तुतमिश कुतुबद्दीन का दास (सेवक) था।
4. गयासु-उद-दीन बलबन ने मंगोलों के विरुद्ध लहू (रक्त) एवं लोहे की नीति अपनाई।
5. अलाउद्दीन खिलजी ने सैनिकों के हुलिए (पहचान) लिखने तथा घोडें दागने की प्रथा शुरू की।
6. इतिहास में मुहम्मद-बिन-तुग़लक को बुद्धिमान मूर्ख कहा जाता है।
7. फिरोजशाह तुगलक ने लोगों की भलाई के लिए नहरों, तलाबों, कुओं, अस्पतालों तथा सराएं आदि का निर्माण करवाया।
8. बाबर ने 1526 ई० में इब्राहिम लोधी को पानीपत की पहली लड़ाई में पराजित किया।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. दिल्ली सल्तनत के इतिहास के निर्माण में ऐतिहासिक इमारतों का क्या योगदान था?
2. बलबन ने दिल्ली सल्तनत का संगठन कैसे किया?
3. मुहम्मद-बिन-तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि क्यों बदली थी?
4. मुहम्मद-बिन-तुगलक की योजनाओं के क्या परिणाम निकले थे?

बीज शब्द :

सूबेदार

मुक्ति

वली

आमिल

मुक्कदम

(ख) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :-

1. कुतुबद्दीन ऐबक .... का संस्थापक था।
2. रज़िया सुल्तान .... की बेटी थी।
3. इल्तुतमिश .... ई. में शासक बना।
4. इल्तुतमिश ने .... को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
5. मलिक काफूर .... का सेनापति था।
6. मुहम्मद-बिन-तुगलक ने अपनी राजधानी .... से बदलकर देवगिरि करने का निर्णय किया।
7. तैमूर ने .... वंश के शासकों के राज्य काल में भारत पर आक्रमण किया।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के सामने ठीक (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाएं :-

1. इल्तुतमिश कुतुबद्दीन ऐबक का दास था। ☐
2. बलबन दास वंश का संस्थापक था। ☐

3. अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियन्त्रण नीति को प्रचलित किया। ☐

4. लोधियों को, सैयदों ने पराजित किया। ☐

5. सिकन्दर लोधी तथा बाबर का पानीपत की प्रथम लड़ाई में सामना हुआ। ☐

क्रिया-कलाप

1. भारत के मानचित्र पर दिल्ली सल्तनत के प्रसिद्ध स्थान दरशाएँ।
2. दिल्ली सल्तनत काल के स्मारकों के चित्रों को इकट्ठा कीजिए तथा उन्हें अपनी कापी में चिपकाएं।

पाठ 11 मुग़ल साम्राज्य

पन्द्रहवीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप कई छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। ये राज्य अपने प्रभुत्व के लिए आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। दिल्ली सल्तनत के अन्तिम सुल्तान इब्राहिम लोधी ने पंजाब के सूबेदार दौलत खान लोधी से बुरा बर्ताव किया तथा उसके पुत्र का अपमान किया था। इस कारण दौलत खान लोधी तथा मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए निमन्त्रण दिया। बाबर ने 1526 ई. में पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोधी को पराजित किया। 1529 ई० में बाबर ने आफ़गानों को घाघरा के युद्ध में पराजित किया।

मुगल कौन थे?

मुगल मध्य एशिया के मंगोल शासक चंगेज खां के उत्तराधिकारी थे। इन्होंने भारत की शान-वैभव और धन-दौलत के बारे में बहुत सुना हुआ था। इसलिए वे इसे हड़पना चाहते थे। इसलिए उन्होंने भारत पर आक्रमण करने शुरू कर दिए तथा दिल्ली के सुल्तानों को तंग करना शुरू कर दिया। परिणाम स्वरूप 1526 ई० में बाबर ने इब्राहिम लोधी को पानीपत की लड़ाई में पराजित किया तथा मुगल साम्राज्य की नींव रखी।

मुगल सम्राट

बाबर	1526-1530 ई०
हुमांयूँ	1530-1540 एवं 1555-1556 ई०
अकबर	1556-1605 ई०
जहाँगीर	1605-1627 ई०
शाहजहाँ	1628-1657 ई०
औरंगजेब	1658-1707 ई०

बाबर (1526–1530 ई.)

बाबर मुगल साम्राज्य का प्रथम शासक था। वह दौलत खान लोधी तथा मेवाड़ के शासक राणा सांगा के निमन्त्रण पर मध्य एशिया से भारत में आया था

चित्र 11.1 बाबर

बाबर की विजय : 1526 ई. में बाबर ने इब्राहिम लोधी को पानीपत की पहली लड़ाई में पराजित करके दिल्ली तथा आगरे पर अपना अधिकार कर लिया। बाबर के ऐसा करने से राणा सांगा बाबर से नाराज हो गया। उसने बाबर के विरुद्ध एक विशाल सेना भेजी। बाबर ने राणा सांगा को 1527 ई. में **कनवाह** की लड़ाई में पराजित किया। इस प्रकार बाबर ने उत्तरी भारत पर अधिकार कर लिया। उसने 1528 ई. में चन्देरी की लड़ाई में राजपूतों को भी बुरी तरह पराजित किया। परन्तु 1530 ई. में बाबर की मृत्यु हो गई तथा उसके पुत्र हुमायूं को उसका उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया।

हुमायूं : (1530–1540 से 1555–1556 ई.)

चित्र 11.2 हुमायूं

1530 ई. में **बाबर** की मृत्यु हो जाने के पश्चात् उसका पुत्र हुमायूं मुगल बादशाह बना। 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने उसको पराजित कर भारत से बाहर निकाल दिया था। परन्तु 1556 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

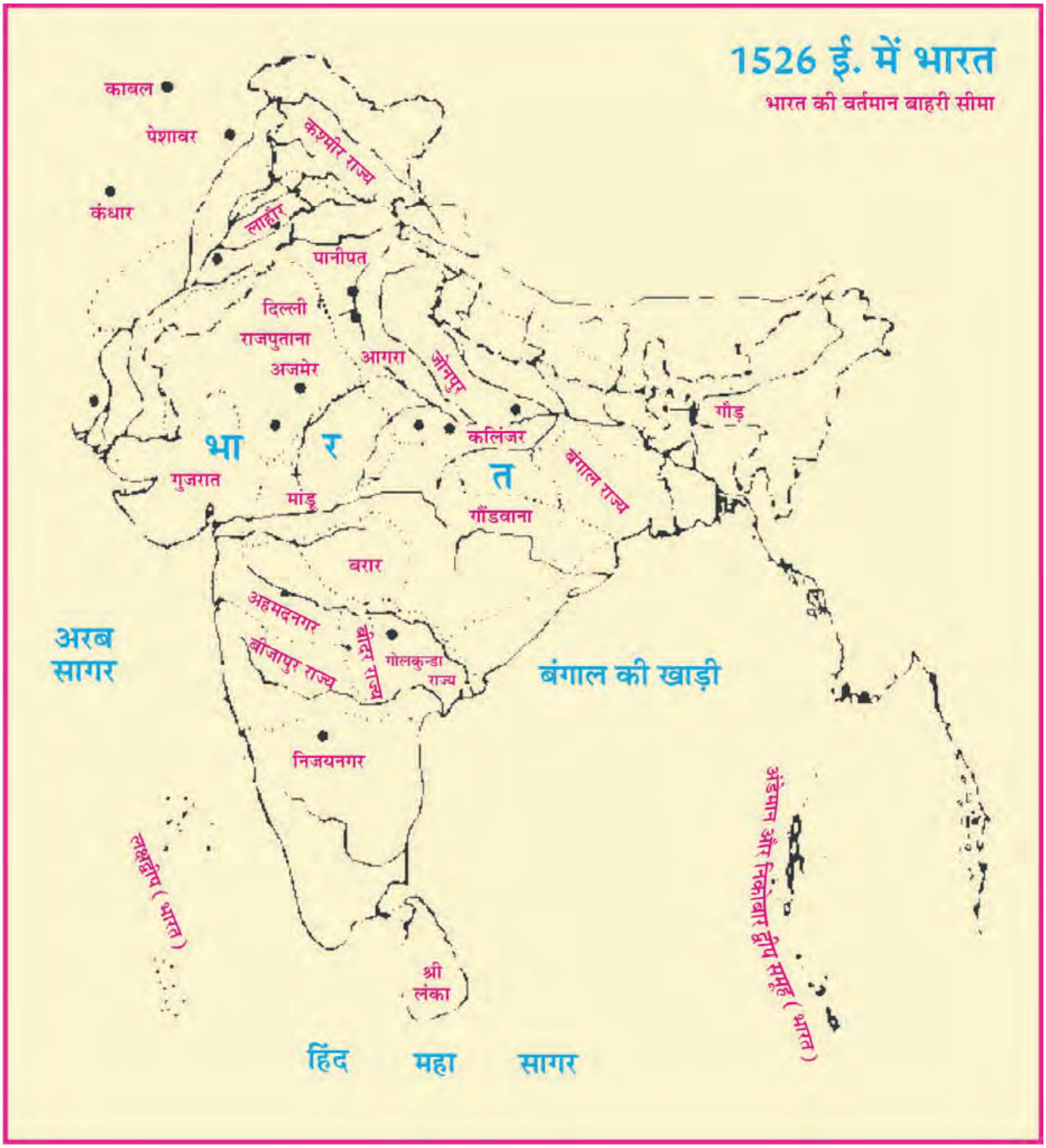

चित्र 11.2 *1526 ई. में भारत*

अकबर के बारे में विशेष अध्ययन

अकबर (1556–1605)

हुमायूं की मृत्यु के पश्चात् 14 फरवरी, 1556 ई० को बैरम खान ने 1556 ई. में अकबर को कलानौर (गुरदासपुर) में मुगल सिंहासन पर बैठाया।

चित्र 11.4 अकबर

अकबर के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् जल्दी ही दिल्ली तथा आगरा पर फिर अधिकार करने के लिये दिल्ली की तरफ कूच किया। उसका हेमू के साथ 1556 ई. में पानीपत के मैदान में मुकाबला हुआ। अकबर इस लड़ाई में विजयी हुआ तथा हेमू की मृत्यु हो गई।

1560 ई. में अकबर ने बैरम खान की नवाब–शाही समाप्त कर दी तथा सरकार पर अधिकार कर लिया।

अकबर की विजयें : अकबर ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसने ग्वालियर, जौनपुर, अजमेर तथा मालवा पर विजय प्राप्त की। अकबर राजपूतों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था। उसने राजपूत परिवारों की राजकुमारियों से

क्या आप इसका कारण जानते हो कि अकबर ने राजपूत राजकुमारियों के साथ विवाह क्यों करवाये थे

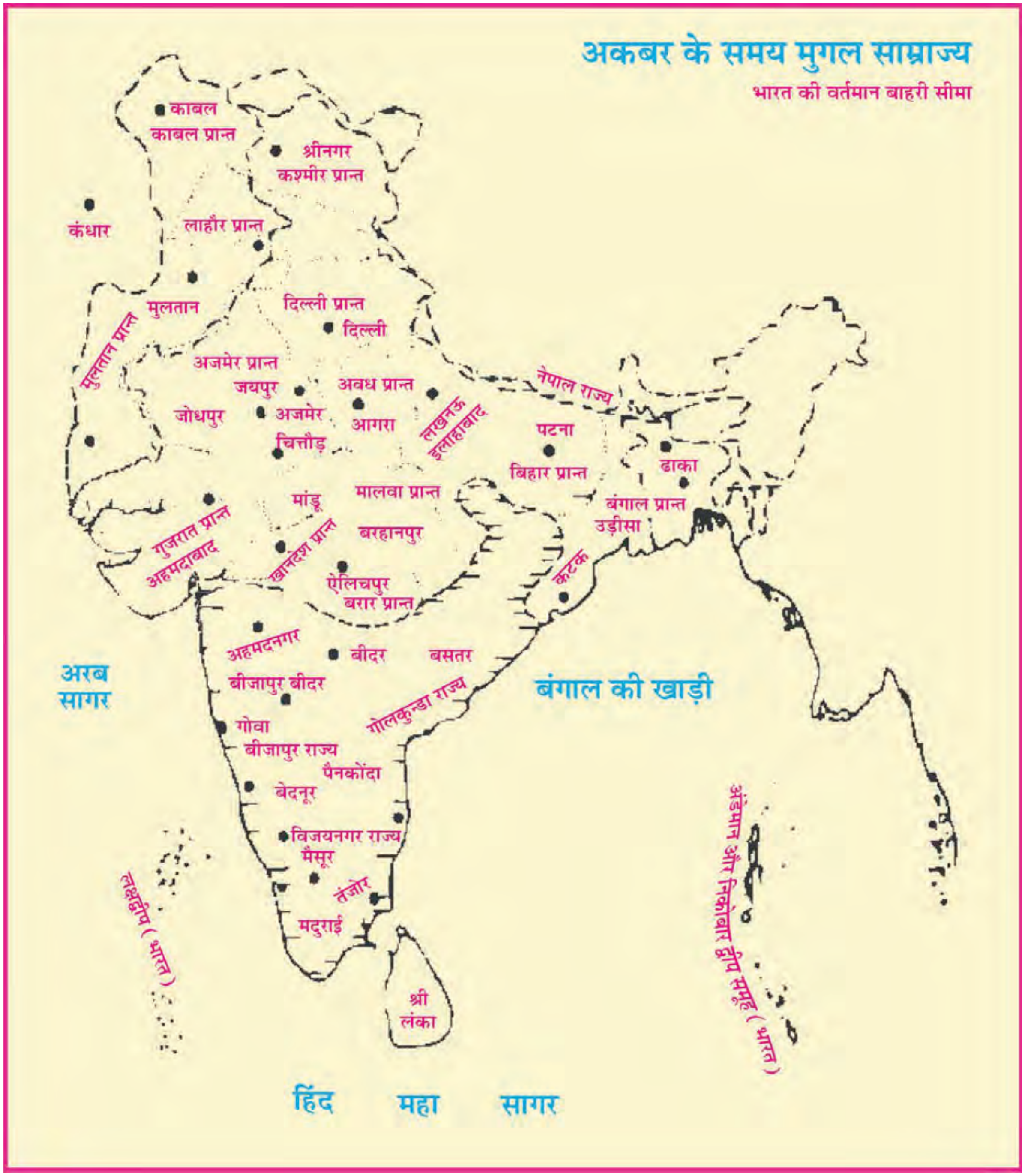

चित्र 11.5 *अकबर के समय मुग़ल साम्राज्य*

विवाह किए। इस तरह उसने वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा अपनी स्थिति को मजबूत किया। उसने अपने शासन प्रबन्ध में राजपूतों को ऊँचे पद दिए। कुछ राजपूत उसके महत्वपूर्ण तथा वफादार अधिकारी थे जैसे कि **राजा मान सिंह।** परन्तु उसने उन राजपूतों के विरुद्ध लड़ाई भी की जिन्होंने उसका विरोध किया था जैसे कि मेवाड़ का राणा प्रताप सिंह।

अकबर सारे भारत पर अधिकार करना चाहता था। इसलिए इसने गुजरात तथा बंगाल पर विजय प्राप्त की। 1595 ई. में उसने कश्मीर, सिंध, उड़ीसा, मध्य भारत तथा कंधार पर भी विजय प्राप्त की। उसने उत्तर-पश्चिम में, कश्मीर, सिंध, काबुल तथा कंधार को भी साम्राज्य में शामिल किया। मुगलों ने बरार, खानदेश तथा अहमदनगर राज्यों के भागों पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया था। अकबर भारत के एक बड़े भाग का बादशाह बन गया था।

अकबर का शासन प्रबन्ध

अकबर मुगल शासन प्रबन्ध का वास्तविक निर्माता था। उसने शासन प्रबन्ध में बहुत सारे सुधार किए थे।

(क) केन्द्रीय शासन प्रबन्ध

राजा : वह शासन प्रबन्ध का मुखिया था। उसकी सहायता के लिए अनेक मन्त्री होते थे। उनमें से प्रमुख मंत्री वकील, दीवान-ए-आला, मीर बख्शी, सदर-ए-सदूर, फौज़दार, कोतवाल थे।

(ख) प्रान्तीय प्रबन्ध

अकबर बादशाह ने प्रशासन को ठीक ढंग से चलाने के लिए मुगल साम्राज्य को पन्द्रह प्रान्तों या सूबों में बाँटा हुआ था।

1. **सूबेदार :** सूबेदार प्रान्त का प्रमुख था। उसका मुख्य कार्य अपने प्रान्त में शान्ति स्थापित करना तथा कानून व्यवस्था लागू करना था।
2. **दीवान :** प्रत्येक प्रान्त में एक वित्त-अधिकारी होता था। वह प्रान्त की आय तथा वित्त का रिकार्ड रखता था।
3. **बख्शी :** वह प्रान्त के सैनिक प्रबन्ध की देखभाल करता था। वह घोड़ों को दागने का भी प्रबन्ध करता था।
4. **सदर :** वह प्रान्त के सन्तों-महात्माओं तथा पीरों-फकीरों का रिकार्ड तैयार करना था।
5. **वाकिया नबीस :** वह जासूस विभाग का प्रमुख होता था। वह प्रान्त में घटित होने वाली घटनाओं का रिकार्ड रखता था।

6. **कोतवाल :** वह पुलिस अधिकारी था। उसका मुख्य कार्य नगर में शान्ति स्थापित करना तथा नगर की पहरेदारी करना था।

(ग) स्थानीय प्रबन्ध

अकबर बादशाह ने मुगल साम्राज्य के स्थानीय प्रबन्ध को ठीक ढंग से चलाने के लिए प्रान्तों को सरकारों अथवा जिलों, परगनों तथा गाँवों में विभाजित किया।

भूमि लगान प्रणाली

भूमि लगान मुग़ल साम्राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत था? अकबर ने **लगान मंत्री राजा टोडर मल** की सहायता से लगान विभाग में कई सुधार किए।

1. **भूमि की पैमाइश :** भूमि की बीघों में पैमाइश की गई।
2. **भूमि का वर्गीकरण :** अकबर ने सारी भूमि को चार भागों में विभाजित किया।
   - **(क) पोलज भूमि :** यह बहुत उपजाऊ भूमि थी। इसमें किसी भी समय कई भी फसल उगाई जा सकती थी।
   - **(ख) परौती भूमि :** इस भूमि में एक या दो वर्ष बाद फसल उगाई जा सकती थी।
   - **(ग) छच्छर भूमि :** इस भूमि में तीन या चार वर्ष बाद फसल उगाई जा सकती थी।
   - **(घ) बंजर भूमि :** इस भूमि में पाँच छः वर्ष बाद फसल उगाई जाती थी।

भूमि लगान के अन्य स्त्रोत

सरकार पोलाज तथा परौती किस्म की भूमि से उपज का 1/3 भाग लगान के रूप में लेती थी। छच्छर तथा बंजर भूमि से बहुत कम भाग लगाने के रूप में लिया जाता था।

(क) कनकूत प्रणाली : कनकूत प्रणाली के अनुसार सरकार सारी खड़ी फसल का अनुमान लगा कर लगान निर्धारित करती थी।

(ख) बटाई प्रणाली : इस प्रणाली के अनुसार जब फसल काट ली जाती तो उसे तीन भागों में बांट दिया जाता था। एक भाग लगान के रूप में सरकार लेती थी तथा बाकी दो भाग किसान के पास रहते थे।

(ग) नासक प्रणाली : इस प्रणाली अनुसार सारे गाँव की फसल का अनुमान लगाकर लगान निर्धारित कर दिया जाता था।

मुगल सरकार ने अधिकार भूमि को खेती योग्य बनाने के लिए किसानों को ऋण दिए। अकाल पड़ जाने तथा कम उत्पादन की स्थिति में लगान माफ कर दिया जाता था।

मनसबदारी प्रणाली

जैसे ही मुगल साम्राज्य का विस्तार होने लगा तो मुगल शासकों ने भिन्न-भिन्न वर्गों के सदस्यों को प्रशासन में नियुक्त करना आरम्भ किया, जिन्हें ''मनसबदार'' कहा जाता है।

1. **मनसबदारी प्रणाली :** इस प्रणाली के अनुसार मुगल कर्मचारियों का पद, वेतन तथा दरबार में स्थान निश्चित किया जाता था। मनसब शब्द का अर्थ पद था। मनसबदार देश के सिविल तथा सैनिक विभाग से सम्बन्ध रखते थे।
2. **मनसबदारों की नियुक्ति, उन्नति तथा सेवा निवृत्ति :** मुगल बादशाह मीर बख्शी की सिफारिश पर मनसबदारों की योग्यता अनुसार नियुक्ति करता था। मनसबदार छोटे पद से प्रगति कर उच्च पद तक उन्नति पाता था। परन्तु बादशाह ठीक काम न करने वाले मनसबदार का पद तथा उसे उस पद से हटा सकता था।
3. **मनसबदारों की श्रेणियाँ :** अकबर बादशाह के शासनकाल में मनसबदारों की 33 श्रेणियाँ थी। सब से छोटे मनसबदार के अधीन 10 सिपाही तथा सबसे बड़े मनसबदार के अधीन 10,000 सिपाही थे।

जाति एवं सवार मनसबदारों की श्रेणियाँ

1. यदि किसी मनसबदार का जाति पद तथा सवार पद बराबर होता था तो उसे पहले दर्जे का मनसबदार कहा जाता था। जैसे 5000 जात तथा 5000 सवार।
2. यदि उसका सवार पद जात पद से आधा अथवा आधे से कुछ अधिक होता था तब वह द्वितीय दर्जे का मनसबदार कहलाता था। 5000 जात तथा 3000 सवार।
3. यदि उसका सवार पद जात पद के आधे से कम होता था तो वह तीसरे दर्जे का मनसबदार कहा जाता था, जैसे 5000 जात तथा 2000 सवार।
4. **मनसबदारों के कर्त्तव्य :** बादशाह मनसबदारों को किसी भी तरह के काम में लगा सकता था। उन्हें शासन प्रबन्ध के किसी भी विभाग में अथवा दरबार में हाजिर होने के लिए कहा जा सकता था।
5. **वेतन :** मनसबदारों को वेतन उनकी श्रेणी के पद अनुसार दिया जाता था। वेतन में बढ़ौतरी अथवा कटौती की जाती थी।

जहाँगीर (1605–1627)

1605 ई. में अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र जहाँगीर मुगल सिंहासन पर बैठा। उसने 1605 से 1627 ई. तक शासन किया।

चित्र 11.6 जहाँगीर

जहाँगीर की विजयें : जहाँगीर ने मुगल साम्राज्य को मजबूत करने के लिए सबसे पहले अपने पुत्र खुसरो के विद्रोह का दमन किया। उसके पश्चात् उसने बंगाल तथा अवध को मुगलों के अधिकार में किया। 1613 ई. में उसने मेवाड़ के शासक राणा अमर सिंह को उसके क्षेत्रों में शासन करने का अधिकार इस शर्त पर दिया कि वह मुगल बादशाह के प्रति वफादार रहेगा। 1620 ई. में जहाँगीर ने काँगड़ा पर भी विजय प्राप्त की।

जहाँगीर ने दक्षिण में भी मुगलों के प्रभाव का विस्तार करने के लिए अहमदनगर के किले पर विजय प्राप्त की। परन्तु अहमनदनगर के सेनापति **मलिक अंबर** ने दक्षिण के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने के लिए मुगलों का विरोधी किया। ईरानियों ने अफगानिस्तान में कंधार का क्षेत्र जहांगीर से छीन लिया था।

जहाँगीर के दरबार पर नूरजहाँ का प्रभाव

1611 ई. में जहाँगीर ने नूरजहाँ से विवाह किया। जहाँगीर महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यों में उसके साथ विचार–विमर्श करता था। उसके आदेश पर शाही फरमान जारी किए गए। यहाँ तक कि जहाँगीर तथा नूरजहाँ के नाम पर सांझे सिक्के भी जारी किये गए।

चित्र 11.7 नूरजहाँ

शाहजहाँ (1628–1657)

1628 ई. में शाहजहाँ अपने पिता जहांगीर की मृत्यु के पश्चात् सिंहासन पर बैठा। उसे बुन्देलखण्ड तथा दक्षिण में कई विद्रोहों का सामना करना पड़ा। 1628 ई. में बुन्देलखण्ड के शासक **राजा जुझार सिंह** ने शाहजहां के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। परन्तु वह पराजित हुआ। उसने 1635 ई. में फिर से विद्रोह कर दिया तथा मुगलों द्वारा मारा गया।

चित्र 11.8 शाहजहाँ

1633 ई. में शाहजहाँ ने दक्षिण में अहमदनगर राज्य पर आक्रमण करके उसे मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया। बीजापुर तथा गोलकुण्डा स्वतन्त्र राज्यों ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली तथा शांति संधि पर हस्ताक्षर कर दिए।

1657 ई. में शाहजहाँ बीमार पड़ गया तथा उसके पुत्रों में सिंहासन के लिए संघर्ष शुरू हो गया। औरंगजेब ने शाहजहाँ को आगरे के किले में कैद कर दिया तथा स्वयं बादशाह बन गया।

औरंगज़ेब (1658–1707 ई.)

औरंगज़ेब मुगल साम्राज्य का अन्तिम प्रसिद्ध शासक था। उसने 1658–1770 ई. तक शासन किया। उस के साम्राज्य में लगभग सारा भारत शामिल था। परन्तु उसका शासन काल मुसीबतों से भरा हुआ था। 1669 ई. में मथुरा, आगरा के जाटों ने औरंगज़ेब के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उसने विद्रोह को तो कुचल दिया परन्तु जाटों ने मुगलों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखी। नारनौल तथा मेवाड़ में सतनामी हिन्दू साधुओं का एक सम्प्रदाय था। उनकी हत्या ने सतनामियों को मुगलों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए मजबूर किया। परन्तु मुगलों ने विद्रोह को कुचल दिया।

चित्र 11.9 औरंगजेब

क्या आप इसका कारण समझते हो कि सतनामियों ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह क्यों किया था?

औरंगज़ेब के विरुद्ध राजपूतों, मराठों तथा सिक्खों ने शक्तिशाली विद्रोह कर दिए, जिन्हें कुचलने में अधिक समय लगा।

औरंगजेब तथा मराठे

शिवाजी के नेतृत्व में मराठे महाराष्ट्र की महान् शक्ति बन गए। 1674 ई. में शिवाजी ने स्वयं को स्वतन्त्र शासक घोषित कर दिया। 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् शंभाजी सिंहासन पर बैठा। उस समय मराठों तथा मुगलों के बीच संघर्ष चल रहा था। 1686 ई. में औरंगजेब ने बीजापुर तथा 1687 ई. में गोलकुण्ड़ा पर अधिकार कर लिया। 1689 ई. में औरंगजेब ने शंभाजी की हत्या करवा दी तथा मराठों के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। परन्तु मराठों ने पहले **राजा राम** तथा बाद में उसकी **रानी तारा बाई** के नेतृत्व में संघर्ष जारी रखा। औरंगजेब की 1707 ई. में मृत्यु के पश्चात् मराठों ने मुगलों के अधिकतर क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।

औरंगजेब तथा सिक्ख

श्री गुरु हरिकृष्ण जी के पश्चात् श्री गुरू तेग बहादुर जी सिक्खों के नौवें गुरु बने। उन्होंने औरंगजेब की हिन्दुओं विरोधी धार्मिक नीति का विरोध किया। गुरु जी हिन्दुओं के धर्म की आज़ादी तथा रक्षा के लिए औरंगज़ेब के पास आए। औरंगज़ेब ने गुरु जी को मुसलमान बनने के लिए कहा। उन्होंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इस कारण गुरु जी को बहुत यातनाएँ दी गई तथा 11 नवम्बर, 1675 ई. को दिल्ली के चाँदनी चौक में शहीद कर दिया गया।

आप के विचार अनुसार औरंगज़ेब ने श्री गुरु तेग बहादुर जी को क्यों शहीद किया?

इसके पश्चात् श्री गुरु तेग बहादुर जी के पुत्र, श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी सिक्खों के दसवें गुरु बने। उन्होंने बुज़दिल तथा डरपोक हो चुकी मानवता में शूरवीरता का जज़्बा पैदा करने के लिए 1699 ई. में **खालसा पंथ** की स्थापना की। सिक्खों तथा मुगलों के बीच चमकौर साहिब का युद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध में गुरु जी के दो पुत्र साहिबज़ादा अजीत सिंह जी तथा साहिबज़ादा जुझार सिंह जी शहीद हो गए तथा छोटे साहिबज़ादा जोरावर सिंह जी तथा साहिबज़ादा फतेह सिंह जी को सरहिन्द में दीवारों में जीवित चिनवा दिया गया था।

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके उतराधिकारी बहादुरशाह ने सिक्खों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए। सरहिंद के फौज़दार वजीर खान के कहने पर एक पठान ने

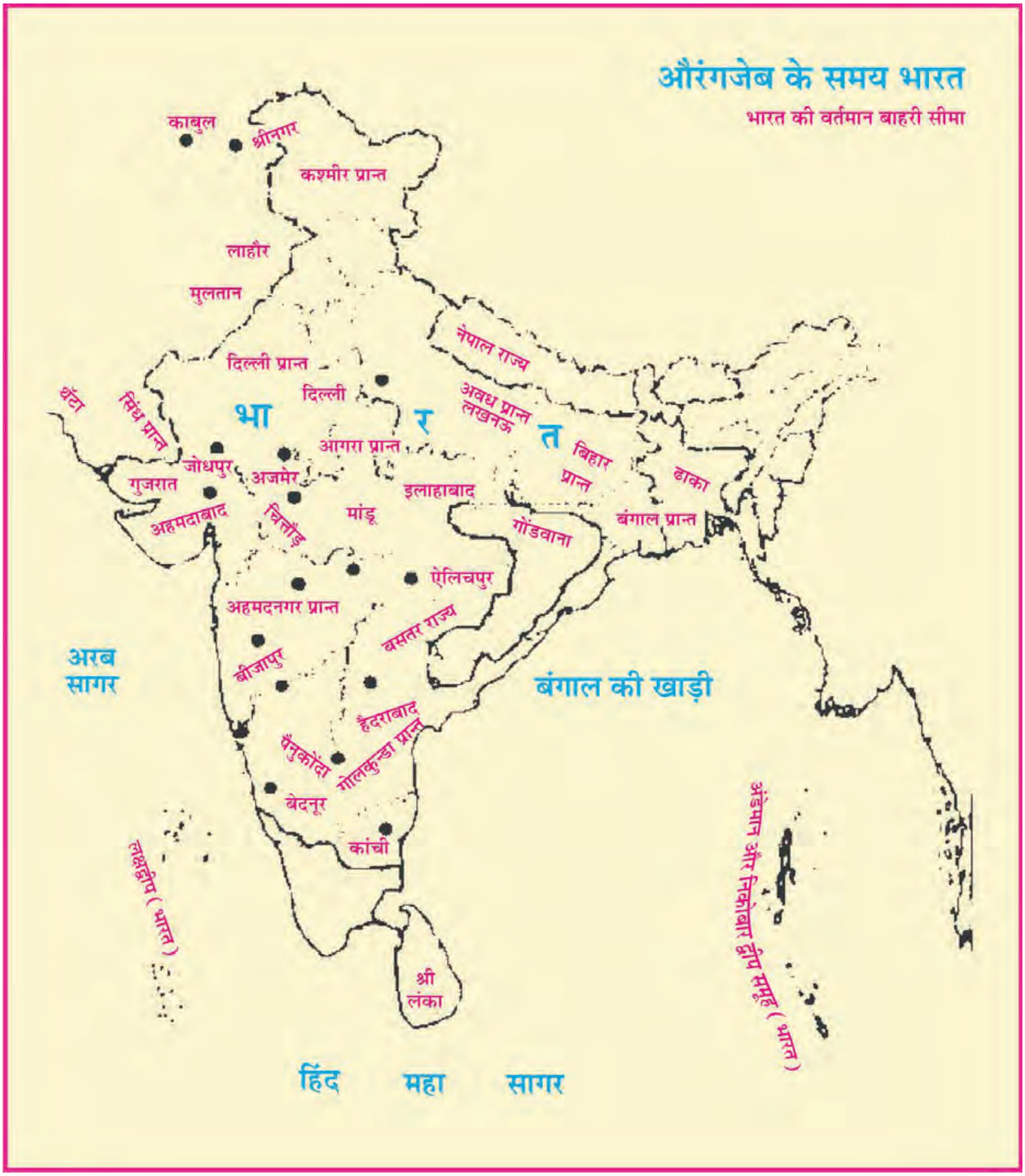

चित्र 11.10 औरंगज़ेब के समय भारत

गुरु जी को छुरा घोंप दिया जिस कारण 1708 ई. में गुरु जी ज्योति-ज्योत समा गए। गुरु जी के बाद बन्दा सिंह बहादुर ने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा।

औरंगज़ेब के उत्तराधिकारी

औरंगज़ेब के उत्तराधिकारी शासन प्रबन्ध चलाने के लिए अयोग्य तथा कमज़ोर थे। परिणामस्वरूप 1739 ई. में ईरान के शासक नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण मुगलों के लिए बहुत खतरनाक साबित हुआ। अफगानिस्तान के अहमदशाह अब्दाली ने भी भारत पर आक्रमण कर दिया था।

याद रखने योग्य तथ्य

1. बाबर मुगल साम्राज्य का प्रथम शासक था।
2. हुमायूँ बाबर का पुत्र था।
3. 1556 ई० में बैरम खां ने अकबर को कलानौर (गुरदासपुर) में मुगल राजगद्दी पर बैठाया।
4. शाहजहाँ ने 1628-1657 ई० तक शासन किया।
5. 1689 ई० में औरंगजेब ने शंभा जी की हत्या करके मराठों के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. दौलत खान लोधी तथा राणा सांगा ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण क्यों दिया था?
2. बाबर की विजयों के विषय में आप क्या जानते हो?
3. अकबर की विजयों का वर्णन करो।

4. मुगलों की भूमि लगान प्रणाली से क्या भाव है?

(ख) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. कनवाह की लड़ाई बाबर तथा .... के बीच लड़ी गई थी।
2. अकबर ने हेमू को .... में पराजित किया था।

सवार

मुग़ल

मनसब

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के सामने ठीक (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाएं :-

1. मुगल भारत में 1525 ई. में आये। ☐
2. दौलत खान लोधी तथा राणा सांगा ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए निमन्त्रण दिया। ☐
3. शेरशाह सूरी एक मुगल शासक था। ☐
4. औरंगज़ेब के शासन काल में राजपूतों से अच्छा व्यवहार किया गया। ☐
5. औरंगज़ेब की दक्षिण नीति ने मुगल साम्राज्य को मजबूत किया। ☐

क्रिया-कलाप

1. भारत के मानचित्र पर मुगल साम्राज्य के प्रसिद्ध स्थानों को दर्शाएं।
2. विभिन्न मुगल बादशाहों के चित्र इकट्ठे करें तथा अपनी कापी में चिपकाएं।

पाठ 12

स्मारक निर्माण कला

हमने भारत के अलग-अलग भागों में कई प्रकार की स्मारक निर्माण कला देखी है जैसे कि मन्दिर, गुरुद्वारे, किले, महल, हवेलियाँ तथा बाग आदि। ये सभी कई प्रकार की सामग्री तथा अलग-अलग ढंग से बने हुए हैं। यहाँ तक कि इनके निर्माण के लिए अलग-अलग इंजीनियरिंग, निर्माण निपुणता, कला, संगठन तथा साधन प्रयोग में लाए गए थे।

अब हम इस पाठ में 800 ई. से 1200 ई. तक फिर 1206 से 1526 ई. तथा 1526 से 1707 ई. तक बनाई गई इमारतों के बारे में पढ़ेंगे।

उत्तरी-भारत में स्मारक निर्माण कला (800 ई. से 1200 ई. तक)

800 से 1200 ई. तक उत्तरी भारत में अधिकतर मन्दिरों का निर्माण हुआ था। जैसे कि जगन्नाथ पुरी में विष्णु का मन्दिर, भुवनेश्वर में लिंगराज मन्दिर, कोणार्क में सूर्य मन्दिर तथा माउंट आबू में तेजपाल मन्दिर आदि।

चित्र 12.1 लिंगराज मन्दिर, भुवनेश्वर

मन्दिर निर्माण कला के ढंग को **नागरा** शैली कहा जाता है। मध्य प्रदेश में खजुराहों का मन्दिर इस तरह की निर्माण कला का एक अच्छा उदाहरण है। भुवनेश्वर में लिंगराज मन्दिर, कोणार्क में सूर्य-मन्दिर तथा पुरी में जगन्नाथ का मन्दिर भी नागरा निर्माण कला शैली के ही नमूने हैं।

आप के मत अनुसार नागरा शैली किसे कहा जाता है?

चित्र 12.2 सूर्य मन्दिर, कोणार्क

गुजरात के सोलंकी वंश के शासकों ने माउंट आबू (राजस्थान) का तेजपाल मन्दिर बनाया था। वहाँ पर और भी कई मन्दिर हैं। यह सफेद संगमरमर के बने हुए हैं जो कि शानदार तथा उत्तम कारीगिरी को दर्शाते हैं। उनकी दीवारों के अन्दर की तरफ नाजुक नाजुक मूर्तियाँ बनाई हुई हैं जबकि बाहर की तरफ समतल हैं। कर्नाटक में श्रवण बेलगोला में गौमतेश्वर की मूर्ति संसार में सबसे विशाल मूर्ति है।

चित्र 12.3 गौमतेश्वर की मूर्ति, श्रवण बेलगोला, कर्नाटक

दक्षिणी भारत की स्मारक निर्माण कला (800 ई. से 1200 ई. तक)

इस समय दौरान (800 ई. से 1200 ई.) पल्लव, पाण्डेय तथा चोल शासक कला तथा निर्माण कला के बहुत प्रेमी थे। चोल शासक महान् मन्दिर निर्माता थे? उनके मन्दिर **द्राविड़ शैली** निर्माण कला के अनुसार बने हुए थे। इस समय दौरान दक्षिणी भारत में शासक राजराजा चोल द्वारा **राजराजेश्वर** मन्दिर बनवाया गया। यह राजराजेश्वर मन्दिर भगवान शिवजी को समर्पित है। यह मन्दिर शासक राजराज प्रथम द्वारा बनवाया गया था। मन्दिर के प्रमुख द्वार को **गोपुरम्** कहा जाता है। उसकी ऊँचाई लगभग 94 मीटर है। राजेन्द्र प्रथम शासक द्वारा **गंगईकोण्ड चोलपुरम्** का मन्दिर बनवाया गया।

ऐलोरा में कैलाश मन्दिर राष्ट्रकूट शासन की निर्माण कला का एक प्रसिद्ध नमूना है? यह एक राष्ट्रकूट शासक **कृष्ण प्रथम द्वारा बनवाया गया था।** इस मन्दिर का निर्माण चट्टानों को काट कर किया गया है। इस मन्दिर को संसार के निर्माण कला के अजूबों में से एक माना जाता है।

चित्र 12.4 कैलाश मन्दिर, ऐलोरा

दिल्ली सल्तनत के अधीन स्मारक निर्माण कला (1206 ई. से 1526 ई. तक)

दिल्ली सल्तनत काल में भवन निर्माण कला के क्षेत्र में शानदार विकास हुआ। भारत में तुर्कों तथा अफगानों ने भवन निर्माण कला की नई विधियां तथा नमूने तैयार किये। इनसे तथा भारतीय भवन निर्माण कला के समुले से **भारतीय-मुस्लिम भवन** निर्माण कला नाम की एक नई शैली का जन्म हुआ।

इस समय (1206-1526 ई.) में कई प्रकार की इमारतों जैसे कि महल, किले, मकबर मस्जिदों आदि का निर्माण हुआ। इस काल की भवन निर्माण कला की प्रमुख विशेषताएं, गुम्बद मेहराब तथा मीनार थे।

इस काल दौरान दिल्ली सुल्तानों ने कई स्मारक बनवाए। कुतब-दीन-ऐबक ने दिल्ली में **कुव्वत-अल-इस्लाम** नाम की मस्जिदा का निर्माण करवाया। इस मस्जिद की दीवारों पर कुरान की पवित्र आयतें (दोहे) लिखी गई हैं। उसने अजमेर में **ढाई-दिन-का झोंपड़ा** नाम की एक मस्जिद का भी निर्माण करवाया। उसने दिल्ली के नजदीक महरौली में **कुतुबमीनार** का निर्माण शुरू करवाया परन्तु उसकी मृत्यु हो गई जिसे उसके उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने पूरा करवाया। इसकी पाँच मंजिलें हैं तथा इसकी ऊँचाई 70 मीटर है।

चित्र 12.5 कुतुबमीनार, महरौली

कल्पना करें कि आप एक शिल्पकार हो तथा धरती से पचास मीटर की ऊँचाई पर बाँस तथा रस्सी की सहायता से बने हुए लकड़ी के एक प्लेटफारम पर खड़े हो। आपने कुतुबमीनार के प्रथम छज्जे के नीचे एक शिलालेख उकरना हो तो आप कैसे करेंगे?

अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में भवन निर्माण कला का एक नया दौर शुरू हुआ। उसके द्वारा बनवाई गई इमारतों में **अलाई दरवाजा** सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह दरवाजा लाल पत्थर तथा सफेद संगमरमर का बना हुआ है। यह दरवाजा सुन्दर कला का एक उदाहरण है। अलाउद्दीन खिलजी ने **हजार खंबों वाला महल, एक हौज-ए-खास** तथा **जमात खाना** मस्जिद का निर्माण करवाया।

चित्र 12.6 अलाई दरवाजा

गयासुद्दीन तुग़लक ने दिल्ली में **तुग़लकाबाद** नाम का एक नया नगर बसाया। मुहम्मद बिन-तुगलक ने **जहाँपनाह** नाम के एक नए नगर का निर्माण करवाया। फिरोजशाह तुग़लक ने

चित्र 12.7 चारमीनार, हैदराबाद

भी कई प्रसिद्ध नगर जैसे कि फिरोजाबाद, हिसार फिरोजा तथा जौनपुर स्थापित किये। उसने कई मस्जिदों, स्कूलों तथा पुलों का निर्माण करवाया।

लोधी तथा सैयद वंशों के सुल्तानों ने **मुबारक शाह** तथा **मुहम्मद शाह** के मकबरे बनवाए थे। **सिकन्दर लोधी का मकबरा, मेठ-की-मस्जिद, बडा गुम्बद** आदि लोधी काल में बनवाए गए थे।

दक्षिण की इमारतकारी (भवन-निर्माण)

दक्षिणी भारत में बाहमनी तथा विजयनगर राज्यों के शासकों ने कई प्रसिद्ध इमारतों का निर्माण करवाया। बाहमनी शासन काल के दौरान **जामामस्जिद, चार-मीनार. महमूद गवां का मदरसा** आदि इमारतें बनानाई गई। गुलबरगा में **फिरोज शाह का मकबरा** भवन निर्माण कला का एक सुन्दर नमूना है। विजयनगर के शासकों ने भी **हजाराराम** तथा **विट्ठल स्वामी** मन्दिर आदि बनवाए थे।

मस्जिद : *मस्जिद अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है एक ऐसा स्थान, जहां मुस्लिम लोग अल्लाह की इबादत (अराधना) में सज़दा करते हैं। जामा मस्जिद में बहुत बड़ी संख्या में मुस्लिम लोग एकत्रित होकर नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज पढ़ने के वक्त मुस्लिम लोग मक्के की तरफ मुँह करके खड़े होते हैं।*

मुगलों के अधीन स्मारक निर्माण कला (1526 ई. से 1707 ई. तक)

मुगल बादशाहों ने मन्दिर, किले, महल, मकबरे तथा मस्जिदें बनवाई थीं। अकबर को भवन-निर्माण कला से अधिक प्रेम था। उसने कई किलों तथा मुस्जिदों में लाल पत्थर का अधिक प्रयोग किया। उनमें से **जामा-मस्जिद, पंच-महल, दीवान-ए-आम** तथा **दीवान-ए-खास** इमारतें प्रसिद्ध हैं। गुजरात की विजय के समय अकबर ने यहां पर एक **बुलन्द दरवाजा** भी बनवाया। उसकी इमारतों में **ईरानी तथा हिन्दू भवन निर्माण कला** के नमूने की थी।

मुग़ल बादशाह जहाँगीर ने सिकन्दरा में अकबर तथा आगरा में **इतमाद-उद-दौला** का मकबरा संगमरमर से बनवाया।

चित्र 12.9 *बुलन्द दरवाजा, फतेहपुरी सीकरी*

शाहजहाँ की भवन निर्माण कला का विशेष अध्ययन

शाहजहाँ मुगल शासकों में से एक महान् भवन निर्माता था। उसे भवन निर्माताओं का **राजकुमार** कहा जाता था। उसने अपने शासन काल में कई इमारतें बनवाईं थी। उसके द्वारा आगरा के किले में **दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, मोती मस्जिद** तथा **ताज महल** आदि सुन्दर इमारतों का निर्माण हुआ। उसके द्वारा बनवाई गई इमारतें अधिक सुन्दर थीं। शाहजहाँ की इमारतों में से आगरा में बनी **ताज महल** इमारत सबसे अधिक प्रसिद्ध है। शाहजहाँ ने इसका निर्माण अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में करवाया था। ताजमहल का निर्माण करने में लगभग 20,000 कारीगरों ने 22 वर्ष तक कार्य किया तथा इसे बनाने में 3 करोड़ रुपए खर्च किए गए थे।

चित्र 12.10 ताज महल, आगरा

ताज महल बहुत सारी निर्माण कला के नमूने का मिश्रण है। यह संगमरमर का बना हुआ है। यह दूसरे देशों से लाए गए लगभग 20 तरह के कीमती पत्थरों से सजाया हुआ है। ताजमहल की खूबसूरती के कारण इसकी गिनती दुनिया के सात अजूबों में की जाती है।

क्या आप इसका कारण समझते हो कि ताज महल की गिनती विश्व के सात अजूबों में क्यों की जाती है?

लाल किला : लाल किला 1639 ई. में शाहजहाँ द्वारा दिल्ली में यमुना किनारे लाल पत्थर से बनवाया गया था। इसमें **रंग महल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, शाह बुर्ज, ख्वाबगाह** आदि कई सुन्दर इमारतें हैं। इसे कीमती पत्थरों, हीरों तथा सोने, चाँदी की वस्तुओं से सजाया गया है।

मोती मस्जिद : यह शाहजहाँ द्वारा आगरा के लाल किले में बनवाई गई थी। इसके निर्माण पर लगभग 3,00,000 रुपए खर्च किए गए थे। यह मस्जिद संगमरमर की बनी हुई है।

चित्र 12.11 लाल किला, दिल्ली

मुसाम्मन बुर्ज : यह बुर्ज संगमरमर का बना हुआ एक सुन्दर बुर्ज है। इस महल से ताज महल साफ दिखाई देता है।

शाहजहाँबाद : शाहजहाँ ने 1638 ई. में शाहजहाँबाद नगर की नींव रखी थी। इस नगर का निर्माण करने के लिए दूर तथा नजदीक से निपुण कारीगर, मिस्त्री तथा मज़दूर बुलाए गए थे।

जामा मस्जिद : यह भारत की बड़ी मस्जिदों में से एक है। इसका निर्माण कार्य दस वर्षों में पूरा हुआ था।

चित्र 12.12 जामा मस्जिद, दिल्ली

जहाँगीर का मकबरा : जहाँगीर का मकबरा शाहदरा में (पाकिस्तान में) शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था। यह संगमरमर से सजाया हुआ है।

शाहजहाँ बादशाह बाग लगाने में बहुत रुचि रखता था। उसने कई बाग लगवाए थे। उनमें से दिल्ली का शालीमार बाग तथा कश्मीर का वजीर बाग प्रसिद्ध हैं। कुछ बाग ताज महल तथा लाल किले में भी लगवाए गए थे।

चित्र 12.13 शालीमार बाग, दिल्ली

शाहजहाँ का तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन) : यह दीवान-ए-खास में रखा हुआ था। यह संगमरमर का बना हुआ था। इसे बनाने में सात साल तथा 100 लाख रुपए खर्च किए गए थे। 1739 में नादिर शाह इसे अपने साथ ईरान ले गया था

चित्र 12.14 मयूर सिंहासन (तख्त-ए-ताऊस)

याद रखने योग्य तथ्य

1. 800 ई० से 1200 ई० तक उत्तरी भारत में जगन्नाथ पुरी में विष्णु मन्दिर, भुवनेश्वर में लिंगराज मन्दिर, कोणार्क में सूर्य मंदिर तथा माउंट आबू में तेज पाल मन्दिर आदि का निर्माण करवाया गया।
2. 800 ई० से 1200 ई० तक दक्षिणी भारत में राजराजेश्वर मन्दिर, गंगईकौंड चोलपुरम मन्दिर, एलोरा में कैलाश मन्दिर आदि प्रसिद्ध मन्दिरों का निर्माण करवाया गया।
3. 1206 ई० से 1526 ई० तक दिल्ली सल्तनत काल में कुवैत्त-अल-इस्लाम मस्जिद, ढ़ाई-दिन-का-झोंपड़ा मस्जिद, कुतुबमीनार, अलाई दरवाज़ा, हजार (सहस्त्र) स्तम्भों वाला महल, एक हौज-ए-खास, जमात खान मस्जिद, जहांपनाह नगर, तुगलकाबाद नगर, फिरोज़ाबाद, हिसार तथा जौनपुर आदि नगर स्थापित किए गए।
4. मुगल शासन काल दौरान जामा मस्जिद, पंच महल, दीवान-ए-आम, बुलंद दरवाज़ा, इतमाद-उद्-दौला के मकबरे आदि का निर्माण किया गया।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखें :-

1. उत्तरी भारत के प्रमुख मन्दिर कौन-से थे?
2. भारतीय-मुस्लिम भवन निर्माण कला की प्रमुख विशेषताएं बताओ।
3. दक्षिण भारत के मन्दिर कौन-से थे? नाम लिखो।
4. मुगल बादशाह शाहजहाँ को भवन निर्माताओं का शहजादा क्यों कहा जाता है?

(ख) निम्नलिखित रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें :-

1. .... द्वारा कुतुबमीनार का निर्माण करवाया गया।
2. मुगल बादशाह अकबर ने .... को अपनी राजधानी बनाया।

3. बुलंद दरवाज़ा .... में स्थित है।

4. ताजमहल .... द्वारा .... की याद में बनवाया गया था।

5. जहांगीर ने सिकंदरा में .... का मकबरा बनवाया था।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के सामने ठीक (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाएं :-

1. भारत में तुर्कों तथा अफगानों द्वारा भवन निर्माण कला की नई विधियों तथा नमूनों (प्रारूप) को तैयार किया गया था। ☐

2. चंदेल शासकों द्वारा खजुराहों में मन्दिरों का निर्माण करवाया गया था। ☐

3. अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी को अपनी नई राजधानी बनाया था। ☐

4. मुहम्मद तुगलक ने तुगलकाबाद नगर को बसाया था। ☐

5. चोल शासकों द्वारा बनाए गए मन्दिरों में भवन निर्माण कला के द्राविड़ शैली नमूनों का प्रयोग किया गया था। ☐

क्रिया-कलाप

1. मुग़ल काल की स्मारक निर्माण कला के चित्रों को इकट्ठा करके अपनी कापी में चिपकाएं।

2. ताज महल का चित्र बनाएं।

पाठ 13

नगर, व्यापारी तथा कारीगर

कृषि की खोज करने के पश्चात् आदि मानव ने अपने खेतों के नजदीक गाँवों में रहना शुरू कर दिया। समय गुजर जाने के पश्चात् जब अधिक संख्या में लोग गाँवों में रहने लगे तब इनमें से बहुत से गाँव प्रगति करके नगर बन गए। इनमें से कुछ नगर धार्मिक व्यक्तियों, व्यापारियों, कारीगरों तथा शासक वर्ग की गतिविधियों के कारण विकसित हुए थे। इनमें से कुछ दरबारी नगर, कुछ तीर्थ स्थान, कुछ बन्दरगाह नगर तथा कुछ व्यापारिक नगरों के रूप में विकसित हुए।

विदेशी यात्री बर्नियर जैसे के वृतान्त (लेख) से हमें मुगल काल के शासन प्रबन्ध के बारे में जानकारी मिलती है। इसी तरह एक पुर्तगाली यात्री **दुरत बारबोसा** तथा एक ब्रिटिश यात्री राल्फ फ़िच जिन्होंने भारत की यात्रा की, उनके वृतान्तों (लेखों) से हमें उस समय के नगरों के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है। **विलियम बाफिन** तथा **सर थामस रो** द्वारा तैयार किए गए नक्शों से हमें मुगल शासन प्रबन्ध सम्बन्धी जानकारी मिलती है।

सर थामसरो : होन्ड्यू द्वारा तैयार किए गए **मुगल साम्राज्य** 1629 ई. के मानचित्र में थाटा, लाहौर, सूरत तथा मुलतान स्थान दर्शाए गए हैं। मुगलों के भूमि लगान के सरकारी दस्तावेज़ों तथा भूमि ऋणों से भी हमें नए तथा पुराने नगरों के बारे में जानकारी मिलती है।

दरबारी नगर या राजधानी नगर : हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों, सिंधु घाटी लोगों के राजधानी नगर थे। वैदिक काल में अयोध्या तथा इन्द्रप्रस्थ राजधानी नगर थे। 600 ई. पूर्व में 16 महाजन पदों के अपने-अपने राजधानी नगर थे। उनमें से कौशाम्बी, पाटलीपुत्र तथा वैशाली प्रसिद्ध थे।

राजपूत शासकों के अधीन (800-1200 ई.) अजमेर, कन्नौज, त्रिपुरी, दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी आदि का राजधानी नगरों के रूप में विकास हुआ।

दक्षिणी भारत में कांची, बादामी, कल्याणी, वेंगी, देवगिरी, मानखेत, तंजौर तथा मदुरा आदि राजधानी नगर थे।

दिल्ली सल्तनत के अधीन लाहौर तथा दिल्ली का राजधानी नगरों के रूप में विकास हुआ। मुगलकाल दौरान दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी मुगलों के राजधानी नगर थे।

बन्दरगाह नगर : भारत में बहुत सारे बन्दरगाह नगर थे क्योंकि भारत के तीन तरफ समुद्र लगता है। भारत के पश्चिमी समुद्री तट पर गोआ, कोचीन, सूरत, भरूच तथा सोपरा आदि बन्दरगाह नगर स्थापित हैं।

मध्यकाल में भारत के पूर्वी तट पर विशाखापटम (जो अब आन्ध्र प्रदेश में है) तथा तामरलिपती (अब तामलुक बंगाल में है) प्रमुख समुद्री बन्दरगाहें थीं।

तीर्थ स्थान : ननकाना साहिब, (जो अब पाकिस्तान में है), अमृतसर, कुरुक्षेत्र, जगन्नाथ पुरी, द्वारिका पुरी आदि मध्यकालीन युग दौरान तीर्थ स्थानों के रूप में विकसित हुए।

व्यापारिक नगर या केन्द्र : एक ऐसा स्थान जहाँ पर भिन्न-भिन्न उत्पादक केंद्रों से आने वाला सामान खरीदा तथा बेचा जाता है।

> ***व्यापारिक नगर या केन्द्र :*** एक ऐसा स्थान यहां पर भिन्न-भिन्न उत्पादन केंद्रों से आने वाला सामान खरीदा तथा बेचा जाता है।

व्यापारिक नगर : मध्यकालीन भारत में अधिक संख्या में व्यापारिक नगर स्थापित हुए थे। इनमें से दिल्ली, आगरा, सूरत, अहमदाबाद, अहमदनगर, गोआ, दमन तथा दीयू आदि बहुत प्रसिद्ध थे।

व्यापारी तथा कारीगर : भारत देश की आर्थिक स्थिति में भारतीय व्यापारियों तथा कारीगरों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय कारीगर अच्छी प्रकार का कई किस्मों की माल (सामान) तैयार करने में निपुण थे। वे कपड़ा उद्योग में भी बहुत कुशल थे। उनके द्वारा तैयार किया ऊनी, सूती तथा रेशमी कपड़ा संसार भर में प्रसिद्ध था। वे चमड़े का सामान तैयार करने में भी कुशल थे।

मध्य कालीन युग में धातु बनाने की कला भी अधिक विकसित हुई। लुहार तथा सुनियार लोगों ने अच्छी किस्म का सामान तैयार किया। भारत के व्यापारियों ने इस तैयार किए हुए सामान को दूसरे देशों में भेजा। परिणामस्वरूप भारतीय कारीगरों तथा व्यापारियों ने भारत के अमीर होने में सहायता की।

भारत के व्यापारियों तथा कारीगरों ने अपने-अपने **गिल्ड** स्थापित किए। इन्हीं गिल्डों ने अलग-अलग प्रकार का बढ़िया सामान तैयार करने में व्यापारियों तथा कारीगरों की मदद की क्योंकि कोई दूसरा देश व्यापार के क्षेत्र में उनका मुकाबला न कर सके।

> ***गिल्ड :*** *एक ऐसा संघ होता है, जिसके सभी सदस्य एक जैसा कार्य करते हों।*

लाहौर, अमृतसर तथा सूरत का विशेष अध्ययन

लाहौर : लाहौर पाकिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर है। मध्यकालीन युग में यह भारत का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक तथा संस्कृति का केन्द्र नगर था। भारत पर तुर्कों के आक्रमण के समय लाहौर हिन्दूशाही वंश के शासकों की राजधानी थी। इसके बाद लाहौर कुतुबद्दीन ऐबक तथा इल्तुतमिश शासकों की राजधानी था। इल्तुतमिश ने बाद में दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। भारत पर बाबर के आक्रमण के समय दौलत खान लोधी पंजाब का गवर्नर था। मुगलों के शासनकाल के समय लाहौर पंजाब की राजधानी था। 1761 ई. में सिक्खों ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। बाद में भंगी सरदारों ने इस पर कब्जा कर लिया। 1799 ई. में महाराजा रणजीत सिंह ने लाहौर पर अधिकार कर लिया तथा बाद में इसे अपने राज्य की राजधानी बना लिया। 1849 ई. में लाहौर पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। लाहौर 1847 ई. से 1947 ई. तक पंजाब राज्य की राजधानी रहा। भारत के विभाजन के पश्चात् लाहौर पाकिस्तान का भाग बन गया।

अमृतसर : अमृतसर सिक्खों का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। इस की नींव सिक्खों के चौथे गुरु-श्री गुरु रामदास जी द्वारा 1577 ई. में रखी गई थी। शुरू में अमृतसर का नाम रामदासपुर अथवा चक्क गुरु रामदास था। गुरु रामदास जी ने रामदासपुर में अमृतसर तथा संतोखसर नामक दो सरोवरों की खुदाई का काम शुरू करवाया था। परन्तु उनके ज्योति-ज्योत सामने के पश्चात् सिक्खों के पाँचवें गुरु, श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इस कार्य को सम्पूर्ण करवाया। 1604 ई. में उन्होंने श्री हरमन्दिर साहिब में श्री **गुरु-ग्रन्थ साहिब** का प्रकाश किया।

चित्र 13.1 श्री हरमन्दिर साहिब, अमृतसर

1609 ई. में सिक्खों के छठे गुरु श्री हरगोबिन्द जी ने श्री हरिमन्दिर साहिब के नज़दीक **श्री अकाल तख्त** की स्थापना करवाई। गुरु जी यहाँ बैठकर गुर सिक्खों से घोड़े, हथियारों की भेटें स्वीकार करते थे। यहाँ राजनीतिक मसलों पर भी विचार-विमर्श किया जाता था। आजकल भी सिक्खों के राजनैतिक फैसलों की घोषणा यहीं पर ही की जाती है।

सूरत : सूरत एक प्रसिद्ध बन्दरगाह तथा व्यापारिक नगर है। यह गुजरात राज्य में स्थित है। यह बड़े उद्योगों का केन्द्र है। शिवाजी ने सूरत को दो बार लूटा था। उस को बहुत सारा धन दौलत प्राप्त हुआ था। 12वीं शताब्दी में पारसियों ने सूरत पर अधिकार कर लिया था। 1512 ई. में पुर्तगालियों ने इस पर आक्रमण किया था। 1573 ई. अकबर ने सूरत पर अधिकार कर लिया था। अकबर के अधीन सूरत भारत का एक प्रमुख नगर बन गया था। 1612 ई. में अंग्रेजों ने जहाँगीर से आज्ञा लेकर इस में व्यापारिक रियायतें प्राप्त कर ली थीं। यहाँ पर पुर्तगालियों, डचों तथा फ्रांसिसियों ने भी व्यापारिक केन्द्र स्थापित किए थे। 1759 ई. में अंग्रेजों ने सूरत के किले पर कब्जा कर लिया था। 1842 ई. में सूरत पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया। यहाँ ख्वाजा दीवान साहिब की मस्जिद तथा नौं सैयदों की मस्जिद महत्वपूर्ण है। स्वामी नारायण का मन्दिर तथा जैनियों के पुराने मन्दिर भी बहुत प्रसिद्ध हैं। यह एक प्रसिद्ध औद्योगिक तथा व्यापारिक केन्द्र है।

याद रखने योग्य तथ्य

1. **दरधारी (राजधानी) नगर :** मध्यकालीन भारत में हड़प्पा. मोहनजोदड़ों. अयोध्या, इन्द्रप्रस्थ, कौशाम्बी, पाटलीपुत्र, वैशील, काँची, बदामी, कल्याणी, वैंगी, देवगिरी, मानखेत, तंजौर, मदुरै, लाहौर, दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी आदि राजधानी नगर थे।
2. **बन्दरगाह नगर :** मध्यकालीन भारत में गोआ, कोचीन, सूरत, भरूच, सोपारा आदि बन्दरगाह नगर उपस्थित थे।
3. **तीर्थ स्थान :** मध्यकालीन भारत में ननकाणा साहिब, अमृतसर, कुरूक्षेत्र, जगन्नाथ पुरी, द्वारिका पुरी आदि प्रसिद्ध तीर्थ स्थान थे।
4. **व्यापारिक नगर :** मध्यकालीन भारत में दिल्ली, आगरा, सूरत, अहमदनगर, गोआ, दमन तथा दीऊ आदि प्रसिद्ध व्यापारिक नगर थे।

5. मध्यकालीन युग में लाहौर भारत का प्रसिद्ध व्यापारिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र था।

6. मध्यकालीन युग से अमृतसर सिक्खों का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल है।

7. मध्यकालीन युग से ही सूरत भारत का प्रसिद्ध बन्दरगाह एवं व्यापारिक केन्द्र है।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. किन्हीं चार तीर्थ स्थानों के नाम लिखिए।
2. अमृतसर नगर की नींव किस गुरु साहिबान ने तथा कब रखी थी?
3. सूरत कहाँ पर स्थित है।

(ख) निम्नलिखित रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें :-

1. अमृतसर की नींव .... द्वारा रखी गई।
2. सूरत एक .... नगर है।
3. ननकाना साहिब .... में स्थित है।
4. भारत में बहुत सारे बन्दरगाह .... है।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के आगे ठीक (✓) अथवा गलत (✗) का चिह्न लगाएं :-

1. मोहनजोदड़ों सिंधु घाटी के लोगों का राजधानी नगर था। ☐
2. 1629 ई. में शाहजहाँ ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। ☐
3. सूरत एक महत्वपूर्ण तीर्थ-स्थान था। ☐

4. फतेहपुर सीकरी मुगलों का एक राजधानी नगर था। ☐

5. लाहौर मध्यकालीन युग में एक व्यापारिक नगर था। ☐

क्रिया-कलाप

1. निम्नलिखित की सूचि बनाएं। (प्रत्येक के चार-चार)

(क) राजधानी नगर (ख) बन्दरगाह नगर

(ग) व्यापारिक नगर (घ) तीर्थ-स्थान केन्द्र

पाठ 14

कबीले, खानाबदोश तथा स्थिर भाईचारे

मध्यकालीन युग में भारतीय उपमहाद्वीप में कई राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन हुए। ऐसा कैसे और क्यों हुआ, इसके बारे में जानकारी प्राप्त करना बहुत जरूरी है। इस महाद्वीप के कई भागों में समाज कार्य के आधार पर कई श्रेणियों में बंटा हुआ था। इस कारण अमीर एवं गरीब वर्गों के बीच दूरी बढ़ गई थी। उस समय दिल्ली सल्तनत तथा मुगल शासन काल दौरान समाज कई वर्गों में बँटा हुआ था।

जनजातीय (कबीले) समाज

मध्यकालीन युग में भारतीय उपमहाद्वीप के कई इलाकों में कई जनजातीय समाज स्थापित थे। यह समाज वर्गों में नहीं बंटा हुआ था। ये कबीले ब्राह्मणों द्वारा निर्धारित सामाजिक नियमों तथा रीति-रिवाजों का पालन नहीं करते थे। प्रत्येक कबीले का अपना भाईचारा होता था। सभी कबीलों के लोगों का प्रमुख कार्य कृषि करना होता था। परन्तु कई कबीलों के लोग शिकार करना, संग्राहक या पशु-पालन का कार्य करना भी पसन्द करते थे। कुछ कबीलों के लोग अपना जीवन-निर्वाह करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते-फिरते रहते थे, जिन्हें खानाबदोश कहा जाता है।

मध्यकालीन युग में भारतीय उपमहाद्वीप में कई शक्तिशाली कबीले जंगलों, पहाड़ों तथा रेतीले क्षेत्रों में रहते थे। इन कबीलों के लोग शक्तिशाली समाजों के लोगों के साथ लड़ते झगड़ते रहते थे। लेकिन फिर भी ये दोनों समाज अपनी कई जरूरतों की पूर्ति करने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते थे।

जनजातीय लोग कौन थे?

मध्यकालीन युग में भारतीय उपमहाद्वीप के जनजातीय लोग अपने विषय में लिखित जानकारी तैयार नहीं करते थे। वे केवल अपने रीति-रिवाजों तथा सामाजिक परम्पराओं का अनुपालन करते थे, जो आगे पीढ़ी-दर-पीढ़ी जारी रहता है। ये रीति-रिवाज़ तथा सामाजिक परम्पराएं जनजातीय समाज का इतिहास लिखने के लिए इतिहासकारों की सहायता करती हैं।

मध्यकालीन युग में भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी भागों में जनजातीय समाज के लोग रहते थे, उदाहरण के लिए मेघालय, मणिपुर, मध्यप्रदेश, नागालैंड, दादर तथा नगर हवेली आदि राज्यों में कबीले, खानाबदोश तथा घुमक्कड़ (घुमंतू) वर्ग के भील, गोंड, अहोम, कुई, कोली कुक्की तथा ओरांब (ओरोन) आदि लोग रहते थे। पंजाब के कई भागों में खोखर, गक्खड़, लंगाह, अरघुन, बलूच आदि कबीले रहते थे।

ये कबीले आगे कई कुलों में बँटे हुए थे। प्रत्येक कुल का एक मुखिया होता था। उदाहरण के तौर पर पश्चिमी भागों में गद्दी गडरिये नामक कबीला रहता था।

> ***कुल :*** *कई परिवारों अथवा घरों का समूह को कुल कहा जाता है, जो एक ही पूर्वज की संतान होता है।*

इस प्रकार इस महाद्वीप के उत्तर-पूर्वी भागों में अहोम, नागा तथा कई अन्य कबीले रहते थे।

बारहवीं सदी तक वर्तमान बिहार तथा झारखंड के क्षेत्रों में एक चेर नामक शासक वंश का उदय हुआ। 1591 ई० में मुगल बादशाह अकबर ने चेर शासक वंश पर आक्रमण करके विजय प्राप्त की। बाद में मुगल बादशाह औरंगजेब ने चेर शासक वंश के किलों पर अधिकार कर लिया। वर्तमानकालीन बिहार तथा झारखंड क्षेत्रों में निवास करने वाले कबीलों में मुण्डा तथा संथाल कबीले प्रमुख थे।

कर्नाटक तथा महाराष्ट्र के पहाड़ी क्षेत्रों में कोई वेराद आदि कबीले रहते थे। गुजरात के कुछ प्रदेशों में भी कौली कबीले के लोग रहते थे। कोरागा, बेतर, मारवाड़ आदि कबीले भी गुजरात के कुछ भागों में रहते थे।

मध्यकालीन युग में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी तथा मध्य भाग में भील नामक कबीला रहता था। छठी सदी के अन्त तक इस कबीले को कई लोगों ने खेतीबाड़ी तथा जमींदारी के कार्य को करना शुरू कर दिया था। भील कबीले के बड़ी (अधिक) संख्या में लोगों ने शिकारी-संग्रहक के कार्य को अपनाया हुआ था।

मध्यकालीन युग में वर्तमानकालीन मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश में गौंड कबीले के लोग रहते थे।

चित्र 14.1: भील कबीले के लोग रात्रि के समय शिकार करते हुए।

खानाबदोश एवं घुमंतू वर्ग के लोगों का जीवन

मध्यकालीन युग में खानाबदोश लोगों का कार्य पशु चराना था। वे पशुओं को चराने के लिए उन्हें बहुत दूर तक ले जाते थे। वे लोग पशुपालन द्वारा अपना जीवन-निर्वाह करते थे। वे लोग पशुओं से प्राप्त दूध से घी तैयार करके तथा ऊन आदि वस्तुएँ किसानों को देकर बदले में उन से अनाज, कपड़ा, बरतन आदि वस्तुएँ खरीदते थे।

क्या आप जानते हो कि किसान अपना अनाज बेचने के लिए गाँवों से शहर में किस प्रकार ले जाते थे?

उस समय खानाबदोश लोग अपना सामान बेचने के लिए उसे पशुओं पर रखकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे।

मध्यकालीन युग में खानाबदोश लोगों के बहुत-से कुलों में बंजारा कुल के लोग प्रसिद्ध व्यापारी खानाबदोश थे। उदाहरण के लिए दिल्ली सल्तनत के शासक अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल दौरान बँजारे अनाज को मंडियों में ले जाते थे। मुगल बादशाह जहाँगीर की आत्मकथा में वर्णन किया गया है कि बँजारे बैलों पर अनाज रखकर शहरों में बेचने के लिए जाते थे। वे युद्ध समय दौरान भी मुगल सेना के लिए खाद्य-सामग्री बैलों पर ही रखकर ले जाते थे।

मध्यकालीन युग में चरवाहा कबीले के लोग गाय, घोड़े आदि पालतू पशुओं को पालकर उन्हें बेच देते थे। इसके अतिरिक्त कई अन्य कबीलों के लोग सरकंडे की चटाइयाँ, बोरियाँ तथा रस्से आदि तैयार करके बेचते थे। नचार (नृतक), मदारी तथा गायक लोग गाँव तथा शहरों में अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन करके अपना जीवन-निर्वाह करते थे।

अहोम तथा गोंड लोगों का विशेष अध्ययन

(1) अहोम : अहोम कबील के लोग 13वीं शताब्दी में चीन से अहोम प्रदेश (आसाम) में स्थानांतरित हुए थे जो कि चीन के ताई-मंगोलिड़ वर्ग से सम्बन्धित थे। **सुफाका** अहोम वंश का प्रथम शासक था। उसने 1228 ई. से 1268 ई. तक शासन किया। उसने अपने स्थानीय शासकों को पराजित किया। उसने धीरे-धीरे, कचारी, मोरन तथा नाग आदि स्थानीय वंशों को भी पराजित किया। इस प्रकार उसने ब्रह्मपुत्र घाटी तक अपने राज्य का विस्तार किया। गड़गाऊ उसकी राजधानी थी।

क्या आप जानते हो कि मुगलों ने अहोम प्रदेश पर अधिकार करने का प्रयास क्यों किया था?

अहोम शासकों ने स्थानीय शक्तियों, मुगलों तथा बंगाल आदि के विरुद्ध लड़ाई (संघर्ष)की। मुगलों के आसाम पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया परन्तु वे सफल नहीं हो सके। अन्तत: औरंगज़ेब ने अहोम शासकों की राजधानी गड़गाऊ पर विजय प्राप्त कर ली परन्तु वह इसे मुगल शासन के अधीन नहीं रख सका। अहोम शासकों ने मुगलों के वहकों के तौर पर राज्य किया। 18वीं शताब्दी में अहोम राज्य का पतन होना शुरू हो गया।

लगभग 1818 ई. में बर्मा (मयमार) के लोगों ने अहोम प्रदेश (आसाम) पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने अहोम शासकों को आसाम छोड़ने के लिए बाधित कर दिया। 1826 ई. में अग्रेज आसाम में पहुँच गये। उन्होनें वर्मा (मयामार के लोगों को हरा दिया था। 1826 ई. में उनके साथ यादबू संधि कर ली। इस प्रकार अंग्रेजों ने आसाम राज्य पर अधिकार कर लिया।

गोंड : ये मध्य भारत में कबीले हैं। ये पश्चिमी उड़ीसा, पूर्वी महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तथा मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों में बसते हैं। इन प्रान्तों में गोंड लोगों की अधिक संख्या होने के कारण इस क्षेत्र को गोंडवाना कहा जाता है।

15वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक गोंडवाना एक समृद्ध इलाका था। इस में अधिकतर राज्य स्थापित हुए। उनमें से रानी दुर्गावती एक प्रसिद्ध गोंड शासक थी। उसका राज्य पाँच स्वतन्त्र राज्यों में से एक था। जबलपुर उसकी राजधानी थी। मुगल शासक अकबर ने उसको अपने अधीन रहने के लिए कहा परन्तु रानी दुर्गावती ने अकबर के आगे झुकने से इन्कार कर दिया। इस कारण अकबर तथा रानी दुर्गावती के मध्य एक भयानक युद्ध हुआ। इस युद्ध में रानी दुर्गावती मुगलों के हाथों मारी गई।

क्या आपको इसका कारण मालूम है कि मुग़ल शासक गोंडवाना पर अधिकार क्यों करना चाहते थे?

गोंड लोगों की आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं। उनके घर भी साधारण हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार गोंड लोग दूसरे प्रान्तों के लोगों की अपेक्षा कम-संख्या में पढ़े लिखे हैं। समय बीतने के पश्चात् गोंड लोग दूसरे लोगों में शामिल हो गए।

याद रखने योग्य तथ्य

1. भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी भागों में कबीले रहते थे। पंजाब के कई भागों में खोखर, गखड़, लंगाह, अरघुन तता बलूच आदि कबीले रहते थे।
2. कबायली समाज श्रेणियों या वर्गों में बँटा हुआ नहीं था।
3. प्रत्येक कबीले का अपना भाईचारा था।
4. कबीलों के लोग खेतीबाड़ी (कृषि), शिकार, संग्रहक तथा पशु-पालन आदि कार्य करते थे।
5. अहोम कबीले ने वर्तमान कालीन आसाम में अहोम राज्य की स्थापना की थी तथा लगभग 600 वर्ष तक शासन किया था।
6. रानी दुर्गावती एक प्रसिद्ध गोंड शासक थी।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें :-

1. कबीलों के लोगों का प्रमुख-कार्य कौन-सा था?
2. खानाबदोश से क्या अभिप्राय है।
3. कबीले समाज के लोग कहाँ रहते थे?।
4. मध्यकालीन युग में पंजाब में कौन-कौन से कबीले रहते थे?
4. सुफ़ाका कौन था?

(ख) निम्नलिखित रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें :-

1. अहोम कबीले ने अपना शासन वर्तमानकालीन .... के क्षेत्रों में स्थापित किया था।
2. 15वीं सदी से 18वीं सदी तक .... में खुशहाल (राज्य) शासन था।
3. अहोम कबीले के लोग चीन के .... वर्ग से संबंध रखते थे।
4. रानी दुर्गावती एक प्रसिद्ध .... शासक थी।

पाठ 15

धार्मिक विकास

इस पाठ में हम मध्यकालीन युग (800–1200 ई.) में उत्पन्न हुए विश्वासों प्रथाओं, रीति–रिवाजों, तीर्थ स्थानों तथा भिन्न–भिन्न धार्मिक सम्प्रदाओं के विकास में बारे में पढ़ेंगे।

उत्तरी भारत में धार्मिक व्यवस्थाएं तथा सम्प्रदायों का विकास (800–1200 ई.) : मध्यकालीन युग में विशेषत: राजपूत लोग हिन्दू धर्म के कई देवी–देवताओं की पूजा करते थे। इसलिए उनके राज्यकाल में इस धर्म ने बहुत उन्नति की। उत्तरी भारत में शैव मत तथा वैष्णव मत अधिक लोकप्रिय थे। शैव मत के अनुयायी भगवान शिव की पूजा करते थे। वैष्णव मत के अनुयायी भगवान विष्णु तथा उसके दस अवतारों की पूजा करते थे। शक्ति मत के अनुयायी देवी पार्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, चण्डिका तथा अम्बिका आदि की पूजा करते थे। इस काल दौरान उत्तरी भारत में बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म का प्रभाव कम हो गया था।

दक्षिणी–भारत में धार्मिक व्यवस्थाएँ तथा सम्प्रदायों का विकास (800–1200 ई.) : इस काल में दक्षिणी भारत में अधिकतर लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। लोग हिन्दू देवी देवताओं की पूजा करते थे। दक्षिणी भारत के कई शासक बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के अनुयायी थे। इस समय भारत में ईसाई तथा इस्लाम धर्म भी प्रचलित थे। भारत में इस काल दौरान कई धार्मिक लहरों का जन्म हुआ। इन धार्मिक लहरों का नेतृत्व आलवार तथा नाइनार सन्तों ने किया। **आलवार** तथा **नाइनार** सन्तों ने अपने–अपने मत का प्रचार किया। नाइनार मत के अनुयायी शिवजी की प्रशंसा में भजन गा कर अपने मत का प्रचार करते थे जबकि आलवार मत के अनुयायी भक्ति गीत गाकर वैष्णव मत का प्रचार करते थे। सभी धार्मिक सम्प्रदायों में लिंगायत धार्मिक सम्प्रदाय अधिक प्रसिद्ध था। इस धार्मिक सम्प्रदाय के अनुयायी **शिवलिंग** की पूजा करते थे। मध्यकालीन दौरान भारत में कुछ महान् संत रहते थे। उनमें से शंकराचार्य प्रसिद्ध थे। उन्होंने लोगों को सन्देश दिया कि मुक्ति की प्राप्ति के लिए **ज्ञान मार्ग** एक अच्छा साधन है। उन्होंने **अदवैत** फिलास्फी का सन्देश दिया, जिस का अर्थ है कि परमात्मा तथा जीव आत्मा दोनों एक ही हैं।

मध्यकालीन युग दौरान दक्षिणी भारत में रामानुज भक्ति लहर के महान् सन्त थे। वह एक तमिल ब्राह्मण थे। उन्होंने अपने शिष्यों को भक्ति मार्ग का सन्देश दिया। उन्होंने लोगों को कहा कि परमात्मा की भक्ति करने के लिए प्रेम तथा श्रद्धा का होना ज़रूरी है।

माधव दक्षिणी भारत में कृष्ण भक्ति का प्रचार करने वालों में से एक थे। उन्होंने 13वीं शताब्दी में वैष्णव मत का प्रचार किया। उनका विश्वास था कि **ज्ञान, कर्म** तथा **भक्ति**, मुक्ति प्राप्त करने के तीन साधन हैं। उन्होंने लोगों को पवित्र जीवन जीने का उपदेश दिया।

दिल्ली सल्तनत काल में धार्मिक व्यवस्थाएं तथा सम्प्रदायों का विकास (1206-1526 ई.) दिल्ली सल्तनत काल में इस्लाम तथा हिन्दू धर्म दो प्रमुख धर्म थे।

इस्लाम धर्म

इस धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद का जन्म 570 ई. में मक्का में हुआ। हजरत मुहम्मद के उत्तराधिकारियों को खलीफा कहा जाता था। भारत में इस धर्म की स्थापना 8वीं शताब्दी में सिंध में हुई थी। 10वीं शताब्दी तक पंजाब में भी इस धर्म का प्रसार हो गया था।

इस्लाम धर्म के प्रमुख सिद्धान्त :

1. अल्लाह बिना दूसरा कोई परमात्मा नहीं है तथा मुहम्मद उसका पैगम्बर है।
2. प्रत्येक मुस्लमान को प्रतिदिन पाँच बार नमाज पढ़नी चाहिए।
3. प्रत्येक मुसलमान को रमजान के महीने रोजे रखने चाहिए।
4. प्रत्येक मुस्लमान को जीवन काल में कम से कम एक मक्के की यात्रा करनी चाहिए।
5. प्रत्येक मुस्लमान को अपनी नेक कमाई में से जकात (दान) देना चाहिए।

इस समय इस्लाम धर्म उलेमा तथा सूफी दो सम्प्रदायों में बँटा हुआ था।

1. **उलेमा :** उलेमा मुस्लमानों के धार्मिक नेता थे। वे कुरान, हदीस तथा दूसरे धार्मिक ग्रन्थ पढ़ते थे। वे मुसलमानों को धार्मिक तथा पवित्र जीवन व्यतीत करने का सन्देश देते थे।

2. **सूफी :** सूफी मत के अनुयायी केवल एक अल्लाह में विश्वास रखते थे। वे अल्लाह के बिना किसी दूसरे परमात्मा की पूजा नहीं करते थे। वे दूसरे धर्मों का भी आदर करते थे। वे जाति प्रथा के विरुद्ध थे।

हिन्दू धर्म

दिल्ली सल्तनत काल में हिन्दू धर्म में अन्य कई धार्मिक मत जैसे शैव मत, वैष्णव मत तथा योगी आदि उत्पन्न हो गए थे।

1. **शैवमत :** भारत में शंकराचार्य ने 9वीं शताब्दी में शैव मत की स्थापना की। उनके अनुयायियों को शैव कहा जाता है।

2. **वैष्णव मत :** मध्यकालीन भारत में भक्ति के एक नए रूप वैष्णव मत का जन्म हुआ। इस मत के अनुयायी भगवान विष्णु जी के अवतार श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण जी की पूजा करते थे। श्री राम चन्द्र जी की पूजा करने वालों में से रामानन्द जी तथा श्री कृष्ण जी की पूजा करने वालों में से चैतन्य महाप्रभु जी बहुत प्रसिद्ध थे।

मुगलों के अधीन व्यवस्थाएँ तथा सम्प्रदायों का विकास 1526-1707 ई. : मुसलमान इस्लाम धर्म को मानते थे। उनका राज्य प्रबन्ध इस्लाम धार्मिक सिद्धान्तों पर आधारित था। अकबर बादशाह ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई थी। उसने गैर-मुस्लिम लोगों के धार्मिक स्थानों के निर्माण सम्बन्धी लगाई गई पाबन्दियों को समाप्त कर दिया। यह भी कहा जाता है कि अकबर बादशाह ने अमृतसर की यात्रा की तथा सिक्खों के चौथे गुरु, श्री गुरु राम दास जी को एक पेशकश की थी। अकबर के अनुसार प्रत्येक धर्म अच्छा होता है। वह सूफी सन्तों के उदारवादी विचारों से अधिक प्रभावित हुआ। उसने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में एक **इबादतखाना** बनाया। वहाँ प्रत्येक वीरवार वाले दिन शाम को एक सभा बुलाई जाती थी तथा धार्मिक मामलों पर वाद-विवाद किया जाता था। उसका विचार था कि सच को किसी भी स्थान पर प्राप्त किया जा सकता है। उसने अलग-अलग धर्मों के पारसी, जैन, हिन्दू तथा ईसाई वर्ग के लोगों के लिए **इबादतखाने** के दरवाज़े खोल दिए थे। 1579 ई. में उसने एक शाही फरमान जारी किया, जिस में उसने स्वयं को धार्मिक मामलों का श्रेष्ठ निर्णायक होने की घोषणा की।

इबादतखाना : *जहाँ पर अकबर भिन्न-भिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ धार्मिक चर्चा करता था।*

शाही फरमान : *एक शाही आदेश।*

अकबर ने सारे धर्मों के मूल सिद्धान्तों को इकट्ठा करके एक नए विश्वास (धर्म) **दीन-ए-इलाही** की नींव रखी। अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी जहांगीर तथा शाहजहाँ ने भी अकबर जैसी धार्मिक नीति को अपनाया था। परन्तु औरंगजेब बादशाह ने मुगल साम्राज्य की बहु-धार्मिक प्रणाली को बदल लिया, जिसका मुगल साम्राज्य पर बुरा प्रभाव पड़ा।

सूफी लहर

सूफी मत, इस्लाम धर्म की अन्य श्रेणी थी। इन्हें शेख या पीर कहा जाता था। इस काल दौरान उत्तरी भारत में सूफी मत के अधिकतर सिलसिले स्थापित हुए। इनमें से चिश्ती तथा सुहरावर्दी सिलसिले अधिक प्रसिद्ध थे। अजमेर में **ख्वाज़ा मुइनुद्दीन** ने चिश्ती सिलसिले तथा मुलतान में **मखदूम बहाउद्दीन ज़करिया ने** सुहरावरदी सिलसिले की नींव रखी। इन सिलसिलों के धार्मिक विश्वास तथा पद्धतियाँ अलग-अलग थीं।

सूफी संत

सूफी सन्तों में से हजरत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती अधिक प्रसिद्ध थे। उनका जन्म मध्य एशिया में हुआ था। वह भारत में अजमेर में रहते थे। 1236 ई. में उनकी मृत्यु हो गई। अजमेर में उनकी **दरगाह** पर तीर्थ यात्रा करने के लिए भारत तथा दूसरे देशों से हजारों लोग आते हैं।

शेख कुतुबद्दीन बख्तियार काकी, शेख फरीद या बाबा फरीद, शेख निजामुद्दीन औलिया तथा उसके शिष्य नसीरूद्दीन चिरागी आदि प्रसिद्ध चिश्ती सन्त थे।

सूफी मत के प्रमुख सिद्धान्त

1. वे एक अल्लाह को मानते थे।
2. अल्लाह को प्राप्त करने के लिए वे प्रेम भावना पर जोर देते थे।
3. वे संगीत में विश्वास करते थे।
4. वे अन्य धर्मों का भी सम्मान करते थे। वे जाति प्रथा के विरुद्ध थे।

भक्ति लहर

मध्यकालीन भारत में एक प्रसिद्ध धार्मिक भक्ति लहर आरम्भ हुई। इस लहर का प्रमुख उद्देश्य हिन्दू धर्म में प्रचलित बुराइयों को समाप्त करना तथा उसका इस्लाम धर्म से उत्पन्न हुए खतरों से बचाव करना था। इस लहर के सभी प्रचारक मुक्ति प्राप्त करने के लिए भक्ति के महत्व पर बल देते थे। इसलिए इस लहर को भक्ति-लहर कहा जाने लगा।

भक्ति लहर के प्रमुख सिद्धान्त

1. एक परमात्मा में विश्वास करना।
2. गुरु पर विश्वास करना।

3. आत्म–समर्पण करना।

4. शुद्ध जीवन व्यतीत करना।

5. जाति–पाति में विश्वास न करना।

6. खोखले रीति–रिवाज़ों में विश्वास न करना।

भक्ति लहर के महान् सन्त

मध्यकालीन काल में भारत के अलग–अलग भागों में कई भक्ति सन्तों का जन्म हुआ। इन में से सन्त रामानुज, रामानन्द, कबीर, श्री गुरु नानक देव जी तथा चैतन्य महाप्रभु आदि प्रसिद्ध थे।

1. **सन्त रामानुज :** रामानुज जी दक्षिणी भारत में वैष्णव मत के महान् प्रचारक थे। वह एक तमिल ब्राह्मण थे। वह अपने शिष्यों को विष्णु की पूजा करने का उपदेश देते थे। वह जाति–प्रथा का विरोध करते थे। दक्षिणी भारत में उन्होंने कई लोगों को अपना अनुयायी बनाया।

2. **सन्त रामानन्द :** रामानन्द जी का जन्म प्रयाग (**इलाहाबाद**) में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप 14वीं शताब्दी में राम भक्ति के प्रसिद्ध प्रचारक थे। आप **राघवानन्द** के अनुयायी थे। उन्होंने लोगों को राम तथा सीता की पूजा करने का उपदेश दिया। रामानन्द जी ने समाज में प्रचलित खोखले रीति–रिवाजों का विरोध किया। वे पहले भक्ति सुधारक थे, जिन्होंने स्त्रियों को भी भक्ति लहर का प्रचार करने में शामिल किया। उनके अनुयायियों में से कबीर जी का नाम प्रसिद्ध है।

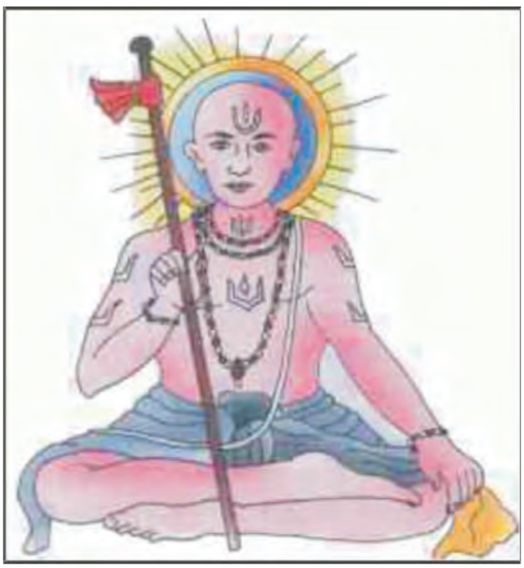

चित्र 15.1 रामानन्द जी

3. सन्त कबीर : सन्त कबीर जी भक्ति आन्दोलन के महान् प्रचारक थे। उन्होंने लोगों को एक परमात्मा की भक्ति करने तथा आपसी भाईचारा कायम करने का सन्देश दिया।

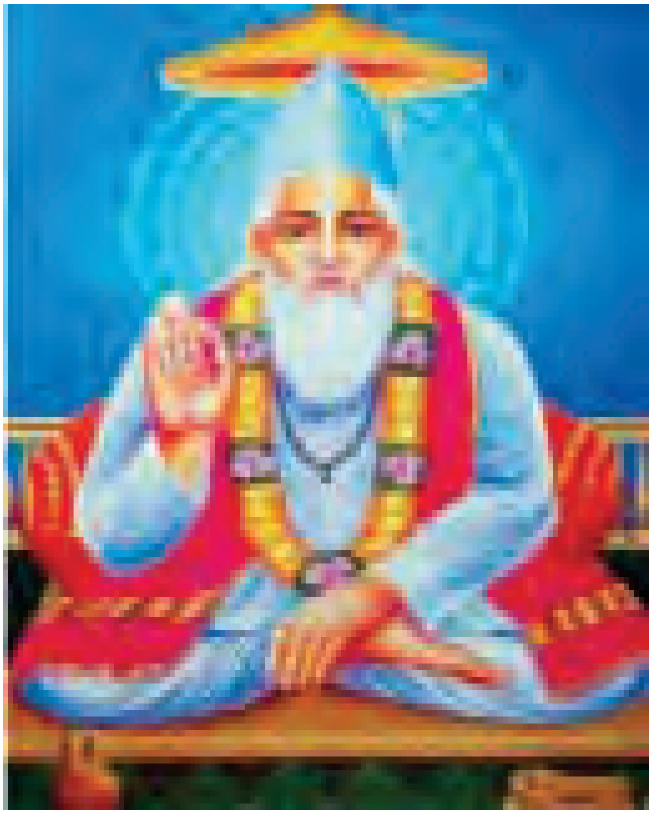

चित्र 15.2 संत कबीर

उन्होंने समाज में प्रचलित मूर्ति पूजा, जाति-पाति, बाल-विवाह तथा सती प्रथा का विरोध किया। कबीर जी के शब्द (दोहे) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भी शामिल हैं।

4. सन्त नामदेव : नामदेव जी महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सन्त थे। उन्होंने लोगों को सन्देश दिया कि ईश्वर निरंकार, सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक है। उन्होंने लोगों को पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने जाति-प्रथा, तीर्थ यात्रा, मूर्ति पूजा, यज्ञ, बली, व्रत रखना आदि का सख्त विरोध किया। उन्होंने मराठी, हिन्दी भाषाओं में भजनों की रचना की। उनके भजन **श्री गुरु ग्रन्थ साहिब** में शामिल हैं।

5. सन्त रविदास : सन्त रविदास जी का जन्म बनारस में हुआ था। वे एक ईश्वर की भक्ति करते थे। उनका विचार था कि ईश्वर सर्वव्यापक है तथा सभी के हृदय में रहता है। उन्होंने नाम का जाप करने तथा मन की शुद्धि पर बल दिया। उन्होंने तीर्थ यात्रा, मूर्ति पूजा, व्रत रखने तथा

जाति-पाति का खंडन किया। उनकी ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति तथा उपदेशों से प्रभावित होने के कारण बहुत लोग उनके अनुयायी बन गए थे।

6. **चैतन्य महाप्रभु :** चैतन्य महाप्रभु जी एक महान् भक्ति सन्त थे। उनका जन्म 1486 ई. में बंगाल के नादियां नाम के एक गाँव में हुआ। वे एक ईश्वर की भक्ति करने में विश्वास करते थे, जिसे वे कृष्ण जी कहते थे। उनके अनुसार ईश्वर निर्गुण तथा सगुण है। उन्होंने जाति-पाति का खण्डन किया और लोगों को आपसी भाईचारे तथा प्रेम का सन्देश दिया। उन्होंने कीर्तन-प्रथा आरम्भ की। उन्होंने कीर्तन-प्रथा आरम्भ की। उन्होंने बंगाल, आसाम तथा उड़ीसा में वैष्णव मत का प्रचार किया।

चित्र 15.3 चैतन्य महाप्रभु

सन्त नामदेव तथा चैतन्य महाप्रभु के मत के सम्बन्धी और जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें।

7. मीराबाई : मीराबाई श्री कृष्ण जी की भक्त थी। वह भक्ति के गीत गाती थी। उनके गाए हुए भजन आज भी प्रसिद्ध हैं। उसने भगवान कृष्ण जी की प्रशंसा में बहुत सारी कविताएं लिखी थी। उसने अपने भजनों द्वारा कृष्ण भक्ति का प्रचार किया।

चित्र 15.4 मीरा बाई

8. अन्य वैष्णव भक्त : ऊपर बताए गए वैष्णव भक्तों के अतिरिक्त जयदेव, तुलसीदास, सूरदास, नरसिंह तथा शंकरदेव आदि अन्य भक्ति सन्त थे।

चित्र 15.5 सन्त तुलसीदास

सिक्ख धर्म

श्री गुरू नानक देव जी सिक्ख धर्म के संस्थापक थे। सिक्ख लोग दस सिक्ख गुरुओं–श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अर्जुन देव जी, श्री गुरु हरगोबिन्द जी, श्री गुरु हरि राय जी, श्री गुरु हरि कृष्ण जी, श्री गुरु तेग बहादुर जी तथा श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के अनुयायी हैं।

सिक्ख लोग गुरुद्वारों में पूजा करते हैं तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी उनका धार्मिक ग्रन्थ है। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सिक्खों को पाँच ककार जैसे कि केश, कंघा, कड़ा, कच्छा तथा कृपाण धारण करने के लिए कहा। गुरु जी ने ज्योति-ज्योत समा जाने से पहले सिक्खों को आदेश दिया कि वे गुरु जी के पश्चात् ''श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को ही अपना गुरु मानें।''

श्री गुरु नानक देव जी के बारे में विशेष अध्ययन

श्री गुरु नानक देव जी भारत के भक्ति लहर के सुधार्कों में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। श्री गुरु नानक देव जी भक्ति लहर के एक महान संत थे। गुरु जी ने समाज में प्रचलत फजूल रीति-रिवाज़, मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा करना, स्त्रियों के साथ दुर-विवहार करना आदि का खण्डन किया। गुरु जी की शिक्षाएँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में शामिल है।

श्री गुरु नानक देव जी सिक्ख धर्म के संस्थापक थे। गुरु नानक देव जी का जन्म 15 अप्रैल 1469 ई. में **राय भोई की तलवंडी** में हुआ था जिसको आजकल **ननकाना साहिब** के नाम से जाना जाता है। यह स्थान अब पाकिस्तान में है। गुरु नानक देव जी के पिता मेहता कालू, राय भोई की तलवण्डी के पटवारी थे। उनकी माता जी का नाम तृप्ता देवी था।

चित्र 15.6 श्री गुरू नानक देव जी

श्री गुरु नानक देव जी शुरू से ही धार्मिक प्रवृत्ति वाले थे। उनका पढ़ाई तथा सांसारिक कार्यों में मन नहीं लगता था। इसलिए आपके पिता जी ने आपका मन बदलने के लिए आप जी का विवाह बटाला निवासी श्री मूल चन्द की सुपुत्री बीबी सुलक्खनी के साथ कर दिया। उस समय आपकी आयु 14 वर्ष की थी। कुछ समय पश्चात् आपजी के घर दो पुत्र-श्री चंद तथा लक्ष्मी दास ने जन्म लिया।

विवाह के पश्चात् गुरु नानाक देव जी अपनी बहन नानकी जी के साथ सुल्तानपुर चले गए। वहाँ उनको दौलत खां के मोदीखाने में नौकरी मिल गई। सुल्तानपुर में गुरु जी प्रतिदिन बेई में स्नान करने जाते थे। एक दिन जब वे बेई में स्नान करने गए तो तीन दिन तक लुप्त रहे। इन तीन दिनों में उनको ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् गुरु जी ने ये शब्द कहे

'' 'ना कोई हिन्दू, ना कोई मुसलमान'

यात्राएँ : ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् गुरु नानक देव जी ने भटकी हुई मानवता को रास्ता दिखाने के लिए अपनी यात्राएं या उदासियाँ शुरू की। गुरु जी अपनी पहली उदासी के दौरान सय्यदपुर, तुलम्बा, कुरुक्षेत्र, पानीपत, हरिद्वार, बनारस, गया, कामरूप, ढाका तथा जगन्नाथ पुरी आदि स्थानों पर गये। दूसरी उदासी दौरान उन्होंने पीरबुड्डन शाह, रवालसर, ज्वालाजी, तिब्बत, सुमेर पर्वत, मटन, हसन अबदाल आदि की यात्रा की। तीसरी उदासी दौरान उन्होंने मक्का, मदीना, बगदाद आदि स्थानों की यात्रा की। इसके पश्चात् गुरु जी करतारपुर में रहने लगे। अब वे कभी-कभी पंजाब के प्रदेशों में धार्मिक प्रचार करते थे।

श्री गुरु नानक देव जी की प्रमुख शिक्षाएँ

1. ईश्वर एक है।
2. ईश्वर निर्गुण है।
3. ईश्वर सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक है।
4. ईश्वर निरंकार है।
5. ईश्वर दयालु है।
6. हऊमै (अहंकार) का त्याग।
7. नाम का जाप।
8. गुरु का महत्व।

9. विश्व भ्रातृत्व में विश्वास।
10. सदाचार पर बल।
11. सच खण्ड।
12. जाति-प्रथा का खण्डन
13. खोखले रीति-रिवाजों का खंडन।

श्री गुरु नानक देव जी करतारपुर में श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन के अन्तिम 18 वर्ष करतारपुर में व्यतीत किए। उन्होंने 1539 ई. में ज्योति-ज्योत समाने से पहले **भाई लहना** को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

श्री गुरु नानक देव जी की वाणियाँ : गुरु-नानक देव जी ने जपुजी साहिब, वार मांझ, आसा दी वार, सिध गोष्ट, वार मल्हार, बारह माह तथा पट्टी आदि प्रसिद्ध वाणियों की रचना की।

श्री गुरु अंगद देव जी (1539-1552 ई.)

श्री गुरु नानक देव जी के ज्योति ज्योत समा जाने के बाद श्री गुरु अंगद देव जी 1539 ई. में सिक्खों के दूसरे गुरु बने। उन्होंने सिक्ख धर्म के विकास के लिए गुरमुखी लिपी को लोकप्रिय बनाया। श्री गुरु नानक देव जी की वाणी को संग्रह किया। संगत एवं पंगत संस्थाओं का विस्तार किया। सिक्ख धर्म को उदासी मत से अलग किया। गोइंदवाल साहिब की स्थापना करके सिक्ख धर्म की महान सेवा की।

श्री गुरु अमरदास जी (1552-1574 ई.)

श्री गुरु अंगद देव जी के ज्योति-ज्योत समा जाने के पश्चात् श्री गुरु अमरदास जी सिक्खों के तीसरे गुरु बने। गुरु जी ने सिक्खों को गोइंदवाल नामक एक नया तीर्थ स्थान दिया। लंगर प्रथा का विस्तार किया गया। हिन्दू समाज के व्यर्थ रीति-रिवाज़ों का खंडन किया। उदासी मत का खण्डन किया।

श्री गुरु रामदास जी (1574-1581 ई.)

श्री गुरु अमरदास जी के ज्योति-ज्योत समा जाने के पश्चात् श्री गुरु रामदास जी सिक्खों के चौथे गुरु बने। उन्होंने सिक्ख धर्म के विकास के लिए 679 शब्दों की रचना की। उन्होंने सिक्खों में लावां द्वारा विवाह करने की मर्यादा भी शुरू की। गुरु जी ने संगत, पंगत तथा मंजी नामक संस्थाओं को जारी रखा। गुरु जी ने समाज में प्रचलित कुरीतियों जाति प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह आदि का विरोध किया।

श्री गुरु अर्जुन देव जी (1581-1606 ई.)

श्री गुरु रामदास जी के ज्योति-ज्योत समा जाने के पश्चात् श्री गुरु अर्जुन देव जी सिक्खों के पांचवें गुरु बने। गुरु जी ने सिक्ख धर्म के विकास के लिए अमृतसर में हरिमन्दिर साहिब का निर्माण किया। गुरु जी ने तरनतारन, हरगोबिन्दपुर तथा करतारपुर नगरों की स्थापना एवं लाहौर में बाऊली का निर्माण किया। गुरु जी ने 1604 ई. में आदि ग्रन्थ साहिब का संकलन किया। उस समय का मुगल सम्राट जहांगीर सिक्ख धर्म की लोकप्रियता को सहन न कर सका। उसने गुरु जी पर विद्रोही राजकुमार खुसरो की सहायता करने का दोष लगा कर उनको जुर्माने के रूप में 2 लाख रुपये देने को कहा। गुरु जी ने यह जुर्माना देने से इन्कार कर दिया। गुरु जी को 1606 ई. में लाहौर में रावी नदी के किनारे पर दर्दनाक कष्ट दिए गए। इस प्रकार 30 मई, 1606 ई. को गुरु अर्जुन देव जी लाहौर में शहीद हो गए।

श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब (1606-1645 ई.)

श्री गुरु अर्जुन देव जी के शहीद हो जाने के पश्चात् गुरु हरगोबिन्द साहिब सिक्खों के छठे गुरु बने। गुरु जी ने गुरुगद्दी पर बैठते समय मीरी तथा पीरी नामक दो तलवारें धारण की। मीरी तलवार सांसारिक सत्ता की प्रतीक थी और पीरी तलवार धार्मिक नेतृत्व की प्रतीक थी। सिक्ख, अब सन्त सिपाही में परिवर्तित हो गए। उन्होंने अपने धर्म की सुरक्षा के लिए हथियार उठा लिए। गुरु जी ने सिक्ख धर्म के विकास के लिए अकाल तख्त साहिब का निर्माण किया। गुरु हरगोबिन्द साहिब 3 मार्च, 1645 ई. में ज्योति जोत समा गए।

श्री गुरु हरराय जी (1645-1661 ई.)

श्री गुरु हरगोबिन्द जी के ज्योति-ज्योत समा जाने के पश्चात् गुरु हर राय जी सिक्खों के सातवें गुरु बने। उन्होंने कई प्रचार केन्द्र स्थापित किए और दूर-दूर तक धर्म प्रचारक भेजे। आप जी ने पहले सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा चलाई गई संगत और पंगत प्रथा को जारी रखा। 6 अक्तूबर, 1661 ई. को श्री गुरु हरराय जी ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु हरकृष्ण जी (1661-1664 ई.)

श्री गुरु हरराय जी ज्योति-ज्योत समा जाने के पश्चात् गुरु हरकृष्ण जी सिक्खों के आठवें गुरु बने। उस समय गुरु हरकृष्ण जी की आयु केवल 5 वर्ष थी। इस कारण सिक्ख इतिहास में आप जी को **बाल गुरु** के नाम से स्मरण किया जाता है। गुरु के रूप में आप जी ने सभी कर्त्तव्य बड़ी सूझ-बूझ से निभाए। आप इतनी कम आयु में भी तीक्ष्ण बुद्धि, उच्च विचार और अलौकिक ज्ञान के स्वामी थे। आप जी 30 मार्च, 1664 ई. को दिल्ली में ज्योति जोत समा गए।

श्री गुरु तेग बहादुर जी (1664-1675 ई.)

श्री गुरु हरकृष्ण जी के ज्योति-ज्योत समा जाने के पश्चात् श्री गुरु तेग बहादुर जी सिक्खों के नौवें गुरु बने। सिक्ख धर्म का प्रचार एवं लोगों में फैले अंध विश्वासों को दूर करने के लिए गुरु साहिब जी ने पंजाब एवं पंजाब से बाहर अनेक स्थानों की यात्राएँ की। उस समय भारत में मुगल सम्राट औरंगज़ेब का शासन था। वह बड़ा कट्टर सुन्नी मुसलमान था। वह हिन्दुओं को इस्लाम धर्म में शामिल करना चाहता था। कश्मीरी पंडित उसके अत्याचारों का अधिक शिकार हुए। गुरु तेग बहादुर जी ने हिन्दुओं के धर्म की रक्षा के लिए 11 नवम्बर, 1675 ई. को दिल्ली में अपना बलिदान दिया।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी (1675-1708 ई.)

श्री गुरु तेग बहादुर जी के शहीद हो जाने के पश्चात् श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी सिक्खों के दसवें गुरु बने। गुरु गोबिन्द सिंह जी का जन्म 22 दिसम्बर, 1666 ई. को पटना में हुआ था। वे गुरु तेग बहादुर जी के इकलौते पुत्र थे। आप जी की माता का नाम गुजरी था। जब वे गुरुगद्दी पर बैठे तो उस समय उनकी आयु केवल 9 वर्ष थी।

उस समय भारत में मुगल सम्राट औरंगज़ेब का शासन था। उसने इस्लाम धर्म को स्वीकार न करने वाले हिन्दुओं की हत्या करवा दी। 11 नवम्बर, 1675 ई. को गुरु तेग बहादुर जी को शहीद करवा दिया। मुगलों के इन बढ़ रहे अत्याचारों का अन्त करने के लिए गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की। गुरु जी ने ज्योति ज्योत समा जाने से पहले सिक्खों को आदेश दिया कि वे गुरु जी के पश्चात् ''गुरु ग्रन्थ साहिब जी को ही अपना गुरु मानें।''

खालसा पंथ का सृजन

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने 30 मार्च, 1699 ई. को वैशाखी वाले दिन आनन्दपुर साहिब में एक भारी दीवान का सृजन किया। इस दीवान में से गुरु जी ने दयाराम, धर्मदास, मोहकम चन्द, साहिब चन्द और हिम्मत राय 'पांच प्यारों' का चुनाव किया। गुरु जी ने इन पांच प्यारों को पहले खंडे का पाहुल पिलाया और बाद में आप जी ने इन प्यारों से खण्डे के पाहुल का सेवन किया। इस प्रकार गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पंथ का सृजन किया। खालसा पंथ के नाम से जानी जाती सिक्ख समुदाय अब एक राजनीतिक शक्ति बन गई हैं।

खालसा पंथ के मुख्य सिद्धान्त

1. खालसा पन्थ में प्रवेश करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अमृत अथवा 'खण्डे' का पाहुल का सेवन करना होगा।
2. प्रत्येक खालसा अपने नाम के साथ 'सिंह' और खालसा स्त्री 'कौर' शब्द का प्रयोग करेगी।
3. प्रत्येक खालसा एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी देवी-देवता की पूजा नहीं करेगा।
4. प्रत्येक खालसा पांच ककार, केश, कंघा, कड़ा, कच्छा और कृपाण अवश्य धारण करेगा।
5. प्रत्येक खालसा प्रातः काल उठकर स्नान करके गुरबाणी का पाठ करेगा।
6. प्रत्येक खालसा श्रम द्वारा अपनी आजीविका कमाएगा और अपनी आय का दशम भाग धर्म के लिए दान करेगा।
7. प्रत्येक खालसा शस्त्र धारण करेगा और धर्म युद्ध के लिए सदैव तैयार रहेगा।
8. प्रत्येक खालसा सिगरेट, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों के सेवन इत्यादि से दूर रहेगा।
9. प्रत्येक खालसा परस्पर मिलते समय 'वाहेगुरु जी का खालसा', वाहेगुरु जी की फतेह कहेगा।
10. प्रत्येक खालसा जाति-प्रथा और ऊँच-नीच में विश्वास नहीं रखेगा।
11. प्रत्येक खालसा उच्च नैतिक चरित्र वाला होगा।

याद रखने योग्य तथ्य

1. मध्यकालीन युग दौरान उत्तरी भारत में हिन्दू-धर्म के साथ-साथ शैव मत तथा वैष्णव मत बहुत लोकप्रिय थे।
2. मध्यकालीन युग में दक्षिणी भारत में ईसाई, इस्लाम धर्म, आलवार, नाइनार, लिगांयत आदि धार्मिक सम्प्रदायों का विकास हुआ।
3. इस्लाम धर्म उलेमा तथा सूफी दो सम्प्रदायों में बँटा हुआ था।
4. चिश्ती तथा सुहरावरदी सूफी मत की दो प्रसिद्ध धाराएँ (सिलसिले) थीं।
5. संत रामानुज, रामानंद, कबीर, श्री गुरु नानक देव जी तथा चैतन्य महाप्रभु आदि प्रसिद्ध संत थे।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. एक नये धर्म दीन-ए-इलाही की स्थापना किसने की?
2. अद्वैत (अदवैत) से क्या भाव है?
3. इस्लाम धर्म के दो प्रमुख सम्प्रदायों के नाम लिखो।
4. चिश्ती व सुहरावर्दी सिलसिलों के संस्थापकों के नाम लिखो।
5. रामानुज के विषय में आप क्या जानते हो?
6. रामानंद का जन्म कब और कहाँ हुआ?
7. चैतन्य महाप्रभु जी कौन थे?
8. पैगम्बर हजरत मुहम्मद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
9. श्री गुरु नानक देव जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
10. गुरु रविदास जी का जन्म कहां हुआ था?

(ख) निम्नलिखित रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें :-

1. .... द्वारा एक नये धर्म दीन-ए-इलाही की स्थापना की गई।
2. सन्त कबीर .... के अनुयायी थे।
3. भक्ति लहर के सन्तों ने लोगों की .... में प्रचार किया।
4. श्री गुरु नानक देव जी सिक्ख धर्म के .... गुरु थे।
5. हज़रत ख्वाज़ा मुईनुद्दीन का जन्म .... में हुआ।
6. .... खालसा पंथ की स्थापना 1699 ई. में की।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के आगे ठीक (✓) अथवा गलत (×) का चिह्न लगाएं :-

1. श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पंथ की नींव रखी थी। ☐
2. चिश्ती तथा सुहरावर्दी प्रमुख सूफी सिलसिले नहीं थे। ☐

3. निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह अजमेर में स्थित है। ☐

4. चैतन्य महाप्रभु तथा मीराबाई ने राम भक्ति को लोकप्रिय किया। ☐

5. आलवारों ने शैव मत के भक्ति गीतों को लोकप्रिय किया। ☐

6. श्री गुरु नानक देव जी ने लंगर प्रथा प्रचलित की। ☐

(घ) निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

	कालम क		कालम ख
1.	रविदास जी का जन्म	1.	570 ई. में मक्का में हुआ।
2.	श्री गुरु नानक देव जी का जन्म	2.	इलाहाबाद में हुआ।
3.	रामानन्द जी का जन्म	3.	तमिल ब्राहमण थे।
4.	रामानुज एक	4.	1486 ई. में बंगाल के नादियां गांव में हुआ।
5.	चैतन्य महाप्रभु का जन्म	5.	बनारस में हुआ?
6.	पैगम्बर मुहम्मद का जन्म	6.	15 अप्रैल, 1469 ई. को राय भोई की तलवंडी में हुआ था।

क्रिया-कलाप

1. किसी चार भक्ति लहर के महान् सन्तों के चित्र अपनी नोट बुक में चिपकाएं। उनकी प्रमुख शिक्षाओं सम्बन्धी लिखें।
2. किसी गुरुद्वारे की यात्रा करें। आपने वहाँ क्या देखा? उस सम्बन्धी लिखें।

पाठ 16

प्रादेशिक संस्कृति का विकास

मध्यकालीन भारत में संस्कृति जैसे कि भाषा, साहित्य, चित्रकला तथा संगीत आदि का विकास हुआ।

मध्यकालीन युग (800-1200 ई.) में प्रादेशिक भाषाओं, साहित्य, चित्रकला तथा संगीत का विकास :

(1) उत्तरी भारत : मध्यकालीन युग में उत्तरी भारत में कई भाषाओं जैसे कि गुजराती, बंगाली तथा मराठी आदि का विकास हुआ। इस विकास की गति और भी तेज़ हो गई जब भक्ति लहर के सन्तों ने प्रादेशिक भाषाओं में भक्ति लहर का प्रचार हुआ।

(2) दक्षिणी भारत : दक्षिणी भारत में चोल शासकों के शासन काल में संस्कृत, तमिल, तेलगू तथा कन्नड़ भाषा की बहुत उन्नति हुई। इन भाषाओं में संस्कृत की बहुत सारी साहित्यिक तथा धार्मिक रचनाओं का अनुवाद किया गया। कंबन द्वारा संस्कृत में लिखी गई रामायण का तमिल भाषा में अनुवाद किया गया।

(3) दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) : भक्ति लहर के कारण दिल्ली सल्तनत काल दौरान हिन्दी, गुजराती, मराठी, तेलगू, तमिल, पंजाबी, कन्नड़ आदि प्रादेशिक भाषाओं का विकास हुआ। अधिकतर पवित्र धार्मिक पुस्तकों का संस्कृति भाषा से भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद किया गया। समय बीतने के बाद हिन्दी तथा फारसी भाषाओं के मेल से एक नई भाषा उर्दू का जन्म हुआ। विजयनगर राज्य के शासन काल दौरान भी संस्कृत भाषा का विकास होता रहा।

(4) मुगल काल दौरान (1526-1707 ई.) : मुगल काल को फारसी भाषा का सुनहरा युग कहा जाता है। यह मुगल साम्राज्य की सरकारी भाषा थी। फलस्वरूप मुगल काल के दौरान फारसी भाषा में अनुवाद करवाया। इसके अतिरिक्त पंजाबी भाषा ने मुगल काल दौरान बहुत उन्नति की। हिन्दी भाषा ने भी एक महत्वपूर्ण भाषा होने के कारण अधिक उन्नति की। मुगल काल में ही उर्दू भाषा का विकास होना शुरू हो गया था।

साहित्य

मध्यकालीन भारत में साहित्य को उस समय के सभी वंशों के शासकों का संरक्षण प्राप्त होने के कारण साहित्य ने बहुत उन्नति की।

उत्तरी भारत में साहित्य का विकास (1800-1200 ई.)

उत्तरी भारत में राजपूत शासकों के शासन काल दौरान साहित्य ने बहुत उन्नति की। क्योंकि इसे उन सभी शासकों का संरक्षण प्राप्त था। **चन्द बरदाई** ने **पृथ्वी राज रासो** नाम के ग्रन्थ की रचना की। बंगाल के राजकवि **जयदेव** ने **गीत-गोबिन्द** नाम का प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा, जिसमें उसने कृष्ण तथा राधा के प्यार का वर्णन किया है। कल्हण ने एक ऐतिहासिक पुस्तक **राज तरंगिनी** लिखी। इस ग्रन्थ से कश्मीर के इतिहास की जानकारी मिलती है। बिलहण ने **विक्रमांक-देव चारित** नाम की प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। इस में चालुक्य राजा विक्रमादित्य छठे के जीवन का वर्णन किया गया है। **कथा-सरित सागर** संस्कृत भाषा की एक प्रसिद्ध रचना है। यह कहानियों का एक संग्रह है।

दक्षिणी भारत में साहित्य का विकास (800-1200 ई.)

चोल शासकों के शासन काल में साहित्य ने बहुत उन्नति की। इस समय दौरान अधिकतर साहित्य तमिल, तेलगू तथा कन्नड़ आदि भाषाओं में लिखा गया था। कंबन द्वारा तमिल भाषा में लिखी गई रामायण इसका एक उदाहरण है। कन्नड़ भाषा में कई पुस्तकों की रचना की गई थी। महाभारत का संस्कृत से तेलगू भाषा में अनुवाद किया गया था।

दिल्ली सुल्तानों के अधीन साहित्य का विकास (1206-1526 ई.)

दिल्ली सुल्तानों के शासन काल में फारसी भाषा एक सरकारी भाषा थी। इस कारण इस समय दौरान अधिकतर साहित्य की रचना इस भाषा में की गई थी। **अमीर-खुसरो** तथा **अमीर हुसैन दाहलवी** आदि प्रसिद्ध फारसी कवियों ने फारसी भाषा में बहुत सारी कविताएँ लिखी थी।

जियाऊदीन बरनी, मिनहाज-अल-सिराज जैसे इतिहासकार तथा **इब्नबबूता** आदि जैसे यात्रियों ने शासकों, प्रमुख राजनीतिक घटनाओं तथा लोगों के जीवन बारे लेख इसी भाषा में लिखे।

दिल्ली सल्तनत दौरान रामानुज, जयदेव आदि प्रसिद्ध संस्कृत लेखक थे। संस्कृत की बहुत सारी रचनाओं का **प्रादेशिक भाषाओं,** पारसी तथा अरबी भाषा में अनुवाद किया गया था। अमीर खुसरो एक प्रसिद्ध हिन्दी लेखक भी था।

विजय नगर शासकों के शासन काल के दौरान भी साहित्य ने बहुत उन्नति की। उन्होंने बहुत सारी प्रादेशिक भाषाओं जैसे कि तमिल, तेलगू, कन्नड़ तथा संस्कृत आदि को संरक्षण दिया। **कृष्ण देव राय** संस्कृत तथा तेलगू भाषा का प्रसिद्ध कवि था। उसने तेलगू भाषा में **अलमुकता मालदा** नाम की कविता लिखी।

मुगल शासकों अधीन साहित्य का विकास (1526-1707 ई.)

मुगल शासक स्वयं महान् विद्वान थे। बाबर ने बाबर नामा अथवा 'तुज़क-ए-बाबरी' नाम की प्रसिद्ध आत्मकथा लिखी। यह पुस्तक तुर्की भाषा में लिखी गई थी। अकबर ने साहित्य के विकास को काफी उत्साहित किया। उसके दरबार में शेख मुबारक, अबुल, फजल तथा फिजी जैसे महान् विद्वान थे। **अबुल फजल** ने **आईने-अकबरी** तथा अकबरनामा, नाम की पुस्तकें लिखी थी। अकबर बादशाह ने संस्कृत की प्रसिद्ध रचनाओं जैसे कि **रामायण, महाभारत, राजतरंगिनी, पंचतंत्र** आदि का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया।

जहांगीर बादशाह भी तुर्की, हिन्दी तथा फारसी भाषाओं का महान् विद्वान था। उसने **तुज़क-ए-जहांगीरी** नाम की आत्मकथा फारसी भाषा में लिखी। उसने विद्वानों को भी संरक्षण दिया। राय मनोहर दास, भीष्ण दास तथा केशव दास जहांगीर के दरबार के प्रसिद्ध हिन्दी लेखक थे।

शाहजहां बादशाह साहित्य का प्रेमी था। उसके शासन काल में अब्दुल हमीद लाहौरी का पादशाहनामा तथा मुहम्मद सदीक का शाहजहांनामा प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी गई। उसने हिन्दी साहित्य को भी संरक्षण दिया।

औरंगजेब बादशाह ने इस्लामी कानून पर आधारित **फतवा-ऐ-आलमगिरी** पुस्तक लिखवाई। **खाफी खाँ** ने **मतखिब-उल-लुबाब** नाम का प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा।

चित्र-कला

राजपूत युग दौरान चित्र कला का विकास (800-1200 ई.)

राजपूत शासकों के शासन काल में कागज़ों पर ही चित्र बनाने शुरू हो गए थे। इस युग में चित्र कला की पाल तथा अपभ्रंश शैली का प्रयोग किया गया था। बौद्ध धर्म के ग्रन्थों में पालशैली के चित्र प्राप्त होते हैं। इन चित्रों में सफेद, काले, लाल तथा नीले रंगों का प्रयोग किया गया है। अपभ्रंश शैली के चित्रों में लाल तथा पीले रंगों का अधिकतम प्रयोग किया गया है। इस शैली के चित्र जैन तथा पुराने ग्रन्थों में मिलते हैं।

दिल्ली सल्तनत काल में चित्रकला का विकास (1206–1526 ई.)

दिल्ली सल्तनत काल में दीवारों, छतों आदि पर चित्रकारी की जाती थी। मुहम्मद तुगलक का एक चित्र इस समय की चित्रकला का सुन्दर नमूना है। दरबारी चित्रकार दिल्ली सुल्तानों की तस्वीरें बनाते थे।

मुगल काल दौरान चित्रकला का विकास (1526–1707 ई.)

मुगल शासकों का चित्रकला से बहुत लगाव था। इस कारण मुगलों के शासन काल दौरान इस कला का बहुत विकास हुई।

बाबर तथा हुमायूं मुगल शासक चित्रकला में बहुत रुचि रखते थे। बाबर ने अपनी आत्मकथा को चित्रित करवाया था। हुमायूं दो प्रसिद्ध चित्रकार–अबदुल समद तथा सैयद अली को ईरान से अपने साथ दिल्ली में लाया था। अकबर ने चित्रकला के विकास के लिए अलग विभाग की स्थापना की। इस विभाग ने पुस्तकों को चित्रित करने के साथ–साथ बादशाह की तस्वीरें भी बनाई। अकबर के दरबार के दो प्रसिद्ध चित्रकार–दसवंत तथा बासवान थे।

जहांगीर स्वयं भी एक अच्छा चित्रकार था। उसके शासन काल दौरान सूक्ष्म चित्रकारी का विकास होना आरम्भ हुआ। उस्ताद मैसूर, अबुल हसन, फारूख बेग, माधव आदि जहांगीर के दरबार में प्रसिद्ध चित्रकार थे।

संगीत

मध्यकालीन युग में उत्तरी तथा दक्षिणी भारत में संगीत का विकास (800–1200 ई.)

इस समम दौरान राजपूत शासकों के अधीन संगीत कला ने बहुत उन्नति की। उत्तरी–दक्षिणी भारत के राजपूत शासकों तथा चोल शासकों ने संगीत में बहुत रुचि ली। उनके दरबार में संगीतकारों का बहुत सत्कार तथा आदर किया जाता था। मध्यकालीन युग दौरान **राग सिस्टम** पर आधारित भारतीय क्लासिकल संगीत अपनी चरम सीमा पर था। उस समय संगीत के दो स्कूल–हिन्दुस्तानी संगीत स्कूल तथा कर्नाटक संगीत स्कूल थे।

उपरोक्त के अतिरिक्त हमारे लोक गीत हमारे संगीत की अमीर विरासत पर प्रकाश डालते हैं।

दिल्ली सल्तनत काल में संगीत का विकास (1206–1526 ई.)

दिल्ली सल्तनत के शासन काल में संगीत ने बहुत उन्नति की क्योंकि दिल्ली के सुल्तान संगीत के बहुत प्रेमी थे। इस समय में अमीर खुसरो संगीत शास्त्र का विद्वान तथा कवि था। उसने तबले तथा सितार की खोज की थी। कहा जाता है कि मुहम्मद तुगलक के राज दरबार में 1200

संगीतकार थे। फिरोज तुगलक तो प्रत्येक शुक्रवार के दिन एक संगीत सभा का आयोजन करता था। सूफी संतों तथा भक्तों की भी संगीत में बहुत रुचि थी। ग्वालियर का राजपूत राजा मान सिंह संगीत प्रेमी था। उसके दरबार में बैजू तथा पाण्डवी दो प्रसिद्ध संगीतकार थे, जिन्होंने संगीत शास्त्र **मीमांसा** तथा **संगीत राज** नाम के दो ग्रन्थ लिखे।

मुगल काल में संगीत का विकास (1526-1707 ई.)

औरंगजेब के अतिरिक्त सारे मुगल बादशाह संगीत कला के प्रेमी थे। इसलिए उनके शासन काल में संगीत कला का बहुत विकास हुआ। बाबर तथा हुमायूं सप्ताह में दो दिन अलग बैठकर संगीत सुनते थे।

अकबर संगीत कला में बहुत रुचि लेता था। वह स्वयं एक गायक था तथा उसे संगीत के सुर एवं ताल का पूरा ज्ञान था। उसके दरबार में **तानसेन** जैसे उच्च कोटि के गायक थे। तानसेन ने बहुत सारे राग एवं रागनियाँ लिखी।

तानसेन के अतिरिक्त बैजू बावरा तथा सूरदास उच्चकोटि के गायक थे। जहाँगीर तथा शाहजहाँ बादशाह भी संगीत कला के प्रेमी थे। वे ध्रुपद राग के बहुत शौकीन थे। मुगलकाल में श्री गुरु अर्जुन देव जी ने राग-रागनियों के अनुसार आदि ग्रन्थ साहिब की रचना की थी।

पंजाब संस्कृति का विशेष अध्ययन

मध्यकालीन पंजाब में पंजाबी संस्कृति जैसे कि भाषा, साहित्य, चित्र कला तथा संगीत आदि की बहुत उन्नति हुई।

भाषा तथा साहित्य

(1) बाबा फरीद शक्करगंज (1173-1265 ई.) : बाबा फरीद शक्करगंज पंजाब के सूफी सन्त थे। उन्हें पंजाब साहित्य का संस्थापक कहा जाता है। उन्होंने अपनी वाणी की रचना लेंहदी या मुल्तानी भाषा में की जो कि आम लोगों की भाषा थी। उनके 112 श्लोक तथा 4 शब्दों को भी श्री गुरु अर्जुन देव जी ने आदि ग्रन्थ साहिब में सम्मिलित किया। बाबा फरीद जी ने पंजाबी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(2) श्री गुरु नानक देव जी (1469-1539 ई.) : श्री गुरु नानक देव जी ने पंजाबी साहित्य के एक नए युग का आरम्भ किया, क्योंकि उनके द्वारा रचित पंजाबी साहित्य सारे पक्षों से महान् था। गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वाणियों में से जपुजी साहिब, आसा दी वार, सिद्ध गोष्ठी, बाबर वाणी इत्यादि महत्वपूर्ण है। वास्तव में श्री गुरु नानक देव जी की वाणी पंजाबी साहित्य को एक अमर देन है।

(3) श्री गुरु अर्जुन देव जी (1563-1606 ई.) : श्री गुरु अर्जुन देव डी ने 1604 ई. में आदि ग्रन्थ साहिब का संकलन किया। इस ग्रन्थ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अर्जुन देव जी की वाणी को सम्मिलित किया गया। बाद में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को भी इसमें सम्मिलित किया। सिक्ख गुरुओं के अतिरिक्त आदि ग्रन्थ साहिब में हिन्दू भक्तों तथा मुस्लिम संतों तथा कुछ भट्टों की वाणी को भी सम्मिलित किया गया। इस सारी वाणी में परमात्मा की प्रशंसा की गई है। आदि ग्रन्थ साहिब को पंजाबी साहित्य में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

(4) भाई गुरुदास (1551-1637 ई) : भाई गुरुदास जी एक महान् कवि थे। उन्होंने पंजाबी भाषा में 39 वारों की रचना की। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इन वारों को **श्री गुरु ग्रन्थ साहिब** की कुंजी कहकर सम्मानित किया है। वास्तव में भाई गुरुदास जी की पंजाबी साहित्य तथा सिक्ख फिलासफी को महान् देन है।

(5) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी (1666-1708 ई.) : श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी उच्च कोटि के कवि तथा साहित्यकार थे। उनकी रचनाएं जैसे कि **जाप साहिब, विचित्र नाटक, जफरनामा, चण्डी दी वार** तथा **अकाल उस्तत** आदि बहुत महत्वपूर्ण हैं जो कि दशम् साहिब में दर्ज है। निस्सन्देह **'चंडी दी वार'** पंजाब साहित्य की एक अमर रचना है।

(6) शाह हुसैन (1538-1593 ई.) : शाह हुसैन एक प्रसिद्ध पंजाबी सूफी कवि थे। उन्होंने 165 काफियों की रचना करके पंजाबी साहित्य को एक अमूल्य देन दी।

(7) बुल्ले शाह (1680-1758 ई.) : बुल्ले शाह पंजाबी साहित्य का प्रसिद्ध कवि था। उसने काफियाँ, सहरफियाँ, दोहरें, अठवारा, बारहमाह आदि बहुत सारी रचनाओं की रचना की। परन्तु उनके द्वारा रची गई काफियाँ बहुत प्रसिद्ध थी। वास्तव में उसकी पंजाबी साहित्य को अमूल्य देन है।

(8) दामोदर : दामोदर महान्, मुगल बादशाह अकबर का समकालीन था। उसने लहंदी या मुल्तानी पंजाबी बोली में हीर-रांझा किस्से की रचना की। इसमें उन्होंने अपने समय के ग्रामीण सभ्याचार का वर्णन किया है।

(9) वारिस शाह (1710-1798 ई.) : वारिस शाह को पंजाबी किस्सा, काव्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उसमें हीर नाम के पंजाबी किस्से की रचना की जो कि पंजाबी साहित्य को एक महत्वपूर्ण देन है।

(10) शाह मुहम्मद (1782-1862 ई.) : उसने **जंगनामा** नाम की रचना लिखी। शाह मुहम्मद ने अपनी रचना में महाराजा रणजीत सिंह के साम्राज्य की उन्नति जिसे उन्होंने अपनी आँखों से देखा था, उसकी बहुत प्रशंसा की है। वास्तव में यह रचना पंजाब साहित्य को एक अमूल्य देन है।

चित्र कला

सिक्ख गुरु साहिबान से सम्बन्धित हमें बहुत सारे चित्र पुराने ग्रन्थों या गुरुद्वारों की दीवारों या राजमहलों में बने हुए मिले हैं। जैसे कि गोइंदवाल में गुरु अमरदास जी के उन 22 सिक्खों के चित्र मिले हैं जिन्हें मंजी प्रथा अधीन गुरु साहिब जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए नियुक्त किया था। ये चित्र उस समय दौरान चित्रकला के विकास पर प्रकाश डालते हैं।

याद रखने योग्य तथ्य

1. मध्यकालीन भारत में गुजराती, बंगाली, मराठी, संस्कृत, तमिल, तेलगू, कन्नड़, हिन्दी, पंजाबी आदि भाषाओं का विकास हुआ।
2. मध्यकालीन भारत में पृथ्वी राज रासो, गीत गोविन्द, राज तरंगणी, विक्रमांक देव चरित, कथासरितसागर, बाबरनामा, आइने-अकबरी, अकबरनामा, तुज्क-ए-जहाँगीरी, पादशाहनामा, शाहजहांनामा, फतवां-ए-आलमगिरी, मुंतखिब-उल-लुबाब आदि साहित्य का विकास हुआ।
3. मध्यकालीन युग में 'राग सिस्टम' पर आधारित भारतीय शास्त्रीय (क्लासिकल) संगीत का बहुत विकास हुआ। मुहम्मद तुगलक के दरबार में 1200 संगीतकार थे। अकबर के दरबार में तानसेन एक प्रसिद्ध संगीतकार था। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने राग-रागनियों अनुसार श्री आदि ग्रन्थ साहिब की रचना की। बैजू तथा पांडवी प्रसिद्ध संगीतकारों ने मीमांसा तथा संगीत राज नामक दो ग्रन्थ लिखे।
4. मध्यकालीन पंजाब में बाबा फरीद शक्करगंज ने अपनी वाणी की रचना लंहदी या मुल्तानी भाषा में की। इस युग में पंजाब में आदि ग्रंथ की रचना की गई थी। इस युग में पंजाब में आदि ग्रंथ साहिब, भाई गुरदास जी ने 39 वारें, गुरु गोबिन्द सिंह जी ने जय साबिह, वचित्र नाटक जफरनामा, चंडी दी वार, अकाल उस्तत, दशम ग्रंथ बुल्ले शाह ने काफीयां, शिहरफीयां, दोहरे, अठवारे, दामोदर ने हीर-राझां किस्सा, वारिस शाह।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. मध्यकालीन युग (800-1200) में उत्तरी भारत में कौन-सी भाषाओं का विकास हुआ?
2. दिल्ली सल्तनत काल दौरान प्रादेशिक भाषाओं का विकास क्यों हुआ था?
3. पंजाबी साहित्य का संस्थापक कौन था?
4. भाई गुरुदास ने कितनी वारों की रचना की?
5. चार प्रसिद्ध कवियों के नाम बताओं जिन्होंने पंजाबी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान दिया?
6. आदि ग्रन्थ साहिब का संक्षेत्र में वर्णन करें।

(ख) निम्नलिखित रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें :-

1. गीत गोबिन्द .... द्वारा लिखी गई थी।
2. 1604 ई. में .... द्वारा आदि ग्रन्थ साहिब की रचना की गई थी।
3. पृथ्वी राज रासो .... द्वारा लिखी गई थी।
4. कृष्ण राय संस्कृत तथा हिन्दी भाषाओं का प्रसिद्ध .... था।
5. अमीर खुसरो एक .... संगीतकार तथा कवि था।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के सामने ठीक (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाएं :-

1. दिल्ली सल्तनत काल में रामानुज तथा जयदेव संस्कृत भाषा के दो प्रसिद्ध लेखक थे। ☐
2. अबुल फजल ने आईने-अकबरी नहीं लिखी थी। ☐
3. तानसेन अकबर के दरबार का प्रसिद्ध गायक था। ☐
4. मुहम्मद तुगलक का चित्र मध्यकाल की चित्रकला का प्रसिद्ध उदाहरण है। ☐
5. राजपूत काल दौरान संगीत का विकास नहीं हुआ था। ☐

(घ) मिलान कीजिए :

	कालम अ		कालम ब
(1)	जयदेव	(क)	विक्रमांक देव चरित
(2)	कल्हण	(ख)	आईने अकबरी
(3)	बिल्हण	(ग)	राज तरंगिणी
(4)	अबुल फजल	(घ)	गीत गोबिन्द
(5)	औरंगजेब	(ड़)	फतवा–ऐ–आलमगीरी

क्रिया-कलाप

1. मध्यकालीन पंजाब के किसी चार साहित्यकारों के चित्र अपनी कापी में चिपकाएं तथा उनके विषय के बारे में लिखें।

पाठ 17

18वीं शताब्दी में भारत में नए राज्यनीतिक शक्तियों की स्थापना

18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का पतन होना शुरू हुआ। उत्तरी तथा दक्षिणी भारत में कई स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुए। दक्षिणी भारत में मराठों, हैदराबाद के निजामों, मैसूर के हैदरअली तथा टीपू सुल्तान ने अपने स्वतन्त्र राज्य भी स्थापित किये। उत्तरी भारत में बंगाल, अवध, रुहेलखण्ड, मथुरा तथा पंजाब जैसे नए राज्य भी स्थापित हुए।

चित्र 17.1 : 18वीं शताब्दी में नए राज्यों की स्थापना

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् जिन शासकों ने शासन किया उनको '**उत्तरकालीन मुगल**' कहा जाता है। वे इतने शक्तिहीन थे कि साम्राज्य के दूर के प्रान्तों को इकटठा न रख सके।

बहादुर शाह (1707–1712 ई.)

बहादुर शाह ने छः वर्ष शासन किया परन्तु वह मराठों तथा सिक्खों के उत्थान पर नियंत्रण न रख सका। उसकी 1712 ई. में मृत्यु हो गई।

जहांदार शाह

बहादुर शाह प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र जहांदार शाह राजगद्दी पर बैठा। उसने कुछ महीनों तक ही शासन किया। उसके शासन काल में दो भाई हुसैन अली तथा अब्दुल बहुत शक्तिशाली हो गए थे। वे जहांदार शाह को अपने हाथों की कठपुली बनाना चाहते थे। परन्तु उसने ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने उसका कत्ल कर दिया।

फरूखसीयर (1713–1719 ई.)

जहांदार की मृत्यु के पश्चात् उसका भतीजा फरूखसीयर दिल्ली का बादशाह बना। वह केवल नाम का ही राजा था। हुसैन अली तथा अब्दुल दोनों भाईयों द्वारा ही साम्राज्य का शासन प्रबन्ध किया जाता था, जिन्हें **सैयद भाई** कहा जाता था। 1719 ई. में जब उसने सैयद भाईयों से स्वतन्त्र होने का प्रयत्न किया तो उसे भी मार दिया गया।

चित्र 17.2 बहादुर शाह जफर

मुहम्मद शाह : मुहम्मद शाह अगला प्रसिद्ध शासक था। उसने 1719 से 1748 ई. तक शासन किया। मुहम्मद शाह ने ताकत में आने के पश्चात् जल्दी ही सैयद भाईयों को अन्त कर दिया। परन्तु उसने साम्राज्य को संगठित करने की कोशिश नहीं की। परन्तु उसके शक्तिशाली गर्वनरों ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये।

इस समय दौरान सिक्खों, मराठों, जाटों तथा राजपूतों ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। बहादुर शाह जफर अन्तिम मुगल बादशाह था। उस को 1858 ई. में अंग्रेज़ों ने सिंहासन से उतार के मुगल साम्राज्य का अन्त कर दिया।

नए राजनीतिक संगठन

मध्याकालीन युग में मुहम्मद शाह के पश्चात् प्रादेशिक राज्य बहुत शक्तिशाली हो गए थे।

1. बंगाल

18वीं शताब्दी में बंगाल मुगलों में स्वतन्त्र होने वाला प्रथम राज्य था। 1717 ई. में मुर्शिद कुली खां मुगलों के अधीन बंगाल तथा उड़ीसा का सूबेदार नियुक्त हुआ। वास्तव में वह स्वतन्त्र रूप में शासन करता था। उसने ढ़ाता की अपेक्षा **मुर्शिदाबाद** को अपनी राजधानी बना लिया। वह एक योग्य तथा बुद्धिमान शासक था। उसकी मृत्यु के पश्चात् 1727 ई. में शुजाउद्दीन उसका उत्तराधिकारी बना। शुजाउद्दीन 1733 ई. में बंगाल तथा उड़ीसा का नया शासक बना। उसके राज्य में पूरी शान्ति थी। 1737 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

शुजाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सरफराज खां उसका उत्तराधिकारी बना। वह अलीवरदी खां द्वारा 1740 ई. की लड़ाई में मारा गया। अलीवरदी खान 1740 ई. में बिहार तथा उड़ीसा का नया शासक बना। अलीवरदी खां के बाद 1756 ई. में सिराजुदौला बंगाल का शासन बना। बंगाल के शासकों ने शासन-प्रबन्ध में कई सुधार किए तथा कृषि, उद्योग तथा व्यापार को उन्नत किया। उन शासकों ने राज्य में शान्ति तथा खुशहाली स्थापित की।

अवध

सआदत खाँ 1722 ई. में मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के अधीन अवध का सूबेदार बना। उसने राज्य की आर्थिक स्थिति में सुधार किए। उसने कृषि की ओर विशेष ध्यान दिया। 1739 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

सआदत खान की मृत्यु के पश्चात् **सफदर जंग** अवध का नया शासक बना। उसने 1754 ई. तक शासन किया। वह मुगल बादशाह अहमद शाह का मुख्य वजीर भी रहा। 1754 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

शुजाउदौला

1754 में शुजाउदौला लखनऊ का शासन बना। उसने 1775 ई. तक शासन किया। उसने 1774 ई. में रोहेलखण्ड के प्रदेश जीत लिये। 1775 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

शुजाऊदौला के पश्चात् **आसफुदौला** अवध का नवाब बना। कुछ समय पश्चात् औरंगजेब गर्वनर जनरल वारेन हेसटिंगंज ने आसफुदौला को फैजाबाद की संधि करने के लिए मजबूर कर दिया। उसने अवध में अवध में रखी गई अंग्रेज़ी सेना के बदले ली जाने वाली रकम को बढ़ाने के लिए भी मजबूर किया। 1797 ई. में आसफुउदौला की मृत्यु हो गई।

हैदराबाद

निजाम-उल मुल्क जिसका आरम्भक नाम **चीन किलिच खान** था। वह हैदराबाद राज्य का संस्थापक था। वह मुगल शासक शाह का मुख्य वजीर था। उसने हैदराबाद को अपनी

राजधानी घोषित किया। मुगल बादशाह ने निजाम–उल–मुल्क को दक्षिण का सूबेदार मान लिया तथा उसे **आसफजाह** की उपाधि दी। चाहे ये सब कुछ दिखावा ही था। परन्तु अब वह हैदराबाद का असली शासक बन चुका था। वह तथा उसके उत्तराधिकारी आसफजाह वंश के साथ सम्बन्ध रखते थे तथा उन्हें हैदराबाद के निजाम कहा जाता था।

मैसूर

हैदर अली : हैदर अली 1761 ई. में मैसूर का शासन बना। अपने शासन काल के दौरान हैदर अली ने मैसूर में अच्छा शासन प्रबन्ध स्थापित किया। हैदर अली अन्य धर्मों का भी सत्कार करता था। उसने बहुत सारे क्षेत्रों को जीत कर मैसूर को एक शक्तिशाली राज्य बनाया था। उसने बहुत सारे हिन्दुओं को ऊँचे पदों पर नियुक्त किया। उसने मराठों, हैदराबाद के निजाम, कर्नाटक के शासकों तथा अंग्रेजों के साथ बहुत सी लड़ाईयाँ लड़ी। हैदर अली तथा औरंगजेब के बीच दो लड़ाईयाँ हुईं। हैदर अली तथा औरंगजेब के बीच दो लड़ाईयाँ हुईं जिन्हें ऐंग्लो–मैसूर युद्ध कहा जाता है। प्रथम ऐंगलों–मैसूर युद्ध में हैदर अली ने अंग्रेजों को बुरी तरह पराजित किया। 1780 ई. में उनके बीच दूसरा ऐंग्लो–मैसूर युद्ध हुआ। यह युद्ध अभी चल ही रहा था कि हैदर अली की मृत्यु हो गई।

चित्र 17.3 हैदर अली

टीपू सुल्तान : हैदर अली का पुत्र सुल्तान उसका उत्तराधिकारी बना। वह अपने पिता की भांति योग्य शासक था। उसे **मैसूर का टाइगर** कहा जाता था। वह एक महान् देश भक्त था। उसने शासन प्रबन्ध में कई सुधार किए। वह भारत में से अंग्रेजों के अत्याचारी शासन का अन्त करना चाहता था। इसलिए उसने अपनी सेना के हथियारों का आधुनिकीकरण किया तथा आधुनिक सेना तैयार की। उसने अपने राज्य के उद्योग तथा व्यापार को उन्नत किया। वह 1799 ई. में अंग्रेजों के साथ मैसूर के चौथे युद्ध में मारा गया।

चित्र 17.4 टीपू सुल्तान

मराठे

औरंगजेब के शासन काल में शिवाजी ने महाराष्ट्र में एक स्वतन्त्र मराठा राज्य की स्थापना की। बालाजी विश्वानाथ मराठों का प्रथम पेशवा बना। पेशवाओं के नेतृत्व में मराठा राज्य का बहुत विस्तार हुआ।

शिवाजी

शिवाजी ने मराठा वंश की स्थापना की। शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. को पूना शिवनेर किले में हुआ। उसके पिता शाहजी भोंसले एक प्रसिद्ध जागीरदार था तथा वे बीजापुर के सुल्तान के दरबार में एक ऊँची पदवी पर नियुक्त थे। शिवाजी की माता का नाम जीजाबाई था। शिवाजी पर जीजाबाई, दादाजी कोंडदेव तथा गुरु राम दास का बड़ा प्रभाव पड़ा।

शिवाजी एक देश भक्त थे। वह भारत में से मुसलमानों के अत्याचारी शासन का अन्त करके एक स्वतन्त्र हिन्दू राज्य की स्थापना करना चाहता थे। 1646 ई. में जब बीजापुर के सुल्तान अली अदिल शाह बीमार हो गए तो शिवाजी ने तोरण किले पर कब्जा कर लिया। इसके पश्चात् उन्होंने 1648 ई. में पुरन्धर, कोड़ाना, कोंकण, कल्याणी तथा सिंहगढ़ किलों पर कब्जा कर लिया। दादा कोंडदेव की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने 1648 ई. पूने पर कब्जा कर लिया। शिवाजी जावली पर विजय प्राप्त किए बिना दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर अपने राज्य का विस्तार नहीं कर सकता था। इसलिए उसने जावली पर आक्रमण करके चन्द्रराव का कत्ल कर दिया।

चित्र 17.5 शिवाजी मराठा

1659 ई. में बीजापुर के सुल्तान ने अफजल खान के अधीन शिवाजी के विरुद्ध एक सेना भेजी परन्तु वह शिवाजी को पकड़ ना सका। इस लिए उसने शिवाजी को संधि पर दस्तखत करने के लिए प्रतापगढ़ के किले में बुलाया। जब वह एक दूसरे को मिलने लगे तब अफजल खान ने शिवाजी को मारने की कोशिश की परन्तु शिवाजी ने ही उसको मार दिया।

अन्त में सुल्तान ने शिवाजी से संधि कर ली तथा उसे एक स्वतन्त्र शासक मान लिया।

मुगलों के साथ सम्बन्ध

औरंगजेब शिवाजी की बढ़ती हुई शक्ति को सहन ना कर सका। उसने शिवाजी की शक्ति को कुचलने के लिए शिवाजी के विरुद्ध पूने में भारत के सूबेदार शइस्ता खान के नेतृत्व में एक सेना भेजी। शाइस्ता खान ने शिवाजी मराठे के कई प्रदेश, किले तथा पूने पर अधिकार कर लिया। कुछ समय पश्चात् 1663 ई. में एक रात को शिवाजी ने अपने 400 सैनिकों के साथ एक बारात के रूप में पूने में प्रवेश किया। उन्होंने आधी रात को शाइस्ता खान पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में शाइस्ता खान का पुत्र अब्दुल फतेह तथा अधिकतर सैनिक मारे गए। परन्तु शाईस्ता खान अपनी जान बचा के भाग गया।

1667 ई. में जब शिवाजी तथा उसका पुत्र औरंगजेब को मिलने के लिए आगरा पहुँचे। तो औरंगजेब ने उनको कैद में डाल दिया। परन्तु शिवाजी तथा उसका पुत्र मिठाई के टोकरों में बैठकर जेल से निकल गए।

शिवाजी ने खुद को एक स्वतन्त्र शासक घोषित कर दिया। तथा **छत्रपति** की उपाधि धारण की। 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गई।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् उनका पुत्र शंम्भा जी 1689 ई. में एक नया शासक बना। वह अयोग्य साबित हुआ। औरंगजेब के आदेश अनुसार शंम्भा जी को कैद में डालने के पश्चात् 1689 ई. में उसे मृत्यु के घाट उतार दिया गया।

शंम्भा जी के पश्चात् उसके भाई राजा राम को शासक बनाया गया। उसने मुगलों के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखा। 1707 ई. में राजा राम की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी विधवा रानी ताराबाई अपने चार वर्ष के पुत्र शिवाजी द्वितीय की संरक्षक बनकर शासन करने लगी। वह बहुत बहादुर स्त्री थी। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् 1708 ई. में शाहू जी शासक बने। उसने बाला जी विश्वानाथ को अपना पेशवा नियुक्त किया। धीरे-धीरे राज्य की सारी शक्तियाँ बाला जी विश्वनाथ के पास आ गईं। 1720 ईं. में उसकी मृत्यु हो गई।

बाला जी विश्वनाथ की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बाजीराव 1720 ई. में पेशवा नियुक्त हुई। 1739 ई. में उसने पुर्तगालियों की सालसेंट, बसीन तथा थाना बस्तियों पर कब्जा कर लिया।

1740 ई. में बाजीराव प्रथम की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् बालाजी बाजीराव तीसरा पेशवा नियुक्त हुआ। परन्तु अहमदशाह अब्दाली ने 1761 ई. में पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों को पराजित किया। पेशवा इस पराजय को सहन न कर सका तथा उसकी मृत्यु हो गई।

औरंगज़ेब के शासन काल में कौन-सी राजनीतिक शक्तियों ने मुगलों से लंबा समय संघर्ष किया था।

माधव राव 1761 ई. में चौथा पेशवा नियुक्त हुआ। माधव राव की मृत्यु के पश्चात् नारायण राव, माधव राव नारायण तथा बाजीराव द्वितीय पेशवा नियुक्त हुए। 1818 ई. में अंग्रेज़ गर्वनर जनरल लार्ड हेस्टिंगज ने मराठों के अन्तम पेशवा बाजीराव द्वितीय को पराजित किया तथा मराठा साम्राज्य का अन्त कर दिया।

राजपूत

मुगलों तथा राजपूतों के मित्रतापूर्वक सम्बन्ध थे। परन्तु औरंगजेब के शासन काल में वे अलग-अलग-अलग हो गए। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् जब मुगल साम्राज्य का पतन होना

शुरू हो गया तो वे स्वतन्त्र हो गए। उनमें से अम्बर का (जिसको जयपुर कहा जाता है) शासक सवाय राजा जयसिंह प्रसिद्ध राजपूत शासक था। उसने विज्ञान विषय की शिक्षा को उत्साहित किया। उसने जयपुर को सुन्दर गुलाबी नगर बनाया। उसने दिल्ली, जयपुर, उज्जैन तथा मथुरा में कई जन्तर-मन्तर बनाए।

चित्र 17.6 सवाई राजा जै सिंह द्वारा बनाए गए जन्तर-मन्तर

जाट

औरंगजेब के अत्याचारों के कारण मथुरा के जाटों के गोकुल ने नेतृत्व में मुगलों के विरूद्ध विद्रोह शुरू कर दिया। उसके पश्चात् जाटों ने राजाराम तथा चूड़ामन के नेतृत्व में संघर्ष जारी रखा। चूड़ामन मुगल बादशाह से 1500 जाट तथा 500 सवार की मनसबदारी प्राप्त करने में सफल हुआ। उसके उत्तराधिकारी बदन सिंह ने अपनी सेना को शक्तिशाली बनाया। उसने अपने राज्य में कई किले बनाए। उसने आगरा, मेरठ, अलीगढ़ क्षेत्रों पर कब्जा किया तथा अपने राज्य का विस्तार किया।

सिक्खों के बारे में विशेष अध्ययन

18वीं शताब्दी में मुगलों तथा सिक्खों के बीच एक लम्बा संघर्ष हुआ। इस समय दौरान मुगलों ने सिक्खों पर बहुत अत्याचार किए। मुगलों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने 1699 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की। इसकी स्थापना से एक बहादुर कौम (जाति) का जन्म हुआ। इस कौम ने मुगल साम्राज्य का अन्त कर दिया। 18वीं शताब्दी में गुरु गोबिन्द जी तथा मुगलों के बीच आनन्दपुर साहिब की पहली तथा दूसरी, चमकौर साहिब तथा खिदराना की लड़ाईयाँ हुई। गुरु जी ने मुगलों के विरुद्ध चमकौर की महान् लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में श्री गुरु गोबिन्द सिंह के दो बड़े साहिबजादे अजीत सिंह तथा जुझार सिंह जी शहीद हो गए। 1706 ई. में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खिदराना या मुक्तसर की लड़ाई में मुगलों को बुरी पराजित किया।

चित्र 17.7 श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी

बंदा बहादुर

चित्र 17.8 बन्दा सिंह बहादुर

बंदा सिंह बहादुर का जन्म 27 अक्तूबर, 1670 ई. में जम्मू के पुंछ जिले के एक गांव राजौरी में हुआ। उसका आरम्भिक नाम **लछमण दास** था। 1780 ई. में नांदेड़ में उनकी गुरु गोबिन्द सिंह जी से भेंट हुई। गुरु जी ने बंदा सिंह बहादुर को पंजाब में जाकर सिक्खों की मदद से मुगलों के अत्याचारों का बदला लेने का आदेश दिया। बंदा बहादुर ने 1709 ई. में कैथल से अपनी विजयों की शुरूआत की। इसके पश्चात् उन्होंने समाणा, कपूरी तथा संढौरा पर विजय प्राप्त की। बंदा सिंह बहादुर ने श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के दो छोटे साहिबज़ादे जोरावर सिंह तथा फतेह सिंह की मृत्यु का बदला लेने के लिए नवाब

वज़ीर खाँ को पराजित किया तथा चप्पड़चिड़ी नामक स्थान पर मार दिया। इसके कुछ समय पश्चात् बंदा सिंह बहादुर ने सहारनपुर, बेहात, जलालाबाद, करनाल, पानीपत, अमृतसर, गुरुदासपुर, कलानौर तथा पठानकोट पर विजय प्राप्त की। उसने लौहगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। बंदा सिंह बहादुर ने पंजाब में सिक्ख राज्य की स्थापना की। 1715 ई. में मुगलों ने बंदा सिंह बहादुर तथा उसके साथियों को कैद में डाल दिया। उनको दिल्ली भेज दिया गया। बंदा सिंह बहादुर को कत्ल करने से पहले उसके तीन वर्ष के पुत्र अजय सिंह को उसके सामने कत्ल कर दिया। उसके पश्चात् बंदा सिंह बहादुर को कई तरह की यातनाएं देकर 9 जून, 1716 ई. को शहीद कर दिया।

अबदुस समन्द खां

फरूखसीयर ने 1716 ई. में अबदुस समद खां को पंजाब का सूबेदार नियुक्त किया। उसने अपने शासन काल में असंख्य सिक्खों का कत्ल कर दिया। इस कारण मुगल बादशाह फरूखसीयर ने उसको ''राज्य की तलवार'' का खिताब दिया।

जकरिया खां

1726 ई. में अबदुस समद खाँ के पुत्र जकरिया खां को पंजाब का सूबेदार नियुक्त किया। उसने सिक्खों का दमन करन के लिए कठोर नीति अपनाई। उसने असंख्या सिक्खों को मरवा दिया। उसने भाई मनीसिंह, महताब सिंह तथा भाई तारू सिंह को तथा हकीकत राय जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों को शहीद करवा दिया। परन्तु वह सिक्खों का दमन करने में सफल न हो सका।

याहिया खां

1745 ई. में जकरीयां खां का पुत्र याहिया खां पंजाब का सूबेदार बना। उसने सिक्खों का दमन करने के लिए कठोर नीति अपनाई। याहियां खां ने काहनूवाल (गुरदासपुर) में सिक्खों पर अचानक आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण दौरान 7000 सिक्ख मारे गए तथा 3000 को कैद डाल दिया। इस घटना को छोटा घल्लूघारा कहा जाता है।

मीर मन्नू

1748 ई. में मीर मन्नू पंजाब का नया सूबेदार नियुक्त हुआ। उसने बहु संख्या में सिक्खों का कत्ल करवा दिया। परन्तु मीर मनू सिक्खों की तरफ पूरा ध्यान न दे सका। इस करके सिक्खों ने अपनी शक्ति को अधिक संगठित किया।

अहमद शाह अब्दाली

अहमद शाह अब्दाली अफगानिस्तान का शासक था। उसने पंजाब पर आठ बार आक्रमण किया। इन आक्रमणों के कारण सिक्खों को आपस में संगठित होने के लिए सुनहरी मौका प्रदान हुआ। 1765 ई. में सिक्खों ने लाहौर पर कब्जा कर लिया तथा अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। लेकिन उनका कोई नेता नहीं था। इस कारण उन्होंने अपने आप को जत्थों (समूह) में संगठित किया। इन जत्थों को मिसलें कहा जाता था, जिनकी संख्या 12 थी। 18वीं शताब्दी के अन्त में शुकरचकिया मिसल के सरदार रणजीत सिंह ने सभी मिसलों को एकत्रित करके पंजाब में स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की।

चित्र 17.9 : महाराजा रणजीत सिंह

याद रखने योग्य तथ्य

1. 18वीं सदी में भारत में बंगाल, अवध, हैदराबाद, मैसूर, मराठा, सिक्ख राज्य आदि नए राज्यों की स्थापना हुई।
2. 18वीं सदी में बंगाल मुगलों के शासन काल से स्वतन्त्र होने वाला पहला राज्य था।
3. निज़ाम-उल-मुल्क ने आसफ़जाह की उपाधि धारण की।
4. हैदरअली 1761 ई. में मैसूर का शासन बना।
5. टीपू सुल्तान को मैसूर का टाइगर कहा जाता था।
6. शिवाजी मराठा ने छत्रपति की उपाधि धारण की।
7. राजपूत शासक सवाई राजा जय सिंह ने जयपुर को गुलाबी शहर बनाया।

8. श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने 1699 ई० में खालसा पंथ की स्थापना की थी?

9. बंदा सिंह बहादुर का बचपन का (प्राथमिक) नाम लक्षमण दास था।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. 18वीं शताब्दी में स्थापित हुई किन्हीं चार प्रादेशिक शक्तियों के नाम लिखें।
2. 18वीं शताब्दी में अवध के उत्थान का संक्षेप में वर्णन करो।
3. 18वीं शताब्दी में सिक्ख किस प्रकार शक्तिशाली बने?
4. हैदर अली तथा टीपू सुल्तान ने मैसूर को किस प्रकार एक शक्तिशाली राज्य बनाया?
5. शिवाजी ने मराठा साम्राज्य की स्थापना करने में क्या योगदान दिया?

(ख) रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें :-

1. मुहम्मद शाह ने .... तक राज्य किया।
2. मुर्शिद कुली खाँ .... था।
3. हैदरअली .... का शासक था।
4. सआदत खां .... ई. में अवध का सूबेदार बना।
5. शिवाजी .... साम्राज्य का संस्थापक था।
6. गोकुल .... का नेता था।
7. बंदा बहादुर का वास्तविक नाम .... था।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक कथन के सामने ठीक (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाएं :-

1. फरूखसीयर दिल्ली का शासक बना। ☐
2. मुर्शिद कुली खां अवध का सूबेदार था। ☐
3. निजाम-उल-मुल्क हैदराबाद रियासत का संस्थापक था। ☐

4. राजा राम शिवाजी का उत्तराधिकारी बना। ☐

5. 1740 ई. में बालाजी राव तीसरा पेशवा बना। ☐

6. बदन सिंह गोकुल का उत्तराधिकारी था। ☐

7. बंदा सिंह बहादुर ने पंजाब में सिक्ख राज्य की स्थापना की। ☐

(घ) निम्नलिखित के ठीक जोड़े बनाएं :-

कालम क		कालम ख	
(1)	बहादुर शाह की	(क)	1739 ई. में मृत्यु हो गई।
(2)	शुजाउद्दीन की	(ख)	20 अप्रैल, 1627 ई. में हुआ।
(3)	हैदरअली की	(ग)	1712 ई. में मृत्यु हो गई।
(4)	टीपू सुल्तान को	(घ)	मैसूर का टाइगर कहा जाता था।
(5)	शिवाजी का जन्म	(ङ)	1782 ई. में मृत्यु हो गई।
(6)	श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने	(ञ)	27 अक्तूबर, 1670 ई. को हुआ।
(7)	बंदा बहादुर का जन्म	(च)	खालसा पंथ की स्थापना 1699 ई. में की।

क्रिया-कलाप

भारत के मानचित्र के प्रारूप पर 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य दौरान स्वतन्त्र हुआ राज्य दर्शाएं।

यूनिट-3 नागरिक शास्त्र

लोकतंत्र तथा समानता

इकाई 3

लोकतंत्र तथा समानता

लोकतन्त्र और समानता की इकाई में लोकतांत्रिक समाज की सामाजिक और राजनीतिक जीवन की मूल धारणाओं पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई में लोकतन्त्र प्रणाली के परिवर्तित होते हुए स्वरूप और मानव के दैनिक जीवन में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पक्षों की आत्मनिर्भरता के प्रभाव के बारे में बताया गया है। लोकतांत्रिक संस्थाओं और आदर्शों की वास्तविक कारगुज़ारी के बारे में भी आवश्यक ज्ञान दिया गया है।

विद्यार्थी को लोकतांत्रिक राज्य और नागरिक के परस्पर सम्बन्धों को समझाते हुए भिन्न-भिन्न संगठनों और संस्थाओं जैसे कि सरकार, नौकरशाही और मीडिया से परिचय करवाया गया है। सामाजिक और आर्थिक जीवन में लिंग समानता की भूमिका को समझाते हुए समाज में औरत की भूमिका को उभारने सम्बन्धी ज्ञान दिया गया है।

इसी प्रकार लोकतांत्रिक राज्य में आर्थिक विकास के लिए निकट स्थित बाज़ारों की भूमिका-विशेष रूप से थोक और परचून में बाज़ार की कारगुज़ारी के बारे में अध्ययन करने का सुझाव दिया गया है।

पाठ्य-पुस्तक के इस भाग में दी गई धारणाओं के द्वारा विद्यार्थियों का ऐसा मानसिक विकास होगा जिससे वे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पक्षों की समानता और निर्भरता, प्रतिनिधि सरकार, लिंग समानता, विज्ञापन तथा मण्डीकरण आदि के महत्त्व को समझते हुए देश के जिम्मेवार और चेतन नागरिक बनेंगे।

लोकतंत्र तथा समानता

भारत एक लोकतंत्रीय गणराज्य है। लोकतंत्र, सरकार की एक प्रकार है। यदि लोकतंत्रीय सरकार वाले राज्य का प्रधान चुना गया हो तो उसे गणतंत्र राज्य कहा जाता है। भारत राज्य का प्रधान, राष्ट्रपति चुना हुआ होता है। इसलिए हमारे देश की सरकार को लोकतंत्रीय गणराज्य कहा जाता है। लोकतंत्रीय देश में देश का शासन चलाने की शक्ति सभी लोगों के पास होती है। शासन चलाने में सभी लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप भाग लेने का अधिकार है, चाहे वे भाग लें या न लें। जब वे अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजते हैं तब वे अप्रत्यक्ष रूप में भाग लेते हैं तथा जब उनके चुने हुए प्रतिनिधि सरकार की नीतियां बनाते हैं तब वे प्रतिनिधि प्रत्यक्ष रूप में हिस्सा लेते हैं। लोकतंत्र में सरकार की नीतियों का निर्णय लोगों की इच्छा के अनुरूप किया जाता है। इसलिए ही चुनाव तथा लोकमत (लोगों की इच्छा) लोकतंत्र की महत्वपूर्ण संस्थाएँ हैं।

लोकतंत्रीय देश में लोग चुनाव द्वारा अपने प्रतिनिधि चुनकर सरकार बनाते हैं तथा इस पर नियन्त्रण करते हैं। कार्य ठीक न करने की स्थिति में ऐसी सरकार को अगले चुनाव में बदला जा सकता है। लोकतंत्रीय सरकार वाले देश में देश के प्रधान दो प्रकार के होते हैं–नाममात्र प्रधान तथा वास्तविक प्रधान। हमारे देश की केन्द्रीय सरकार का नाममात्र प्रधान राष्ट्रपति है तथा राज्य सरकारों के नाममात्र प्रधान राज्यपाल होते हैं। जबकि केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के वास्तविक प्रधान प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री होते हैं।

कुछ लोकतंत्रीय राज्यों के प्रधान लोगों द्वारा नहीं चुने जाते, उनका पद पारम्परिक होता है। ऐसे देश के प्रधान राजा या रानी होते हैं, जैसे कि इंग्लैंड में हैं। ऐसे लोकतंत्रीय देशों को राजतंत्रीय लोकराज कहा जाता है।

लोकतंत्र का अर्थ

लोकतंत्र राज्य में, लोगों की अपनी सरकार होती है। भाव वहाँ का शासन लोगों की इच्छा के अनुसार चलाया जाता है। कानूनी तौर पर भी शासन चलाने की शक्ति लोगों के हाथ में होती है। लोकतंत्रीय देश में 'कानून राज्य' होता है। ऐसी सरकार लोगों द्वारा बनाई जाती है तथा लोग भलाई के लिए ही काम करती है। इब्राहिम लिंकन के शब्दों में लोकतंत्रीय सरकार 'लोगों

की, लोगों के लिए, लोगों के द्वारा, होती है। आधुनिक समय में जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण सभी लोग भाग नहीं ले सकते। इसलिए देश के सभी बालिग/व्यस्क मतदाता वोट डालकर अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। वही प्रतिनिधि, केन्द्रीय तथा प्रान्तीय स्तर पर कानून बनाने तथा उनको लागू करने का काम करते हैं।

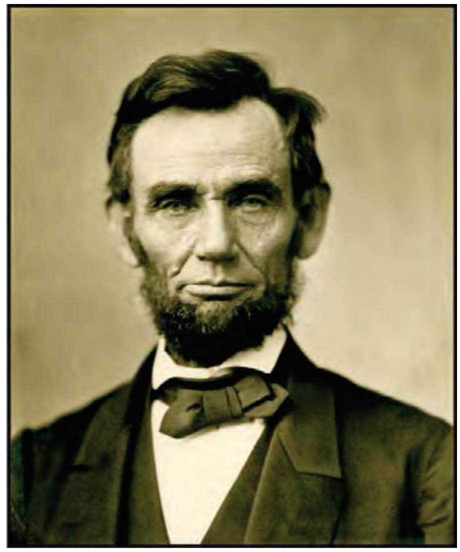

चित्र 18.1 इब्राहिम लिंकन

लोकतंत्र का आरम्भ

लोकतंत्र का आरम्भ यूनान के शहर एथेंस (Athens) में हुआ। वहां लोकतंत्र लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पुराना है। कहा जाता है कि एथेंस शहर के लोग वर्ष में कई बार इकट्ठे होकर सभा करते थे। जहां लोगों द्वारा राज्य प्रबन्ध चलाने के निर्णय प्रत्यक्ष रूप में ही लिए जाते थे। ऐसी लोकतंत्रीय सरकार को प्रत्यक्ष लोकतंत्र कहा जाता है। उस समय लोगों की संख्या बहुत ही कम थी तथा सभी एक स्थान पर इकट्ठे होकर निर्णय कर सकते थे जोकि अब संभव नहीं है। प्रत्यक्ष लोकतंत्र इसलिए भी संभव था क्योंकि उस समय के लोकतंत्रीय देशों में स्त्रियां, विदेशी तथा गुलाम बालिग भाग नहीं ले सकते थे।

आधुनिक लोकतंत्र की स्थापना पहले योरूप के देशों में हुई थी। सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड की शानदार क्रान्ति तथा अठारहवीं शताब्दी की फ्रांस की क्रान्ति के समय नए लोकतंत्र के सिद्धांतों का विकास हुआ, जिसके अनुसार सरकार लोगों द्वारा बनाए गए कानूनों के द्वारा चलाई जानी चाहिए। धीरे-धीरे प्रतिनिधियों के दायित्व के सिद्धांत का आगमन भी हुआ। जब यह अनुभव किया गया कि लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधि अपने कार्यों के लिए लोगों के प्रति उत्तरदायी होंगे। परन्तु तब तक प्रतिनिधियों के चुनाव में मतदान करने का अधिकार केवल धनी लोगों को ही प्राप्त था। धीरे-धीरे समय की आवश्यकता के अनुसार स्त्रियों को भी मतदान का अधिकार दे दिया गया। इसलिए लोकतंत्र का आरम्भिक सिद्धांत समानता तथा स्वतंत्रता है। जब वोट डालने का अर्थात् मतदान करने का अधिकार सभी बालिगों को मिल जाए तो उसे सर्वव्यापक मतदान, अधिकार कहा जाता है जो कि समानता के सिद्धांत के अनुसार आवश्यक है।

उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी में लोकतंत्री राज्यों में समानता के अधिकार ने आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र में जोर पकड़ा जो कि पहले केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित था। समय की आवश्यकता के अनुसार आर्थिक तथा सामाजिक समानता के अधिकार की मांग की जाने लगी। इस तरह धीरे-धीरे समय की आवश्यकता के अनुसार जिन लोकतंत्रीय सिद्धांतों का

विकास हुआ वे हैं–कानून का शासन, प्रतिनिधि सरकार, प्रतिनिधियों का लोगों के प्रति उत्तरदायित्व, व्यापक बालग मत अधिकार तथा राजनीतिक और आर्थिक समानता।

चित्र 18.2 लोकतंत्र प्रणाली की एक झलक

लोकतंत्र के विकास के समय प्रत्यक्ष लोकतंत्र से इसका स्वरूप प्रतिनिधित्व लोकतंत्र में परिवर्तित हो गया। शासन करने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि होती गई, जिससे किसी भी शहर या देश के सभी लोग एक स्थान पर बैठ कर देश के शासन सम्बन्धी कानून नहीं सकते थे। सर्वव्यापक मत अधिकार से वोट देने वाले लोगों की संख्या बढ़ती गई। इसलिए लोग चुनाव के द्वारा अपने प्रतिनिधि भेजते थे, जो कानून बनाते तथा उन्हें लागू करते थे। ऐसे लोकतंत्र को अप्रत्यक्ष लोकतंत्र कहा जाता है।

स्विटज़रलैंड ही ऐसा देश हैं जहां आज भी प्रत्यक्ष लोकतंत्र चल रहा है।

लोकतंत्रीय समाज में किसी भी आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाता। कानून की दृष्टि में धनी, निर्धन, पुरुष, स्त्री सब समान हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करने का अधिकार होता है। जाति–पाति या जन्म के आधार पर

किसी को अधिक, सुविधाएं प्राप्त नहीं होती। परंतु सरकार आर्थिक और सामाजिक तौर पर पछड़े लोगों के लिए विशेष विवस्थाएं कर सकती हैं। लोकतंत्रीय समाज में ऐसे भेदभावों के लिए कोई स्थान नहीं है क्योंकि सभी लोग समान हैं। यदि आर्थिक तथा सामाजिक आधार पर सभी पुरूष तथा स्त्रियां बराबर होंगे तभी वे राजनीतिक स्तर पर समान हो सकते हैं। इसलिए लोकतंत्र, सरकार की एक प्रकार नहीं बल्कि एक जीवन जांच है।

लोकतंत्रीय सरकार के भिन्न-भिन्न वर्गीकरण

प्रतिनिधित्व लोकतंत्रीय सरकार को आगे दो मुख्य प्रकारों में बाँटा जा सकता है:-

(क) *(i)* प्रधानात्मक सरकार *(ii)* संसदीय सरकार

(ख) *(i)* एकात्मक सरकार *(ii)* संघात्मक सरकार

लोकतंत्रीय सरकार की पहली प्रकार प्रधानात्मक तथा संसदीय सरकार कार्यपालिका तथा विधानपालिका के कम तथा अधिक प्रभावशाली होने पर निर्भर करती है और दूसरी प्रकार संसदीय सरकार में संसद अधिक शक्तिशाली होती है। राष्ट्रपति नाम मात्र का प्रधान होता है। जब कि सरकार की वास्तविक शक्ति प्रधानमंत्री के पास होती है। मंत्री परिषद के सभी सदस्य, संसद अर्थात् विधानपालिका में से लिए जाते हैं। इसलिए संसदीय सरकार में विधानपालिका तथा कार्यपालिका में आपसी सम्बन्ध होता है। इस तरह की सरकार इंग्लैंड और भारतवर्ष में कार्यरत है।

प्रधानात्मक सरकार में राष्ट्रपति लोगों द्वारा प्रत्यक्ष रूप में जाना जाता है। वह देश का नाम मात्र तथा वास्तविक शासक होता है। राष्ट्रपति तथा मंत्री एक ही राजनीतिक दल में से नहीं होते। ऐसी प्रधानात्मक लोकतंत्रीय सरकार अमरीका में है। वहां का राष्ट्रपति भारतीय राष्ट्रपति से अधिक शक्तिशाली होता है।

लोकतंत्रीय सरकार का एक और वर्गीकरण केन्द्रीय तथा राज्य सरकार में शक्तियों की बांट के आधार पर होता है। इस आधार पर लोकतंत्रीय सरकार संघात्मक तथा एकात्मक होती है। संघात्मक प्रकार की सरकार में संविधान लिखित तथा कठोर होता है। केन्द्र तथा राज्यों में शक्तियों बांटी जाती हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी सरकार होती है। भारत भी एक संघात्मक लोकतंत्रीय देश है। एकात्मक प्रकार के लोकतंत्र में राज्यों तथा केन्द्र में शक्तियों की बांट की जाती है। परन्तु राज्यों की तुलना में केन्द्र अधिक शक्तिशाली होता है। हमारे भारत का संविधान यद्यपि संघात्मक है, परन्तु किसी आन्तरिक तथा बाहरी संकट के समय केन्द्रीय सरकार की शक्तियाँ अधिक हो जाती हैं। ऐसे समय में देश का प्रबन्धकीय ढांचा एकात्मक हो जाता है।

लोकतन्त्र की सफलता के लिए जरूरी शर्तें

आधुनिक काल में लोकतंत्रीय सरकार को सबसे बढ़िया सरकार माना जाता है। परन्तु एक सफल लोकतंत्रीय राज्य में लोकतंत्रीय सरकार की सफलता के लिए कुछ निम्नलिखित शर्तें होना आवश्यक है।

1. बुद्धिमान नागरिक : लोकतंत्रीय सरकार का मूल आधार 'लोगों की इच्छा' है जिसके आधार पर सरकार चलाई जाती है। इसलिए लोगों का बुद्धिमान होना अत्यावश्यक है। इसका भाव बहुत पढ़े-लिखे होना नहीं बल्कि राजनीतिक-तौर पर परिपक्व होना है। ऐसे लोग ही अपने निष्ठावान प्रतिनिधियों को चुनकर देश की शासन प्रणाली को बढ़िया ढंग से चलाने में सहायता करते हैं तथा प्रतिनिधियों की कार्यवाही पर नियंत्रण कर सकते हैं।

2. समझदार तथा बुद्धिमान नेतागण : यदि सरकार समझदार पढ़े लिखे तथा सजग नेताओं द्वारा चलाई जायेगी तो सरकार योग्य होगी। बुद्धिमान मतदाता ही ऐसे समझदार तथा ईमानदार नेताओं का चुनाव कर सकते हैं, जो अपने देश के उत्तरदायित्व को उचित ढंग से निभा सकें।

3. अनुसशासनबद्ध नागरिक तथा सिद्धांतों पर आधारित राजनीतिक दल : लोकतंत्र में लोगों का शासन होने के कारण लोगों का अनुशासनबद्ध होना अत्यावश्यक है। तब ही वे सरकार के अनुचित कार्यों का विरोध करके उसे ठीक ढंग से कार्य करने के लिए विवश कर सकेंगे। लोगों में दूसरों के विचारों का सम्मान होना भी अनिवार्य है।

लोगों के राजनीतिक विचारों की भिन्नता के आधार पर राजनीतिक दलों का गठन होता है। लोकतंत्रीय राज्य में लोगों के प्रतिनिधि चुनाव के द्वारा चुने जाते हैं। चुनाव करने तथा करवाने के लिए राजनीतिक दल बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। राजनीतिक दल लोगों को सरकार के कार्यों के बारे में बता कर लोकमत बनाने में सहायक होते हैं। इसलिए राजनीतिक दलों का सजग तथा अनुशासित होना अनिवार्य है।

4. सामाजिक तथा आर्थिक समानता : समानता लोकतंत्र की महत्वपूर्ण विशेषता है। लोकतंत्रीय राज्य में यदि सभी नागरिक सामाजिक तथा आर्थिक आधार पर समान नहीं होंगे तो ऐसा देश सफल लोकतंत्रीय नहीं हो सकता। इसलिए समाज में लिंग, जाति-पाति, धर्म तथा भाषा के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

5. सहनशीलता : लोकतंत्रीय राज में बहुमत प्राप्त सत्ताधारी दल का शासन होता है। सत्ताधारी दल का उदार दिल होना अत्यावश्यक है। विरोधी दल को भी सत्ताधारी दल की कमियों तथा विवशताओं को सहनशीलता से विचारना चाहिए। क्योंकि सहनशीलता लोकतंत्र की सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

लोकतंत्रीय सरकार अत्याधिक प्रिय क्यों?

आज के युग में अधिकतर देशों में लोकतंत्रीय प्रकार की सरकार ही है। आधुनिक युग में मानवीय अधिकारों का महत्व बहुत बढ़ चुका है। लोकतंत्रीय सरकार के मुख्य सिद्धांत-कानून का शासन, मानवीय स्वतन्त्रता तथा समानता हैं। जिस देश में कानून का शासन होता है वहां

कानून की दृष्टि से सभी समान होते हैं। कानून, लोगों के प्रतिनिधियों के द्वारा, लोगों के लिए ही बनाए जाते हैं। इसलिए आधुनिक युग में लोकतंत्र को अत्यधिक प्रिय बनाने वाले तथ्य निम्नलिखित हैं:-

1. **औपचारिक समानता :** ऐसी सरकार वाले देश में अमीरी-गरीबी, धर्म तथा जाति के आधार पर लोगों के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता। कानून की दृष्टि में सभी समान होते हैं। इसलिए तानाशाही सरकार की तुलना में लोकतंत्रीय सरकार अधिक प्रिय होती है।

2. **स्वतन्त्रता :** लोकतंत्रीय राज्य में लोग सभी प्रकार से स्वतन्त्र होते हैं। उन्हें कोई भी कार्य अपनाने, अपने विचारों को अभिव्यक्त करने तथा देश के किसी भी क्षेत्र में निवास करने तथा कार्य करने के लिए स्वतन्त्रता होती है। जबकि तानाशाही राज्य में लोगों को लोगों को तानाशाही शासक के आदेश अनुसार चलना पड़ता है।

3. **निर्णय करने की कार्यविधि :** लोकतंत्रीय सरकार वाले देश में शासन प्रबन्ध चलाने के लिए निर्णय लेने का एक विशेष ढंग है, जो कि लोगों के हाथ में होता है। लोग अपने प्रतिनिधि चुन कर कानून बनाने वाली विधानपालिका (राजकीय स्तर) तथा संसद (केन्द्रीय स्तर) में भेजते हैं, जो देश का शासन चलाने के लिये कानून बनाते हैं। संसद तथा राज्य विधानपालिका में बहुमत प्राप्त दल की सरकार बनाई जाती है, जोकि लोगों की इच्छा के अनुरूप देश का शासन चलाती है। यदि कोई सरकार लोगों की इच्छा के अनुरूप कार्य न करे तो जनता द्वारा आगामी चुनावों में बदली जा सकती है।

4. **नागरिकों की सक्रिय भूमिका :** लोकतंत्र में सभी बालग मतदाता देश की किसी भी कानून बनाने वाली संस्था में चुनाव लड़ सकते हैं तथा चुनाव के समय अपनी इच्छा के अनुसार अपना मत देसकते हैं। देश के शासन में सभी बराबर के अधिकारी हैं, जबकि तानाशाही राज्यों में ऐसा नहीं होता। इसलिए आधुनिक समय में लोकतंत्रीय सरकार अत्यधिक प्रिय है।

5. **विचारों का अन्तर दूर करना :** लोकतंत्रीय देश में किसी पर भी अपनी सोच अथवा मत को थोपा नहीं जाता। प्रत्येक व्यक्ति के विचारों का सम्मान किया जाता है। जिस तरह सत्ताधारी दल विरोधी दल के सुझावों अथवा सरकार के कार्यों को उदारता से स्वीकार करता है। इसी तरह लोकतंत्र में विचारों के अन्तर को उदारतापूर्वक स्वीकार किया गया है। लोकतंत्र में स्वतन्त्रता तथा समानता का सम्मान करने से ही ऐसी सरतकार को अधिक पसन्द किया जाता है।

6. **मानवीय शान में वृद्धि करना :** स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व लोकतंत्रीय सरकार के मुख्य सिद्धांत हैं, जिनके आधार पर फ्रांस में लोकतंत्र का आरम्भ हुआ। लोकतंत्र में केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा समानता ही नहीं होती बल्कि आर्थिक समानता स्थापित करने के लिए

सरकार सभी देशवासियों को आजीविका प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करती है। इसलिए आर्थिक आधार पर निर्बल लोगों के लिए नौकरियों में कुछ प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया जाता है। इसलिए लोकतंत्रीय देश में मानवीय शान तथा गौरव में वृद्धि करने का प्रत्येक संभव प्रयत्न किया जाता है।

उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर शासन की बाकी प्रणालियों से लोकतंत्र प्रणाली सबसे ज़्यादा प्रचलित है।

याद रखने योग्य तथ्य

1. लोकतंत्र राज्य में लोगों की अपनी सरकार होती है। इब्राहिम लिंकन के शब्दों में लोकतंत्रीय सरकार लोगों की, लोगों के लिए, लोगों द्वारा होती है।
2. लोकतंत्र का आरम्भ यूनान के शहर एथेंस में हुआ।
3. लोकतंत्रीय देशों में देश के प्रधान दो प्रकार के होते हैं-नाममात्र का प्रधान तथा वास्तविक प्रधान। हमारे देश की केन्द्रीय सरकार का नाममात्र प्रधान राष्ट्रपति है तथा राज्य सरकारों के नाममात्र प्रधान राज्यपाल होते हैं। केन्द्रीय तथा राज्य सराकारों के वास्तविक मुखिया क्रमवार प्रधान मन्त्री और मुख्यमन्त्री होते हैं।
4. मतदान करने का अधिकार सभी बालिगों बिना किसी वितकरे के (व्यस्कों) को मिलता है और यह समानता के सिद्धांत के अनुसार आवश्यक है।
5. स्विटजरलैंड ही ऐसा देश है जहां आज भी प्रत्यक्ष लोकतंत्र चल रहा है।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. लोकतंत्रीय सरकार से क्या भाव है?
2. 'कानून के शासन' से आप क्या समझते हैं?
3. मताधिकार का लोकतंत्र में क्या महत्व है?
4. लोकतंत्र में लोकमत का क्या महत्व है?
5. कौन से देश में आज भी प्रत्यक्ष लोकतंत्र है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 50-60 शब्दों में लिखें।

1. लोकतंत्र के अस्तित्व में आने संबंधी संक्षेप नोट लिखें।
2. लोकतंत्र सबसे पहले किस देश में स्थापित हुआ?
3. लोकतंत्रीय सरकार के चार भिन्न-भिन्न स्वरूपों का नाम लिखें।
4. लोकतंत्रीय सरकार की कोई दो विशेषताएँ लिखें।
5. सामाजिक तथा आर्थिक समानता से आप क्या समझते हैं?
6. आधुनिक युग में लोकतंत्रीय सरकार अत्यधिक प्रिय क्यों हैं?

(ग) रिक्त स्थान भरें :-

1. भारत में देश का मुख्यि (राष्ट्रपति) निश्चत समय के लिए चुना जाता है, इसलिए भारत एक .... है।
2. हमारे देश की केन्द्रीय सरकार का नाममात्र का प्रधान .... है और राज्य सरकारों के मुख्य .... होते हैं।
3. लोकतंत्र का आरम्भ .... के शहर .... में हुआ।
4. .... ही ऐसा देश है जहां आज भी प्रत्यक्ष लोकतंत्र है।
5. लोकतंत्र का आरम्भिक सिद्धांत .... तथा .... है।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में ठीक (✓) या गलत (✗) का निशान लगाओ :-

1. भारत एक लोकतंत्रीय गणराज्य है। ☐
2. स्विटजरलैंड ही ऐसा देश है जहाँ आज भी प्रत्यक्ष लोकतंत्र चल रहा है। ☐
3. हमारे देश में वोट डालने का अधिकार केवल कुछ बालिगों (व्यस्कों) को ही प्राप्त है। ☐
4. लोकतंत्रीय देश में कानून का राज्य होता है। ☐
5. आधुनिक लोकतंत्र की स्थापना पहले फ्रांस देश में हुई थी। ☐

(ङ) बहु-वैकल्पिक प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर निशान लगायें :

1. **लोकतांत्रिक सरकार लोगों की, लोगों के लिए तथा लोगों के द्वारा-यह कथन है**

   (1) इब्राहिम लिंकन (2) लास्की (3) डेविड ईस्टन

2. **आधुनिक युग में किस सरकार को सर्वोत्तम माना जाता है?**

   (1) तानाशाही सरकार (2) लोकतांत्रिक सरकार (3) सैनिक शासन

3. **संस्दीय लोकतांत्रिक सरकार वाले देशों में देश के मुखिया कितनी तरह के होते है?**

   (1) चार (2) पाँच (3) दो

क्रिया-कलाप

1. लोकतंत्रीय सरकार वाले दस देशों की सूची तैयार करें।
2. भारतीय लोकतंत्र की कार्यकुशलता के सम्बन्ध में अपने अध्यापक के साथ विचार विमर्श करें।

पाठ 19

लोकतंत्र-प्रतिनिधित्व संस्थाएँ

आधुनिक युग में अधिकतर देशों में लोकतंत्रीय सरकार है। तुम जानते हो कि लोकतंत्रीय सरकार लोगों की, लोगों के लिए तथा लोगों के द्वारा होती है। परन्तु प्राचीन समय की तरह अब लोकतंत्रीय सरकार प्रत्यक्ष प्रकार की नहीं है। प्रत्यक्ष लोकतंत्र में लोगएक स्थान पर एकत्र होकर अपना शासन प्रबन्ध अप्रत्यक्ष ढंगे से भाव अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा चलाते हैं। ऐसे लोकतन्त्र को प्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधि लोकतंत्र कहा जाता है। इन प्रतिनिधियों का चुनाव बड़े सुलझे हुए ढंग से किया जाता है। लोगों द्वारा चुने गए ये प्रतिनिधि ही कानून बनाते तथा कानून को कार्यपालिका द्वारा लागू करवाते हैं। ऐसी प्रणाली में लोकतंत्रीय चुनाव तथा प्रतिनिधित्व का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। हमारे देश में प्रतिनिधि लोकतंत्र है। इसलिए प्रतिनिधित्व भारतीय सरकार की कारगुजारी का आवश्यक अंग है।

प्रतिनिधिता का अभिन्न अंग हैं चुनाव। भारत में चुनाव प्रक्रिया के लिए एक स्वतन्त्र संस्था चुनाव कमीशन बनाई गई है जो स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष चुनाव करवाती है। इसका प्रधान चुनाव-उपायुक्त (कमिश्नर) होता है जो कि भारतीय राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है। वह चुनाव-उपायुक्त देश में प्रत्येक स्तर पर केन्द्रीय-संसद, राज्य विधान-सभाएँ, स्थानीय-नगरपालिकाओं, पंचायत समीति तथा निगमों के चुनाव करवाने के लिए उत्तरदायी होता है। इन चुनावों का एक और अभिन्न अंग देश के राजनीतिक दल होते हैं जो लोगों की भिन्न-भिन्न प्रकार की विचारधारा को अभिव्यक्त करते हैं। यह राजनीतिक दल ही चुनावों के लिए प्रत्याशी नामांकित करते तथा प्रतिनिधियों की चुनाव लड़ने में सहायता करते हैं।

अब हम लोकतंत्र से सम्बन्धित महत्वपूर्ण संस्थाओं का अध्ययन करेंगे जिनका लोकतंत्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है अर्थात् जिनके बिना लोकतंत्र संभव नहीं है।

(क) सर्वव्यापक वयस्क मताधिकार

लोकतंत्रीय शासन प्रणाली का मूल आधार वयस्क मताधिकार ही है। मतदान द्वारा अपनी इच्छा को अभिव्यक्त करने के अधिकार को ही मताधिकार कहा जाता है। जब देश में प्रत्येक वयस्क को मतदान करने का अधिकार हो तो इसे सर्वव्यापक वयस्क मताधिकार कहा जाता है।

आधुनिक लोकतंत्रीय राज्यों में मतदान का यह अधिकार बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक वयस्क नागरिक को दिया जाता है। किसी भी नागरिक के साथ धर्म, जाति, लिंग सम्पत्ति अथवा

शैक्षिक योग्यता के आधार पर मतदान अधिकार देने के लिए कोई भेदभाव नहीं किया जाता। भारत राज्य में इस समय वयस्क नागरिक की आयु 18 वर्ष है जबकि कुछ समय पहले मतदान करने वाले की आयु 21 वर्ष होती थी।

इस तरह देश के सभी वयस्क नागरिकों को मत देने का बराबर का अधिकार है। केवल 18 वर्ष से छोटी आयु के बच्चों, मन्दबुद्धि तथा अभियुक्त घोषित किये गए नागरिक को मतदान करने का अधिकार नहीं दिया गया।

चित्र 19.1 मतदान करती हुई स्त्री

सर्वव्यापक मताधिकार का एक महत्वपूर्ण नियम एक व्यक्ति-एक मत, नागरिकों की समानता पर आधारित है। क्योंकि लोकतंत्रीय राज्य में पुरुष, स्त्री, निर्धन, अशिक्षित तथा शिक्षित को समान माना जाता है। इस तरह समानता का सिद्धांत हमारे सर्वव्यापक वयस्क मताधिकार में पूरी तरह अपनाया गया है।

सर्वव्यापक वयस्क मताधिकार निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है:-

(i) राजनीतिक समानता

(ii) लोकतंत्रीय सरकार

(iii) सरकार का लोगों के प्रति उत्तरदायी होना

(ख) चुनाव

लोकतंत्रीय राज्य में सरकार लोगों के प्रतिनिधियों की होती है। चुनावों के द्वारा लोग अपने प्रतिनिधियों का चयन करते हैं, जो सरकार का गठन करते हैं। आधुनिक लोकतंत्र में

चुनाव अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि *(i)* सभी नागरिक इकट्ठे शासन प्रबन्ध नहीं चला सकते इसलिए प्रतिनिधियों का चयन करना पड़ता है। *(ii)* चुनाव के द्वारा लोग सरकार को बदल सकते हैं। *(iii)* चुनाव के द्वारा ही कार्यपालिका पर नियंत्रण किया जा सकता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि चुनाव के बिना लोकतंत्र संभव नहीं है।

लोकतंत्रीय सरकार वाले देश में चुनाव कई प्रकार के होते हैं। सामान्य तथा मध्यकालीन चुनाव। जब सारे दश में राज्य विधानसभा तथा लोकसभा का चुनाव निश्चित कार्यकाल (5 वर्ष) पूरा होने के पश्चात होती है उसे सामान्य चुनाव कहा जाता है। भारत में राज्यों की विधान सभाओं तथा लोकसभा के चुनाव पांच वर्ष के पश्चात् करवाए जाते हैं। कई बार प्रधानमंत्री के परामर्श द्वारा राष्ट्रपति लोकसभा को पांच वर्ष से पहले भंग कर देता है तो ऐसी स्थिति में करवाए जाने वाले चुनाव को मध्यकालीन चुनाव कहा जाता है। अब तक 16 सामान्य चुनाव आयोजित हो चुके हैं।

गुप्त मतदान

गुप्त मतदान लोकतंत्रीय चुनावों का महत्वपूर्ण आधार है। लोग अपने प्रतिनिधि का चयन करते समय किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं चाहते। कोई भी मतदाता नहीं चाहता कि किसी को पता चले कि उसने किस प्रतिनिधि के क्षण में मतदान किया है। इसलिए स्वतन्त्र तथा उचित चुनाव के लिए गुप्त मतदान का प्रबन्ध किया जाता है। भारत में प्रत्येक मतदाता का एक मत होता है। जब कोई मतदाता अपना मत देता है तो उसे किसी को भी यह बताने की आवश्यकता नहीं होती कि वह अपना वोट किस प्रत्याशी को दे रहा है। इसे ही गुप्त मतदान कहा जाता है। गुप्त मतदान द्वारा बिना किसी मन्द भावना तथा नकारात्मक सोच से सरकार में अपेक्षित परिवर्तन किया जा सकता है।

चुनाव के समय प्रत्येक चुनाव क्षेत्र से प्रत्याशी का चयन करने के लिए चुनाव बूथ बनाए जाते हैं जहां एक निर्वाचन अधिकारी के अधीन सारी कार्यवाही की जाती है। बालिग नागरिकों के नाम मतदाता सूची में दर्ज होते हैं। वे अपनी बारी के अनुसार बूथ पर जाकर अपना मतदान करने के लिए पहचान पत्र, दिखाकर अपनी ऊँगली पर निशान लगवाकर अपनी पसन्द के प्रत्याशी के नाम के सामने मोहर लगा कर मतदान डिब्बे में अपनी मतदान पर्ची डाल देते हैं। मतदान डिब्बे में मतदान पर्ची डालते समय किसी को भी पता नहीं चलता। मतदान की इसी प्रक्रिया को गुप्त मतदान कहा जाता है।

चुनाव प्रक्रिया

प्रत्येक देश की चुनाव प्रक्रिया का अपना ही ढंग होता है। भारत में भी चुनाव प्रक्रिया का विशेष ढंग है जो कि निम्न अनुसार है:–

1. **चुनाव की तिथि की घोषणा :** सामान्य चुनाव के समय देश के राष्ट्रपति अथवा राज्यों के राज्यपाल लोगों के लिए चुनाव की घोषणा करते हैं, जिस आदेश के अनुसार चुनाव आयुक्त चुनाव की तिथि की घोषणा करते हैं।

2. **प्रत्याशियों का चुनाव :** कानूनी आधार पर 25 वर्ष से अधिक आयु वाला कोई भी नागरिक (मतदाता) चुनाव लड़ सकता है लेकिन उसका नाम वोटर सुच्ची में अवश्य दर्ज होना चाहिए। भिन्न-भिन्न राजनीतिक दल उन प्रत्याशियों को नामांकित करते हैं जो उनके हिसाब से किसी क्षेत्र में चुनाव जीत सकते हैं। कई बार कुछ राजनीतिक दल स्वतन्त्र प्रत्याशियों की भी सहायता करते हैं।

3. **नामांकन पत्र भरना, छानबीन करना तथा नामांकन पत्र वापिस लेना :** राजनीतिक दलों द्वारा चयनित सदस्य अपने नामांकन पत्र भरते हैं। निर्वाचन अधिकारी नामांकन पत्र पड़ताल करने के पश्चात् उन्हें स्वीकृत या अस्वीकृत करता है। स्वीकृत हुए नामांकन पत्रों वाले प्रत्याशी फिर भी सोच कर अपना नाम वापिस ले सकते हैं। जिसके पश्चात चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की अन्तिम सूची तैयार की जाती है, जिसके आधार पर मतदान पत्र तथा प्रत्याशियों के चुनाव चिन्ह प्रकाशित किये जाते हैं।

4. **चुनाव चिन्ह :** राष्ट्रीय दलों के चुनाव चिन्ह स्थायी होते हैं। अन्य प्रत्याशियों को चुनाव चिन्ह प्रदान किये जाते हैं, जिसके आधार पर मतदाता उनके चुनाव चिन्ह पर मोहर लगा कर अपना मत डालते हैं। इन चुनाव चिन्हों की आवश्यकता अशिक्षित लोगों के लिए अनिवार्य है।

5. **चुनाव मनोरथ पत्र :** प्रत्येक राजनीतिक दल अपने प्रत्याशियों के लिए चुनाव मनोरथ पत्र जारी करते हैं जिनमें वे जीत प्राप्त करने के पश्चात् मतदाताओं से किए जाने वाले कुछ वायदों तथा किए जाने वाले कार्यों का विवरण देते हैं जिन्हें पढ़कर मतदाताओं को राजनीतिक दलों के कार्यक्रमों तथा जीत प्राप्त करने के पश्चात् उनके द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियों का भी ज्ञान होता है।

6. **चुनाव अभियान :** चुनाव अभियान के भिन्न-भिन्न ढंग जैसे कि पोस्टर लगाना, सभाएं करना, घर-घर जाकर लोगों को मत देने के लिए कहना इत्यादि हैं। प्रचार करने वाली सारी कार्यवाही को चुनाव अभियान कहा जाता है। मतदान होने से 48 घंटे पहले ऐसा प्रचार बन्द करना अनिवार्य है।

7. **मतों की गिनती तथा परिणाम :** प्रत्येक्ष क्षेत्र में मतदान होने के पश्चात् मतों वाले डिब्बे कुछ चुनाव केन्द्रों पर इकट्ठे कर लिये जाते हैं। सारे देश अथवा राज्य में जिस दिन मतदान का कार्य हो जाता है, इसके पश्चात् राजनीतिक दलों के प्रतिनिथियों के समक्ष मतों की गिनती करके सामान्य बहुमत अर्थात दूसरों के मुकाबले ज्यादा मत प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को विजयी घोषित कर दिया जाता है।

प्रत्येक लोकसभा के सदस्य भाव एम.पी. अथवा राज्य की विधान सभा के विधायक इसी ढंग से चयनित होते हैं। चुनाव के समय एक-एक जनपद अधिकारी प्रत्येक चुनाव केन्द्र का निर्वाचन अधिकारी बनाया जाता है। जिसकी देखरेख में ही चुनाव क्षेत्र की चुनाव की सारी कार्यवाही की जाती है?

(ग) राजनीतिक दल

लोगों का ऐसा समूह जिनकी देश के राजनीतिक मामलों के सम्बनध में एक जैसी राय तथा विचारधारा हो, को राजनीतिक दल कहा जाता है। किसी भी मनुष्य को किसी राजनीतिक दल में दाखिल होने के लिए विवश नहीं किया जा सकता, दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि राजनीतिक दल एक ऐसे समूह को कहा जाता है जिसका उद्देश्य लोकतंत्रीय प्रक्रिया द्वारा राजनीतिक शक्ति ग्रहण करना है। राजनीतिक शक्ति से हमारा भाव है राज्य पर शासन करने की शक्ति। थोड़े शब्दों में राजनीतिक दल ऐसे लोगों का समूह होता है जो एक जैसे विचार होने के कारण अपनी इच्छा से इकट्ठे होते हैं। जिनके सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मामलों के सम्बन्ध में विचार सामान्यतः एक दूसरे से मिलते होते हैं। ऐसे राजनीतिक समूह कुछ संगठित नियमों पर आधारित होते हैं। परन्तु सभी राजनीतिक दलों से राष्ट्रीय हितों के विकास की अपेक्षा की जाती है।

राजनीतिक दलों का लोकतंत्र में बहुत महत्व है। अधिकतर लोगों का विचार है कि लोकतंत्र, राजनीतिक दलों के बिना संभव नहीं है। लोकतंत्र में प्रत्येक दल अपनी सरकार बनाने का प्रयास करता है। राजनीतिक दल जनता के समक्ष अपने कार्यक्रम तथा नीतियां रखते हैं। सत्ताधारी दल अपने कार्यक्रमों तथा नीतियों के पक्ष की बात करता है। परन्तु विरोधी दल उसके कार्यों की आलोचना करता है। इस तरह लोकतंत्र में विरोधी दल का महत्व भी सत्ताधारी दल जितना ही है।

राजनीतिक दलों के कार्य : राजनीतिक दलों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य चुनाव लड़ना है। जिनका उद्देश्य शासन शक्ति प्राप्त करना तथा संभालना है। चुनाव लड़ने के लिए वे दल अपने प्रत्याशियों का चयन करते हैं। इसके इलावा राजनीतिक दल लोगों को राष्ट्रीय मामलों सम्बन्धी तथा सरकार की भूमिका सम्बन्धी शिक्षा देते हैं। प्रत्येक दल लोगों को यह विश्वास दिलवाने का प्रयास करता है कि उसकी नीतियाँ सबसे उत्तम हैं, जिससे लोकमत या लोकराय बनती है। जो दल जीत जाता है वह सरकार चलाने का दायित्व निभाता है तथा अपने कार्यों के लिए लोगों के प्रति उत्तरदायी होता है। जो राजनीतिक दल चुनाव हार जाते हैं वे विरोधी दल बन जाते हैं तथा सरकार की नीतियों की आलोचना करते तथा उनको सुझाव देते हैं। कहा जाता है कि विरोधी दल लोकतंत्र में लोगों के हितों की रक्षा करने वाला होता है।

प्रत्येक देश में एक दलीय, दो दलीय तथा बहुदलीय प्रणाली होती है। जैसे कि इंग्लैंड तथा अमरीका में दो दलीय तथा भारत में बहुदलीय प्रणाली है।

भारत में राजनीतिक दल

भारत में राजनीतिक दल दो स्तरीय होते हैं-राष्ट्रीय दल तथा क्षेत्रीय दल। राष्ट्रीय-राजनीतिक दल जैसे कि कांग्रेस दल, भारतीय जनता दल तथा कम्युनिस्ट दल ऐसे दल हैं जो सारे भारत में कार्य करते हैं। यदि कोई दल चार या पाँच राज्यों में विद्यमान हो तो चुनाव आयुक्त उसे राष्ट्रीय दल घोषित कर देता है। जिन दलों का प्रभाव एक दो राज्यों तक सीमित होता है उसे क्षेत्रीय दल कहा जाता है। जैसे कि पंजाब का अकाली दल है।

राष्ट्रीय दल			
पार्टी चिह्न	राष्ट्रीय दल	पार्टी चिन्ह	राष्ट्रीय दल
	इंडियन नैशनल कांग्रेस		भारतीय जनता पार्टी
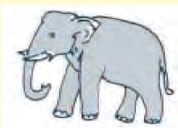	बहुजन समाज पार्टी		भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
पंजाब क्षेत्रीय दल			
पार्टी चिह्न		क्षेत्रीय दल	
		शिरोमणि अकाली दल	

चित्र 19.2 चुनाव चिन्ह राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय दल चुनाव चिन्ह

इंडियन नैशनल कांग्रेस

इंडियन नैशनल कांग्रेस भारत का सबसे पुराना राष्ट्रीय दल है। इसकी स्थापना 1885 में हुई थी। भारत की स्वतन्त्रता के संघर्ष में इसका बड़ा योगदान है। इस समय इसकी प्रधान श्रीमती सोनिया गाँधी है। 1947 के पश्चात् भी इस दल की सरकार केन्द्र में बनती रही है।

इस दल के चुनाव मनोरथ पत्र में दिये गए मुख्य कार्यक्रम तथा नीतियाँ निम्नलिखित अनुसार हैं:-

1. सबसे महत्वपूर्ण नीति अमीरी तथा गरीबी में अन्तर कम करने की है। यह दल लोकतंत्रीय समाजवाद का इच्छुक है।

2. धर्म के आधार पर कोई भेदभाव न हो तथा सभी धर्मों का बराबर सम्मान होना चाहिए।
3. कृषि पर आधारित कारखानों के विकास तथा कृषि के विकास के लिए सिंचाई के साधनों में सुधार करना।
4. गांवों के स्तर पर रोज़गार के अवसर उत्पन्न करके निर्धनता को कम करना।
5. विदेशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध उत्पन्न करना तथा शान्तिपूर्ण ढंग से मतभेद दूर करना।
6. भारत की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए विदेशी व्यापार में वृद्धि करना इत्यादि।

शिरोमणि अकाली दल-पंजाब

शिरोमणि अकाली दल की स्थापना 1920 में हुई थी। आरम्भ में इसका उद्देश्य पवित्र गुरू स्थानों भाव गुरूद्वारों को महन्तों के नियंत्रण से छुडवाना तथा उनकी पवित्रता को बनाकर रखना था। आज़ादी के पश्चात् अकाली दल ने पंजाब और पड़ोसी राज्यों की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह दल पंजाब के लोगों के हितों की रखवाली करता है। शिरोमणि अकाली दल तथा भारतीय जनता पार्टी ने मिलकर केंद्र तथा राज्य के आपसी सम्बन्धों को भिन्न रूप देकर एक नया पाठ शुरू किया।

इस दल के मुख्य उद्देश्य गुरमति रहत मर्यादा का प्रचार करना। गुरुद्वारों के प्रबंध में सुधार करना। न्यायकर, आर्थिक प्रबंध करना। गुरमत के विश्वास अनुसार अनपढ़ता और जात-पात के भेद को दूर करना है

विरोधी दल की भूमिका

भारतीय संसद या राज्य विधानपालिका में सभी संसदीय या विधायक एक दल के नहीं होते। सत्ताधारी दल के बिना विरोधी दलों के प्रतिनिधि सरकार की नीतियों का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सत्ताधारी दल के बिना जिस दल के सदस्य कानून बनाने वाली संस्थाओं में सबसे अधिक होते हैं, उसे सरकारी तौर पर विरोधी दल माना जाता है। विरोधी दल सत्ताधारी दल जितना ही महत्वपूर्ण होता है। कहा जाता है कि यदि लोकतंत्र में विरोधी दल को शान्ति तथा लोकतंत्रीय ढंग से कार्य करने दिया जाए तो लोकतंत्र सुदृढ़ होता है, क्योंकि विरोधी दल सत्ताधारी दल की कमियों तथा बुराईयों के सम्बन्ध में सचेत करता है। विरोधी दल, संसद मे सरकार की आलोचना ही नहीं करता बल्कि उचित लोकराय भी बनाता है। इसकी आलोचना के बिना सरकार दायित्व हीन तथा तानाशाह बन सकती है। इसलिए विरोधी दल नए चुनाव होने तक सरकार को मनमानी करने से रोकता तथा सरकार पर निरन्तर नियन्त्रण रखता है। इस तरह

विरोधी दल नागरिकों के अधिकारों को सरकार द्वारा हानि नहीं पहुँचने देता।

गठबंधन सरकार

जब कई बार सामान्य चुनाव के समय सबसे अधिक सीटें प्राप्त करने वाले दल को सरकार का गठन करने के लिए अपेक्षित बहुमत प्राप्त न हो तो उस दल को अन्य राजनीतिक दलों की सहायता तथा सहयोग की जरूरत पड़ती है। कई दलों के प्रतिनिधियों से बनाई गई सरकार को संयुक्त सरकार कहा जाता है। भारत में ऐसी सरकार छठे चुनाव के समय 1977 में बनाई गई थी। 1999 से 2004 तक भी दलों की गठबंधन वाली सरकार बनाई गई। इसी तरह चौदहवीं व पन्द्रहवीं संसद के चुनाव में बाद भी गठबंधन वाली सरकार बनाई गई जो कि कांग्रेस की अगवाई वाले संयुक्त प्रगतिशील मोर्चे की सरकार बनी और 16वीं लोकसभा में भाजपा की अगवाई वाले राष्ट्रीय लोकतन्त्रीय गठबंधन वाली सरकार बनी। संयुक्त सरकार में भिन्न-भिन्न दलों के विजयी प्रत्याशियों को मन्त्री बनने का अवसर मिलता जब कि स्पष्ट बहुमत वाली सरकार में सभी मन्त्री एक ही दल से होते हैं। परन्तु ऐसी सरकार में भिन्न-भिन्न विचारधारा वाले मंत्री होने के कारण निर्णय थोड़ी देर से हो सकते हैं।

याद रखने योग्य तथ्य

1. लोकतंत्र को अप्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधि लोकतंत्र कहा जाता है, जहां लोग अपना शासन प्रबन्ध चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा चलाते हैं।
2. प्रतिनिधिता का अभिन्न अंग है चुनाव। भारत में चुनाव प्रक्रिया के लिये एक स्वतन्त्र संस्था चुनाव कमीशन बनाया गया है। चुनाव कमीशन स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष चुनाव करवाता है।
3. भारत वर्ष में इस समय मतदान करने के लिए व्यस्क नागरिक की आयु 18 साल है जबकि कुछ समय पहले मतदान करने वालों की आयु 21 वर्ष होती थी।
4. कई दलों के प्रतिनिधियों से बनाई गई सरकार को संयुक्त सरकार कहा जाता है। भारत में ऐसी सरकार छठे लोक सभा चुनाव के समय 1977 में बनाई गई थी।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 1 से 15 शब्दों में लिखें।

1. सर्वव्यापक मताधिकार से क्या भाव है?
2. चुनाव प्रक्रिया के कोई दो चरणों का वर्णन करो।
3. प्रतिनिधि सरकार कौन सी सरकार को कहा जाता है?
4. लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व का क्या महत्व है?
5. भारत में मत देने का अधिकार किसको होता है?
6. दो दलीय तथा बहुदलीय प्रणाली में क्या अन्तर है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखो।

1. राजनीतिक दलों का प्रतिनिधि लोकतंत्र में क्या महत्व है?
2. गुप्त मतदान क्या होता है? इसका क्या महत्व है?
3. लोकतंत्र में विरोधी दल की भूमिका संक्षेप में लिखो।
4. विरोधी दल के कार्यों का वर्णन करें।
5. राजनीतिक दलों के कोई दो कार्यों के बारे में लिखो।
6. लोकतंत्र में चुनावों का क्या महत्व है?

(ग) खाली स्थान भरो।

1. हमारे भारत में .... लोकतंत्र प्रणाली है।
2. भारत में चुनाव प्रक्रिया के लिए एक स्वतन्त्र संस्था .... बनाई गई है।
3. भारत वर्ष में .... साल के नागरिक को मतदान करने का अधिकार है।

4. .... तथा .... में दो दलीय तथा .... में बहुदलीय प्रणाली है।

5. एक व्यक्ति एक मत, नागरिकों की .... पर आधारित है।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में ठीक (✓) या गलत (✗) का निशान लगाओ :-

1. भारत देश में इस समय व्यस्क नागरिक की आयु 18 वर्ष है।

2. भारत देश में दो दलीय प्रणाली है।

3. विरोधी दल संसद में सरकार की आलोचना ही नहीं करते बल्कि लोक मत या लोक राय भी बनाते हैं।

(ङ) बहु-वैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. **भारत में बालिग (व्यस्क) होने की आयु कितनी है?**

   (1) 18 वर्ष (2) 24 वर्ष (3) 22 वर्ष

2. **लोक सभा के सदस्यों का चुनाव कितने वर्षों के लिए किया जाता है?**

   (1) चार वर्ष (2) 2 वर्ष (3) पाँच वर्ष

3. **इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी की स्थापना कब हुई?**

   (1) 1920 (2) 1885 (3) 1960

क्रिया-कलाप

1. अपने राज्य के सत्ताधारी दल तथा विरोधी दल के प्रधानों के नाम लिखो।

2. अपने चुनाव क्षेत्र से चयनित विधायक का नाम तथा उस द्वारा आपके क्षेत्र में किए गए विकास कार्यों के बारे में अपने अध्यापक से विचार विमर्श करें।

पाठ 20

राज्य सरकार

भारत में प्रतिनिधि लोकतंत्रीय सरकार है। इतने बड़े देश के राज्य प्रबन्ध को बढ़िया ढंग से चलाने के लिए एक केन्द्रीय सरकार तथा 29 राज्य सरकारें बनाई गई हैं। केन्द्रीय सरकार की तरह राज्य सरकार के भी तीन अंग विधानपालिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका हैं। प्रत्येक राज्य

चित्र 20.1 भारत का राजनैतिक मानचित्र

की विधानपालिका का कार्य कानून बनाता है। कार्यपालिका उन कानूनों को लागू करती है। न्यायपालिका कानून का उल्लंघन करने वाले को दंड देती है। राज्य की विधानपालिका में विधानसभा तथा विधान प्रीषद के सदस्य और राज्य का राज्यपाल होते हैं। कार्यपालिका में राज्यपाल तथा उसके कार्यों में सहायता करने के लिए मंत्री परिषद् होती है। भारतीय संविधान के द्वारा केन्द्र तथा राज्य सरकार में शक्तियों की बांट की गई होती है, जिसके अन्तर्गत देश के महत्वपूर्ण विषय केन्द्र सूची में, राज्य के महत्वपूर्ण विषय राज्य सूची में तथा कुछ मिले जुले विषय संयुक्त सूची में दिए गए हैं। राज्य सरकार राज्य सूची के 61 विषयों पर कानून बनाती तथा उनको अपने राज्य में कानून विधानपालिका द्वारा बनाए जाते हैं। कार्यपालिका इन कानूनों को लागू करती है। केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाए गए कुछ कानून भी राज्यों में लागू किए जाते हैं।

प्रत्येक राज्य की विधानपालिका में एक या दो सदन होते हैं। राज्य विधानपालिका के नीचे के सदन को विधानसभा तथा ऊपर के सदन को विधानपरिषद कहा जाता है। नीचे का सदन विधानसभा सभी राज्यों में होता है। कुछ राज्य-बिहार, कर्नाटक, आन्ध्र-प्रदेश, महाराष्ट्र

चित्र 20.2 पंजाब विधान सभा, चंडीगढ़

इत्यादि में राज्य विधानपालिका में ऊपर का सदन विधानपरिषद भी है। जिन राज्यों में एक सदन-विधानसभा होता है, उसे एक-सदनीय विधानपालिका तथा दो सदनों वाली की दो-सदनीय विधानपालिका कहा जाता है। पंजाब में एक सदनीय विधानपालिका है।

संगठन

राज्य विधानसभा के सदस्यों को विधायक कहा जाता है। ये सदस्य प्रत्यक्ष रूप में लोगों (बालिगों) द्वारा बालिग (व्यस्क) मताधिकार के आधार पर गुप्त मतदान द्वारा चुने जाते हैं। विधानसभा के चुनाव के समय विधान सभा के चुनावी क्षेत्रों में से एक-एक सदस्य चुना जाता है। भिन्न-भिन्न राज्यों में विधानसभाओं के सदस्यों की संख्या भिन्न-भिन्न है। संविधान द्वारा विधान सभा के सदस्यों की संख्या कम से कम 60 तथा अधिक से अधिक 500 तक निश्चित की गई है। पंजाब विधानसभा के सदस्यों की संख्या इस समय 117 है।

> ***क्या आपको पता है?***
>
> *आपके क्षेत्र का विधायक कौन है?*

राज्य विधानपालिका के ऊपर के सदन-विधान परिषद के सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष ढंग से भी किया जाता है। सीधे तौर पर बताया जाये तो इसके 5/6 भाग सदस्यों का चुनाव अध्यापकों, स्थानीय सरकार के सदस्यों, विधानसभा के सदस्यों, स्नातक बालिगों द्वारा किया जाता है। शेष 1/6 भाग राज्यपाल द्वारा नामांकित किये जाते हैं।

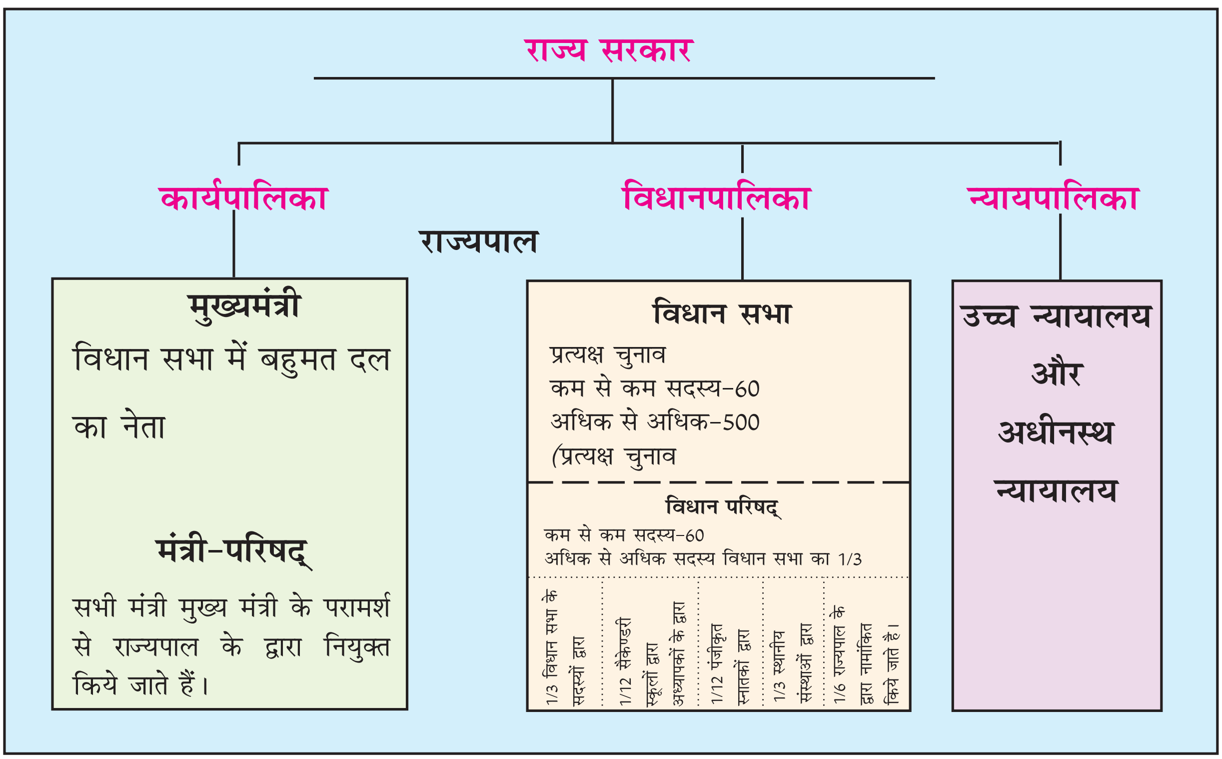

चित्र 20.3 राज्य सरकार का संगठन

पदाधिकारी : विधानसभा में एक स्पीकर तथा एक डिप्टी स्पीकर होता है, जिनका चुनाव विधानसभा के सदस्यों द्वारा अपने में से किया जाता है। ऊपर के सदन विधान परिषद का एक प्रधान कखा उप-प्रधान चुने जाते हैं। विधानसभा का स्पीकर, सदन की सभायों की अध्यक्षता, बिल प्रस्तुत करने की स्वीकृति, सदन में अनुशासन बनाए रखने तथा मंत्रियों को बोलने की आज्ञा देने आदि के कार्य करता है।

कार्यकाल : विधान सभा का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है परन्तु कई बार राज्यपाल इसको मुख्यमन्त्री की सलाह पर कार्यपाल समाप्त होने से पहले भी भंग कर सकता है। किसी संकटकालीन स्थिति में राष्ट्रपति द्वारा इसके कार्यकाल को 6 मास के लिए बढ़ाया भी जा सकता है।

विधान परिषद् का कार्यकाल 6 वर्ष है, प्रत्येक दो वर्ष पश्चात् इसके 1/3 सदस्य सेवानिवृत कर दिये जाते हैं तथा उनके स्थान पर और सदस्यों का चयन किया जाता है। परन्तु विधानसभा की तरह विधान परिषद को भंग नहीं किया जा सकता। यह राज्य सभा की तरह स्थाई सदन है।

यहां यह भी बतलाना अनिवार्य है कि कोई भी भारतीय नागरिक जिनकी आयु 25 वर्ष से अधिक हो, विधानसभा का तथा 30 वर्ष से अधिक आयु वाला विधान परिषद का सदस्य बन सकता है।

केन्द्र की तरह साधारण बिल को कानून बनाने के लिए दोनों सदनों में पेश किया जा सकता है जब कि धन बिल (बजट) केवल नीचे के सदन अर्थात् विधान सभा में ही पेश किया जा सकता है। कोई भी बिल दोनों सदनों में से पास होने के पश्चात् राज्यपाल की स्वीकृति के उपरान्त कानून बनता है। राज्य विधानपालिका राज्य की आवश्यकताओं के अनुसार राज्य सूची में दिये गए विषयों पर कानून बनाती है।

राज्य विधानपालिका की शक्तियाँ तथा कार्यः- राज्य विधानपालिका निम्नलिखित कार्य करती है:-

1. राज्यसूची में दिये गए 61 विषयों पर कानून बनाना। परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार का कानून इसका विरोधी हो तो केन्द्रीय कानून लागू किया जाता है।
2. विधानपालिका के सदस्य भिन्न-भिन्न विभागों के मंत्रियों से उनके विभागों के सम्बन्ध में प्रश्न पूछ सकते हैं, जिनका उत्तर सम्बन्धित मन्त्री को देना पड़ता है क्योंकि मंत्री-परिषद्, विधान पालिका के प्रति जवाबदेह होता है।
3. इसके सदस्य सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव भी पास कर सकते हैं।

कार्यपालिका

राज्य कार्यपालिका का कार्य विधानपालिका द्वारा बनाए गए कानूनों को लागू करना होता है।

राज्यपाल :

राज्य की कार्यकारिणी शक्ति राज्यपाल के पास होती है। उसकी नियुक्ति प्रधानमंत्री के परामर्श से राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। राज्यपाल का कार्यकाल यद्यपि 5 वर्ष होता है परन्तु वह राष्ट्रपति की इच्छा के अनुसार अपने पद पर बिना रह सकता है। राष्ट्रपति, राज्यपाल के कार्यकाल के दौरान उसका किसी अन्य राज्य में भी स्थानान्तरण कर सकता है।

राज्य के राज्यपाल बनने के लिए यह अनिवार्य है कि वह

1. भारत का नागरिक हो।
2. उसकी आयु 35 वर्ष से अधिक हो।
3. वह मानसिक तथा शारीरिक तौर पर स्वस्थ हो।
4. वह राज्य अथवा केन्द्रीय विधानपालिका सदस्य और सरकार अधिकारी न हो।

राज्यपाल की शक्तियाँ

केन्द्र में राष्ट्रपति की तरह राज्यपाल राज्य का नाम मात्र का अध्यक्ष है। राज्य के प्रबन्ध के कार्यों की वास्तविक शक्ति मुख्यमंत्री तथा मंत्री-परिषद् के पास होती है। राज्यपाल की शक्तियाँ भी राष्ट्रपति की तरह होती हैं। परन्तु राज्य की मशीनरी ठीक तरह न चलने के कारण कई बार राष्ट्रपति राज्य का शासन प्रबन्ध राज्यपाल के परामर्श पर अपने हाथ में ले लेता है। राज्यपाल ऐसी स्थिति में राज्य का वास्तविक अध्यक्ष बन जाता है। राज्यपाल की मुख्य शक्तियाँ निम्नलिखित अनुसार हैं :-

1. राज्यपाल, राज्य का संवैधानिक अध्यक्ष हैं तथा राज्य का शासन प्रबन्ध उसके नाम पर ही चलाया जाता है। वह बहुमत दल के नेता को राज्य विधानसभा का मुख्य मंत्री नियुक्त करता है। इसके इलावा राज्य के अन्य मंत्रियों राज्य लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष तथा अन्य महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियाँ भी वही करता है।
2. राज्यपाल, विधानपालिका के चुनाव के पश्चात् दोनों सदनों की पहली सभा को संबोधित करता है। वह विधानपालिका की सभा आयोजित तथा उसे भंग कर सकता है। वह मंत्री परिषद् के परामर्श से विधानसभा को भंग भी कर सकता है।
3. राज्य विधानपालिका द्वारा पारित किए गए सभी बिलों की स्वीकृति देता है। किसी भी महत्वपूर्ण बिल को आवश्यकता अनुसार राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए भी भेज सकता है और सदन की सभा की अनुपस्थिति में आवश्यकता अनुसार अध्यादेश जारी कर सकता है जो कि विधानपालिका के बनाए कानून की तरह ही कार्य करता है और राज्यपाल बजट (धन बिल) को स्वीकृति देता है।

4. राज्यपाल अपने राज्य के किसी भी अपराधी की सज़ा को कम अथवा मुआफ भी कर सकता है या स्थगित कर सकता है।

5. राज्यपाल के पास कुछ **स्वैच्छिक शक्तियाँ** भी होती हैं, जिनका प्रयोग वह अपनी स्वैच्छा अर्थात् मंत्री परिषद् के परामर्श के बिना भी कर सकता है। उदाहरण स्वरूप राज्य विधानपालिका में किसी भी दल को बहुमत प्राप्त न होने की स्थिति में अपनी इच्छा से मुख्यमंत्री की नियुक्ति कर सकता है या फिर राज्य की मशीनरी ठीक न चलने की स्थिति में राज्य की विधानसभा भंग करने के लिए राष्ट्रपति को सुझाव दे सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि किसी भी राज्य का राज्यपाल राज्य सरकार से अधिक राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी होता है। वह केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है। यदि वह अनुभव करे कि विधानसभा द्वारा पारित किया गया कोई भी बिल केन्द्रीय सरकार की नीतियों के विरुद्ध है तो ऐसे बिल को वह राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए भेज देता है।

क्या आप जानते हो कि आपके राज्य का राज्यपाल कौन है?

मुख्य मंत्री तथा मंत्री परिषद् :

विधानसभा के चुनाव के पश्चात् बहुमत प्राप्त करने वाले दल के नेता को राज्य के राज्यपाल द्वारा मुख्यमंत्री नियुक्त किया जाता है। मुख्यमंत्री अन्य मंत्रियों की सूची तैयार करता है, जिन्हें राज्यपाल मंत्री नियुक्त करता है। गठबंधन वाले मंत्री-परिषद् में विरोधी दलों को उचित प्रतिनिधित्व देने के लिए मुख्यमंत्री कुछ मंत्री विरोधी दल में से भी लेता है। कई बार किसी एक दल को बहुमत प्राप्त नहीं होता। ऐसी स्थिति में कुछ राजनीतिक दलों के सदसय मिलकर अपना नेता चुनते हैं, जिसे मुख्यमंत्री बनाया जाता है। ऐसी स्थिति में मंत्री परिषद् का गठन कई दलों के मिलने से होता है। ऐसी सरकार को गठबंधन सरकार कहते हैं।

मंत्री परिषद् में कई बार ऐसा भी मंत्री चुना जाता है जो कि राज्य विधानपालिका का सदस्य नहीं होता। उसे 6 महीने के अन्दर-अन्दर विधानपालिका को किसी न किसी सदन का सदस्य बनना पड़ता है।

कार्यकाल : मंत्री-परिषद् का कार्यकाल, विधान सभा जितना ही अर्थात् पांच वर्ष होता है। कई बार केन्द्र की तरह मुख्यमंत्री द्वारा त्यागपत्र दिये जानने उसकी मृत्यु के कारण मंत्री परिषद् भंग हो जाती है। विधान सभा अविश्वास के प्रस्ताव द्वारा भी मन्त्री परिषद् को हटा सकती है।

राज्य मंत्री परिषद्

प्रत्येत राज्य की मंत्री परिषद् में तीन प्रकार के मंत्री होते हैं (1) कैबिनेट मंत्री (2) राज्यमंत्री (3) उप–मंत्री। इनमें से कैबिनेट मंत्री, मंत्री–मंडल के सदस्य होते हैं, जिनके समूह को मंत्री–मंडल कहा जाता है, जो सभी महत्वपूर्ण निर्णय करते हैं। कैबिनेट मंत्रियों के पास भिन्न–भिन्न विभाग होते हैं। राज्य मंत्री तथा उप–मंत्री कैबिनेट मंत्रियों की सहायता करते हैं।

मंत्री–परिषद् भी केन्द्रीय मंत्री–परिषद् की तरह एक टीम की भांति कार्य करती है। किसी एक मंत्री के विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव पारित हो जाने पर सारे मंत्री–परिषद् को त्याग पत्र देना पड़ता है। वे अपने कामों और जिम्मेवारियों के लिए विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होते हैं। यदि मुख्यमंत्री त्याग–पत्र दे देता है तो सारी मंत्री परिषद् का त्याग–पत्र माना जाता है। इसलिए कहा जाता है कि मंत्री–परिषद् के सभी सदस्यों का कार्यकाल मुख्यमंत्री के पद पर बने रहने पर निर्भर करता है।

मुख्यमंत्री की शक्तियाँ तथा कार्य : मुख्यमंत्री राज्य सरकार का वास्तविक प्रधान होने के कारण निम्नलिखित कार्य करता है :-

1. मंत्री परिषद् बनाने में राज्यपाल की सहायता करता है तथा इसके मंत्रियों की संख्या निश्चित करता है।
2. कैबिनेट की सभाओं की अध्यक्षता करता है तथा सरकार का मुख्य प्रवक्ता होता है।
3. मंत्रियों में विभागों की बांट तथा आवश्यकता अनुसार उप–मंत्री नियुक्त करता है। वह सरकार के कुछ विभागों का प्रबन्ध स्वयं संभालता है।
4. राज्य विधानपालिका तथा मंत्री परिषद् का प्रधान होने के कारण राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार के प्रति उत्तरदायी होता है। वह केन्द्रीय सरकार से बढ़िया सम्बन्ध बनाने तथा बनाए रखने का प्रयास करता है।
5. राज्यपाल अपनी शक्तियों का प्रयोग मुख्यमंत्री से मंत्रणा करने के पश्चात् करता है।
6. किसी भी मंत्री से त्याग–पत्र की मांग कर सकता है और मंत्रियों के विभागों को बदल भी सकता है।

इस प्रकार मुख्य–मंत्री राज्य सरकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राज्य का राजप्रबन्ध

राज्य का प्रधान राज्यपाल होता है तथा राज्य की सरकार का प्रधान मुख्यमंत्री होता है। मुख्य–मंत्री, मंत्री–परिषद् का भी प्रधान होता है। मंत्री परिषद् का प्रत्येक मंत्री किसी एक या अधिक विभागों की कारगुजारी के लिए उत्तरदायी होता है। शिक्षा, सिंचाई, यातायात, स्वास्थय तथा सफाई इत्यादि राज्य के महत्वपूर्ण विभाग होते हैं। सरकारी अधिकारी इन भिन्न–भिन्न

विभागों के कार्य-सम्बन्धित मंत्रियों के निर्देशन में चलाते हैं। प्रत्येक विभाग के मुख्य सरकारी अधिकारी को सचिव कहा जाता है जो कि सामान्यत: भारतीय प्रशासकीय सेवा विभाग द्वारा नियुक्त किया जाता है। प्रत्येक विभाग का सचिव अपने विभाग की महत्वपूर्ण नीतियों तथा प्रबन्धकीय मामलों में मंत्री का परामर्शदाता होता है। भिन्न-भिन्न विभागों के सचिवों के कार्यों का निरीक्षण करने के लिए एक मुख्य सचिव होता है।

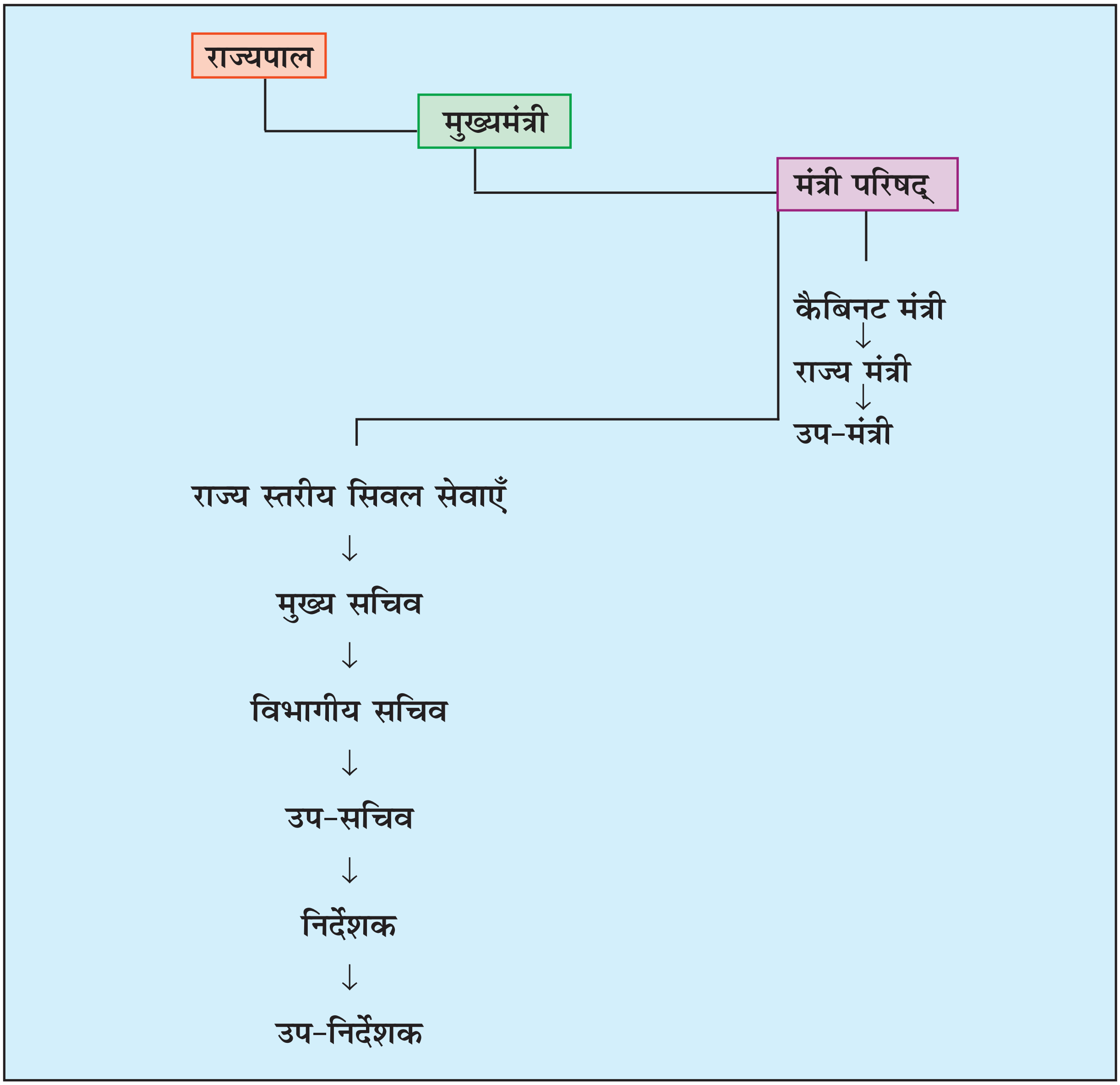

राज्य के मुख्य कार्यालय को सचिवालय कहा जाता है। प्रत्येक राज्य की राजधानी में सचिवालय होता है। सामान्यत: सभी मंत्रियों के कार्यालय भी सचिवालय में ही होते हैं। प्रत्येक

विभाग में सचिव से नीचे उप-सचिव, अधीनस्थ-सचिव, निर्देशक तथा उप-निर्देशक होते हैं जो कि विभागीय दायित्व निभाने में सचिव की सहायता करते हैं।

उपर्युक्त अनुसार भारतीय संघ का प्रशासन चलाया जाता है। भारतीय संघ में 28 राज्य तथा 9 केन्द्रीय शासित क्षेत्र हैं। भारत की राजधानी भी एक केन्द्रीय शासित क्षेत्र है। यहां विधान सभा भी है। दिल्ली को राष्ट्रीय केन्द्रीय शासित क्षेत्र कहा जाता है। संघीय क्षेत्रों का शासन प्रबन्ध राष्ट्रपति द्वारा प्रबन्धकों की सहायता से चलाया जाता है।

भूमि सुधार-विषय अध्ययन

भूमि सुधार का उद्देश्य भूमि-विहीन कृषकों तथा कृषि करने वाले मजदूरों को भूमि की स्वामित्व का अधिकार तथा जमींदारी से सुरक्षा प्रदान करना है।

भारतीय संविधान की धारा 39 के अनुसार, राज्यों को ऐसे कानून बनाने का आदेश दिया गया है कि प्रत्येक नागरिक को रोज़गार प्राप्त करने का अधिकार हो। सामुदायिक साधनों का बंटवारा सभी की भलाई के लिये हो। इसी उद्देश्य के आधार पर भूमि सुधार किये गए हैं।

íÈîÆ Ãभूमि सुधार के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं :-

(क) मौलिक अधिकारों में से सम्पत्ति का अधिकार निकाल दिया गया है।

(ख) भूमि सुधार के लिए सरकार संविधान में 13 संशोधन कर चुकी है। प्रत्येक पांच वर्षीय योजना में भूमि सुधार की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

भूमि, राज्य सूची का एक विषय है जिसके लिए राज्य सरकारों को निर्देश दिये गए हैं कि भूमि के स्वामित्व की सीमा निश्चित की जाए तथा भूमि विहीन कृषकों में भूमि की पुन: बांट की जाए, जिसके सम्बन्ध में प्रत्येक राज्य सरकार द्वारा कुछ कानून बनाये जाते हैं।

भारतीय सरकार द्वारा स्वतन्त्रता के पश्चात् तीन मुख्य भूमि सुधार किये गए हैं :-

1. मध्यस्थों की समाप्ति :

1950 में सबसे पहले उत्तर प्रदेश द्वारा मध्यस्थों की समाप्ति की गई। उसके पश्चात् 1972 में शेष राज्यों ने भी जमींदारी प्रणाली समाप्त करने के लिये कानून बनाए जिसके आधार पर कृषि करने वालों को ही भूमि दी जाती है। इसके साथ 20 मिलियन कृषि करने वाले भूमि के मालिक बन गए तथा लगभग 58 लाख एकड़ भूमि की पुन: बांट दी गई।

2. भूमि की सीमाबन्दी सम्बन्धी अधिनियम

1961-62 में सभी राज्यों ने भूमि के स्वामित्व सम्बन्धी सीमा-बन्दी कर दी। भिन्न-भिन्न राज्यों में भूमि की सीमाबन्दी भूमि तथा फसलों की किस्मों की भिन्नता पर अलग-अलग निश्चित की गई है। भूमि का स्वामित्व तथा इकाइयां भी अलग-अलग हैं। कुछ राज्यों में स्वामित्व **स्वत्व स्तर** पर तथा कुछ में पारिवारिक स्तर पर की गई है। भूमि के स्वामित्व की सीमाबन्दी, भूमि विहीन कृषकों की आवश्यकतायें पूरी करने, असमानता को कम करने तथा स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए की जाती है।

सड़क सुरक्षा

सड़क दुर्घटनाओं के कारण तथा संभाल

बच्चों, तुमने कई बार सड़क पर या बस में जाते हुए सुना होगा कि इस स्थान पर बहुत सी दुर्घटनाओं होती हैं। सावधान 'आगे खतनाक मोड़' है। ऐसा सड़क पर आने वाले वाहनों को सचेत करने के लिये लिखा गया होता है। हमारे देश में प्रतिदिन बहुत ही लोग कई तरह की सड़क दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं।

सड़क दुर्घटनाओं के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:-

1. **तेज़ गति :** सड़क पर चलने वाले वाहन चालक तेज गति से वाहन चलाते हैं। यद्यपि सड़क पर कई स्थानों पर वाहनों की गति की सीमा प्रदर्शित की गई होती है परन्तु सड़क की दुर्दशा होने के कारण या वाहनों की भीड़ होने के कारण, मौसम की खराबी होने के कारण, सड़क की बुरी हालत तथा वाहन चालक की मानसिक अथवा शारीरिक स्थिति मन्द होने के कारण दुर्घटनायें हो जाती हैं। परन्तु अधिकतर ऐसी दुर्घटनाएं वाहनों की तेज़ गति के कारण ही होती हैं।

2. **लेन (पतली सड़क) बदलने से :** सभी वाहनों को लेन (पतली सड़क) की गति के अनुसार चलना पड़ता है। परन्तु कई बार संकेत दिये बिना लेन (पतली सड़क) बदल कर आगे निकलते समय भी सड़क दुर्घटनायें हो जाती हैं।

3. **संकेत की ओर ध्यान न देना :** यातायात बत्तियों द्वारा दिये जाने वाले संकेत समय जब चालक लाल बत्ती होने के डर से शीघ्रता से चौराहे को पार करने का प्रयास करता है तो ऐसी स्थिति में दुर्घटना होने का पूर्ण भय रहता है।

4. **ध्यान भंग होने का शिकार होना :** कई बार वाहन चालक अन्य वाहनों में लगे बहुत ऊँची आवाज़ के संगीत, मोबाइल के प्रयोग अथवा बाहर से दिखाई देने वाली वस्तु से अपनी

एकाग्रता भंग होने कारण वाहन को ध्यान से न चला सकने के कारण दुर्घटना का शिकार हो जाते है।

5. **वाहनों को सामान से लादना :** वाहन चालक बहुत बार अपने वाहन अधिक सामान अथवा सवारियों से लाद लेते हैं, जिस कारण वाहन पर अधिक भार होने के कारण अथवा अन्य वाहनों को रास्ता साफ दिखाई न देने के कारण दुर्घटना हो सकती है।

6. **कम दिखाई देना :** वाहन चालकों को रात के समय, वर्षा में, बर्फ, धुंध पड़ने से रास्ता अच्छी तरह दिखाई नहीं देता। वाहनों के आगे लगी बत्तियों का प्रभाव भी कम हो जाता है, जिसके कारण रात्रि के समय या मौसम की खराबी के कारण भी कई बार सड़क दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ जाती है।

7. **शराब पीकर वाहन चलाना :** शराब पीने से मनुष्य की वाहन चलाने की कुशलता कम होती है। इससे नज़र पर प्रभाव पड़ता है तथा ऊँघने से चालक वाहन को ठीक ढंग से नहीं चला पाता, जिस कारण पैदल चलने वाले लोगों तथा साइकिल सवारों के लिए बहुत भयंकर स्थिति होती है।

8. **छोटी आयु वाले बच्चे वाहन-चालक :** इस कारण भी बहुत सी सड़क दुर्घटनाओं घटती हैं। कई बार 18 वर्ष से कम आयु वाले बच्चे वाहन चालक का प्रमाण पत्र प्राप्त किये बिना ही वाहन चलाने लग पड़ते हैं, जो कि उनके लिए भी तथा अन्य लोगों के लिए खतरनाक है।

9. **गलत ढंग से आगे निकलना :** इसे ओवर टेकिंग भी कहा जाता है। गलत ढंग से आगे निकलने से कई बार दो वाहनों के आपस सामने टकरा जाने से शारीरिक तथा आर्थिक हानि हो जाती है। इसके अलावा यह पैदल चलने वालों तथा साइकल सवारों के लिए भी खतरे का कारण बन जाता है।

10. **सड़क के नियमों का उल्लंघन करना :** सड़क दुर्घटनायें कई सड़क नियमों जैसे कि हैल्मट न धारण करना, सीट बैल्ट न लगाना, गलत स्थानों पर वाहन खड़े करना, सड़क निशानों को ध्यान में न रखना, वाहनों के मध्य उचित दूरी न रखना, ब्रेक फेल हो जाना इत्यादि का उल्लंघन करने से ऐसी दुर्घटनाएं घट जाती हैं।

11. **कुछ अन्य कारण :** किसी पैदल यात्री, साइकिल सवार अथवा जानवर का अचानक सड़क के मध्य आ जाना भी सड़क दुर्घटनायों का कारण बन जाते हैं।

उपर्युक्त दिये गए कारणों से घटने वाली घटनाएँ वास्तव में दुर्घटनायें नहीं हैं बल्कि किसी न किसी मनुष्य की गलती के कारण ही घटती हैं, जिनके कारण मनुष्य को दुख का अनुभव भी होता है और भारी हानि भी पहुँचती है। कई प्रिय मित्र, माता-पिता, बहन-भाई का जीवन क्षण

भर में ही तबाह हो जाता है। इसलिये हमारा यह नैतिक कर्त्तव्य है कि हम अपने जीवन को अपने लिये तथा अपने परिवारों के लिये जिनको हम बहुत प्यार करते हैं, सुरक्षित रखें।

अगर कोई सड़क दुर्घटना हो जाए तो हमारा कर्त्तव्य है कि :-

1. दुर्घटना में घायलों की सहायता करें।
2. जरूरत के अनुसार सहायता करें।
3. डाक्टरी सहायता करें।
4. घायलों की नजदीक के अस्पताल में पहुंचायें।
5. छानबीन में पुलिस की सहायता करें।
6. लोगों की भीड़ मत इकट्ठी होने दें।
7. घायलों को हौंसला दें।

ऐसा करके आप घायलों की सहायता के साथ पुलिस की सहायता करते हुये अपने राज्य की सरकार को शासन चलाने में सहायता करते हैं। इस तरह आप एक अच्छे नागरिक की भूमिका निभाते हैं।

याद रखने योग्य तथ्य

1. केन्द्रीय सरकार की तरह राज्य सरकार के भी तीन अंग विधानपालिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका हैं।
2. विधानपालिका का कार्य कानून बनाना है। कार्यपालिका उन कानूनों को लागू करती है। न्यायपालिका कानून का उल्लंघन करने वाले को दण्ड देती है।
3. भारतीय संविधान के द्वारा केन्द्र तथा राज्य सरकारों की शक्तियों को बांटा गया है।
4. राज्य सरकार राज्य सूची के 61 विषयों पर कानून बना कर अपने राज्य में लागू करती है।
5. प्रत्येक राज्य की विधानपालिका में दो सदन होते हैं। राज्य विधानपालिका के निम्न सदन को विधानसभा तथा ऊपर सदन को विधानपरिषद कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर पंजाब में एक-सदनीय तथा जम्मू-कश्मीर में दो सदनीय विधानपालिका है।
6. पंजाब में एक-सदनीय विधानपालिका है।

7. राज्य विधान सभा के सदस्यों को विधायक कहा जाता है।
8. पंजाब विधान सभा के इस समय 117 सदस्य (विधायक) हैं।
9. राज्यपाल राज्य का नाममात्र का अध्यक्ष है। राज्यों के कार्यों की वास्तविक शक्ति मुख्यमंत्री और मंत्री-परिषद के पास होती है।
10. भारतीय संघ में 28 राज्य व 9 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 1 से 15 शब्दों में दो।

1. विधायक चुने जाने के लिए कौन सी दो योग्यताएँ आवश्यक हैं?
2. राज्यपाल चुने जाने के लिए कौन सी योग्यताएँ आवश्यक हैं?
3. एक सरकारी विभाग का सरकारी मुखिया कौन होता है?
4. आपके राज्य का मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल कौन हैं?
5. राज्य का कार्यकारी अधिकारी कौन होता है?

(ख) निम्नलिखिथ प्रश्नों का उत्तर 50-60 शब्दों में दो।

1. राज्य के राज्यपाल के कार्यों के बारे में बताओ।
2. राज्य के मुख्य-मंत्री के कार्यों तथा शक्तियों का वर्णन करो।
3. राज्य विधान सभा/विधान परिषद् के चुनाव सम्बन्धी संक्षेप में लिखो।
4. राज्य के प्रबन्धकीय कार्य कौन-कौन से सिवल अधिकारी चलाते हैं?
5. सड़क दुर्घटनाओं के कोई पाँच मुख्य कारण बताओ।

(ग) खाली स्थान भरें :

1. विधानसभा के सदस्यों की अधिक से अधिक संख्या .... होती है।
2. विधान परिषद् के सदस्यों की कम से कम संख्या .... होती है।
3. पंजाब राज्य के राज्यपाल .... है।
4. पंजाब विधानपालिका .... है।
5. वित्तीय बिल राज्य की विधानपालिका के .... सदन में प्रस्तुत किया जाता है।
6. किसी भी बिल का कानून बनने के लिए अन्तिम स्वीकृति .... द्वारा दी जाती है।
7. राज्य विधानपालिका के .... सदन की सभा की अध्यक्षता स्पीकर करता है।
8. .... राज्य का संवैधानिक मुख्य है।
9. मंत्री-परिषद् का कार्यकाल .... होता है।
10. मंत्री-परिषद के .... सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में ठीक (✓) या गलत(✗) का निशान लगाओ :-

1. भारत में एक केन्द्रीय सरकार, 28 राज्य सरकारें तथा 7 केन्द्रीय शासित क्षेत्र हैं। ☐
2. राज्य विधानपालिका के नीचे के सदन को विधानपरिषद कहा जाता है। ☐
3. पंजाब विधानपालिका दो-सदनीय विधानपालिका है। ☐
4. राज्य की मुख्य कार्यों की वास्तविक शक्ति राज्य पाल के पास होती है। ☐
5. सम्पत्ति का अधिकार मौलिक अधिकार है। ☐

(ङ) बहु-वैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. **भारत में कितने राज्य हैं?**

   (1) 21 (2) 25 (3) 28

2. **पंजाब विधानसभा के सदस्यों की कुल गिनती बताइये।**

   (1) 117 (2) 60 (3) 105

3. **मुख्यमंत्री की नियुक्ति किसके द्वारा की जाती है?**

   (1) राष्ट्रपति द्वारा (2) राज्यपाल द्वारा (3) स्पीकर द्वारा

क्रिया-कलाप

1. अपने राज्य के मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल के चित्र अपनी कापी में लगाओ तथा उनके जीवन सम्बन्धी कोई पाँच महत्वपूर्ण तथ्य लिखो।
2. आपके सामने हुई किसी सड़क दुर्घटना का विवरण लिखो तथा बताओ कि आपने क्या सहायता की?

पाठ 21

जनसंचार माध्यम तथा लोकतंत्र

भिन्न-भिन्न ढंगों से, लोगों के समूह के साथ सम्पर्क करने को जनसंचार माध्यम (मीडिया) कहा जाता है। ये ढंग है-समाचार-पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा, राजनीतिक दल, चुनाव तथा पत्रकारिता (प्रैस) इत्यादि। इन सभी माध्यमों का लोकतंत्रीय देश में अत्यधिक महत्व है। सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है पत्रकारिता (प्रैस) जिसके द्वारा समाचार-पत्र, मैगज़ीन तथा पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इस सभी माध्यमों का मनुष्य के दैनिक जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इसलिए पत्रकारिता (प्रैस) अथवा प्रकाशन के साधनों को लोकतंत्र का प्रकाश स्तम्भ कहा जाता है।

पत्रकारिता (प्रैस) लोकतंत्र का प्रकाश स्तम्भ है।

हम सभी जानते हैं कि लोकतंत्र लोगों की, लोगों के द्वारा तथा लोगों के लिए सरकार है। जहां जनसंचार माध्यम (मीडिया), लोगों को, देश में घट रही घटनाओं, दुर्घटनाओं के बारे में सूचित करते हैं वहां लोगों को सरकार के कार्यों के प्रति जागरुक तथा होशियार बनाते हैं।

जनसंचार माध्यमों (मीडिया) की वास्तविक भूमिका लोकमत का संचार करने की है। यह स्थित सरकार की प्रबन्धकीय प्रणाली की भूमिका की सूचना लोगों तक पहुँचाने का शिक्षितों वाला एक माध्यम है। जनसंचार माध्यम (मीडिया) नागरिकों को जनतक मामलों सम्बन्धी सुलझे ढंग से निर्णय लेने में सहायता करता है।

जनसंचार माध्यम, बुद्धिमान भागीदार स्वशासित नागरिकों को कुंजी है।

जनसंचार माध्यमों (मीडिया) के मुख्य साधन

लोगों तक सूचना का प्रसार करने तथा लोकमत का निर्माण करने वाले माध्यम के मुख्य साधन निम्नलिखित हैं।

1. मुद्रित जनसंचार माध्यम (प्रैस)

लोकतंत्रीय राज्य में लोकमत का निर्माण करने वाला सबसे महत्वपूर्ण माध्यम पत्रकारिता,

चित्र 21.1 जनसंचार का प्रमुख साधन-समाचार पत्र

है,जिसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाएं इत्यादि होते हैं। दैनिक समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं केवल राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सूचनाएँ ही प्रदान नहीं करते बल्कि लोगों को भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों की विचारधारा, संगठन, नीतियों तथा सरकारी कार्यक्रमों के बारे में भी परिचित करवाते हैं। समाचार-पत्र लोगों को भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों के बारे में अपना मत बनाने तथा अभिव्यक्त करने के लिए निर्देश देते हैं। लोकतंत्रीय सरकार वाले देश में पत्रकारिता (प्रैस) का सरकारी प्रभाव से स्वतंत्र होना अत्यावश्यक है ताकि लोगों को सरकार की वास्तविक कार्यकुशलता से खुलकर परिचित करवा सके।

2. जनसंचार के बिजली के आधुनिक साधन

रेडियो, टेलिविज़न तथा कम्प्यूटर जनसंचार के महत्वपूर्ण साधन हैं जो कि लोकमत के निर्माण निर्माण तथा अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें हैं। जहां पत्रकारिता (प्रैस) अथवा मुद्रित साधनों का प्रयोग केवल शिक्षित नागरिक ही कर सकतो हैं वहां बिजली के साधनों द्वारा अशिक्षित लोग भी समाचार सुनकर अथवा देखकर किसी भी मामले के बारे अपना मत बना सकते हैं।

टेलिविज़न तथा सिनेमा भी लोकमत के निर्माण में सहायता करते हैं। ये साधन लोगों के मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। इनके बारे में अपने विचार अभिव्यक्त करके सरकार के कार्य मं हस्तक्षेप करके देश के प्रबन्कीय कार्यों में अपना योगदान देते हैं।

3. राजनीतिक दल

लोकतंत्र में राजनीतिक दल भी सभाओं, प्रदर्शनों तथा चुनाव मनोरथ पत्रों द्वारा देश के नागरिकों को सरकार के कार्यों तथा कमज़ोरियों के बारे में शिक्षित करते हैं। वे लोगों को देश की सामाजिक समस्याओं के बारे में अवगत करवाते तथा उनके बारे में अपना मत पेश करने में सहायता करते हैं। इस तरह राजनीतिक दल, लोकमत का निर्माण तथा अभिव्यक्ति करने में सहायता करते हैं।

4. चुनाव

चुनाव के समय सभी राजनीतिक दल चुनाव जीतने के लिए लोगों को अपनी प्राप्तियों, सफलताओं तथा अन्य दलों की कमज़ोरियों से अवगत करा के उन्हें शिक्षित करते हैं। लोग भिन्न-भिन्न दलों के विचार सुनकर अपना उचित मत बनाते हैं।

उपर्युक्त बताये सभी माध्यमों के द्वारा जनसंचार माध्यम लोकतंत्रीय सरकार को सफल बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जनसंचार माध्यमों (मीडिया) का सदाचार तथा दायित्व

जनसंचार माध्यमों (मीडिया) से यह आशा की जाती है कि लोगों तक देश की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियों का दैनिक समाचारों के द्वारा उचित तथा ठीक-ठाक सूचना का संचार करें। इसका दायित्व है कि व्यक्तिगत तथा सामाजिक संगठनों के उचित विचार लोगों के समक्ष प्रस्तुत करे, जिसके आधार पर भिन्न-भिन्न विषयों तथा दलों के बारे लोग अपना उचित मत बनाकर उसे प्रकट कर सकें। जन संचार माध्यमों की सारी कार्यवाही लोगों की भलाई के लिए होनी चाहिए। सूचना का संचार करना ही जनसंचार माध्यमों (मीडिया) का सामाजिक दायित्व है। यह संचार ऐसे ढंग से किया जाना चाहिए ताकि लोकतंत्रीय राज्य में निवास करने वाले नागरिक देश के शासन में अपनी प्रभावशाली भागीदारी करते हुए स्वशासित बनने के योग्य बन जाएं।

आरम्भिक सदाचारी नियम

जनसंचार माध्यमों के द्वारा (मीडिया) लोकतंत्रीय राज्य के प्रति दायित्व को निभाते हुए कुछ सदाचारी नियमों की पालना करना भी आवश्यक है। इनके लिए जनसंचार माध्यमों (मीडिया) के उद्देश्य निम्नलिखित होने चाहिए।

(क) सच्चाई को ढूंढे तथा इसके बारे में जनता को सूचित करें।

(ख) सूचना कम से कम हानिकारक हो।

(ग) स्वतंत्र होकर, निष्पक्ष विचार जनता के समक्ष प्रस्तुत करें।

(घ) सामाजिक दायित्व को उचित ढंग से निभाये।

इस तरह जनसंचार माध्यमों (मीडिया) का दायित्व है कि सच्चाई पर चलते हुए लोकतंत्र की न्यायपूर्वक अगुवाई करे। घटनाओं का उचित तथा तथ्यपूर्ण आदान-प्रदान करें। जनता की मन से तथा ईमानदारी से सेवा करें।

विषय अध्ययन-सूचना प्राप्त करने का अधिकार

सूचना का अधिकार

सूचना प्राप्त करने के अधिकार से भाव है कि लोगों वह सभी सूचना प्राप्त करने का अधिकार जिसका प्रभाव उन पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ढंग से पड़ता है। उदाहरणत: यदि किसी नागरिक पर कोई मुकद्दमा दर्ज होता है तो उसे मुकद्दमा दर्ज होने का कारण पता लगना आवश्यक है। लोकतंत्रीय देश में प्रत्येक नागरिक को सरकार के कार्यों, खर्चों तथा आय के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए। सामान्यत: पहले ऐसा नहीं होता था। इसलिए कुछ राज्य सरकारों द्वारा, सूचना अधिकार सम्बन्धी नियन बनाया गया है। सबसे पहले ऐसा अधिनियम राजस्थान सरकार द्वारा 2000 में पारित किया गया था, जिसके अन्तर्गत सरकार के शासन सम्बन्धी प्रत्येक तथ्य के सम्बन्ध में जनता, सरकार के सूचना प्राप्त कर सकती है। 2000 के पश्चात् ऐसे अधिनियम महाराष्ट्र, कर्नाटक, तामिलनाडू, गोआ तथा पंजाब राज्य द्वारा भी पारित किए गए हैं।

सूचना प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक नागरिक को सरकार के किसी भी अधिकारी के गलत कार्यों पर रोक लगाने अथवा अपने स्तर पर पूछताछ करने का अधिकार है। इस अधिकार का भारत के भ्रष्टाचार को रोकने पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा।

(क) विज्ञापन

जब उत्पादक कोई वस्तु उत्पादित करता है तो उससे अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के लिए उसका उस वस्तु को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना अर्थात् विक्रय करना होता है। किसी भी वस्तु को अधिक से अधिक बेचने के लिए उत्पादक अथवा व्यापारी को विज्ञापन का सहारा लेना पड़ता है। किसी वस्तु के जन समूह संचार का सबसे बढ़िया ढंग विज्ञापन है जिस द्वारा वस्तु अधिक से अधिक विक्रय हो सकती है।

विज्ञापन के उद्देश्य

सामान्यत: विज्ञापन किसी वस्तु के उपलब्ध होने सम्बन्धी सूचना देता है। विज्ञापन किसी वस्तु, सेवा अथवा विचार सम्बन्धी भी हो सकता है। विज्ञापन करने से वस्तु की मांग बढ़ती है। विज्ञापन देने के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

(क) किसी विशेष वस्तु सम्बन्धी सूचना देना अर्थात् वस्तु को कहां से खरीदना और उसका कैसे प्रयोग करना है।

(ख) लोगों को खरीददारी के लिए प्रेरित करना।

(ग) किसी संस्था के लोगों की दृष्टि में मूल्य बढ़ाने को संस्थात्मक विज्ञापन कहते हैं।

विज्ञापन के प्रकार : विज्ञापन के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:-

1. व्यापारिक विज्ञापन
2. सामाजिक विज्ञापन

व्यापारिक विज्ञापन

अधिकतर विज्ञापन व्यापारिक होते हैं जो कि उपभोक्ताओं से जुड़े होते हैं। उपभोग योग्य वस्तुओं के खरीददार ही उपभोक्ताओं का बहुभाग है। जो वस्तुएं अपने प्रयोग करने के लिए उपभोक्ता अपने घर ले जाते हैं। खाने वाली वस्तुएं राशन-पानी, वस्त्र तथा बिजली से चलने वाली वस्तुएं जैसे कि रेडियो, टेलिविज़न, रैफ्रिजरेटर इत्यादि के उपभोक्ता संख्या में अधिक तथा

चित्र 21.2 व्यापारिक विज्ञापन की एक झलक

अधिकतर क्षेत्र में फैले हुए होते हैं। खरीरदारों को लाखों की संख्या में आकर्षिक करने के लिए विक्रेता कई तरह के साधनों जैसे कि समाचार पत्र, मैगज़ीन, टैलिविज़न, रेडियो तथा पत्रिकाओं इत्यादि का प्रयोग करते हैं। गलियों में आवाज़ देकर वस्तुएँ बेचने का ढंग सबसे प्राचीन है। यह ढंग आज भी गलियों में सब्जियाँ, फल तथा अन्य कई वस्तुएँ बेचने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे विक्रेताओं को फेरी वाले भी कहा जाता है।

विज्ञापन, किसी भी वस्तु के लिए खरीददार को प्रभावित करके वस्तुओं की बिक्री में

बढ़ौतरी करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे विज्ञापन को उपभोक्ता विज्ञापन भी कहा जाता है।

सामाजिक विज्ञापन

सामाजिक विज्ञापन उस विज्ञापन को कहा जाता है जिसके द्वारा समाज भलाई के लिए प्रयोग की जा रही कुछ सेवाओं सम्बन्धी लोगों को जानकारी दी जाती है। सामाजिक समस्याएं जैसे परिवार-नियोजन, पोलियो, कैंसर की बीमारी, एडज़, भ्रूण हत्या, सामुदायिक मिलाप, राष्ट्रीय एकता तथा प्राकृतिक आपत्तियों से बचाव इत्यादि सम्बन्धी है।

चित्र 21.3 सड़क सुरक्षा विज्ञापन (सामाजिक)

सामाजिक विज्ञापन सामान्यत: सामाजिक दायित्व निभाने तथा सामाजिक सेवाहित सरकारी अथवा गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा दिए जाते हैं। सामाजिक विज्ञापन सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए बहुत लाभदायक होते हैं। ऐसे कई विज्ञापनों द्वारा लोग जरूरतमंद लोगों की सहायता करते हैं।

सड़कों पर लगे कई प्रकार के सड़क सुरक्षा सम्बन्धी विज्ञापन, लोगों को सड़क दुर्घटनाओं के बारे में जागृत करते हैं। सामाजिक विज्ञापन कई सामाजिक कारणों जैसे कि रक्तदान, नशाबंदी राष्ट्रीय एकता, दहेज समस्या इत्यादि के बारे में भी लोगों को लाभदायक सूचना प्रदान करते हैं।

चित्र 21.4 नशा मुक्ति संबंधी विज्ञापन

कई बार आप समाचार पत्रों में पढ़ते हो कि किसी बच्चे को गुर्दा फेल हो गया है। परन्तु उस परिवार के पास बीमारी का उपचार करवाने के लिए कैसे उपलब्ध नहीं हैं। समाचार पत्रों में ऐसे विज्ञापन को पढ़कर कई शहरी अथवा गैरसरकारी संस्थाएँ ऐसे परिवार की आर्थिक सहायता करती हैं। इसलिए ऐसे विज्ञापन समाज भलाई के लिए बहुत ही लाभदायक होते हैं।

इसी तरह स्वास्थ्य विभाग द्वारा कई बीमारियों को जड़ से समाप्त करने के लिए तथा लोगों के बढ़िया स्वास्थ्य के लिए टीकाकरण का प्रबन्ध किया जाता है जैसे कि आजकल पोलियो की बीमारी की समाप्ति के लिए किया जा रहा है। इसके इलावा सरकार लोगों को एडज़ जैसी भयंकर बीमारियों के लिए विज्ञापनों की सहायता लेती है। ऐसे विज्ञापन भी, सामाजिक विज्ञापन होते हैं।

चित्र 21.4 पोलियो टीकाकरण विज्ञापन (सामाजिक)

विज्ञापन के आरम्भिक नियम

जहां व्यापारिक तथा सामाजिक विज्ञापनों के इतने लाभ हैं वहां इनका उपयुक्त प्रयोग करने के लिए कुछ आरम्भिक नियमों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है, ये नियम हैं:-

1. किसी भी तरह के विज्ञापन देश के कानूनों का उल्लंघन न करें।
2. विज्ञापन सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों, धार्मिक नियमों, सदाचार तथा शिष्टाचार के विरुद्ध न हों।

3. विज्ञापन द्वारा अन्य वस्तुओं के विरुद्ध अनुचित, अथवा आधारहीन चर्चा न की जाए।

4. व्यापारिक विज्ञापन में उपभोक्ताओं को बिकने वाली वस्तुओं के भार, गुणात्मक तथा मूल्य के बारे में सही जानकारी देना आवश्यक है।

विज्ञापन तथा अधिनियन

विज्ञापन देने में कोई अच्छाई या बुराई नहीं है। यह एक ऐसा साधन है जिसका प्रयोग अच्छे या बुरे ढंग से किया जा सकता है। विज्ञापन की विषय वस्तु तथा पहुंच को अधिनियम करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि इसका दुरुपयोग न किया जाये। उदाहरणत: अमरीका में तंबाकू के विज्ञापन पर प्रतिबन्ध लगाया गया है।

मानवीय विकास की क्रिया के लिए विज्ञापन बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इतना ही नहीं समाज की भलाई तथा उत्तमता के लिए भी विज्ञापन का बड़ा योगदान है। विज्ञापन लोगों को समाज भलाई के कार्यों के लिए उत्तेजित तथा उत्साहित करता है।

अन्त में हम कह सकते हैं कि जनसंचार माध्यम (मीडिया) तथा विज्ञापन का लोकतंत्र में अत्याधिक महत्व है। जनसंचार माध्यमों (मीडिया) के द्वारा ही विज्ञापन की क्रिया संभव हो सकती है। अच्छे लोकतंत्रीय समाज के अस्तित्व के लिए ये दोनों अत्यावश्यक है। जनसंचार माध्यमों (मीडिया) तथा विज्ञापन का कुछ नैतिक मूल्यों के आधार पर कार्य करना देश की भलाई तथा उन्नति के लिए है, उससे बढ़कर दायित्व विज्ञापन के साधन का उचित प्रयोग करते हुए व्यापारिक तथा सामाजिक विज्ञापन द्वारा समाज को ऊपर उठाना है। क्योंकि जनसंचार माध्यम (मीडिया) तथा विज्ञापन समाज के ऊपर अच्छे अथवा बुरे महत्वपूर्ण तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव डालते रहते हैं।

याद रखने योग्य तथ्य

1. भिन्न-भिन्न ढंगों के लोगों के समूह के साथ सम्पर्क करने को जनसंचार माध्यम (मीडिया) कहा जाता है।

2. प्रकाशण के साधनों को लोकतंत्र का प्रकाश-स्तम्भ कहा जाता है।

3. सूचना प्राप्त करने के अधिकार से भाव है कि लोगों को वह सभी सूचना प्राप्त करने का अधिकार जिसका प्रभाव उन पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ढंग से पड़ता है।
4. विज्ञापन का प्रयोग व्यापारिक व सामाजिक कार्यों के लिए किया जाता है।
5. विज्ञापन किसी भी वस्तु के लिए खरीददार को प्रभावित करके वस्तुओं की बिक्री में बढ़ौतरी के लिए किया जाता है। ऐसे विज्ञापन को उपभोक्ता विज्ञापन कहते हैं।
6. सामाजिक विज्ञापन उस विज्ञापन को कहते हैं जिसके द्वारा समाज भलाई के लिए प्रयोग की जा रही कुछ सेवायों सम्बन्धी लोगों को जानकारी दी जाती है।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर 1-15 शब्दों में लिखो :

1. जनसंचार माध्यमों (मीडिया) तथा लोकतंत्र में क्या सम्बन्ध है?
2. सूचना/जानकारी प्राप्त करने सम्बन्धी अधिकार से आप क्या समझते हैं?
3. विज्ञापन कितनी प्रकार के होते हैं?
4. विज्ञापन के मुख्य उद्देश्य कौन-से हैं?
5. सामाजिक विज्ञापन से क्या भाव है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर 50-60 शब्दों में लिखो :

1. व्यापारिक विज्ञापन में क्या कुछ होता है?
2. विज्ञापन कर्त्ता अपनी वस्तुओं के प्रति लोगों का व्यवहार परिवर्तित करने के लिए कौन-से ढंग अपनाते हैं?

3. सार्वजनिक सेवाओं के साथ सम्बन्धित दो विज्ञापनों के नाम बताओ।

4. विज्ञापन सम्बन्धी अधिनियमों की आवश्यकता क्यो हैं?

5. उन नैतिक-नियमों का विवरण दो जिन्हें जनसंचार माध्यमों (मीडिया) द्वारा अपनाना आवश्यक है?

(ग) खाली स्थान भरो :-

1. जनसंचार माध्यम (मीडिया) आधुनिक शासन प्रणाली की कमियाँ बताने के लिए एक .... साधन है।

2. जनसंचार माध्यम (मीडिया) की मुख्य भूमिका.................. प्रदान करना है।

3. .... से भाव है कि अपने दायित्वों को ठीक ढंग से निभाना।

4. विज्ञापन अपने..................के आधार पर अलग-अलग हैं।

5. किसी वस्तु की .... को बढ़ाना विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य है।

6. प्रत्याशियों तथा राजनीतिक दलों के पक्ष में .... विज्ञापन होता है।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में ठीक (✓) या गलत (✗) निशान लगाओ :-

1. लोगों के समूह के साथ सम्पर्क करने को जनसंचार माध्यम कहा जाता है। ☐

2. प्रकाशन के साधन को लोकतंत्र का प्रकाश स्तम्भ कहा जाता है। ☐

3. विज्ञापन के मुख्य प्रकार-व्यापारिक विज्ञापन व सामाजिक विज्ञापन हैं। ☐

(ङ) बहु-वैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. जनसंचार के इलैक्ट्रॉनिक साधन का नाम लिखें।

(1) अखबार (2) मैगज़ीन (3) टेलिविजन

2. विज्ञापन की मुख्य किस्में कितनी हैं?

(1) दो (2) चार(3) छः

3. किस देश में प्रैस या छपाई के साधनों को लोकतंत्र का प्रकाश स्तंभ कहा जाता है?

(1) अफगानिस्तान (2) भारत (3) चीन

क्रिया-कलाप

सामाजिक विज्ञापनों सम्बन्धी समाचार पत्रों में से कोई 5 चित्र काटकर चार्ट पर लगाओ तथा उनके महत्व के बारे में 5-5 पंक्तियां लिखो।